

# श्री पराशर सांहिता

(श्री हनुम च्चरितम्)

१



सम्पादकः प्रकाशकश्च :

भाषा प्रवीण, 'साहित्य विद्या प्रवीण' 'वैद्यविद्वान्' 'हिन्दी विशारद'

डॉ० अन्नदानं चिदम्बर शास्त्री

M. A. & M. A., Ph. D.

प्रवाचकः

यस्मिन् जी० वी० संस्कृत कलाशाला

तिम्मसमुद्रम् - प्रकाश मण्डलम् • आन्ध्रप्रदेशः

## विषय सूची

| क्र. सं. | पटल सं. | विषयः   | पुट सं. |
|----------|---------|---|---------|
| १        | प्रथम   | मन्त्रोपदेश लक्षणम्                                       | १       |
| २        | द्वितीय | हनुमन्मन्त्रोद्धारणम्                                     | ५       |
| ३        | तृतीय   | काम्य साधनम्  | ९       |
| ४        | चतुर्थ  | सोमदत्त चरितम्  | १७      |
|          |         | नीलकृत हनुमत्स्तोत्रम्                                    | २४      |
| ५        | पञ्चम   | सोतदत्त-नीलचरितम्   | २५      |
| ६        | षष्ठ    | हनुमज्जन्म कथनम्  | ३४      |
| ७        | सप्तम   | श्री सुवर्चला हनुमद द्वादशाक्षर<br>मन्त्रकथनं शतानन वधं च | ४२, ४५  |
| ८        | अष्टम   | ध्वजदत्त चरितम्   | ५०      |
| ९        | नवम     | " "   | ५६      |
| १०       | दशम     | सूर्यसुता कथनम्   | ६०      |
| ११       | एकादश   | गाल चरितम्  | ६४      |
| १२       | द्वादश  | गुरुभक्ति कथनम्   | ६८      |
| १३       | त्रयोदश | हनुमदनुग्रहम्   | ७४      |
| १४       | चतुर्दश | ध्वजदत्त चरितम्   | ८३      |
| १५       | पञ्चदश  | विजय चरितम्   | ८९      |
| १६       | षोडश    | अष्टाक्षरी प्रभाव विजयचरितम्                              | ९४      |
| १७       | सप्तदश  | श्यासमुद्रादि लक्षण कथनम्                                 | १००     |
| १८       | अष्टादश | स्नान संध्यानस्तर विधिः                                   | १०९     |


| क्र. सं. | पटल सं.        | विषयः   | पुट सं.           |
|----------|----------------|---|-------------------|
| १९       | एकोनविंशति     | षट्पल्लवादि विवरणम्   | ११४               |
| २०       | विंशति         | श्रीहनुमत्षोडशाण्व प्रभावकथनम्  | ११९               |
| २१       | एकविंशति       | कपिल चरित्र कथनम्   | १२४               |
| २२       | द्वाविंशति     | कश्यप चरित्र कथनम्  | १२८               |
| २३       | त्रयोविंशति    | हरिशर्मा चरित्र कथनम्   | १३२               |
| २४       | चतुर्विंशति    | नित्य कर्मविधान कथनम्<br>सर्वदेवता स्तुतिः<br>सप्ताक्षरी मन्त्र विधानम् | १३७<br>१४०<br>१४३ |
| २५       | पञ्चविंशति     | श्री हनुमन्माला मन्त्र विवरणम्<br>श्री हनुमन्माला मन्त्रः               | १४५<br>१५२        |
| २६       | षड्विंशति      | श्री हनुमन्मन्त्र पुरश्चरण विवरणम्                                      | १५४               |
| २७       | सप्तविंशति     | पम्पा सरो वर्णनम्   | १६५               |
| २८       | अष्टाविंशति    | श्री नारद हनुमत्संवादः  | १७१               |
| २९       | एकोनत्रिंशति   | देवा श्वासनम्   | १८०               |
| ३०       | त्रिंशति       | त्रिशूल वध प्रतीक्षणम्  | १८४               |
| ३१       | एकत्रिंशति     | द्विशूल रोमवधः  | १८८               |
| ३२       | द्वात्रिंशति   | नागकन्यावृत्तान्त कथनम्   | १९१               |
| ३३       | त्रयस्त्रिंशति | रक्त रोमवध  | १९८               |
| ३४       | चतुस्त्रिंशति  | सुमुखचरित्र कथनम्   | २०१               |
| ३५       | पञ्चत्रिंशति   | मैदचरित्र कथनम्   | २०६               |
| ३६       | षट्त्रिंशति    | मदनक्षोभा निवारक मन्त्रकथनम्  | २०८               |
| ३७       | सप्तत्रिंशति   | मालामन्त्र प्रभाव कथनम्   | २११               |
| ३८       | अष्टात्रिंशति  | यवनाश्च चरित्र कथनम्  | २११               |

| क्र. सं. | पटल सं. | विषयः  | पुट सं. |
|----------|---------|--|---------|
| ३९       |         | एकोनचत्वारिंशत् हनुमद्विग्रह प्रतिष्ठाकथनम्        | २२३     |
| ४०       |         | अत्रिंशत् श्री " "                                 | २२९     |
| ४१       |         | एकचत्वारिंशत् पर्वदिवस श्री हनुमत्पूजा कथनम्       | २३३     |
|          |         | श्री हनुमत्सूक्तम्                                 | २३५     |
| ४२       |         | द्वि चत्वारिंशत् वीरहनुमन्माला मन्त्र प्रभाव कथनम् | २३९     |
| ४३       |         | त्रिचत्वारिंशत् हनुमद्भक्त कथनम्                   | २४५     |
| ४४       |         | चतुश्चत्वारिंशत् मैरावण मायाप्रकरणम्               | २५२     |
| ४५       |         | पञ्चचत्वारिंशत् हनुमत्पाताल लङ्का प्रवेश कथनम्     | २५९     |
| ४६       |         | षट्चत्वारिंशत् " " "                               | २६७     |
| ४७       |         | सप्तचत्वारिंशत् मैरावण बधोपाख्यानम्                | २७५     |
|          |         | नीलमेघ स्तुतिः                                     | २८१     |
|          |         | आञ्जनेय मङ्गल श्लोकाः                              | २८२     |
| ४८       |         | अष्टाचत्वारिंशत् वैनतेय गर्वापहरण कथनम्            | २८४     |
| ४९       |         | एकोन पञ्चाशत् हनुमत्पूजा साधन प्रकाश कथनम्         | २९३     |
| ५०       |         | पञ्चाशत् भीमसेन चरित्र कथनम्                       | २९५     |
| ५१       |         | एक पञ्चाशत् पुरुषमृगाहरणोपाय कथनम्                 | ३०१     |
| ५२       |         | द्वि पञ्चाशत् हनुमन्मानसिक पूजाकथनम्               | ३०६     |
| ५३       |         | त्रिपञ्चाशत् विश्वरूप दर्शनम्                      | ३११     |
| ५४       |         | चतुः पञ्चाशत् भविष्यद्ब्रह्मता प्रभावकथनम्         | ३१६     |
| ५५       |         | पञ्चपञ्चाशत् जपमाला लक्षणम्                        | ३२२     |
| ५६       |         | षट्पञ्चाशत् स्वप्नहनुमन्मन्त्रप्रभाव वर्णनम्       | ३३१     |
| ५७       |         | सप्त पञ्चाशत् मन्त्र संस्कार कथनम्                 | ३३८     |
| ५८       |         | अष्ट पञ्चाशत् हनुमच्चक्रध्यान प्रकार कथनम्         | ३४२     |

| क्र. सं. | पटल सं.      | विषयः  | पुट सं. |
|----------|--------------|--|---------|
| ५९       | एकोन षष्टिः  | आञ्जनेय श्रीविद्या; मन्त्राणाम्<br>जाताशौच मृताशौच लक्षणम् | ३४६     |
| ६०       | षष्टिः       | अवतार कथनम्  | ३५०     |
| ६१       | एकषष्टिः     | मुद्रा लक्षणम्   | ३५३     |
| ६२       | द्विषष्टिः   | हनुमद्विग्रह लक्षणम्                                       | ३५६     |
| ६३       | त्रि षष्टिः  | होम प्रकरणम्   | ३६०     |
| ६४       | चतुष्षष्टिः  | राजाभिषेक कथनम्  | ३६६     |
| ६५       | पंच षष्टिः   | अग्नि स्तंभन ब्रह्मप्रयोगादि कथनम्                         | ३७०     |
| ६६       | षट्षष्टिः    | मन्त्रस्वरूप आपदुद्धारक स्तोत्रकथनम्                       | ३७३     |
| ६७       | सप्तषष्टिः   | नित्यकर्म विधि कथनम्                                       | ३७८     |
| ६८       | अष्टषष्टिः   | चक्र लक्षण कथनम्   | ३८३     |
| ६९       | एकोन सप्ततिः | कर्माचरण विधानम्   | ३८७     |
| ७०       | सप्ततिः      | हनुमत्तत्त्व कथनम्   | ३८९     |
| ७१       | एकसप्ततिः    | नवखण्ड हनुमन्मन्त्र प्रभावकथनम्                            | ३९४     |
| ७२       | द्विसप्ततिः  | स्तोत्रप्रकार कथनम्  | ४००     |



## उत्तर संहिता विषय सूची

| क्र. सं. | पटल सं.      | विषयः   | पुट सं. |
|----------|--------------|---|---------|
| ७३       | त्रिसप्तति   | श्री पञ्चमुख हनुमत् हृदयम्  | १       |
| ७४       | चतुस्रसप्तति | हनुमत्पंजर कथनम्  | ४       |
| ७५       | पंचसप्तति    | श्री हनुमदष्टोत्तर शतनामस्तोत्रम्   | १०      |
| ७६       | षट्सप्तति    | श्री वानरगीता   | १३      |
| ७७       | सप्तसप्तति   | हनुमज्जयति कथनम्  | १९      |
| ७८       | अष्ट सप्तति  | कवचयन्त्र प्रभाव कथनम्  | २५      |
| ७९       | एकोनाशीति    | हनुमत्स्तोत्र रूपनाम कथनम्  | ३२      |
| ८०       | अशीति        | संतानहनुमन्मन्त्र प्रभाव प्रयोगकथनम्  | ३६      |
| ८१       | एकाशीति      | अष्टोत्तर शत नाम कथनम्  | ४३      |
| ८२       | द्व्यशीति    | श्री हनुमज्जन्म कथनम्   | ४९      |
| ८३       | त्र्यशीति    | पञ्चरत्न प्रभाव कथनम्   | ५२      |
| ८४       | चतुरशीति     | हनुमद्दीप विधान प्रकार कथनम्  | ५७      |
| ८५       | पञ्चाशीति    | हनुमद्वादश माला मन्त्र कथनम्  | ६२      |
| ८६       | षडशीति       | मन्त्रसाधन कथनम्  | ६८      |
| ८७       | सप्ताशीति    | वशिष्ठ महर्षिप्रोक्त<br>श्री हनुमत्कवचम्  | ७६      |
| ८८       | अष्टाशीति    | श्रीरामप्रोक्त मुख्य सहस्रनामस्तोत्रम्  | ९२      |
| ८९       | एकोनवति      |  अनुपलब्धः |         |
| ९०       | नवति         | रोगकृत्रिमभूतोच्चाटन<br>मालामन्त्रकथनम्   | १०६     |
| ९१       | एकनवति       | उद्दण्ड हनुमन्मन्त्र प्रभाव कथनम्   | ११०     |

| क्र. सं. | पटल सं.      | विषयः  | पुट सं.    |
|----------|--------------|--|------------|
| ९२       | द्विनवति     | श्री हनुमत् स्तवराजः<br>आञ्जनेयाष्टकम्                                 | ११३<br>११६ |
| ९३       | त्रिनवति     | श्री हनुमत्कवचम्   | ११७        |
| ९४       | चतुर्नवति    | श्री हनुमदष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्                                      | १२२        |
| ९५       | पञ्चनवति     | श्रीरामप्रोक्तं हनुमदष्टोत्तर<br>शतनामस्तोत्रम्                        | १३०        |
| ९६       | षण्णवति      | शृङ्खलाबन्ध मोक्षन मन्त्रकथनम्   | १३३        |
| ९७       | सप्तनवति     | श्री हनुमत्पताक प्रभाव कथनम्   | १३६        |
| ९८       | अष्टनवति     | पञ्चमन्त्र कथनम्   | १४१        |
| ९९       | एकोनशत       | नित्यध्यान प्रकार कथनम्  | १४६        |
| १००      | शत           | रहस्यत्रय कथनम्  | १४९        |
| १०१      | एकोत्तरशत    | कृष्णागसुविग्रह पञ्चाक्षरी -<br>द्वादशाक्षरी प्रभाव कथनम्              | १५३        |
| १०२      | द्विरुत्तरशत | जपविधान कथनम्  | १५९        |
| १०३      | त्रिरुत्तरशत | स्तोत्राष्टकम्<br>भीषण हनुमन्त उग्रहनुमन्माला -<br>मन्त्र प्रभाव कथनम् | १६०<br>१६६ |
| १०४      | चतुरुत्तरशत  | प्रसूतिविषय मालामन्त्र कथनम्   | १६९        |
| १०५      | पञ्चोत्तरशत  | शृङ्खलाबन्ध मोक्षनमालामन्त्रकथनम्                                      | १७४        |
| १०६      | षडुत्तरशत    | त्रयोदशाक्षरी प्रभाव कथनम्   | १७७        |
| १०७      | सप्तोत्तरशत  | एकादश प्रयोगकथनम्  | १८३        |
| १०८      | अष्टोत्तरशत  | प्रेतासन हनुमत्प्रभाव कथनम्  | १८७        |
| १०९      | नवोत्तरशत    | सर्पिड्यैकाक्षर विद्याधानु-<br>चरित्रकथनम्                             | १९०        |

| क्र. सं. | पटल सं.            | विषयः                                  | पुट सं. |
|----------|--------------------|--|---------|
| ११०      | दशोत्तरशत          | नीलाद्रि प्रभाव कथनम्                  | १९५     |
| १११      | एकादशोत्तरशत       | रामदासत्व प्रकारकथनम्                  | २०२     |
| ११२      | द्वादशोत्तरशत      | विश्वरूप कथनम्                         | २११     |
| ११३      | त्रयोदशोत्तरशत     | मृत संजीविनी विद्याकथनम्               | २१८     |
| ११४      | चतुर्दशोत्तरशत     | " " "                                  | २२३     |
| ११५      | पञ्चदशोत्तरशत      | शृङ्खलाबद्धमोचन प्रयोगकथनम्            | २३१     |
| ११६      | षोडशोत्तरशत        | कालकूट विषहर हनुमन्मन्त्र प्रभाव कथनम् | २३४     |
| ११७      | सप्तदशोत्तरशत      | मन्त्र सिद्धि कथनम्                    | २३९     |
| ११८      | अष्टादशोत्तरशत     | हुंकारहनुमन्मन्त्र प्रभावकथनम्         | २४३     |
| ११९      | एकोनविंशत्युत्तरशत | हुंकार हनुमन्मन्त्रोद्धारकथनम्         | २५१     |
| १२०      | विंशत्युत्तरशत     | पञ्चश्वेत प्रभाव कथनम्                 | २६०     |





मातृदेवो भव

पितृदेवो भव



श्लो॥ ईदृग्देहप्रदातारौ

भक्त्या प्रत्यक्ष दैवते

नमामि सीतारामांवा

लक्ष्मीनारायणाक्षयौ ॥



आचार्यदेवो भव



श्लो॥ वेदमन्त्रागमादिज्ञं

पालपर्यन्वयोद्भवं

गुरुं च सुमुखं पूज्यं

वन्दे सुखवधातिनमू ॥

श्रीराम — जय हनुमन्



# श्री पराशर संहिता

श्री आंजनेय चरितम्

प्रथम पटलः

मन्त्रोपदेश लक्षणम्

- श्लो॥ श्री जानकीपतिं रामं - भ्रातृभिर्लक्ष्मणादिभिः ।  
 सहितं परमं वन्दे - रत्नसिंहासने स्थितम् ॥ १
- एकदा सुखमासीनं - पराशर महामुनिम्  
 मैत्रे यः परिपप्रच्छ - तपोनिधि मकल्मषम् ॥ २
- भगवन्योगिनां श्रेष्ठ! पराशर महामते  
 किञ्चि द्विज्ञातु कामोऽस्मि - तन्ममानुग्रहं कुरु ॥ ३
- प्राप्तं कलियुगं घोर - मोहमाया समाकुलम्  
 अधर्मानृत सयुक्तं - दारिद्र्यव्याधि पीडितम् ॥ ४

- तस्मिन्कलियुगे घोरे - किं सेव्यं शिवमिच्छताम्  
पूर्वकर्म विपाकेन - ये नराः दुःखभागिनः ॥ ५
- तेषां दुःखाभिभूतानां - किं कर्तव्यं कृपालुभिः  
दस्युप्राया स्सदा भूपा - स्साधवो विपदान्विताः ॥ ६
- पीडिताः कलि दारिद्र्या - द्व्याधिभिश्चापरे जनाः  
किं पथ्य किं प्रजप्तव्य - सद्यो विजयकारकम् ॥ ७
- संसार तारकं किं वा - भोग स्वर्गपिवर्गदम्  
कस्मादुत्तीर्य ते पार - सद्य आपत्समुद्रतः ॥ ८
- किं मत्र बहुनोक्तेन - सद्य स्सकल सिद्धिदम्  
शिष्यं मां कृपया वीक्ष्य - वद सारं कृपानिधे! ९
- एतत्पृष्ठं त्वया विद्धि - लोकानां मुपकारकम्  
घोरं कलियुगं सव - मधमनृत संकुलम् ॥ १०
- वेदशास्त्र पुराणौघ - सारभूतार्थ संग्रहम्  
सद्य स्सिद्धिकरं वक्ष्ये - शृणुष्व सुमना भव ॥ ११
- तीर्थयात्रा प्रसगेन - सरयूतीर मागतम्  
मां वीक्ष्य कृपया साक्षा - द्वसिष्ठोऽस्मत्पितामहः ॥ १२
- उपादिदेश विद्यां मे - सद्यस्सिद्धि विधायिनीम् १३
- शैव वैष्णव शाक्तार्क - गाणापत्येन्दु संभवाः  
न शीघ्र सिद्धिदाः प्रोक्ता - श्रिरकाल फलप्रदाः ॥ १४
- लक्ष्मी नारायणी विद्या - भवानी शंकरात्मिका  
सीताराम महा विद्या - पंचवक्त्र हनूमतः ॥ १५
- विद्या चतुर्था संप्रोक्ता - नृसिंहानुष्टुभाभिदा  
ब्रह्मास्त्र विद्या षष्ठीस्या - दष्टार्णा मास्तेःपरा ॥ १६

- साम्राज्य लक्ष्मी स्त्वपरा - महागणपते रथ  
महासौराभिधाविद्या - दक्षिणाकालिका परा  
चिंतामणि महाविद्या - द्वादशी परिकीर्तिता १७
- एता द्वादश विद्यास्युः - मन्त्र साम्राज्य ईरिताः  
एतास्वपि महाविद्याश्शीघ्रसिद्धिप्रदाःशृणु ॥ १८
- दक्षिणा कालिका विद्या - पुरश्चरणतःपरम्  
अनाचारे णैकरात्रौ - सिद्धिदा चिरसाधनात् ॥ १९
- अष्टाख्या मारुतेः प्रोक्ता - ततो प्यचिरसिद्धिदा  
पंचाशदक्षराण्यत्रानुलोम प्रतिलोमतः ॥ २०
- विशिष्य मालया जप्या - गुरुं संतोष्य यत्नतः  
गृहीत्वा गुरुसान्निध्या - द्बगला परमेश्वरी ॥ २१
- प्रजप्य सिद्धिदा प्रोक्ता विद्या ब्रह्मास्त्र संज्ञिका  
अनुष्टुबाख्यां नृहरे - स्ततोप्यचिर सिद्धिदा । २२
- ततोपि पंचवक्त्रस्य - मारुते जगदीशितुः  
विद्या सिद्धिकरी शीघ्रं - गुर्वनुग्रहतो मुने! २३
- चुलुकोदकवत्पीता - स्सागरा स्सप्तयोगिना  
अगस्त्येन पुरा जप्त्वा - विद्यामेनां हनूमतः ॥ २४
- पार्थस्य जय सामर्थ्यं - भीमस्यारिनिबर्हणम्  
अस्या एव प्रभावेन - सत्यं सत्यं वदा म्यहम् ॥ २५
- श्रीरामानुग्रहा देनां - विद्यांप्राप्यं विभीषणः  
अचलां श्रिय मासाद्य - लंकाराज्ये वस त्यसौ ॥ २६
- अनया सदृशी विद्या - नास्ति नास्तीति मे मतिः  
प्रवृत्यर्थं न प्रशंसा - क्रियते सत्यमेवहि ॥ २७

- विजयो बहु सन्मानं - राजवश्य मनुत्तमम्  
स्त्री वश्यं जनवश्य च - महालक्ष्मी रचंचला ॥ २८
- धर्मार्थं काममोक्षाश्च - निवृत्तिः सकलापदाम्  
शत्रूणां मपि सर्वेषां - निग्रहानुग्रहा स्सताम् ॥ २९
- वाक्सिद्धिः पुत्रसंपत्ति - भोगा अष्टविधा अपि  
यद्य दिष्टतमं लोके - तत्सिध्यति न संशयः ॥ ३०
- गुरु संतोषत सिद्धि - इशीघ्रमेव भविष्यति  
एकाक्षर प्रदातारं - यो गुरुं नाभिमन्यते ॥ ३१
- स श्वयोनिशतं गत्वा - चडालत्व मयाप्नुयात्  
गुरुं हुंकृत्य तु कृत्य - उल्लंघ्याज्ञां गुरोरपि ॥ ३२
- अरण्ये निर्जलेदेशे भवति ब्रह्मराक्षसः  
दरिद्रो गुरु शुश्रूषां - वत्सरत्नं माचरन्  
विद्यां लब्ध्वा महासिद्धि - मयाप्नोति न संशयः ॥ ३३
- यत्किञ्चिद्धनवांश्चापि - वस्त्रालंकरणादिभिः  
कलत्रं प्रीणयित्वा तं - संतोष्य श्रीगुरुं विशुम्  
गुरुत्वा त्सिद्धि माप्नोति - नान्यथा व्रतकोटिभिः ॥ ३४
- गुरु वाक्येन मन्त्राणां - पुरश्चर्यादिनापि च  
संतोषः जायते तस्मा - दित्याह भगवान्निशवः ॥ ३५
- मन्त्रोपदेश समये - प्राञ्जलि शिष्यको मुने!  
स्वामिन्! गुरो! महाप्राज्ञ! यावज्जीवं महाविभो! ॥ ३६
- भवच्चरण कैकर्यं - करो म्याज्ञां कुरुष्व मे  
इति स्वभाष योच्चार्यं - प्रदत्वा गुरुदक्षिणाम् ॥ ३७
- विद्यासिद्धि मयाप्नोति - नान्यथा व्रत कोटिभिः  
मन्त्रोपदेशकाले तु - गुरु रिष्टप्रदं मनुम् ॥ ३८

- अष्टोत्तरशतं चैवा - प्यष्टाविंशति मेव वा  
जप्त्वा शिष्यस्य शिरसि - हस्तं निक्षिप्य दक्षिणम् ॥ ३९
- दक्षिणे कर्णमूले तु - मूलमंत्रं वदे न्मुने!  
वीर्यशिष्यै च मन्त्रस्य - जपं कुर्याच्च देशिकः ॥ ४०
- अष्टोत्तरशतावृत्या - जपेत्संगुद्धमानसः  
सर्वासामपि विद्याना - मयं साधारणक्रमः ॥ ४१
- विशेषेण महाविद्या - पंचवक्त्र हनूमतः  
गुरुसतोषतो लब्धा - साम्राज्यं प्रददाति हि ॥ ४२
- सहस्रशिरसा साक्षाच्छेषस्याऽपि महामुने!  
न शक्यतेऽस्य माहात्म्यं - वक्तुं वर्षशतैरपि ॥ ४३

इति श्री पराशरसंहिताया पञ्चमुख हनुमन्मन्त्र विवरणे  
पराशर मंत्रेय सवादे मन्त्रोपदेशलक्षणं नाम  
प्रथमपटलः



## श्री पराशर संहिता

द्वितीय पटलः

हनुमन्मंत्रोद्धारणम्

श्री पराशरः

- मंत्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि - शृणुष्वैकाग्रमानसः  
यस्य विज्ञानमात्रेण - विजयस्स्या न्तृणां सदा ॥ १
- आदौ प्रणव मुच्चार्थ - हरिमर्कट शब्दतः  
मर्कटाय पदं वह्नि - जायां तु प्रोच्चरेत्ततः ॥ २

- द्वादशाक्षर संयुक्तो - मन्त्रोऽयं समुदीरितः  
ओं नमः पंचवदनाय - पूर्ववत्कपिशब्दतः ॥ ३
- मुखे सकल शब्दं च शत्रु संहरणे त्यथ  
ततो यकार मुच्चार्य - ह्रौं बीजं तु ततः परम्  
महाबलायेति पदं - वह्निजायां समुच्चरेत् ॥ ४
- त्रयस्त्रिंशद्वर्णरूपो - मन्त्रोऽय मिति कथ्यते ॥ ५
- ओं नमः पंचवदनाय - दक्षिणस्य मुखे पदम्  
करालाद्य नृसिंहाय - क्षरौं बीजं तदनन्तरम् ॥ ६
- सकलेतिपद चोक्त्वा - भूत प्रमथनाय च  
वह्निजायां समुच्चार्य - विद्यैषा कामदायिनी ॥ ७
- चतुस्त्रिंशद्वर्णरूपो - मन्त्रोऽय मिति वक्ष्यते ॥ ८
- ओं नमः पंच वदनाय - पश्चिमस्य मुखे पदम्  
वीराद्यगरुडायेति - क्ष्म्यौं बीजं तदनन्तरम् ॥ ९
- सकलेति पदंचोक्त्वा - विषेति पदमुच्चरेत्  
हराय पद मुच्चार्य - वह्निजाया मतः परम् ॥ १०
- एकत्रिंशद्वर्णरूपो - मन्त्रोऽय मिति कथ्यते ॥ ११
- ओं नमः पंच वदनाय - उत्तरस्य मुखे पदम्  
आदिवराहायपदं ग्लौं बीजं तदनन्तरम् ॥ १२
- सकलेति पदंचोक्त्वा - संपत्कर पदं ततः  
ततो यकार मुच्चार्य वह्निजायां समुच्चरेत् ॥ १३
- एक त्रिंशद्वर्णरूपो - मन्त्रोऽयमिति कथ्यते ॥ १४
- ओं नमः पंच वदनाय - उच्चरे च्च ततः परम्  
पद मूर्ध्वमुखे पश्चाद्दय - ग्रीवाय शब्दतः ॥ १५

|  |    |
|--|----|
| सर्वोत्कृष्टं महागोप्यं - सहैवीजं तदनन्तरम्<br>सकलेति जनेत्युक्त्वा - चतुर्ध्वन्त समन्वितम् ॥                                    | १६ |
| वशीकरण शब्द च - वह्निजायां समुच्चरेत्<br>द्वार्त्रिशद्वर्णं मन्त्रोऽय - मागमज्ञैश्च कथ्यते ॥                                     | १७ |
| प्रणवं हृदयं पश्चा - त्ततो भगवते पदम्<br>आंजनेयाय शब्द च चतुर्ध्वन्त समन्वितम् ॥   | १८ |
| महाबल पद पश्चात्ततो हनुमते पदम्<br>उच्चरे द्वह्निदयिता - विद्यैषा समुदीरिता ।  | १९ |
| त्रयोविंशत्यक्षरोयं - मन्त्रइत्युच्यते बुधैः<br>सप्तमन्त्रस्थवर्णानां - षण्णव त्युत्तरामुने                                      | २० |
| शतसंख्येत्यागमज्ञैः पण्डितैः जानीयते ॥<br>सप्तमन्त्रात्मिका विद्या - पंचवक्त्र हनुमतः<br>कलौ कलुषचित्तानां - प्रत्यक्षफलदानृता ॥ | २१ |
| साम्राज्ञी सर्व विद्यानां - महा सिंहासनेश्वरी<br>दृष्टादृष्टफलंप्राप्तं - सप्तकोटि मनुष्वपि ॥                                    | २२ |
| अनया सदृशी विद्या - त्रिषुलोकेषु दुर्लभा<br>न तिथि न च नक्षत्र न योगः करणमेव च ॥   | २३ |
| न वार मापदो दोषा - विद्याया ग्रहणेमुने<br>न वेदैर्नागमैश्शास्त्रै - न पुराणैस्सु विस्तरैः ॥                                      | २४ |
| ज्ञातुं शक्या हि विद्यैषा - श्रीमद्गुरुमुखं विना<br>गुरु कारुण्यतो लब्ध्वा - सर्वं साम्राज्यदायिनी ॥                             | २५ |
| यथा श्रीगुरुकारुण्या - ल्लभ्यते श्रीहनूमतः ।<br>विद्या तथैव योगोय मर्धोदय इतिस्मृतः ॥  | २६ |
|  | २७ |



- सत्यं सत्यं पुनस्सत्यं भुज मुद्धृत्य वक्ष्यते ।  
यस्यास्ति गुरुकारुण्यं यावज्जीवं महामुने ॥ २८
- स एव धन्यो लोकेषु - कृतकृत्य स्सभाग्यवान्  
दरिद्रो व्याधितो वापि - अंधो वा वामनोपि वा ॥ २९
- गुरुरेव परंदैवं गुरुरेव परंतपः  
गुरुरेव परंध्यानं न गुरो रधिकं भुवि ॥ ३०
- मनो स्सदाशिव ऋषिः छंदोऽमृतविराड्गतः  
पंचानन विराड्रूपी हनुमा न्देवता भवेत् ॥ ३१
- ह्लांबीजं चैव ह्रींशक्तिः ह्रूंकीलक मितीरितम्  
षडग माचरे त्पश्चात् षड्दीर्घं युत मायया ॥ ३२
- ध्यानम् -
- पंचास्य मच्युत मनेक विचित्रवीर्यं  
शंखापिचक्र विधृतं कपिराजवर्यं  
पीतांबरदि मकुटै रूपशोभितांगं  
पिंगाक्षमध्य मनिशं मनसा स्मरामि ॥ ३३
- मर्कटेश! महोत्साह - सर्वशोक विनाशन  
शत्रून् संहर मां रक्ष - श्रियं दापय मेऽच्युत ॥ ३४
- इति ध्यात्वा जपे न्मंत्रं - प्रत्यक्षं नियतः पुमान्  
सर्वा न्कामा नवाप्नोति - नात्र कार्या विचारणा ॥ ३५
- अन्यं मंत्रं प्रवक्ष्यामि - पंचवक्त्रहनूमतः  
शृणु मंत्रेय! विभ्रेद्र! -गोप्य लोकोपकारकम् ॥ ३६
- आदौ प्रणव मुच्चार्यं - ह्रौंबीजं तदनन्तरम्  
क्रौंबीजं तत उच्चार्यं - क्ष्र्म्यौंबीजं तदनन्तरम् ॥ ३७

|   |    |
|---|----|
| ततो ग्लौबीज मुच्चार्य - ह् सौबीजं च ततःपरम्<br>महाबलायेति पदं - नमश्शब्दं ततःपरम् ॥   | ३८ |
| पंचवदनाय पदं - ततो हनुमतेपदम्<br>खेखेहुंफट् समुच्चार्य - वह्निजायां समुच्चरेत् ॥  | ३९ |
| त्रिंशद्वर्णं समायुक्त - स्सर्वोत्कृष्टो महामुने!<br>ध्यानमात्रं पृथक्चोक्त्वा - तत्सर्वं पूर्वमन्त्रवत् ॥  | ४० |
| वंदे वानर नारसिंह खगराट्क्रोडाश्वक्त्रांचितम्<br>नानालंकरणं त्रिपंचनयन देदीप्यमानं रुचा<br>हस्ताब्जैरसि खेट पुस्तक सुधाकुम्भां कुशाद्री न्हलम्<br>खट्वांगं फणिभूरुह च दधत सर्वारि गर्वापहम् ॥ | ४१ |
| इति श्री पराशरसंहितायां पंचमुख हनुमन्मन्त्र विवरणे<br>पराशर मैत्रेय संवादे पंचमुख हनुमन्मन्त्रो द्वारण<br>कथनं नाम द्वितीयपटलः  |    |



## श्री पराशर संहिता

### तृतीय पटलः

काम्यसाधनम्

१) पराशरः —

|   |   |
|---|---|
| ग्री ॥ चक्राब्जकर्णिकावासं - कालाग्नि सदृश प्रभम्<br>चतुर्बाहुं विवृत्तास्यं - चतुश्चक्रधरं हरिम् ॥ | १ |
| योगपट्ट पिनद्धांगं - त्रिनेत्रं चोग्र विग्रहम्<br>ध्याये त्समस्त दोषघ्न - मशोकद्रुम मूलगम् ॥        | २ |

- अथात स्संप्रवक्ष्यामि - मंत्रसाधन मुत्तमम्  
यस्य विज्ञान मात्रेण - भवे त्साक्षा द्विवस्पतिः ॥ ३
- कृते त्वेकसहस्रं स्या - तत्रेतायां त्रिसहस्रकम्  
द्वापरे पंचसाहस्रं - प्रजपे दयुतं कलौ ॥ ४
- पर्वताग्रे नदीतीरे - श्रीगुरोस्सन्निधौ तु वा  
गोष्ठे वृन्दावने वा पि - नदीतीरे विशेषतः ॥ ५
- गुरो रनुज्ञया मंत्रं - प्रजपे द्विजितेन्द्रियः  
सिद्धिनानेन मंत्रेण - काम्य कर्माणि साधयेत् ॥ ६
- पूर्णानुग्रहतो लब्ध्वा - श्रीगुरो देवरूपिणः  
अष्टोत्तरशत जप्त्वा - द्वादशाहं जितेन्द्रियः ॥ ७
- सिद्धिं ददाति महतीं - पुरश्चर्या क्रियोद्भवाम्  
अथ काम्यानि कर्माणि - प्रवक्ष्यामि समानतः ॥ ८
- इमां श्रीहनुम द्विद्या - मष्टाविंशतिधा सदा  
प्रजपे त्रिंशति सायं वा - मध्याह्ने प्रातरेव वा ॥ ९
- स आपत्संघ निर्मुक्तः - सर्व दुष्कृत वर्जितः  
विजयी सततं भूत्वा - राज विद्वत्सभासु च ॥ १०
- संस्तंभयति शत्रूणां - सततिं दुस्तरा मपि  
दीर्घायुष्य मथारोग्य - मचलां श्रियमुत्तमाम् ॥ ११
- प्राप्नोति सुमहत्तेजः - दुर्लभं परमं यशः  
सर्वाभीष्ट मवाप्नोति - त्रिमासानंतरं ध्रुवम् ॥ १२
- मंदवारे जपेन्मन्त्र - मष्टोत्तर शतं बुधः  
हुने द्वादशधा वल्लौ - गव्यमाज्यं सुशोभनम् ॥ १३
- अपूपा न्वटुका न्पच - प्रीणयेद्भोजनेन च  
षण्मासत स्सलभते - महान् लक्ष्मी मचचलाम् ॥ १४

- मरणांतं वशीकुर्यात् - राज स्त्री पुरुषादिकम्  
विजित्य सकलान्शत्रू - न्लभते सर्वमनोरथान् ॥ १५
- कारागृहे जपेन्मन्त्रं - त्रिदिना न्मुच्यते बुधः  
त्रिदिना त्रिगलाग्रस्तो - मुच्यतैव न संशयः ॥ १६
- महाराजभये प्राण - संकटे दुर्गमेपि च  
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा - गच्छेद्भूपस्य सन्निधिम् ॥ १७
- दासव त्सततं राजा - सद्यो वश्यो भवे ध्रुवम्  
सुवर्णवेष्टित श्वेत - गुंजामूलेन मुद्रिका  
गुरु संपूज्य गृह्णीयात् - वस्त्रालंकरणादिभिः ॥ १८
- शिखाया मथवा कंठे - करे वामे च दक्षिणे  
धृत्वा कट्यांतु वा विद्यां - स्पृशन्नेत्रां त्रिधा जपेत्  
मनसा श्रीगुरु नत्वा - पश्चा च्छ्रीवायुपुत्रकम् ॥ १९
- राज विद्व त्सभांवाऽपि - यत्र यत्रहि गच्छति  
तत्र स्या द्विजयो लाभः - सन्मानं पौरुषं मुने ॥ २०
- शत्रूणां वाङ्मनस्तंभं - क्षेममायुः पदेपदे  
स लभे त्सकला न्कामा - त्रित्य मेवं समाचरन् ॥ २१
- वैशाखेमासि कृष्णायां - दशमी मंदसंयुता  
पूर्वप्रोष्ठपदा युक्ता - तथा वैधृति संयुता ॥ २२
- तद्दिनं हनुमज्जन्म - दिवसं मुनिपुंगव  
तस्यां संपूज्य रामस्य प्रियभूतं महाबलम् ॥ २३
- गुरुं संतोष्य यत्नेन - वस्त्रालंकरणादिभिः  
शत मष्टोत्तरं जप्त्वा - विद्या मेनां हनूमतः ॥ २४
- हुने द्वादशधा वह्नौ गव्य माज्यं सुशोभनम्  
सद्य स्सिद्धा महाविद्या भवतीयं न संशयः ॥ २५

- जप्त्वाऽयुत मिमां विद्यां - खादिरै रयुतं हुनेत्  
शत्रूणां सुमहद्राष्ट्र - मपि सद्यो दहे द्रवम् ॥ २६
- लंकाया दाहकं ध्याय - न्प्रजप्त्वा दीर्घं मादरात्  
पायसेन हुने दग्नौ - सहस्रं त्रिमधु प्लुतम् ॥ २७
- तस्मिन्नेव दिने शत्रु - राष्ट्रं संदह्यतेऽग्निना  
लक्ष्मणप्राणदातारं - द्रोणशैल स्थितौषधैः ॥ २८
- ध्यात्वायुत मिमां जप्त्वा - दीर्घं मायुष्य मश्नुते  
रात्रौ दिवा च प्रजपे - दष्टाविंशतिधा तथा ॥ २९
- मासे मासे महायोगिन् स्वप्नेतस्यांजनासुतः  
ददाति दर्शनं स्वस्व - गुरु स्तुष्टो भवे ह्यदि ॥ ३०
- प्रसन्ने रामदूतेऽस्य - किं मसाध्यं जगत्त्रये  
ब्राह्मीमुहूर्ते चोत्थाय - स्मृत्वा श्रीगुरु मादरात् ॥ ३१
- अष्टाविंशतिधा विद्यां - जपेत्कालोस्तिचे च्छतम्  
लभते महतीं कीर्ति - मचलां श्रिय मुत्तमम् ॥ ३२
- विजयं राज सन्मानं - सौभाग्यं कांतिमुत्तमम्  
क्षेम मायुष्य मारोग्य - सर्वान्कामा न्समश्नुते ॥ ३३
- शत मष्टोत्तरं यस्तु - जपेद्ब्राह्मीमुहूर्तके  
तस्य श्री हनुमा न्स्वप्ने - पक्षे पक्षे हि दृश्यते ॥ ३४
- धनधान्य समायुक्तो - गज वाजि रथाकुलः  
एकवर्षे त्रिभिर्वर्षे - रथ वा जायते ध्रुवम् ॥ ३५
- शत्रुसंधा न्विनिर्जित्य - आंजनेय प्रसादतः  
दृष्ट्वा विषं नाशयति - ज्वरां श्चातुर्थिका नपि ॥ ३६
- दृष्ट्वै वाकर्षयेन्नारी - नृपकन्याश्च दुर्लभाः  
मासद्वयात्परं भूपान् - दृष्ट्वै वाकर्षय त्यसौ ॥ ३७

- वत्सरत्रयत स्तस्य - खेचरत्वं प्रजायते  
जरामरण शून्योवै - स ज्ञानाशुभवेध्रुवम् ॥ ३८
- संशयां मा.कुरुष्वत्र - संशयात्मा विनश्यति  
वैशाखे मास्यमावास्य - दिने ब्रह्मादिभिस्सुरैः ॥ ३९
- सूर्य राहु जिब्रुक्षंतं - दृष्ट्वा शक्रेण वज्रिणा  
वज्रप्रहार निहतो - हनु रेकशिलातले ॥ ४०
- स्वपुत्र पतितं दृष्ट्वा - वायुः क्रोपसमन्वितः  
न सचचार ते नैत - न्मृतप्राय मभूज्जगत् ॥ ४१
- तदागत्य हरिब्रह्मा - शक्राद्यै रमराधिपैः  
वराः सहस्रशोदत्ता - स्ते नासौ वायुनन्दनः ॥ ४२
- अनर्थत महावीर - स्सर्वकाम समन्वितः  
तस्मा दमादिने देवम् - समभ्यर्च्यजासुतम् ॥ ४३
- फलपुष्पोपहारैश्च - विजयाख्यं जगत्पतिम्  
अष्टोत्तरशतंजप्त्वा - हुनेद्वादशधा घृतम् ॥ ४४
- गुरुं संपूज्य यत्नेन - दत्त्वा च गुरुदक्षिणाम्  
मंत्रसिद्धि मवाप्नोति - नात्रकार्यं विचारणा ॥ ४५
- मार्गशीर्षे त्रयोदश्यां - शुक्लायां जनकात्मजा  
दृष्ट्वा देवीजगन्माता - महावीरेण धीमता ॥ ४६
- तदा तथा वरो दत्तो - य स्त्वा मभ्यर्चयिष्यति  
दुःखसंध निवृत्तिश्च - संपदादि मनोरथान् ॥ ४७
- अवाप्नोति न संदेहः - इति दे व्यनुशासनम्  
तस्मा तस्मिन्दिनेऽभ्यर्च्य - वायुपुत्रं जगत्प्रभुम् ॥ ४८
- गुरो रनुज्ञया मंत्रं - त्रिशतं प्रजपे च्छुचिः  
सिध्यत्येव हि मंत्रोऽस्य - नात्र कार्यं विचारणा ॥ ४९

- नित्यं द्विवारं प्रजपे - दष्टाविंशति मादरात्  
रात्रौ दिवा च पुरुषो - महाभाग्यनिधि भवेत् ॥ ५०
- मासार्थं मंडलार्थं वा - स्वप्ने देवं प्रपश्यति  
असाध्य मपि देवानां - द्वीपांतरगतं च यत्  
लभते सकलाभीष्टं - क्षिप्रमेव न संशयः ॥ ५१
- अष्टोत्तरशतं जप्त्वा - रणं गच्छति यः पुमान्  
विचेतना न्विमूढांश्च - शस्त्रास्त्र कृत निर्जितान् ॥ ५२
- मायासैन्य परित्रस्ता - न्कांदिशीकान् करोति हि  
विजित्य शत्रु संघाता - न्प्राप्नोति विजयं ध्रुवम् ॥ ५३
- भानुवारे श्वेतगुंजा - मूल मुधुत्य यत्नतः ॥ ५४
- सुवर्णवेष्टित श्वेत - गुंजामूलेन मुद्रिकाम्  
कृत्वाशेषतु तन्मूलं - मंत्रेणानेन पंचथा ॥ ५५
- कृत्वाभिमन्त्रित नित्यं - तांबूलेन ततः परम्  
भक्षयित्वा ततो गच्छे - ज्जनवश्यं महाद्भुतम् ॥ ५६
- शुभेदिने शुभलग्ने - गुरुं सपूज्य यत्नतः  
यद्वा व्रतदिने श्वेक - दिवसे वा विशेषतः ॥ ५७
- सिंहासनेश्वरीविद्यां - पंचवक्त्र हनूमतः  
गुरोस्सकाशात्संप्राप्य - गृह्णीयान्मुद्रिकां शुभाम् ॥ ५८
- धृत्वा तन्मुद्रिकां नित्यं - महाविद्या मिमां जपेत्  
अष्टोत्तरशतं वापि - अष्टाविंशति मेव वा ॥ ५९
- विपदोऽस्य विनश्यन्ति - लोकवश्यं महाद्भुतम्  
जनवश्यं राजवस्य - मंगनावस्य मुत्तमम् ॥ ६०
- यावज्जीवं न संदेहं - लभे त्सकलसम्पदः  
सर्वत्र विजयी भूत्वा - विजित्य सकला नरीन् ॥ ६१

|   |    |
|---|----|
| प्राप्तोति महदैश्वर्यं - मचंचल मनुत्तमम्<br>हनूमतः प्रसादेन - सततं विजयी भवेत् ॥                        | ६२ |
| ग्रहणे स्पर्शं मारभ्य - मोक्षकालांत मादरात्<br>जपे दमं महामंत्रं - तद्दशांशं हुनेद्धृतम् ॥              | ६३ |
| तर्पये तद्दशांशेन - वटून्द्वादश भोजयेत्<br>सिद्धमंत्रोभवे लक्ष्मीः - कीर्तिर्भाग्यनिधि स्सदा ॥          | ६४ |
| स्वर्णं संवेष्टित श्वेत - गुंजामूलेन मुद्रिकाम्<br>सदा धृत्वाकरे विद्यां - प्राप्य श्रीगुर्वनुग्रहात् ॥ | ६५ |
| त्रिशतं प्रजपेद्यस्तु - षण्मासं विजितेंद्रियः<br>अधश्शायी ब्रह्मचारी - सह्यभ्यर्च्यं जगत्पतिस् ॥        | ६६ |
| साधकेन्द्रो हनूमतं - चक्षुषा पश्यति ध्रुवम्<br>अणिमादि गुणैश्चर्यं - ददात्यस्मै न सशयः                  | ६७ |
| लक्षमेकं जपित्वा यो - दशांशं कमलैर्हुनेत्<br>निधय शंखपद्माद्या - स्तं सेवते न सशयः ॥                    | ६८ |
| पर्वताग्रे जपेद्यस्तु - लक्षत्रय मतंद्रितः<br>अजरामरणो भूत्वा - पंचविंशति वार्षिकः ॥                    | ६९ |
| भेतालसिद्धि मासाद्य - श्वाटिकांजन पादुकाम्<br>खेचरः कामरूपी च - विजयी सततं भवेत् ॥                      | ७० |
| अथश्शायी ब्रह्मचारी - प्रजपेत्पंच लक्षकम्<br>अजरामरणो भूत्वा - सदा विंशति वार्षिकः ॥                    | ७१ |
| कल्पायुष्यं समासाद्य - विमान मधिरोहति<br>रमते दिव्यकन्याभिः - नंदनादि वनेषु च ॥                         | ७२ |
| अनेनैव शरीरेण - साक्षात्कन्दप कांतिमान्<br>अव्याहताज्ञ स्सर्वत्र - मोदते काल मक्षयम् ॥                  | ७३ |



|  |    |
|--|----|
| किमुक्ते नाथ बहुना - विद्येयं सर्वसिधिदा<br>सततं नियतो यस्तु - प्रजपेन्मंत्र मुत्तमम् ॥                  | ७४ |
| अनेनैव शरीरेण - दिव्या न्भोगा नवाप्य च<br>जीवन्मुक्तो न संदेह - स्सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥                | ७५ |
| अष्टाविंशतिधा यस्तु - नित्यं नियमवान् जपेत्<br>स आपत्सागरा स्सर्वा - त्समुत्तीर्णो महीतले ॥              | ७६ |
| विजित्य सकला न्शत्रू - न्परां लक्ष्मी मचंचलाम्<br>दीर्घं मायुष्य मारोग्यं - पुत्रा न्पौत्रा ननुत्तमान् ॥ | ७७ |
| जनवश्यं राजवश्यं - नारीवश्यं तथैव च<br>वाक्सिद्धिं सकला न्कामा - नाप्नो त्यत्र न संशयः ॥                 | ७८ |
| अष्टोत्तर शतं नित्यं - प्रजपे त्रियमेन यः<br>दीर्घायुष्य मधारोग्यं - धनधान्यत्रय श्रियम् ॥               | ७९ |
| अचलां पुत्रपौत्रांश्च - सौभाग्य ममलं शुभम्<br>अवाप्य सकला न्शत्रू - न्जित्वाही न्गरुडो यथा ॥             | ८० |
| महतींसिद्धि माप्नोति - क्षेमं सर्वत्र विंदति<br>अनेनैव शरीरेण - वत्सर त्रयतःपरम् ॥                       | ८१ |
| घटिकात्पादुका द्यष्ट - सिद्धीनां नायको भवेत्<br>द्रव्यापेक्षा यथा तस्य - तिधिसिद्धि स्तथा तदा ॥          | ८२ |
| द्रुष्ट्वैवाकर्षय न्नारीं - नृपकन्याश्च दुर्लभाः<br>सप्तद्वीपस्य पतयोऽ - प्यस्यदासा भवंति हि ॥           | ८३ |
| स्थावरं जगम चाऽपि - कृत्रिम चाऽपि य द्विषं<br>एत त्कर स्पर्शनतः - सद्य एव विनश्यति ॥                     | ८४ |
| चिरायुष्यं समासाद्य - भुंक्तेभोगांश्च दुर्लभान्<br>एकाहिका द्ब्याहिकादि - ज्वरा नपि सुदारुणान्           | ८५ |

|  |    |
|--|----|
| ब्रह्मराक्षस भेताल - भूत प्रेत पिशाचकान्<br>दृष्ट्वै वोच्चाटये त्सद्यो - नात्र कार्याविचारणा   | ८६ |
| किमत्र वहुनोक्तेन - जीवन्मुक्तो भवे ध्रुवम्<br>अस्मि न्कलियुगे घोरे - लोभमाया समाकुले ॥  | ८७ |
| अयमेव परोधर्म - स्त्वदमेव परंतपः<br>इयमेव महाविद्या - इदमेव परंफलम् ॥  | ८८ |
| साधनेषु च सर्वेषु - पूर्णं श्रीगुर्वनुग्रहः<br>अस्तिचे त्सर्वसिद्धि स्या - दन्यथा तिष्फलं भवेत् ॥  | ८९ |
| स एव कृतकृत्य स्या - द्यो गुरौ दृढभक्तिमान्<br>गुरो रभावे तत्पत्नीं - तत्पुत्रं वा प्रतोषयेत्<br>नान्यथा सिद्धि माप्नोति - पुरश्चर्या शतैरपि ॥ | ९० |

इति श्री पराशरसंहितायां हनुमन्मन्त्र विवरणे  
काम्यसाधनं नाम तृतीय पटलः



## श्री पराशर संहिता

### चतुर्थ पटलः

सोमदत्त चरित - नीलकृत हनुमत्स्तोत्रं

त्रेयः -

श्लो ॥ हनुमद्ब्रत मित्युक्तं - पूर्वाध्याये त्वया मुने  
केन चादौ पुराचीर्णं - तत्कलं वद मे विधिम् ॥ १

ति पराशरः -

अत्रानुवर्णयिष्यामि - कथां पापप्रणाशिनीम्  
यां श्रुत्वा मानवो नित्यं - हनुमद्भक्तिमान् भवेत् ॥ २

- सोमदत्तो महानासी - तपुरा सोमकुलोद्भवः  
 राजा परमधर्मज्ञो - बंधुमा ननहंकृतिः ॥ ३
- सत्यवादी सदामौनी - ह्यातिथेयो बहुव्रतः  
 सत्सु पूजां प्रकुर्वाणः - किं नु शत्रुपराक्रमैः ॥ ४
- बुभुजे भुव मव्यग्रः - स रत्नाकरमेखलाम्  
 तेन संपीडिता राज्ञा - समेताः शत्रवः परे ॥ ५
- माहिष्मतीपुरं याताः - तै राहूतो रणेतु सः  
 अक्षौहिणी सहस्रैश्च - ह्ययुतैः करिणां घटैः ॥ ६
- अश्वैः काश्मीरजै स्तैस्तु - लक्षकोटि समन्वितैः  
 संग्रामस्तुमुल स्तस्य - सोमदत्तस्य तै रभूत् ॥ ७
- शवित तोमर खड्गैश्च - भिडिवालै स्तदाश्मभिः  
 यथा दैवासुरं युद्धं - तथाभू त्किनु वर्ण्यते ॥ ८
- परैर्हत बलस्संख्ये - निशि संगृह्य देविकाम्  
 स्त्रियमंतःपुरा तस्मा - त्प्रागा त्गार्थाश्रमं प्रति ॥ ९
- तत्रैव पंचभासास्तु - स्थित्वा शोकसमन्वितः  
 पंगुत्व मपि मूकत्व - मंधत्व मगमन्तूपः ॥ १०
- राज्यभ्रष्टं पतिं धीरा - प्राप्तुकामं पुनः प्रियम्  
 प्रलपंतं मुहुः पुत्रान् - हतान् युद्धे सुदुर्लभान् ॥ ११
- श्रियं राज्यं च भोगं च - समुद्दिश्य पुनः पुनः  
 आश्वासयंती सा देवी - जगौ श्लोक चतुष्टयम् ॥ १२
- धैर्यं विपत्तौ कर्तव्यं - संपत्तौ च क्षमापरा  
 वाचालत्वं सभामध्ये - तद्वै शास्त्र पुरस्सरम् ॥ १३
- विक्रमं युधि कर्तव्यं - स्थिरत्वं स्त्री समीपतः  
 ऐश्वर्यं च तथा क्षांति - भवित इशश्वत्तु भूषुरे ॥ १४
- भवितव्यं भवत्येव - नारिकेलफलांब्रुवत्  
 गंतव्यं गच्छति सदा - गजभुक्त कपित्थवत् ॥ १५

- यद्भावि तद्भवत्येव - यदभावि न तद्भवेत्  
इति निश्चित बुद्धीनां - न चिंता बाधते क्वचित् ॥ १६
- एवं मनीषिणः प्राहु - नीतिशास्त्रविदो नृपः  
मुञ्च शोकं च मोहं च - चिंतां देहविनाशिनीम् ॥ १७
- गार्ग्याश्रमोयं राजेन्द्र - प्रापयिष्ये तदन्तिकम्  
सा दास्यति धर्मात्मा - सर्वा न्कामा न्सुदुर्लभान् ॥ १८
- सांत्वयित्वा ततो वीरं - नृपतिं राष्ट्र वर्जितम्  
अशक्त गमने देवी - विभ्रती निजकंदरे ॥ १९
- प्रापयामास मुदिता - गार्ग्याश्रम सकल्मषं  
पतिं तत्र प्रतिष्ठाप्य - मुनिं नत्वा पुनःपुनः ॥ २०
- कंपमाना तदा साध्वी - पीनोन्नत पयोधरा  
चंद्रानना सुकेशी च - बिंबोष्ठी मञ्जुभाषिणी ॥ २१
- कर्णान्तनयना बाला - चंद्रिका मलिनच्छविः  
देविकादेवि मध्या सा - पंचविंशति वार्षिका ॥ २२
- कोमलांगीतु सा देवी - श्यामला चोत्पलेक्षणा  
मुनिं प्रोवाच धर्मिष्ठा - पाहिपाहीति मे पतिम् ॥ २३
- भगव न्पतिनासार्थ - मागता शत्रुपीडिता  
राज्यभ्रष्टो ह्ययं राजा - त्वामेव शरणं गतः ॥ २४
- मुनि स्तत्र चिरं ध्यात्वा - ध्यानमार्गेण चक्षुषा  
दृष्ट्वा न्सर्वं मेवैत - द्राज्ञ स्तस्य महात्मनः ॥ २५
- उवाच मुनिशार्दूलो - राजानं महिषीसखम्  
१ -
- युवयोः कष्ट मत्युग्रं - सर्वाभावं सु दुस्सहम् ॥ २६
- येनेद मीदृशं प्राप्त - तद्ब्रवीमि हितेऽधुना  
सकृद्वा प्युत्तमा विद्या - नोपास्ता विजयप्रदा ॥ २७

कृतानि न त्वया वीर - ह्युत्तमानि व्रतान्यपि  
तस्मात्त्व मीदृशं प्राप्तो - भक्तिं दुरवबोधनाम् ॥ २८

राजा उवाच -

- उपासनाय विद्याना - मशक्तोहं व्रतेषुच  
यथाशक्त्या करिष्यामि - तथापि भगव न्मुने ॥ २९
- सर्वमंत्र महाराज - विद्या मेकां फलप्रदाम्  
श्रेष्ठं व्रतानां सर्वेषा - मेकं दीनाय मे वद ॥ ३०
- वात्सल्यवन्त स्सर्वेषु - यूयं दीनेषु सर्वदा  
यद्यपि मयि कारुण्य - कुरुशिष्योऽस्म्यनुग्रहम् ॥ ३१
- इत्युक्तस्तेन राज्ञाथ - वृद्धगार्ग्यो महामुनिः  
क्षणं ध्यात्वा नृपं प्राह - श्रूयता मिह पुत्रक ॥ ३२
- राज न्सकलविद्यानां - सारभूतो हनूमतः  
पंचवक्त्राख्य विद्यास्ति - तां ददामि नृपोत्तम ॥ ३३
- सद्यो दुरितराशिघ्नी - सकलार्ति निवारिणी  
अनायासेन जयदा - साम्राज्य फलदायिनी ॥ ३४
- तां जपस्व महाबाहो - जयसिद्धिर्भविष्यति  
अन्यच्च तव वक्ष्यामि - व्रतं श्री हनुमत्प्रभोः ॥ ३५
- सद्यस्समस्तफलदं - सततंविजयप्रदम्  
वैशाखे दशमी कृष्ण - अमावास्या ततःपरम् ॥ ३६
- माघादि पंचमासेषु - एकस्मिन् शुक्लपक्षके  
मंदवासर आद्यस्य - तारं मृगशिरोऽभिदम् ॥ ३७
- श्रावणे पौर्णमी चैव - कार्तिके द्वादशी तथा  
भार्गशीर्षे तथा शुक्ले - संप्रोक्ताच त्रयोदशी ॥ ३८
- एतेषु दिवसे ष्वेक - दिवसे व्रत माचरेत्  
भवितमाश्चेत्सर्वदिने - ष्विदं व्रत मथाचरेत् ॥ ३९

- एकस्मिन् तोरकं बध्वा - पूजामात्रं ततः परम्  
 कुर्याच्छ्रीवायुपुत्रस्य - दिवसे ष्वपरे ष्वथ ॥ ४०
- ब्राह्मीमुहूर्ते सायं वा - मध्याह्ने प्रातरेव वा  
 पूजयेदंजनासूनुं - गुरो राज्ञापुस्सरम् ॥ ४१
- स्वर्णं राजितं ताम्रेषु - भूर्जे वा स्थंडिलेभिसि  
 क्षोमे वा पूजयेच्छ्रीमान्त्रे वा प्रतिमासु वा ॥ ४२
- त्रयोदशं ग्रन्थियुक्तं - धृत्वा तोरकं मुत्तमम्  
 त्रयोदशं घृतापूपं - वायनं तत्र दापयेत् ॥ ४३
- गुरुं संपूज्य वित्ताद्यै - वित्तशाठ्यं विवर्जितः  
 वित्तशाठ्यकृतं कर्म - पुण्यं तन्निष्फलं भवेत् ॥ ४४
- ब्राह्मणैस्सह भुञ्जीया - ह्यथाशक्तिं समाहितः  
 त्रयोदशं च वर्षाणि - सिद्धिकामस्सगाचरेत् ॥ ४५
- अनेन सकलाञ्छत्रं - न्दुर्धर्षा नमरै रपि  
 विजित्य सुमहद्राज्यं - चिरकालं भवाप्स्यसि ॥ ४६
- भवित्री पूर्वसंपत्ति - स्तव श्रीः कीर्तिं संयुता  
 अत्रार्थे संप्रवक्ष्यामि - पूर्ववृत्तांतं मद्भुतम् ॥ ४७
- विभीषणसुतश्श्रीमा - न्नीलोनाम महाबलः  
 सर्वविधासु निष्णातो - नित्यं धर्मपरायणः ॥ ४८
- स एकदा महाराजं - विभीषणं मरिन्दमम्  
 उवाच भगवन्नस्मि - न्पुरे लक्ष्मी रचञ्चला ॥ ४९
- त्वदधीनं महाराज्यं - मिदं लङ्कापुरस्य ते  
 धनधान्याकुलं सर्वं - मपि भोगसमन्वितम् ॥ ५०
- अनर्घं मुक्तारत्नाद्यै - दिव्यं जांबूनदादिकैः  
 इदं पुरं च राष्ट्रं च सुखं संपत्समन्वितम् ॥ ५१
- तथापि पुर्यां राष्ट्रे वा - तव राजगृहेषु वा  
 चिंतामणिः कामधेनुः - कल्पवृक्षो न दृश्यते ॥ ५२

साक्षात्त्वं जानकीनाथ - चरणांभोज सेवया  
संप्राप्य महदैश्वर्यं - महाराजोसि सुव्रत ॥ ५३  
चिंतामण्यादयो भोगा - न संप्राप्ताः कथं त्वया  
य द्याज्ञा दीयते मह्य - मानेष्येतत्त्रयं पुनः ॥ ५४

विभीषण उवाच -

श्रीराम चरणांभोज - मकरन्द सुधारसे  
भृङ्गायते मम मन - स्सततं नीलबालक ॥ ५५  
ब्रह्मानन्द रसांभोधे - मग्नोऽहं तत्प्रसादतः  
तत्प्रसादा न्मया प्राप्तं - महदैश्वर्यं मक्षयम् ॥ ५६  
दीर्घायुष्यं च साम्राज्यं - दुर्लभं यत्सुरैरपि  
चिन्तामणिः कल्पतरुः - कामधेनु स्सएव मे ॥ ५७  
एकांशेनापि वैकुण्ठे - हरे श्ररणकिंकरः  
एकांशेन मया प्राप्तं - परमैश्वर्यं मक्षयम् ॥ ५८  
श्री जानकीश कृपया - शक्राद्या लोकपालकाः  
मद्वंशे संस्थिता देवाः - किमु मर्त्या महीतले ॥ ५९  
किमल्पसारै र्मे नील - चिंतामण्यादिकैरपि  
इत्युक्त्वा स महाराजो - नीलं धर्मपरायणः ॥ ६०  
अथास्यापि यशोभूया - दिति ध्यात्वाऽब्रवीत्पुनः  
चिंतामणिः कल्पतरुः - कामधेनु स्सुरालये ॥ ६१  
अमरै रेव भुज्यन्ते - दिव्यरत्नानि सर्वदा ॥ ६२  
अकृ त्वाचार्यशुश्रूषा - मनुपास्य च देवताः  
भोक्तुं न शक्यते दिव्य - रत्नजातं महीतले ॥ ६३  
तवापेक्षास्तिचे दिव्य - रत्नजातेषु पुत्रक  
कुरु ष्वाचार्यशुश्रूषां - स ते श्रेयः प्रदास्यति ॥ ६४  
इत्थं विभीषणे नोक्तो - नीलः पुत्रो महात्मना  
आज्ञां प्रगृह्य शिरसा - पितरं प्रणिपत्यच ॥ ६५

- जगाम भार्गवं शुकं - सेवार्थं गुरु मादरात्  
पादसंवाहनाद्यैश्च - दीप्त रत्नादिकार्पणैः ॥ ६६
- भार्गवं तोपयामास - दश द्वादश वत्सरान्  
संतुष्य त्वेकदा तस्य - भार्गव स्तपसांनिधिः ॥ ६७
- किमभीष्टं करोमीति - नीलं प्राह महामतिः  
सोऽपि विज्ञापयामास - स्वाभीष्टं सर्वमद्भुतम् ॥ ६८
- सुप्रीतो भार्गवः प्राह - ततो नीलं महासुरम्  
राज्ञी सकल विद्यानां - सद्य स्सिद्धि विधायिनीम् ॥ ६९
- उपदेक्ष्यामि ते विद्यां - व्रतं चानुत्तमं भुवि  
येन ते दिव्यरत्नानां - प्राप्ति इशकादिकैरपि ॥ ७०
- अजेयत्व मवध्यत्वं - दीर्घायुष्य मनुत्तमम्  
किंच ते कीर्ति रचला - जगति स्थास्यति ध्रुवम् ॥ ७१
- नक्षत्रं मृगशीर्षाख्यं - इवो नक्षत्रोत्तमं शुभम्  
कुरु श्रीरामदूतस्य - पंचवक्त्र हनूमतः ॥ ७२
- व्रतं समस्त फलदं - सद्य स्सिद्धि विधायकम्  
इत्युक्त्वोवादिश द्विधां - आजनेयस्य मारुतेः ॥ ७३
- कारयामास हनुम - द्ब्रतं परमशोभनम्  
व्रतांते भार्गवगुरुं - रत्नै रर्थैश्च पुष्कलैः  
पूजयित्वा महाविद्यां - जपन्नास्ते समाहितः ॥ ७४
- ततः श्रीरामचंद्रस्य - सच्चिवाना मथाग्रणीः  
प्रादुरासी तत्रयस्त्रिंश - त्कोट्यर्बुदगणैर्वृतः ॥ ७५
- तं दृष्ट्वा सह सोत्थाय - प्रांजलिः पुरतः स्थितः  
तुष्टाव नीलो धर्मात्मा - स्तोत्रैः पवननंदनम् ॥ ७६



## नीलकृत आंजनेयस्तोत्रम्

ओं जय जय । श्री आंजनेय । केसरी प्रियनंदन । वायु कुमार पुत्र । पार्वतीगर्भसंभूत । वानर नायक । सकल वेदशास्त्रपारग । पर्वतोत्पाटन । लक्ष्मण प्राणरक्षक । गुह्य प्राणदायक । सीता दुःख निधान्यमाली शापविमोचन । दुर्दंडी बंधविमोचन । नीलमेघ राज्य सुग्रीवराज्यदायक । भीमसेनाग्रज । धनजय ध्वजवाहन । कालनेमि मैरावणमर्दन । वृत्रासुरभंजन । सप्त मंत्रिसुतध्वंसन । इंद्रजिद्वध अक्षकुमार संहार । लंछिणी भंजन । रावणमर्दन । कुम्भकर्ण वधप जंबुमालि निवृद्धन । वालिनिबर्हण । राक्षसकुल दाहन । अशोकवनटि लंकादाहक । शतमुखपधकारण । सप्तसागरवाल सेतुबंधन । निर्गुण सगुणस्वरूप । हेमवर्ण पीतांबरधर । सुवर्चला प्राणनाय-  
त्रिंशत्कोट्यर्बुद रुद्रगणपोषक । भक्तपालनचतुर । कनककुंडला रत्नकिरीटहार नूपुर शोभित । रामभक्तितत्पर । हेमरंभावन । वक्षतांकित मेघवाहक । नीलमेघश्याम । सूक्ष्मकाय । महाकाय । ग्रसन । ऋष्यमूर्कागिरि निवासक । मेरुपीठकार्चन । द्वात्रिंशदायु चित्रवर्ण । द्विचित्रसृष्टि निर्माणकर्त । अनंतनाम । दशावतार । घटनासमर्थ । अनंत ब्रह्मन् । नायक । दुर्जन संहार । सुजनरक्षक वंदित । सकललोकाराध्य । सत्यसकल्प । भक्तसकल्पपूरक । अति-  
वेह । अकर्दम विनोदलेपन । कोटिमन्मथाकार । रणकेलिमर्दन । माण सकललोक कुक्षिभर । सप्तकोटि महामंत्र तंत्रस्वरूप । पिशाच शाकिनी ढाकिनी विध्वंसन । शिवालिंग प्रतिष्ठापनकारण । विमोचन । दौर्भाग्य नाशन । ज्वरादि सकलरोगहर । भुक्ति मुक्तिव कपटनाटकसूत्रधारी । तलाविनोदांकित । कल्याणपरिपूर्ण । मंग गानलोल । गानप्रिय । अष्टांगयोगनिपुण । सकल विद्यापारीण । मध्यांतरहित । यज्ञकर्त । यज्ञभोक्त । षण्मत वैभवसानुभूतिचतुर । लोकातीत । विश्वंभर । विश्वमूर्ते । विश्वाकार । दयास्वरूप । द

हृदयकमलविहार । मनोवेगगमन । भावज्ञनिपुण । ऋषिगणगेय । भक्त  
मनोरथदायक । भक्तवत्सल । दीनपोषक । दीनमंदार । सर्वस्वतंत्र । शरणा  
गतरक्षक । आर्तत्राणपरायण । एक असहायवीर । हनुमान् विजयीभव ।  
दिग्विजयीभव । दिग्विजयीभव ।

इति श्री पराशर संहितायां पंचमुख हनुमन्मन्त्र विवरणे पराशर  
मैत्रेय संवादे आजनेयस्तोत्र कथनं नाम चतुर्थ पटलः ।



## श्री पराशर संहिता

पञ्चम पटलः

सोमदत्त - नीलचरितम्

- श्लो ॥ अथस्तोत्रेण संतुष्टो - भक्त्या नीलकृतेन च  
उवाच वचनं नीलं - हनुमा न्वायुनंदनः ॥ १
- अग्रगण्योऽसि भक्तानां - मम नील सदा भवान्  
विशीषण स्तवपिता - सखा मम महामते ॥ २
- ज्ञातं मया तवाभीष्टं - तद्दामि न संशयः  
श्वो महेंद्रपुरं गत्वा - जित्वा तंभुवनेश्वरम् ॥ ३
- चिंतामण्यादिकं दिव्य - रत्नजात मवाप्स्यसि ॥ ४
- रूप शील वयो भाग्य - सहिता वनसुंदरी  
रत्न भूता सुरस्त्रीणां - सा चापि प्राप्स्यते त्वया ॥ ५
- आगत्य तैतिकं पश्चा - न्चतुर्वक्त्रः पितामहः  
अप्रार्थित मभीष्टं च प्रदास्यति महामते ॥ ६
- मद्विद्यां प्रजपे ह्यस्तु - मद्भ्रतं कुरुते भुवि  
भवा न्यथा तथै वासौ - सद्य स्सिद्धि मवाप्स्यति ॥ ७

- पुरुषोत्तम संस्थानं - त्वन्नाम्ना ख्याति मेष्यति  
 मृगशीर्षाख्य नक्षत्रं - भवनं ते भविष्यति ॥ ८
- मम त्वं दक्षिणे भागे - स्तिर्ति प्राप्य महामते  
 सर्वे मनोरथाः श्रेष्ठाः - प्राप्यते मत्प्रसादतः ॥ ९
- इत्युक्त्वा भगव न्देवः - श्रीराम प्रिय किंकरः  
 अंतर्दधे रुद्रगणै - स्सुरर्षिभि रभीष्टदः ॥ १०
- विभीषणसुत इश्रीमा - नवाप्त सकलेप्सितः  
 भार्गवस्य गुरोः पादौ - भूयोभूयः प्रणम्य च ॥  
 लंका मागत्य पितरौ - ववंदे विनयान्वितः ॥ ११
- ततो नील शशौर्यशील - स्सर्वरक्षो हितंकरः  
 फलितोरु तपोवृत्ति - मंनस्येव मतर्कयत् ॥ १२
- वितथं बलिन शशौर्यं - शत्रुभीति मकुर्वतः  
 कुलधर्मं स्सुरा न्जित्वा - कीर्त्युत्पादन मेव नः ॥ १३
- विचिंत्येत्य सुराधीशो - दंडयात्रां वितत्य च  
 दूतमेकं समाहूय - बभाषे परभीकर ॥ १४
- गच्छ दूतामरावासं - मद्वाचो वद वज्जिणे  
 मम ज्येष्ठपितृव्य इच - रावणो रणकर्कशः ॥ १५
- पुरा योद्धुं त्व माहूत - स्तेन क्रोधसुसयुतः  
 युवयो रभव द्युद्धं - भूरि मायास्त्रसायकैः ॥ १६
- भवन्त मग्रजो वीर्या - न्मेघनाथ स्तदा खलु  
 अनयं च्च तदा लंकां - ततो भ्येत्य पितामहः ॥ १७
- विनु त्येंद्रजि दित्याख्यां - तस्मै दत्त्वा मनोरथान्  
 प्रथयौ मोचयित्वा त्वां - वेत्ति सव मिदं भवान् ॥ १८
- तस्मा द्योद्धुं न ते शक्ति - देहि देव भवा न्मम  
 चिंतामण्यादिकं दिव्य - रत्नजात मनुत्तमम् ॥ १९
- कामधेनुं च देहीति - दूत स्तत्प्रहितो ययौ ॥ २०

|  |    |
|--|----|
| अथ गत्वाऽमरावासं - ददर्श च शवीपतिम्<br>महाद्रिपक्ष विच्छेदन क्षमं भिन्नतं पविम् ॥  | २१ |
| पुलोमजालसं द्वाभ - पार्श्वी निर्जर सेवितम्<br>गधर्वाप्सरोद्गीतं - बृहस्पतिकृताशिषम् ॥  | २२ |
| पश्यत मप्सरो लास्यं - भ्राजमानं सभांतरे<br>ततो नीलासुरे णोक्तं - कथयामास गर्वतः ॥  | २३ |
| श्रुत्वा दूतेरितं वाक्यं - कोपा दूचे शतक्रतुः<br>बल पाकादि जंभाद्या - मत्कराशनिना हताः ॥   | २४ |
| पाताले च भयच्छन्नाः - केचि त्तेष्वय मासुरः<br>दैत्येषु केन वा तुल्य - स्सरंभातिशयोज्ज्वलम् ॥                                       | २५ |
| वज्रं दधानं मा मत्र - प्रपश्यतु पुरन्दरम् ॥  | २६ |
| शतकोटि प्रहारस्य - शतकोटि सुरारयः<br>न शक्ता स्सहने युद्धे - कीदृशो मे पुरोऽसुरः ॥   | २७ |
| उक्त्वा दूतं ससरंभ - मवादी त्पाशर्ववतिनम्<br>दूतस्य हिंसा नोकार्या - त दस्य करबंधनम् ॥   | २८ |
| कृत्वा वितनुत क्षिप्रं - शिखाच्छेद महंकृतः<br>श्रुत्वा च ते तथाचकृ - स्स च खेदं परं गतः ॥  | २९ |
| आतुर स्तत्क्षणं गत्वा - प्रचरुषौ नीलरक्षसे<br>सचापि कुपितो घोरं - भेरी निनद भिन्नदिक् ॥  | ३० |
| रथकेतूत्थ पवन - जाल क्षुभ्य न्नीदीजलः<br>करस्फुरित कौक्षेय - रुचिच्छन्न जनेक्षणः ॥   | ३१ |
| सेनांग चरणाघात - चूर्णीकृत गिरिस्थलः<br>ससैन्यः प्रस्थल द्वैन्यश्शतमन्यु मुपाद्रवत् ॥  | ३२ |
| गत्वा विलयकालोत्थ - मेघ स्तनित भीकरम्<br>अट्टहासं चकारोच्चै - विव्यधुर्दिगधीश्वराः<br>ससैन्या स्सहसा गत्वा - परिवन्तु र्बलांतकम् ॥ | ३३ |

|  |    |
|--|----|
| तैस्समेतः स्फुर तीव्र - धार वज्र लसत्करः         |    |
| जगा मायोधन भुवं - जिष्णुः पार्श्वगतामरः ॥        | ३४ |
| अथादितेय दैत्यानां - बभू वायोधनं महत्            |    |
| जगतां भयदं भूरि - सिंहनाद समाकुलम् ॥             | ३५ |
| ताराः पेतु रथ क्षीणा - वार्धय इशीतगु भ्रमन्      |    |
| ययौ दिक्ष्वपथा त्सूर्य -श्चचाल च वसुंधरा ॥       | ३६ |
| ववु र्महानिला नेमुः - फणींद्रस्य फणाजनात्        |    |
| एवं प्रवृत्ते तुमुले - संयुगे सुर रक्षसाम् ॥     | ३७ |
| निमयि माया मसुरा - स्सुरा न्मग्नानिवांबुधौ       |    |
| विधाय मोहिता न्सर्वा - न्सिंहनादा न्प्रचक्रमुः ॥ | ३८ |
| अश्वताः स्थातु ममराः - पलायंतो दिशो भयात्        |    |
| मघवा न्वीक्ष्य सकला - नमरा न्कोपदीपितः ॥         | ३९ |
| घोरारि भेरी रवण - मारुह्य धवलं गजं               |    |
| प्रत्यधि मर्म दलनं - कुलिशं पाणिना दधत् ॥        | ४० |
| दैत्यानांगण हुंकारै - रहंकारं विजृम्भयन्         |    |
| जंभारि रभ्यया न्नीलं - रयादानवनायकम् ॥           | ४१ |
| अब्रवीच्च समासाद्य - राक्षसाधिपतिं रुषा          |    |
| म दात्मसंभवो वाली - त्व त्पितृभ्रातरं पुरा ॥     | ४२ |
| लांगूलरोम्णा तं बध्वा - रावणं वारिराशिषु         |    |
| मज्जयामास तत्सर्वं पितृव्या न्न श्रुतं किमु ॥    | ४३ |
| शक्र! त्वा मग्रही छुद्धे - मेघनादो मदग्रजः       |    |
| स्वगृहं चानय द्बध्वा - चेंद्रजि दिब्रुदांकितः ॥  | ४४ |
| एत ह्लोकत्रयं वेत्ति - तथा इंद्र! न लज्जसे       |    |
| बल पौरुष संख्यातो - भवन्यपि समुद्धतः ॥           | ४५ |
| जारो गौतमजायाया - संगत्यै कुक्कुटी भवान्         |    |
| अकार्षीः खलु ते लोके - विदितं शक्रपौरुषम् ॥      | ४६ |

|   |    |
|---|----|
| इति सोल्लुंठना नुक्त्वा - सज्यं कृत्वा स कामुर्कं<br>नीलो विधाय धनुषा - बाणा न्प्रायुंक्त वासवे ॥   | ४७ |
| सच्छित्वा तान्क्षणा द्बाणै - धनु शिचच्छेद रक्षसः<br>सोऽन्यं गृहीतवांश्चापं - बहुधेन्द्रोभिनच्चतम् ॥ | ४८ |
| नीलोऽथ चंद्रहासेन - दंभोलि कुन्ठितं व्यधात्<br>ततश्शचीपतिः कोपा - दवरुह्य गजा त्सृणिम् ॥            | ४९ |
| गृहीत्वा तेन देवारि - माजघान घनध्वनिः<br>गदा मादाय स तदा - बभंजांकुश मासुरः ॥                       | ५० |
| शक्रं गृहीत्वा खड्गेन - नीलो हंतुं समुद्यतः<br>विदित्य तत्क्षणा देत्य - विधि र्मा साहसं कुरु ॥      | ५१ |
| इत्युक्त्वा तत्करं रुध्वा - तरसा त मवोचत<br>नील नीलापते भंवतो - जनक स्ते विभीषणः ॥                  | ५२ |
| मुकुंदस्याग्रजश्चायं - महेंद्रः श्रुणु मे वचः<br>मैत्रीं विधाय विपुलां - त्व मनेन पवि त्यज ॥        | ५३ |
| चितामणि कल्पतरुं - कामधेनु महं च ते<br>प्रदास्ये देवराजेन - मैत्रीयुक्त स्सदा भव ॥                  | ५४ |
| अन्यच्च श्रुणु वक्ष्यामि - विभीषणवरात्मज!<br>पूर्वं हिमाचले तीव्रं - चचारात्रिर्महतपः ॥             | ५५ |
| तन्नेत्रा दुदभू च्चैकं - दिव्यं तेज स्तपोमयम्<br>तद्वै वृक्षेषु बहुधा - जर्जरं मारुतः स्वयम् ॥      | ५६ |
| राशिद्वय चकाराथ - चंद्रस्तत्रैकराशितः<br>सौंदर्यैकनिधिर्जज्ञे - द्वितीया द्राशित स्ततः ॥            | ५७ |
| त्रिलोककन्यका श्रेष्ठा - कन्या च वनसुन्दरी<br>ओषधीश स्ततो जात - शशभो मूर्धनि भूषणम् ॥               | ५८ |
| मधुनावर्धयतां तु - कन्यकां वनसुन्दरीम्<br>दुहितृत्वं गता तस्य - प्राप्य संपूर्णयौवनम् ॥             | ५९ |

|   |   |
|---|---|
| अतुलेन चकोराक्षी - सौंदर्येण विराजते<br>तां च देवीं प्रदास्यामि - चिंतामण्यादिभि स्सह ॥             | ६ |
| भवतोपासिता विद्या - सर्वसिंहासनेश्वरी<br>श्रीराम सचिवाग्रस्य - साक्षा च्छ्रीहनुमत्प्रभोः ॥          | ६ |
| व्रतं कृतं हनुमतो - नक्षत्रे मृगशीर्षके<br>अस्मदादिभि रभ्यर्च्य - स्तेनासि सुमहामते ॥               | ६ |
| रहस्य मन्य द्वक्षयामि - सद्य स्सकलसिद्धिदम्<br>मया नोक्त मितःपूर्वं - यस्य कस्यापि सुव्रत ॥         | ६ |
| माघे श्री रुद्रदैवस्ये - फाल्गुनेऽदितिदैवते<br>चैत्रे पुष्येऽर्कनक्षत्रे - पूजयेद्धनुमत्प्रभुम् ॥   | ६ |
| ज्येष्ठमा स्यथवा कुर्या - द्ब्रतं नक्षत्रपंचके<br>पूर्वोक्तस्यैव तोरस्य - पूजां कुर्या द्विनेदिने ॥ | ६ |
| एकभुक्तो ह्यथश्शायी - ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः<br>जपे दष्टोत्तरशतं - पंचवक्त्र महामनुम् ॥            | ६ |
| यंकंचिदपि तन्मन्त्रं - जपे त्सर्वदिने ष्वपि<br>विप्रेभ्यः पंचसंख्येभ्यो - दद्या द्वायन मुत्तमम् ॥   | ६ |
| अपूपपंचकं नील - फलपंचक संयुतम्<br>आचार्यं पूजये त्पश्चा - द्वित्तशाठ्य विवर्जितः ॥                  | ६ |
| पूजये द्वटुका न्पंच - ब्राह्मणानपि भोजयेत्<br>अस्मिन्व्रते कृते साक्षा - द्धनूमत्कथयाऽन्विते ॥      | ६ |
| आयुरारोग्य मतुलं - धनधान्यादि सम्पदः<br>विजयः पुत्रपौत्राश्च - सौभाग्य ममलं शुभम् ॥                 | ७ |
| किमुक्तेनाथ बहुना - सर्वसिद्धि भविष्यति<br>तःमात्त्वं कुरु यत्नेन - व्रत मेत दनुत्तमम् ॥            | ७ |
| भविष्यति महासिद्धि - स्सततं विजयप्रदा<br>शतवर्ष सहस्राणि - भुक्त्वा भोगा न्मनोरथान् ॥               | ७ |

|  |    |
|--|----|
| एकांशेनापि वैकुण्ठे - भगवत्किकराग्रणीः               |    |
| नीलाद्रिरिति विख्यातं - क्षेत्रं श्रीपुरुषोत्तमम् ॥  | ७३ |
| जगन्नाथप्रियो भूत्वा - चैकांशेन महीतले               |    |
| दर्शना न्मुक्तिदो नृणां - सुन्दर्यासह संततम् ॥       | ७४ |
| कीर्तिस्ते लोकविख्याता - भविष्यति न संशयः ॥          | ७५ |
| इत्थं बहू न्वरा न्लब्ध्वा - नीलो रत्नादिभिस्सह       |    |
| भुक्त्वा भोगा न्महायोगी - भगवत्किकरोऽभवत् ॥          | ७६ |
| इत्युक्तो गार्ग्यमुनिना - सोमदत्तो महीपतिः           |    |
| पत्न्यासार्धं महाविद्यां - पचवक्त्रहनूमतः ॥          | ७७ |
| गुरो रस्समीपे कृत्वाथ - वसन् तद्ब्रतं मुत्तमम्       |    |
| संप्राप्य सद्यश्चायुष्मान् - कंदर्पसमं रूपवान् ॥     | ७८ |
| हनूमतः प्रसादेन - खड्गं सिद्धिं मवाप्तवान्           |    |
| ततस्समस्तारिगणा - नेकाह्वै व विजित्य च ॥             | ७९ |
| स्वराज्यं पालयामास - गार्ग्यं कृत्वा पुरोहितम्       |    |
| स्वर्णं कोटिं सहस्राणि - तस्माद्गार्ग्यो महामुनिः ॥  | ८० |
| संप्राप्यवर्षसाहस्रं - सत्रयागं मथाकरोत्             |    |
| सप्तद्वीपवतीं धात्रीं - गार्ग्यानुग्रहतो नृपः ॥      | ८१ |
| पालयामास धर्मात्मा - त्रिंशद्द्वर्षसहस्रकम्          |    |
| अष्टान् पुत्रानवाप्याथ - ज्येष्ठं राज्येऽभिषिच्य च ॥ | ८२ |
| ब्रह्मलोकं मवापांते - पत्न्यासहं महायशाः             |    |
| हनूमतो ब्रतं स्यैवं - प्रभावो मुनिपुंगव ॥            | ८३ |
| श्रुतोवा पठितो यैश्च - सर्वदा विजयप्रदः              |    |
| अथापरं प्रवक्ष्यामि - सर्वं ब्रतफलप्रदम् ॥           | ८४ |
| ब्रतं हनुमतो गोप्यं - सद्यो विजयसिद्धिदम्            |    |
| आदित्यहस्तानक्षत्रे - पूर्ववत्पूजयेद्विभुम् ॥        | ८५ |



|   |    |
|---|----|
| फलाशि वा हविष्याशी - क्षीराहारोथ वा मुने!             |    |
| पूर्वोक्तां मुद्रिकां स्पृष्ट्वा - मनुमेकशतंजपेत् ॥   | ८९ |
| तोरंतु ग्रथितं धृत्वा - यद्वा यज्ञोपवीतके             |    |
| कृत्वा शूद्रादि संस्पर्श - रहितं साधकोत्तमः ॥         | ९० |
| आदित्य हस्ता नक्षत्रे - मुद्रिकां पूजये त्सदा         |    |
| वर्षे समाप्ते तोर तु - धारये दन्य दुत्तमम् ॥          | ९० |
| स्वर्णवेष्टित पूर्वोक्त - मुद्रिकैकैव संततम्          |    |
| अस्पृष्टाधारये हस्तु - शूद्राद्यै स्सततं नरः ॥        | ९१ |
| हस्ताकं कुरुते यस्तु - व्रतमेत दनुत्तमम्              |    |
| परेद्यु वीयनं दद्या - द्गुरुं संपूज्य यत्नतः          | ९० |
| हनुमत्कथया युक्त - स्सततं विजयीभवेत्                  |    |
| धन धान्याकुलां लक्ष्मीं - पुत्र पौत्रयुता मपि ॥       | ९१ |
| अवाप्य शक्र संकाशो - नृपा न्नारी न्नराधिकान्          |    |
| दास भूता न्करोत्येव - प्राणैरपि धनैरपि ॥              | ९२ |
| दीर्घ मायुष्य मारोग्यं - वाक्सिद्धि विपुला मपि        |    |
| अवाप्य महती मृद्धि - भुक्त्वा भोगा न्मनोरथान् ॥       | ९३ |
| अन्ते श्री तारकं ब्रह्मान् - लब्ध्वा मुक्तो भवे न्नरः |    |
| अष्टाक्षरेण वा कुर्या - द्येनकेनापि वा मुने ॥         | ९४ |
| मंत्रराजेन वा कुर्या - द्येनकेनापि वा मुने            |    |
| पुरा पार्थो महाबाहु - रर्जुनः कृष्ण सारधिः ॥          | ९५ |
| हस्तादित्यव्रतं कृत्वा - प्रज प्याष्टाक्षरं मनुम्     |    |
| अतुल्यं बलमासाद्य - विजयं प्राप्त संततम् ॥            | ९६ |
| नक्षत्र पंचके कृत्वा - कृत्वा हनुमतः परं              |    |
| भीमसेनो महाबाहु - जितवा न्सकला नरीन् ॥                | ९७ |
| के वा न पूजयंतीह - प्रत्यक्ष वरदायकम्                 |    |
| अर्चयंति हनुमतं - ब्रह्म विष्णु शिवा अपि ॥            | ९८ |

|  |     |
|--|-----|
| हनुम त्सदृशं दैवं - नास्ति नास्त्येव भूतले<br>अनेनैव प्रमाणेन - जयसिद्धिकरं परम् ॥   | ९९  |
| तस्मि न्संपूजिते भानु - ब्रह्मा गौरी महेश्वरः<br>श्री जानकीपति स्साक्षा - दादिनारायणः प्रभुः ॥   | १०० |
| ईश शक्रादि दिक्पालाः - कुमारो गणनायकः<br>ब्रह्मर्षयो वशिष्ठाद्या - स्सनकाद्याश्च योगिनः ॥  | १०१ |
| पितरो वसवो रुद्राः - पूजितास्त्यु न संशयः  | १०२ |
| हनूमंतं महात्मानं - जयकामः प्रपूजयेत्<br>तस्मा त्सर्वप्रयत्नेन - श्रीराम प्रियकिंकरम् ॥  | १०३ |
| य इदं श्रृणुया न्नित्यं - श्रावयेद्वा समाहितः<br>स लब्ध्वा सकलाभीष्टान् - ब्रह्मलोके महीयते ॥  | १०४ |
| चंद्रहीना यथा रात्रि - र्धनहीनो यथा नृपः<br>वृथा प्रबंधो हनुम - न्नामहीन स्तपोधन! ॥  | १०५ |
| मैत्रेय नील विजय ध्वजदत्त गाल<br>मैदांगदांश्च विजयं भरतं सुषेणं<br>हारीत कश्यप सुपुष्कर सोमदत्तान्<br>पुण्यां स्मरामि हनुमत्पदपद्म भक्तान् ॥ | १०६ |

इति श्री पराशर सहितायां पंचमुख हनुमन्मन्त्र विवरणे पराशर  
मैत्रेय संवादे सोमदत्त नीलकथनं नाम पञ्चम पटलः ।



# श्री पराशर संहिता

षष्ठः पटलः

हनुमज्जन्म कथनम्

मैत्रेयः -

- श्लो ॥ भगवन्हनुमन्मंत्र - प्रभावो भवत इश्रुतः  
तस्योत्पत्ति स्वरूपं च - श्रोतुमिच्छा म्यहं प्रभो ॥ १
- हनुमन्नाम वा कोऽसौ - कस्य पुत्र स्त कीदृशः  
किं कर्मा तस्य चोत्पत्तिः - कथं ब्रह्म न्वदस्वमे ॥ २

पराशरः -

- इतिहासं पुरा वक्ष्ये - मैत्रेय श्रुणु तत्त्वतः  
छाया नाम महासाध्वी - तनूजा विश्वकर्मणः ॥ ३
- स तां ददौ भास्कराय - सा न सेहे रवेः प्रभाम्  
मात्रा पृष्ठाऽवद त्कन्या - दुर्गम. पति सन्निधिः ॥ ४
- मात र्ममाभू दधुना - तस्य तीक्ष्णकरेण वै  
पुत्रिका वचनं श्रुत्वा - सा वदत्स्वपतेः प्रसूः ॥ ५
- भार्याया वचनं श्रुत्वा - विश्वकर्मा प्रभाकरम्  
शाणतस्तं स्वल्पप्रभं - चक्रे स कर दीधितम् ॥ ६
- भानोच्छिन्नकरच्छाया - त्कन्या जाता सुवर्चला  
ब्रह्मादयो लोकपाला - स्तत्सौदर्या द्विसिष्टिमरे ॥ ७
- ब्रह्माणं परि पप्रच्छु - देवा इन्द्र पुरोगमाः  
एनां धृत्वा पतिःकोवा - भूयाद्ब्रह्मन्वदस्व नः ॥ ८

ब्रह्मोवाच :-

- ईश्वरस्य महत्तेजो - हनुमा न्दिवि भास्करम्  
फलबुध्यातु गृह्णीयात् - तस्य भार्या भविष्यति ॥ ९

|   |    |
|---|----|
| राक्षसैः पीडिता देवा - ब्रह्माणं शरणं ययुः<br>बाधन्ते राक्षसा नित्यं - ब्रह्मन्लोका नृषींश्च नः ॥ | १० |
| तेषां कुरु वधोपाय - त्वं हि नः परमागतिः<br>इत्युक्तः त्राहता न्देवा - स्मया न ज्ञायते वधः ॥       | ११ |
| शकरं परिपृच्छामो - गच्छामो रजताचलं<br>तत्र गत्वा महादेव - भूचु स्ते स पितामहाः ॥                  | १२ |
| राक्षसानां वधोपायं - कुरु रुद्र महाप्रभो ॥  | १३ |

शंकर उवाच :-

|   |    |
|---|----|
| नर नारायणं देव - मातृनां च परायणम्<br>तिष्ठन्तं परमक्षेत्रे - नित्यं बदरिकाश्रमे<br>तं पृच्छामः सुरश्रेष्ठा - गच्छाम स्तत्र माचिरम् ॥ | १४ |
| ब्रह्मेशादि सुरा स्सर्वे - नरनारायणप्रभुम्<br>नमस्कृत्य जगन्नाथं - पप्रच्छु रिद्र मादरात् ॥   | १५ |
| बाधन्ते राक्षसानित्यं - नरनारायणप्रभो<br>एतेषां तु वधोपायं - क्षिप्रं कर्तुमिहार्हसि ॥  | १६ |
| समुहूर्तमिवध्यात्वा - प्रोवाच सकलान्सुरान्<br>भविष्यति नसंदेहो - राक्षसानां वध स्सुराः ॥  | १७ |
| इत्युक्त्वा स्वात्मनस्तेज - स्समाकृष्य जनार्दनः<br>ब्रह्मणश्च सुराणां च - तेजसा साकमीशितुः ॥  | १८ |
| पिंडीकृत्य ददौरुद्र - पपौसर्वामरात्मकम्<br>अथोवाच हरि व्यक्ति - रेतत्तेजोद्भवस्सुरा ॥   | १९ |
| हरं त्यक्त्वा सुरा स्सर्वे - गच्छतेति यथा गतम् ॥  | २० |
| ततःकाले महादेवः - पर्यट न्पृथिवी मिमां<br>पार्वतीसहित इश्रीमान् - वेंकटाख्यं गिरिं गतः ॥  | २१ |
| नित्यं सन्निहितो यत्र - श्रीनिवासस्सतां गतिः<br>लभन्ते पौरुषानर्धान् - यस्मिन्पंडित पामराः ॥  | २२ |

|   |    |
|---|----|
| तौ तत्र दंपतीचैके - शेषाख्ये चित्रकानने               |    |
| शेरतुः परमामोदे - निर्मलोद सरिद्वरे ॥                 | २' |
| एकदा परमप्रीता - पार्वती पति देवता                    |    |
| क्रीडं तं सुरतासक्तं - कपियुग्मं ददर्शह ॥             | २' |
| ततस्सा ह्रीमती बाला - महादेवस्थपश्यतः                 |    |
| पुष्पसांद्रेषु कुंजेषु - तदा रंतु मनोरधे ॥            | २' |
| सर्वज्ञस्तदभिप्रायं - ज्ञात्वा स कपिरूपधृत्           |    |
| रमयामास तां देवीं - कपिरूपधरां शिवाम् ॥               | २' |
| सहस्राब्द प्रभाणेन - क्रीडित्वा समहाद्युतिः           |    |
| तत्तेजः पार्वतीगर्भे - निधाय विररामह ॥                | २' |
| अग्नौ चिक्षिप तत्तेजः - पार्वती धारणाक्षमा            |    |
| सचा प्यशक्त स्तद्वायौ - निक्षिपन् विससर्जह ॥          | २' |
| तस्मिन्केसरिणो भार्या - कपिसाध्वी वरांगना             |    |
| अंजनापुत्र मिच्छंती - महाबल पराक्रमम् ॥               | २' |
| तपश्चचार सुमह - न्नियतेंद्रियमानसा                    |    |
| तस्यै वायुः प्रसन्नात्मा - प्रत्यहं फल मर्षयन् ॥      | ३  |
| भक्षार्थं मेकदा तस्या - स्तत्तेजश्चार्षयत्करे         |    |
| फलबुध्या तु तत्तेज - स्सा प्यभक्षय दंगना ॥            | ३  |
| नाति दीर्घेण कालेन - चांजनापतिदेवता                   |    |
| स्वांगेषु गर्भचिह्नानि - सा दृष्ट्वा ह्रीमनाह्यभूत् ॥ | ३  |
| विस्मयाविष्टचित्तो तां - व्रतभंगविशंकितां             |    |
| ध्यायन्तीं भयवित्रस्ता - माभाष्याहाशरीरिणी ॥          | ३  |
| माभूत्ते व्रतभंगोऽयं - माविषीद वरानने                 |    |
| देवप्रसादात्ते गर्भे - महाव्यक्ति भविष्यति ॥          | ३  |
| एव मुक्तात् सा देवी - मुदा परमया युता ॥               | ३' |

- वैशाखेमासि कृष्णायां - दशमी मंदसंयुता  
पूर्वं प्रोष्ठपदायुक्ता - कथा वैधृति संयुता ॥ ३६
- तस्यां मध्याह्नवेलायां - जनयामास वै सुतम्  
महाबलं महासत्वं - विष्णुभक्ति परायणम् ॥ ३७
- सर्वदेवमयं वीरं - ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम्  
वेदवेदांगतत्त्वज्ञं - सर्वविद्याविशारदम् ॥ ३८
- सर्वब्रह्माविदां श्रेष्ठं - सर्वदर्शनसम्मतं  
माणिक्यकुंडलधरं - दिव्यपट्टांबरान्वितम् ॥ ३९
- कनकाचल संकाशं - पिगाक्षं हेममालिनं  
स्वर्ण यज्ञोपवीतं च - मणिनूपुरशोभितम् ॥ ४०
- ध्वजवज्रांकुशच्छत्र - पद्म रेखांघ्रि सयुतं  
दीर्घलांगूलसहित दीर्घकाय महाहनुम् ॥ ४१
- कौपीन कटिगुत्राभ्यां - विराजितं महाभुज  
आश्चर्यभूतं लोकानां - वज्र संहननं कपिम् ॥ ४२
- सर्वलक्षणसंपन्नं - किरीटकनकांगदं  
प्रभयाऽमितया विष्णो - रवतारमिवादरम् ॥ ४३
- पपात पुष्पवृष्टिश्च - नेदु दुंदुभयो दिवि  
ननृतु देव गंधर्वा - स्तुष्टुवु स्सिद्ध चारणाः  
वनौ वायु स्मुखस्पर्श - सरितो निर्मलोदकाः ॥ ४४
- यदाजना केसरिधर्मपत्नी - ह्यासूतबालं कपिसार्वभौमं  
प्रदक्षिणाकारशिखं मुनीनां - तदैव वल्लित्रितयंविरेजे ॥ ४५
- प्रसूति गंधानिलसंभृतेषु - वनेषु मत्तामकरंदनिर्झरैः  
मिर्लिद संघा विचरंतिसर्वतः - सकोरकैःपल्लवितद्रुमेषु ॥ ४६
- पतंति रत्नानि सुरेतराणां - किरीटकोटिग्रथितान्यकांडे  
तदंगना मानसगह्वरेषु - सगर्भकंपं भयमाविवेश ॥ ४७

- ततः प्रोवाच तां बाल - इचतुष्पंच दिनांतरे  
 अमायां मातरं दृष्ट्वा - आहारो मे प्रदीयताम् ॥ ४८
- इत्युक्त्वा प्राह तं देवी - लालयंती सुतं सती  
 सुपक्वं च फलं सूतो - यत्रकुत्रापि भुज्यताम् ॥ ४९
- आंजनेयः प्रहृष्टात्मा - दिव मुत्पत्य वेगतः  
 शिशुरुद्धंत मादित्यं - फल बुध्या गृहीतवान् ॥ ५०
- मुखेन गलितं भानुं - दृष्ट्वा कोपात्पुरंदरः  
 चितयामास कोन्वेष - महा सत्वःप्रदृश्यते ॥ ५१
- इति विस्मय मापन्नो - वज्रमुद्यम्य वृत्रहा  
 बाले चिक्षेप रोषाच्च - रोम्णा वज्रमपोधयत् ॥ ५२
- मोघंतत् कुलिशं दृष्ट्वा - ब्रह्मणोऽस्त्रमयोजयत्  
 तच्चापिरोम्णाचिक्षेप - विस्मिताश्चाभवन्सुराः ॥ ५३
- ततस्तंप्रार्थयांचक्रुः - पितामह पुरोगमाः  
 अंजना सुप्रजावीर - पार्वतीश्वरसंभवः  
 समर्थोऽसिमहावीर - महाबल पराक्रमः  
 नराणां च सुराणां च - ऋषीणां च हितायवै ॥ ५४
- जगत्प्राण कुमारस्त्वं - अवतीर्णोऽसि भूतले  
 सत्क्रिया नप्रवर्तते - वेदोक्ताः क्रतवस्तथा  
 त्यज सूर्य मितिप्रोक्त - स्समुमोच प्रभाकरम् ॥ ५५
- एत दाश्चर्यं मालोक्य - कुलिशं मेघवाहनः  
 समर्थमपि चापल्यात् - क्रीडासक्तं शिशुं कपिम्  
 हनौ चिक्षेप वेगेन - स पपात शिलातले ॥ ५६
- मूर्छितं बालकं दृष्ट्वा - वायुः परमकोपनः  
 प्राणास्सर्वशरीरेषु - निगृह्य न चचालह ॥ ५७
- प्राणेषु निगृहीतेषु - नप्रवृत्ताः क्रियास्ततः  
 अचेतनव दत्यंत - सम्मूढ मभव ज्जगत् ॥ ५८

|   |    |
|---|----|
| ततो देवा स्सगंधर्वाः - सिद्धाश्च परमर्षयः         |    |
| ब्रह्मा विष्णुश्च शंभुश्च - शक्रश्चापि समागतः ॥   | ५९ |
| वरैरतं छन्दयामासुः - वायुं त्रिभुधदुर्लभैः        |    |
| दीर्घमायुबलं शौर्यं - आरोग्यचाऽप्यधृष्यतां        |    |
| वुद्धिं विद्यास्तपस्तेजो - ववपटुत्व प्रसन्नताम् ॥ |    |
| चानुर्यं धैर्यवैराग्ये - विष्णुभक्ति कृपालुतां    |    |
| परनारीषु वैमुख्यं - अपचार सहिष्णुताम् ॥           | ६० |
| अजेयत्वंच सर्वास्त्रैः - सर्वदेवासुरैरपि          |    |
| एता नन्यांश्च कल्याण - वरा न्दत्वा ययु स्मुराः ।  |    |
| तत स्तुष्टा वाजनेयं - ब्रह्मलोक पितामहः ॥         | ६१ |

ब्रह्मोवाच :-

|  |    |
|--|----|
| साक्षाद्विष्णुरिव श्रीमान् - देवा नुद्धारयिष्यसि |    |
| सर्वराक्षस संहारं - करिष्यसि यथा हरः ॥           | ६२ |
| लंका दैत्यवधं कृत्वा - रामकार्यं परायणः          |    |
| संजीवनाचलं नीत्वा - लक्ष्मणं जीवयिष्यसि ॥        | ६३ |
| सीताप्रवृत्तिं मानीय - रामं संतोषयिष्यसि         |    |
| त्वं बुद्धिमान् महाशूरो - महाबलपराक्रमः          |    |
| भवानजेय स्सर्वास्त्रैः - तथापिप्रार्थनान्मम      |    |
| अगीकार्यं त्वया वीर - क्षणं ब्रह्मास्त्रबंधनम् ॥ | ६४ |
| महादेव प्रभावाद्धि - रुद्रस्यामिततेजसः           |    |
| तेजसोपि सुराणां त्वं - ऐश्वरंतेज ऊर्जतम् ॥       | ६५ |
| पार्वतीगर्भसंभूतेः - पार्वतीगर्भनामवान्          |    |
| अग्निनाधार्यमाणत्वात् - अग्निगर्भोभवान्भवेत् ॥   | ६६ |
| वायुप्रसादजननात् - वायुपुत्रोनिगद्यसे            |    |
| अंजनागर्भजननात् - अंजनेय स्ततोभवान् ॥            | ६७ |



|   |    |
|---|----|
| केसरिक्षेत्रजन्यत्वात् - पुत्रः केसरिणः कपेः<br>हनूवज्रप्रहाराद्धि - हनुमानिति नामते ॥          | ६८ |
| ब्रह्मविष्णुशिवांशत्वात् - त्रिमूर्तिरिति विश्रुतः<br>सर्वदेवांशसंभूतेः - सर्वदेवमयः स्मृतिः ॥  | ६९ |
| हनूमत्पूजयातस्मात् - पूजितास्सर्वदेवताः<br>प्रतिग्रामनिवासश्च - भूयाद्रक्षोनिवारणे              | ७० |
| इत्युक्त्वा लोकनाधोऽपि - तत्रैवांतरधीयत ॥   | ७१ |
| आजनेय स्ततःकाले - ब्रह्मचर्यपरायणः<br>समर्थोऽपि महातेजः - संपश्य न्लोकसंग्रहम् ॥                |    |
| सूर्यमंडल मुत्पत्य - वेदाध्ययनकारणात्<br>सप्रश्रय मुवा चेदं - नमस्कृत्य दिवाकरम् ॥              | ७२ |
| सांगोपनिषदोवेदान् - मम वक्तुं त्व मर्हसि<br>रविः प्रोवा चांजनेयं - अवकाशो न विद्यते ॥           |    |
| ईश्वरस्यवशेतिष्ठन् - भ्रमामीह तदाज्ञया ॥  | ७३ |
| इत्युक्तो हनुमान्कोपात् - निरुन्धे तस्य पद्धतिम्<br>त्वमेवोपाय वक्तेति - सांत्वयामास तं रविः ॥  | ७४ |
| सूर्योन्मुखं पृष्ठगतो - हनूमा नेकवासरे<br>इंद्रव्याकरणं सूर्यात् - धारयश्च महात्मनः ॥           | ७५ |
| ततो हनूमानेकंस्वं - पादं कृत्वोदयाचले<br>अस्ताद्रावेक पादं च - तिष्ठन्नभिमुखो रवेः ॥            |    |
| सांगोपनिषदोवेदान् - अवाप्य कपिपुंगवः<br>भास्करंतोषयामास - सर्वविद्यविशारदः ॥                    | ७६ |
| तस्यबुद्धिं च विद्यां च - बल शौर्यपराक्रमान्<br>विचार्य तस्मैप्रददौ - स्वस्यकन्यां सुवर्चलाम् ॥ | ७७ |
| तामुद्वाह्यमहातेजा - हनुमान्मारुतात्मजः<br>भूयः किलाकिलांकुर्वन् - पुनरायान्महाकपिः ॥           | ७८ |

- इदं हनूमच्चरितं - येऽशृण्वन्ति पठन्ति च  
लिखन्ति पुस्तकेवाऽपि - सर्वान्कामां नवाप्रयुः ॥ ७९
- सुवर्चलासमेत श्री - हनुमद्द्वादशाक्षरम्  
ये जपन्ति महात्मानः - लभन्ते ते मनोरथान् ॥ ८०
- जयन्तीनाम पूर्वोक्ता - हनूमज्जन्मवासरः  
तस्यां भक्त्या कपिवरं - नरानियत मानसाः ॥  
जपं तश्चार्चयंतश्च - पुष्प पाद्यार्घ्यचंदनैः  
धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैः - फलैर्ब्राह्मणभोजनैः ॥  
समंत्रार्घ्यप्रदानैश्च - नृत्यगीतै स्तथैव च  
तस्मा न्मनोरथा न्सर्वान् - लभन्ते नात्रसंशयः ॥ ८१
- एकोदेव स्सर्वं द इश्रीहनूमान्  
एको मन्त्रश्श्रीहनूमत्प्रकाशः  
एकामूर्तिः श्रीहनूमत्स्वरूपा  
चैक कर्म श्रीहनूमत्सपर्या ॥ ८२
- जलाधीनाकृषिस्सर्वा - भक्त्यधीनं तु दैवतं  
सर्वं हनूमतोऽधीनं - इति मे निश्चितामतिः ॥ ८३
- हनूमान्कल्पवृक्षो मे - हनूमान्ममकामधुक्  
चिन्तामणिस्तु हनुमान् - कोविचारः कुतो भयम् ॥ ८४
- : "अथ पूजांते अर्घ्यप्रदानं कर्तव्यम्" :-
- दशम्यां मंदयुक्तायां - कृष्णायां मासि माधवे  
पूर्वाभाद्राख्यनक्षत्रे - वैधृतौ हनुमानभूत् ॥ ८५
- (श्री सुवर्चलासमेत हनुमतेनमः इद मर्घ्यं समर्पयामि ।)  
जातः कपिकुलांभोधौ - स्वर्णं रभावनाश्रयः  
भक्तसरक्षणार्थाय - गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥ ८६
- (श्री सुवर्चलासमेत हनुमते नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि ।)

दुष्टानां शिक्षणार्थाय - शिष्टानां रक्षणाय च  
रामकार्यार्थं सिध्यर्थं - जातः श्रीहनुमान्कपिः ॥ ८७

(श्री सुवर्चलासमेत हनुमतेनमः इदं मर्घ्यं समर्पयामि ।)

अंजनागर्भं सम्भूत - हनूमन्पवनात्मज !  
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं - कपिवर्यं नमोस्तुते ॥ ८८

(श्री सुवर्चलासमेत हनुमतेनमः इदं मर्घ्यं समर्पयामि ।)

पूर्वाभाद्रा कुम्भराशौ - मध्याह्ने कर्कशंशके  
कौण्डिन्य वंशे संजातो - हनुमा नंजनोद्भवः ॥ ८९

(श्री सुवर्चलासमेत हनुमतेनमः इदं मर्घ्यं समर्पयामि ।)

मन्त्रम् :

श्री शब्दा हनुमच्छब्दो - जयशब्दस्ततःपरम्

हनुमान्जयशब्दं हि - संपुटीकरणं परः ॥

जयद्वयावधिश्चोर्ध्वं हनुमन्नामवै ततः

मंत्रोयं षोडशार्णस्तु - महापातकनाशकः ॥ ९०

इति श्री पराशर संहितायां पंचमुख हनुमन्मन्त्र विवरणे पराशर

मैत्रेय संवादे हनुमज्जन्मकथनं नाम षष्ठः पटलः ।



## श्री पराशर संहिता

सप्तमः पटलः

श्री सुवर्चला हनुमद्द्वादशाक्षर मन्त्र कथनम्

श्री मैत्रेयः :

आंजनेय स्वरूपं त - स्योत्पत्ति मन्त्रवैभवः

कथितानि त्वथा ब्रह्मन् - श्रुतानीह मया प्रभोः । १

सुवर्चलासमेत श्री - हनुमद्द्वादशाक्षरः

कीदृशस्तत्पुरश्चर्या - तस्योत्पत्तिश्च कीदृशी? २

पुरा केवा पुरश्चर्या - कृत्वा सिद्धि मवाप्नुवन्?  
श्रोतु मिच्छामि तत्सर्व - वर्ण्यतां भगवन्! मुने! ३

श्री पराशरः :

- सप्तकोटि महामन्त्राः - प्रोक्ता गौर्यैहि शम्भुना  
शैवाश्च वैष्णवा स्सौराः - गाणापत्याः शिवात्मिकाः ॥
- कौमारा भैरवा इचान्ये - केचि न्मन्त्रा हनूमतः  
केचिद्भुक्तिं प्रचुर्यन्ति - केचिन्मुक्तिं दिशति च ॥ ४
- देवतानां यथा विष्णुः - नक्षत्राणां यथा शशी  
ग्रहाणां तु सहस्रांशुः - नदीनां जाह्नवी यथा  
तथा सुवर्चलायुक्त - हनुमद्द्वादशाक्षरः  
मन्त्रः श्रेष्ठतर शशीघ्नं - भुक्तिं मुक्तिं प्रयच्छति ॥ ५
- न कालदेशनियमो - नारिमित्रादि शोधनम्  
प्रसन्नोपासकगुरो - मुखाल्लब्ध्वा मनुं त्वियम् ॥ ६
- गुहं संतोषये द्वीमान् - शुश्रूषा स्वर्णभूषणैः  
वस्त्रैर्माल्यै धूपदीपै - रभीष्टैः मृष्टभोजनैः ॥ ७
- गुरो स्संतोषणेनैव - हनुमान् भक्तवत्सलः  
संतुष्य सकलाभीष्टान् - ददातीह न सशयः ॥ ८
- अत्याश मतिलुब्ध च - दांभिक ज्ञानवर्जितम्  
असंतुष्ट मसांत च - न पापं गुह माश्रयेत् ॥ ९
- नास्तिकाय कृतघ्नाय - वंचका यातिलोभिने  
अनाचाराय पापाय - नैतन्मन्त्रं प्रदापयेत् ॥ १०
- जगत्प्रागतनूजत्वात् - जगतःप्राणएव सः  
तदधीन जगत्सर्व - मिति मे निश्चिन्ता मतिः ॥ ११
- आदौ प्रणव मुच्चार्थ - श्रीबीजं त दनन्तरम्  
ततः श्रीवर्णं मुच्चार्थ - सुवर्चलापद तथा ॥ १२

|   |    |
|---|----|
| हनुमत्पद मुच्चार्य - नमश्शब्दं ततःपरम्<br>द्वादशाक्षरमंत्रोऽयं - पुरश्चर्याविधिं शृणु ॥   | १३ |
| अहमेव ऋषि स्तत्र - गायत्री छंदएव वा<br>सुवर्चलासमेत श्श्री - हनुमान् देवता तथा ॥  | १४ |
| मारुतात्मज बीजं च - अजनासुत शक्ति च<br>कीलक वायुपुत्रस्तु - ममश्री पद मुच्चरेत् ॥   | १५ |
| सुवर्चलेशहनुम - त्रसादे विनियोजनम्<br>अगन्यासं करन्यासं - कुर्याद्वै मूलमंत्रतः ॥   | १६ |
| अजनासुतायेति च -ततो वै रुद्रमूर्तये<br>वायुसुतायेति तथाग्निगर्भाय ततः परम्<br>श्रीराम मुख्यदूतश्च - ब्रह्मास्त्रादि निवारणः<br>भूर्भुवस्सुवरो मिति - दिग्बधनपदं वदेत् ॥ | १७ |

यानम् -

|  |    |
|--|----|
| सुवर्चलाधिष्ठित वामभागम्<br>वीरासनस्थं कपिवृन्द सेव्यम्<br>स्व पादमूल शरणगतानाम्<br>अभीष्टेदं श्री हनुमंत मीले ॥ | १८ |
|--|----|

धांतरे -

|  |    |
|--|----|
| भक्त कल्पतरुं सौम्यं - लोकोत्तर गुणाकरम्<br>सुवर्चलापति वन्दे - मारुति वरदं सदा ॥        | १९ |
| पद्मासनं समास्थाय - पूर्वाभिमुखतो नरः<br>प्रातःकाल उपक्रम्य - अपराह्णे जपे न्मनुम् ॥     | २० |
| आंजनेयः पूजितश्चेत् - पूजिता स्सर्वदेवताः<br>हनुमन्महिमा शक्यो - ब्रह्मणापि नवर्णितुम् ॥ | २१ |
| सिंधु संगममध्ये तु - नदीतीरे विशेषतः<br>हनुमत्सन्निधौ वापि - गृहमध्ये विशेषतः ॥          | २२ |

|   |    |
|---|----|
| अश्वत्थतरुमूले तु - पर्वताग्रे तथैव च<br>अयुतं तु पुरश्चर्या - मिताहारो जितेंद्रियः ॥           | २३ |
| जपमध्येऽप्यथशशायी - हविष्यं भक्षयेत्ततः<br>प्रथमेऽह्नि यथाहारः - असमाप्ति तथैव च ॥              | २४ |
| दशांशं तर्पये द्वीमान् - तद्दशांशं हुनेत्तथा<br>पायसापूपदध्यन्नैः - ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः ॥    | २५ |
| गोक्षीर शर्कराज्यैश्च - तर्पणं तु समाचरेत्<br>मध्वाज्य शर्कराभिश्च अपूपैश्च हुनेत्ततः ॥         | २६ |
| खर्जूर कदलीभिश्च - नारिकेलफलैस्तथा ॥<br>मल्लिका जातिपुष्पैश्च - चंपकैः वकुलैस्तथा ॥             |    |
| हुने दष्टोत्तरशतं - कुबेरसदृशो भवेत्<br>सुरराजसमं लोके - ऐश्वर्यं शाश्वतं ध्रुवम् ॥             | २७ |
| हनुमत्कृपया नित्यं - सर्वलोकोवशो भवेत्<br>एतस्यैव जपे नेद्वी - वृत्रासुर मसूदयत् ॥              | २८ |
| इमं जप्त्वा भीमसेनो - जरासंध मसूदयत्<br>स्वास्त्रविकार सिद्ध्यर्थ - मेत द्ब्रह्मा जजापह ॥       |    |
| एनं विभीषणा लब्ध्वा - ताक्षर्योऽप्यमृत माहरत् ॥<br>गर्गाचार्या दिमं लब्ध्वा - सीता सा जनकात्मजा | २९ |
| इषूनलीलया पूर्वं - शतानन महासुरम् ॥<br>एत न्मंत्रपुरश्चर्या - कृता पूर्वं महात्मभिः ॥           | ३० |

### शताननवधम्

त्रेयः -

|  |    |
|--|----|
| शताननवधं सीता - कथं कृतवती पुरा<br>रामे च लक्ष्मणे चैव - शत्रुघ्ने भरते स्थिते ॥                   | ३१ |
| हनुमत्यपि सुग्रीवे - तत्सर्वं वर्ण्यतां मुने<br>श्रोतु मिच्छाम्यहं ब्रह्मान् - परं कौतूहलं हि मे ॥ | ३२ |

- सोताया इचरितं वक्ष्ये — कल्याणं श्रुणु तत्त्वतः  
 या लोकमाता श्री विष्णोः — बल्लभा जगदीश्वरी ॥ ३३
- रामः कमलपत्राक्षः — सेतुं बध्वा महोदधौ  
 सुग्रीवसचिव श्रीमान् — अवधी द्रावणं रणे ॥ ३४
- स्वात्मानं राघवो मेने - कृतर्थ दैत्यनाशनात्  
 एतस्मिन्नंतरे वाणी - अंतरिक्षे जगाद तं ॥ ३५
- शतयोजनभूताब्दौ - कियान् दशमुखासुरः  
 सहस्रयोजनाब्दौ तु - गगने परिवर्तितः ॥ ३६
- अजेय स्सर्वभूतानां - जहि तं दैववैरिणम् ॥ ३७
- तच्छ्रुत्वा राघवो धीमान् - अभूच्चितापरायणः  
 शतयोजनविस्तीर्ण - समुद्रे सेतुबंधनं  
 कृत्वा कष्टदशां घोरां - संप्राप्तावानरा इति ॥ ३८
- साहस्रयोजनांभोधौ - सेतोश्च बंधनं यथा  
 अतीवदुस्तरं ह्येत - दिति चितां करोति सः ॥ ३९
- त मुवाच महातेजा - हनुमान् मारुतात्मजः ॥ ४०
- प्रसार्य लांगूल महं - सहस्रयोजना दति  
 अत्यंतकाय संयुक्तः - तिष्ठामि बरुणालये ॥ ४१
- सप्तसागरपर्यन्तं - वर्धयिष्यामि सेतुवत्  
 लांगूले नांबुधि तीर्त्वा - जहि तं हि शताननम् ॥ ४२
- इत्युक्त्वा दीर्घलांगूलं - प्रसार्य पवनात्मजः  
 मार्गं कृत्वा समुद्रांत - मतिष्ठत्तत्र संस्थितेः ॥ ४३
- लांगूल रोमजालेषु - नक्षत्राणि तथा ग्रहाः  
 दृश्यन्ते दभंपुंजेषु - यथैव हिमबिंदवः ॥ ४४
- ततो दाशरधी श्रीमान् - चतुरंगवलै रसह  
 गत्वा वानर सैन्यैश्च - युद्धाय समुपस्थितः ॥ ४५

|   |    |
|---|----|
| अन्तरिक्षपुरं तस्य - ह्यगम्यं सर्वदेहिनाम्<br>अदृश्य मितरेषां तत् - असाध्यं देवदानवैः ॥   | ४६ |
| प्राकारोऽग्निमय स्तस्याः - अप्रधृष्यः पराक्रमैः<br>इत्याकाशवच्च श्श्रुत्वा - राघवश्चिन्तितो बहु ॥   | ४७ |
| तदा हनुमान् दुर्दर्शः - प्राकाराग्नि सरित्पतौ<br>क्षिप्त्वा तत्पुरपर्यन्तं - स्वलांगूलमवर्धयत् ॥  | ४८ |
| तत्पुरीसमलांगूले - चतुरंगबलैस्सह<br>भ्रातृभिस्साकमारुह्य - चकार कथनं महत् ॥   | ४९ |
| तद्युद्धमभवद्घोरं - तुमुलं रोमहर्षणम्<br>शताननस्य रामस्य - वानराणां च रक्षसाम् ॥  | ५० |
| शिरांसि तस्य कृत्तेषु - तीक्ष्णे राघवसायकैः<br>पुनरेव प्ररोहन्ति - घोररूपशिरांसिवै ॥  | ५१ |
| तस्य दैत्यस्य रक्तेन - संसक्ता भुवि पांसवः<br>भवन्ति तत्क्षणादेव - सर्वे एव शताननाः ॥   | ५२ |
| ते युध्यन्ति महावीरा - महाबलपराक्रमाः<br>शताननानां सर्वेषां - यावन्तो रक्तबिन्दवः ॥   |    |
| संशक्ता भूपरागेष्यु - स्तावन्तस्तु शताननाः ॥  | ५३ |
| एवं शताननास्सर्वे - राघवैस्सह संगताः<br>युध्यन्तो मूर्च्छिताश्चक्रुः - भ्रातृन्संग्राममूर्धनि ॥   | ५४ |
| मूर्च्छितान् राघवान् दृष्ट्वा - सीता चिन्ताकुलाभवत्<br>एतस्मिन्नन्तरेगर्गः - समागत्य महामुनिः<br>द्वादशार्णमनुं तस्यै - ददौ सीताजजाप च<br>तस्मात्प्रसन्नो हनुमान् - अभवद्विश्वरूपधृत् ॥ | ५५ |
| वानरं मुखमेकं तु - द्वितीयं सिंहवक्त्रकम्<br>तृतीयं गारुडं वक्त्रं - चतुर्थं सौकरमुखम्<br>ह्याननं पंचमं चा - प्येकैकं नयन् स्त्रिभिः<br>दशबाहुसमोपेतं - दशायुधसमन्वितम् ॥               | ५६ |



|   |    |
|---|----|
| तदा प्रभृति कथितः - पंचास्योहनुमानिति<br>रूपं तस्य बभौ यद्यत् - रुद्रस्य पुरघातिनः ॥                                  | ५७ |
| शताननानां सर्वेषां यावन्ति वदनानिवै<br>तावन्तो पंचवदना - बभूव कपिकुंजरः ॥   | ५८ |
| ततो हनुमान् स्वस्कंधे - चारोप्य जनकात्मजाम्<br>भय मापादयामास - राक्षसानां दुरात्मनाम् ॥                               | ५९ |
| तत स्सीता भगवती - कालीरूपं दधौ द्रुतम्<br>भयंकरी बभू वाथ - युयुधे शरवर्षिणी ॥   | ६० |
| तद्युद्ध मभवद्घोरं - सीताया रक्षसां तथा<br>रक्षो रक्ताद्रं रेणूत्थ - रक्षसान्वीक्ष्यविस्मितः ॥                        | ६१ |
| तस्थौ विस्तीर्य लांगूलं - हनुमान् रक्तपातने<br>अभावा द्रक्तपातस्य - क्षितौ नष्टा शताननाः ॥                            | ६२ |
| सीताया शरवर्षेण - चैक ए वावशेषितः<br>तत स्सीता महाघोरं - शर मग्निशिखोपमम्<br>संधाय धनुषि श्रेष्ठ - मिद माह सुमध्यमा ॥ | ६३ |
| एकपत्नीव्रतो रामो - यद्यहं पतिदेवता<br>पत त्यनेन बाणेन - शतानन शिरो महत् ॥  | ६४ |
| इत्युक्त्वा जानकी बाणात् - पातयामास तच्छिरः ॥   | ६५ |
| पपात पुष्प वृष्टिश्च - नेदु दुन्दुभयो दिवि<br>वानराश्च नराश्चैव - संतुष्टा स्सकलाभवन् ॥                               | ६६ |
| तेषां सतोष घोषेण - राघवा स्सहसोत्थिताः<br>सीतां दृष्ट्वा हनूमन्तं - श्रीरामो वाक्य मब्रवीत् ॥                         | ६७ |
| युवयो विश्वरूपं च - मम दर्शयितुं क्षमम्<br>सीता च हनुमांश्चैव - तदा श्रीराम मूचतुः ॥                                  | ६८ |
| स्वरूप मावयो द्रुष्ट्वा - भीत स्त्वं भवसि ध्रुवम्<br>उवाच प्रहसन् वाक्यं - ता बुभौ रघुनन्दनः ॥                        | ६९ |

|   |    |
|---|----|
| ज्ञात एव प्रभावो वा - मतिदेवोऽतिदानवः               |    |
| इति प्रशंश्यमानौ तौ - परमां मुद मापतुः ॥            | ७० |
| हनूमंतं च सीतां च - स्तुत्वा जग्मु र्यथाकताः        |    |
| सीताया विजयं चैव - प्रभावं च हनूमतः                 |    |
| यः षष्ठेच्छृणुया द्वापि - सर्वाङ्कामा नवाप्नुयात् ॥ | ७१ |

यंत्रोद्धार :

|  |    |
|--|----|
| अथ पूजा विधानार्थं - यन्त्रलक्षण मुच्यते           |    |
| सर्वयन्त्र श्रेष्ठतमं - भुक्ति मुक्ति फलप्रदम् ॥   | ७२ |
| प्रथमं वर्तुलं लेख्यं - अष्टकोणं च विन्यसेत्       |    |
| तद्बहिर्वृत्त मालिख्य - षोडशाब्जं च लेखयेत् ॥      | ७३ |
| तद्बहिर्वृत्त मालिख्य - लेखयेद्भ्रू पुरद्वयम्      |    |
| ततःपरं चतुर्वारं - सुन्दरं तद्विलेखयेत् ॥          | ७४ |
| परमोत्कृष्ट मोंकारं - यंत्र मध्ये विलेखयेत्        |    |
| अष्टाक्षरी महामंत्रं अष्टकोणेषु लेखयेत् ॥          | ७५ |
| एकाक्षरी महामंत्रं - देवस्य श्री हनूमतः            |    |
| षोडशाब्जे चतुर्ष्वेव दलेष्वेव विलेखयेत् ॥          | ७६ |
| षोडशाब्जे महारम्ये - पत्रेषु द्वादश स्वपि          |    |
| सुवर्चला हनुमतो - लेखयेद्द्वादशाक्षरीम् ॥          | ७७ |
| भूपुराणां षोडशाब्ज - दलानां मध्यभागतः              |    |
| अष्टाक्षरी मंत्रराजं - चतुराशासु लेखयेत् ॥         | ७८ |
| चतुर्विंश त्यक्षरं च - भूपुरेषु विलेखयेत्          | ७९ |
| यथा माता सुत रक्षेत् - यथा युद्धेषु कंचुकम्        |    |
| तथा रक्षेत् महायंत्रं - तद्गेहे यस्य चास्ति चेत् ॥ | ८० |
| ताम्रे वा रजते वाथ - सुवर्णे वा विशेषतः ॥          |    |
| यंत्रं लिखित्वा प्राणस्य - प्रतिष्ठा माचरे ततः ॥   | ८१ |

|  |    |
|--|----|
| सूर्येन्दु ग्रहणे काले - पुण्यक्षेत्रे नदीतटे  |    |
| अष्टोत्तरशतं सूर्य - संख्याक्षरमनुं जपेत् ॥  | ८२ |
| मध्वाज्य शर्करा क्षीरैः - अभिषेकं समाचरेत्   |    |
| षोडशै रूपचारैश्च - पूजयेद्यन्त्र मुत्तमम् ॥  | ८३ |
| सर्वकामप्रदं नृणां - मंदवारे विशेषतः   |    |
| प्रत्यह पूजयेद्यन्त्रं - तत्र लक्ष्मी रचंचला ॥   | ८४ |
| यन्त्रपूजा यस्यगेहे - तत्र चोराग्नि नाशनम्   |    |
| रक्षो भूतपिशाचेभ्यो - भयं नास्ति न संशयः ॥   | ८५ |
| राजद्वारे रणद्वारे - यन्त्रधारी स सीदति  |    |
| अरण्ये व्याघ्रसिंहाध्ये - न हि तस्य भयं क्वचित् ॥  | ८६ |
| इति श्री पराशर संहितायां पंचमुख हनुमन्मन्त्र विवरणे पराशर<br>मंत्रेय संवादे श्री सुवर्चलाहनुम द्वादशाक्षरमन्त्रकथनं<br>नाम सप्तमपटलः । |    |



## श्री पराशर संहिता

### अष्टम पटलः

-: ध्वजदत्त चरितम् :-

त्रेयः -

|  |   |
|--|---|
| श्री॥ पराशर महाप्राज्ञ! - हनुमन्मंत्र वैभवम्     |   |
| भूयोऽपि श्रोतु मिच्छामि - कृपया वद मे प्रभो! ॥   | १ |
| केन चादौ पुरा जप्तं - हनुमन्मंत्र मुत्तमम्?      |   |
| केनोपदिष्टं गुरुणा - कस्मै शिष्याय धीमते?        | २ |
| कस्य सिद्धिप्रदं शीघ्रं - जप्तं विश्वास पूर्वकम् |   |
| विलंबितं फलं कस्य? - तत्सर्वं प्रतिपाद्यताम् ॥   | ३ |

श्री पराशरः

|  |    |
|--|----|
| इतिहासं महापुण्यं - श्रोतॄणां सर्वकाम्यदम्<br>सर्वपापहरं नृणां - नारीणां वा विशेषतः ॥  | ४  |
| सनत्कुमार वदनात् - श्रुत्वेसं ब्रह्मसंसदि<br>यथाश्रुतं प्रवक्ष्यामि - श्रुणुष्व मुनिसत्तम! ॥   | ५  |
| पुरा कृतयुगे भूमौ - पुष्कराख्यो महामुनिः<br>सवंशास्त्रार्थं तत्त्वज्ञः - सर्वागम विशारदः ॥   | ६  |
| शांतोदांत स्सदाचारः - श्रद्धावाननसूयकः<br>सर्ववेदार्थं सारज्ञः सदा मंत्रार्थं तत्परः ॥   | ७  |
| एवं सर्वगुणोपेतः - हनुमान्भक्तिमान्मुनिः<br>कदाचि दात्मनो जप्तु - हनुमन्मंत्र मुत्तमम्<br>नैमिशारण्य माकीर्ण - सर्वैर्मुनिगणै स्सदा<br>सिद्धाश्रम मिति ज्ञात्वा - सिद्धयोगी समाविशत् ॥ | ८  |
| तत्रग वा महायोगी - पुष्करः पुष्करेक्षणः<br>जजाप परमं जप्यं - हनुमन्मंत्र मुत्तमम् ॥  | ९  |
| सिद्धत्वान्मंत्रराजस्य - फलव्यग्रो न चा भवत्<br>नापेक्षां कुरुते तस्मिन् - सदा मंत्ररतो भवेत् ॥  | १० |
| अथास्मि न्नतरे ब्रह्मन् - ध्वजदत्ताह्वया द्विजः<br>वेदवेदाग सारज्ञः - दरिद्रो बहुपुत्रवान् ॥   | ११ |
| उपादानरतो नित्यं - गृह्णाति सत्कुटुंबिनः<br>नालं क्षुधार्तये तस्य - शिशूना धान्य मार्जितम् ॥   | १२ |
| शाकहारेण तद्भार्या - जीवनं कुरुते स्वकम्<br>शीलानाम सुशीला च - महासाध्वी कुटुंबिनी ॥   | १३ |
| कदाचिदपि नोवेत्ति - ह्यन्नं वा सिद्धमात्रकम्<br>पातिव्रत्या द्विवेकाच्च - सा नोपालभते पतिम् ॥  | १४ |
| निजकर्मफलं नूनं भोक्तव्य मिति जानती<br>पतिं शुश्रूषमाणा सा - न च कपेक्षुधावती ॥  | १५ |

- शोकमात्रेण सा साध्वी - बहुकालं निवायह  
 न विवेद पतिस्तस्याः शाकाहारं कदाचन ॥ १६
- अन्नं भुक्त्वावशिष्टं तु - भोक्षती त्येव मन्यते  
 सापि न प्रेयसी प्राह - नान्नं मेऽस्तीति भामिनी ॥ १७
- ध्वजदत्तो महाप्राज्ञ - उपादानरतोऽपिसन्  
 अध्यापयन् बहून् विप्रान् - तस्थौ सब्रह्मचारिभिः ॥ १८
- अथासीनो बर्हिर्वेद्यां - परीक्षां कर्तुं मुद्यतः  
 १९
- सामगान् कतिचिद्विप्रान् - याजुषान् बह्वृचा नपि  
 अन्या नाधर्वणांश्चैव - गांधर्वा नपि गारुडान् ॥  
 हनुमद्वेद शिरसि - निष्णाता नपि वै द्विजान्  
 न्मांडूका नपि नानांश्च - तापरीक्षितवान् द्विजः ॥ २०
- आहूतवान्निजं पुत्रं - ध्वजदत्तः परीक्षितुम्  
 आहूतोऽपि न निष्क्रान्तः - क्षुधातो मातृसन्निधेः ॥ २१
- क्षुधितापि महासाध्वी - शाकाहारं स्वकं ददौ  
 पुत्राय क्षुधिता यासु - परीक्षा दीयता मिति  
 पुत्रे चिरायमाणे तु ध्वजदत्त उपागमत् ॥ २३
- ददर्श भक्षमाणं तं - शाकं तन्मातृसन्निधौ  
 अथाब्रवीत्सपुत्रां तां - प्रेयसीं मितभाषिणीम्  
 त्वया किं भक्ष्यते साध्य - यतो ना याति पुत्रकः ॥ २४
- स्ववृत्त दर्शनात्साध्वी - लज्जिता च मुहुर्मुहुः  
 उच्चमानापि भर्त्रासा - नोत्तरं प्रतिपद्यते ॥ २५
- विलबासहमानस्सन् - शाकमात्रं त मस्पृशत्  
 अन्नाभावा दिदं भुक्तं इति निर्विण्णमानसः ॥ २६
- निनिंदात्मान मद्बुद्धः - धि रजीवन मिदं मम  
 श्रुतं धि इमेऽखिलं शास्त्रं - धि गाचार मित्तीरयन्  
 यत स्साध्वी महाप्राज्ञि - शाकाहारेण जीवति ॥ २७

- अथोवाच प्रियां विप्रः - दययाविष्टचेतनः  
दुःखगद्गदया वाचा - प्रेयसी दैन्यदर्शनात् ॥ २८
- यत्र कुत्राप्यटन् भार्ये! - त्वन्मुखांभोज दर्शनात्  
विस्मृत्याध्वपरिश्रान्ति - सद्योनिर्वृति माप्नुयाम् ॥ २९
- स्त्रीणां पुत्रः प्रियो भर्तुः - लोके सर्वत्र दृश्यते  
मयि तेतु परा प्रीतिः - पुत्रेभ्योऽप्यतिरिच्यते ॥ ३०
- प्रसन्न वदना नित्यं - स्मितपूर्वाभिभाषिणी  
स्वप्नेऽपि प्रतिकूला त्वं - न जानासि हितैषिणी ॥ ३१
- जल शाकं च मूलं वा - त्वया संपूर्णं चित्तया  
दत्तमश्नाम्यहं नित्यं - अमृत देवता यथा ॥ ३२
- यौवनं मध्यमे लोके - प्रसूत्यंतमितीरितम्  
बहुपुत्रापि रम्यात्व - यथा षोडशघाषिका ॥ ३३
- वासंती मालिकावत्वं - यदा शय्या मधिष्ठिता  
तदाह तृणवन्मन्ये - गंधर्वी वा सुरांगनाम् ॥ ३४
- आनुकूल्याच्च नारीणां - प्रातिकूल्यं परं स्मृतम्  
वियोगे प्रतिकूलायाः - पतिस्सतोष मिच्छति ॥ ३५
- मत्पूर्वपुण्य विभवा - त्वव दुष्कृतकारणात्  
मन्ये पाणिगृहीतां मे - भवती ममरांगनाम् ॥ ३६
- अरुधत्या अहल्याया - द्रौपद्या अभिसुव्रते!  
ताराया अपि सीताया - स्सत्यवत्या स्तथैवच  
अन्यासा मपि नारीणां - पातिव्रत्य मनुत्तमम्  
इतिहास पुराणाद्यैः - श्रूयते नवदृश्यते ॥ ३७
- भवत्यां तु विशेषेण - कालेन महता प्रिये!  
पातिव्रत्यपरान् धर्मान् - दृष्ट्वा नस्मि सांप्रतम् ॥ ३८
- कल्याणगुण पूर्णत्वात् - पश्यतोऽर्हनिशं मम  
चक्षुष्मत्तेय मन्वर्था - चिराय चरितं प्रति ॥ ३९

- सहस्र मर्धयेऽक्षीणां - तव सौंदर्यं मीक्षितुम्  
 वर्णितुं तव सौशील्यं - सहस्र रसना अपि  
 सहस्रभुजशाखांश्च - तवांगमुपगूहितुम् ॥ ४०
- अति सौंदर्यसारेऽपि - गर्वलेशोऽपिनास्ति ते  
 न चावमन्यसे कांचित् - कुरूपा मपि भामिनीम् ॥ ४१
- तव सौंदर्यं संपत्त्या - पातिव्रत्य गुणेन च  
 दारिद्र्य मपि दुर्धर्षं - मनुमन्ये कथंचन ॥ ४२
- ईदृशीं भवतीं भार्या मामेव ध्यायतीं सदा  
 विहाय क्व गमिष्यामि - प्रिये दारिद्र्य कारणात् ॥ ४३
- मदीयं गृह माविश्यं - किं नु भुक्त्वं? त्वया प्रिये?  
 धर्मार्थं काममोक्षाणां - त्वं मूल मिति निश्चयः ॥ ४४
- अन्नपानै यथाकामं - वस्त्रै राभरणै रपि  
 न प्रीणयति यो भार्या - स पुमान् पुरुषाधमः ॥ ४६
- पिता रक्षति कौमारे - भर्ता रक्षति यौवने  
 पुत्रा रक्षन्ति वार्धक्ये - न स्त्री स्वातन्त्र्य मर्हति ॥ ४७
- अनुकूला प्रिया साध्वी - यस्यास्ति निजमंदिरे  
 तदेव भवनं नोचे - द्यथारण्य तथा गृहम् ॥ ४८
- पतिव्रता सुशीला च सुरूपा साधुभाषिणी  
 कुलजा भवती साध्वी - कथं त्वां त्यक्तु मुत्सहे? ४९
- साध्वी भार्याच यस्यास्ति - स मान्यो बन्धुभिर्जनैः  
 स एव पुरुषप्लाघ्यः - सयोग्य र्सर्वं कर्मसु ॥ ५०
- वृद्धौ च माता पितरौ - साध्वी जाया सुतश्शिशुः  
 अप्यकार्यं शतं कृत्वा - भर्तव्यामनुरब्रवीत् ॥ ५१
- पंक्तिभेदी पृथक्पाकी - नित्यं ब्राह्मण दूषकः  
 विप्रद्रव्यापहर्ता च - ब्रह्महंता तथैव च  
 एवं मुखा श्चतुर्दश - महापातक संज्ञिकाः ॥ ५२

|  |    |
|--|----|
| तस्मा दुपेक्षमाणस्य - साध्वीं त्वां हितभाषिणीम्<br>प्रायश्चित्तोपदेशं मे - वक्तु मर्हसि सांप्रतम् ॥                          | ५३ |
| इति निन्दित मात्मानं - खिग्रंतं च पुनःपुनः<br>भर्तारं प्राह सा साध्वी - किमर्थं शौक ईदृशः ॥                                  | ५४ |
| उचितं किं महा प्राज्ञः - धीरोदात्तस्य ते प्रियः<br>सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः - किमर्थं कथ्यते प्रभो!                         | ५५ |
| निजकर्माणि सर्वाणि - भोक्तव्यानि न संशयः<br>ईदृशान्येव कर्माणि - कृतान्यस्माभि रंजसा ॥                                       | ५६ |
| कणमात्रं जलं वापि - अन्नं वा सिद्धमात्रकम्<br>सत्पात्रे नार्पितं यस्मा - तस्माद्दारिद्र्य मागतम् ।                           | ५७ |
| को वा विचारये दर्थे - ह्यवश्यं भावि नीडृशे<br>तस्मा द्विवेकिन स्तत्र - विचारो नै वसांप्रतम् ॥                                | ५८ |
| इत्युक्त्वा वचनं साध्वी - पादयो निपपातह<br>निपतंतीं निजां भार्या - आलिंग्य च पुनःपुनः ॥                                      |    |
| आदृत्य सांत्ववचसा - देशकालोचितेन सः<br>आदाय देवतां स्वां च - उपादानपरो ययौ ॥   | ५९ |
| तदेव चिंतमानस्य - गच्छतो दिश मुत्तराम्<br>चिंता समभव त्तस्य - ध्वजदत्तस्य धीमतः ॥  | ६० |
| तपसा वा महोग्रेण - वेतने नाधवा पुनः<br>यजनाध्यापनाभ्यां वा - आनयिष्ये धनं बहु ॥  | ६१ |
| इति मुदितमना ह्युपाययोगात्<br>निज सुखलेश पराङ्मुखाभिमान,<br>ज्वलित हुतभुजं प्रभातकाले<br>मुनिवर मंडित मभ्यगा द्द्विजेंद्रः ॥ | ६२ |

इति श्री पराशरसंहितायां पराशर मैत्रेय सम्वादे श्री सुवर्चला  
ह ईदृद्वादशाक्षरमाहात्म्ये ध्वजदत्तचरित कथनं नाम





# श्री पराशर संहिता

नवम पटलः

-: ध्वजदत्त चरितं :-

यः -

१ ॥ किं माहर्षीं द्वनं गत्वा - ध्वजदत्तः पराशर  
तद्वनं वा किमाख्यातं? - तन्मेब्रूहि महामुने ! १

पराशरः

तद्वनं नैमिशारण्यं - यत्रास्ते पुष्करो मुनिः  
यत्र संति मुन ब्राताः अपरे कश्यपादयः ॥ २

जपंतो भव्य मंत्राश्च - ध्ययंत श्चेष्टदेवताः  
प्रायशो हनुमद्भक्ताः - तन्मंत्र जपतत्पराः ॥ ३

नित्य होमपराः केचित् - काम्य होमपराः परे  
अन्ये कर्मपरित्यक्ताः - केवल ध्यान तत्पराः ॥ ४

इत्येवं विविधै र्व्याप्तं - बहुभि र्मुनिपुंगवैः  
ध्वजदत्तो वनं वीक्ष्य - विस्मयं परमं ययौ ॥ ५

दंतधावनपर्णानि - समित्पुष्पफलानि च  
गृहीत्वा निजपाणिभ्यां - प्रविष्वो वनगह्वरम् ॥ ६

यत्रास्ते पुष्करोयोगी - हनुमध्यान तत्परः  
सूर्यबिंबसम ज्योतिः - हनुमन्मंत्र वैभवात् ॥

तं देश मगमद्दीप्तं - शनै र्भीतो महात्मनः  
तूष्णीं तस्थौ लदभ्यासे - विस्मृत स्वार्थसंभ्रमाः ॥ ७

यदृच्छया मुनींद्रोऽपि - माध्याह्निक मुपासितुम्  
निवृत्तयोग स्तत्रैवं - निवृत्त स्स्वांत रात्मनः ॥ ८

ध्वजदत्तो महाप्राज्ञः - वीक्षमाणे महामुनी  
उपहारं निवेद्यादौ - सास्टांगं प्रणतोऽभवत् ॥ ९

- अथाब्रवी न्महाभागो - ध्वजदत्तं द्विजोत्तमम्  
 किमर्थं मागतो ब्रह्मन्! केनवाऽपकृतो भवान्! १०  
 निर्विण्णवदनोभूत्वा चिंताक्रांत इव स्थितः  
 एत त्सर्वयथापृष्टः - विचार्य ब्रूहितत्त्वतः ॥ ११  
 श्रुत्वा तद्वचनं विप्रः - पुष्करस्य महात्मनः  
 प्रत्युत्तरं यथान्याय्य - ववतु समुपचक्रमे ॥ १२  
 कुडिनं नाम नगरं आसीत् त्रैलोक्य विश्रुतम्  
 यत्राद्या वणिजा नित्यं - कुबेराधिकसंपदः ॥ १३  
 ब्राह्मणाश्चापि विद्वांसः - सुरराजगुरूपमः  
 नित्यान्नदान निरताः - नित्यं होमपरायणाः ॥ १४  
 स्त्रियः पतिव्रता स्सर्वाः - शूद्राः ब्राह्मण सेवकाः  
 क्षत्रियाः धर्मयोद्धारो - म क्वचि द्रवणसंकरः ॥ १५  
 नाभू दविद्वान् यः कोऽपि - ना वादकुशल स्तथा  
 ना षडगविदत्रासीत् - नायज्वा तत्र पट्टणे ॥ १६  
 एवं सर्वसमृद्धेऽस्मिन् - ध्वजशर्मा बहुश्रुतः  
 बह्वृचो गार्ग्यंगोत्रश्च जितांतर्बाह्यशात्रवः ॥ १७  
 तस्याऽहं ज्येष्ठपुत्रश्च - कनीयान् मम भद्रकः  
 तस्याऽनुजो भद्रबाहुः - सर्वे वेदपरायणाः ॥ १८  
 अनुजौ तौ महापुर्या उपादानपरायणौ  
 तेषां ममापि पुत्रासे नालं क्षुक्षतांतये! मुने ॥ १९  
 पुत्रामे बहव स्सन्ति साध्वी भार्या प्रियंवदा  
 उपादानार्जितं धान्यं नालं ग्रासायनो मुने ॥ २०  
 शाकाहारेण सा साध्वी जीवनं कुरुते भृशम्  
 उपवासपराप्रायः - शाकाभावे पतिव्रता ॥ २१  
 तद्वैन्यदर्शना देव - कदाचि दतिचिंतितः  
 आश्वास्य तां प्रियैर्वाक्यैः वंचयित्वाऽह मागतः २२

- तस्माद्भिक्षहन्तारं सर्वं सौभाग्यदायकम्  
सर्वदुःखहरं चाऽपि - ह्युपायं वक्तुं महंसि ॥ २३
- बहुनाऽत्र किमुक्तेन? ममैतद्वचनं श्रुणु  
दारिद्र्यसागरे मग्ना - नस्मा नुद्धारयिष्यसि ॥ २४
- इत्युक्त्वा ध्वजदत्तस्तु - पादयोर्निपपातह  
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा - दयार्द्रं मनसो मुनेः  
न्यपत न्प्रणतस्यांगे नेत्राभ्या मश्रुबिंदवः  
हनूमंतं हृदिध्यात्वा धैर्यं मास्थाय पुष्करः  
ध्वजदत्तं समुत्थाप्य माभैषी रिति चाब्रवीत् ॥ २५
- अस्त्यनर्धंपरीहार - समर्थो हनुमान् प्रभुः  
वर्तते हानुमन्मंत्रः - दैन्यं किन्तु? द्विजोत्तम! ॥ २६
- दैवतानि कतिसन्ति न भूमौ  
नैवतानि मनसो मतानि मे  
वीक्षितं जडदरिद्ररक्षणे  
दैवतं हनुमदाख्यमेव यत् ॥ २७
- मंत्रजालं मपि नाऽन्यगोचरम्  
रोचते कमपि मंत्रकं विना  
कारणं किं मतिरिक्तं? मन्त्रनो  
वायुनंदन मनोःपरिग्रहात् ॥ २८
- ब्रह्मविष्णु शिव मैथिली शिवाः  
कार्यसिद्धिं शिथिलोद्यमा मुहुः  
अंजनासुत मनु प्रभावतो  
भुंजते सुखं महनिशं द्विज ! ॥ २९
- तत्र तत्र भवते मनूत्तमम्  
कार्यसिद्धिविषये दृढं व्रतम्  
दानपात्रं भवते दिशाम्यहम्  
पुण्यतीर्थसलिले विगाह्यताम् ॥ ३०

- इत्थ माह वचनं मनोरमम्  
 ब्राह्मणं भृशदरिद्र शेखरम्  
 नित्यकर्मनिधयो मुनीश्वराः  
 पुण्यतीर्थं मविश न्सहाऽमुना ॥ ३१
- यत्रसिद्धि मगमन्मुनीश्वराः  
 स्नानपान हतकिल्बिषाः क्षणात्  
 तत्र पुण्यसलिले द्विजस्स्वयम्  
 स्नानपूर्वकं विधिं चकारवै ॥ ३२
- स्नात्वा तु पुष्कर इशीघ्रं - पुण्यतीर्थोदके शुभे  
 कृत माध्याह्निका याथ - ध्वजदत्ताय धीमते ॥ ३३
- सुवचंला समेत श्री - हनुमन्मंत्रं मुत्तमम्  
 द्वादशाक्षरविद्वेति - प्रसिद्धं जगतां त्रये  
 हनुमध्यान मास्थाय - ध्यात्वा गुरुपदांबुजम्  
 विन्यस्य मस्तके हस्तं - विप्रा योपादिदेश ह ॥ ३४
- ध्वजदत्तो महामंत्र - मुपदिष्टं महर्षिणा  
 अत्यादरेण जग्राह - निक्षेपं निर्धनो यथा ॥ ३५
- ततो नियम मास्थाय - जजाप हनुमन्मनुम्  
 गुरूपदिष्ट विधिना - तत्र पुण्यजलांतरे ॥ ३६
- उपदिश्य महामंत्रं - पुष्करोऽपि महामुनिः  
 ध्वजदत्ताय विप्राय - जगा माश्रम मात्मनः ॥ ३७
- स्वावेक्षणोत्सुक लसन्मुख कृष्णनागा  
 माशासितात्महितलोभ खगेंद्रनाथाम्  
 आसादिताऽतिथि बिलप्रकरांगणाग्रा  
 मध्वस्त पुष्करमुनि निजपर्णशालम् ॥ ३८
- इति श्री पराशरसंहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे ध्वजदत्तचरित्र  
 कथनं नाम नवम पटलः



# श्री पराशर संहिता

## दशम पटलः

-: सूर्यसुता कथनम् :-

श्री मैत्रेयः :-

श्लो ॥ ध्वजदत्तो जपन्मंत्रं - कदा सिद्धि मविंदत?  
पुरश्चर्या कतिकृताः? पराशर! वदस्व मे ॥

१

श्री पराशरः :

शास्त्रोक्तविधिना विप्रो - जपन्मंत्रं महर्निशम्  
सिद्धिं नावाप मंत्रस्य - तथापि जपतिस्म सः ॥

२

ग्रीष्मे तप्तशिलायांच - वर्षासु शिकतातले  
हेमन्ते शिशिरर्तौ च - रात्रौ शीतजलांतरे ॥

३

जपन्नपि महामंत्रं सिद्धिं नैवाप सद्भिजः  
निराहारो जितस्वापः - सर्वदा विजितेंद्रियः  
मनस्तत्रैव संयोज्य - बाह्यं नैव विवेद सः ॥

४

गुरुदेवपदं चैव - विना विंदति तद्द्विजः  
तस्मात्पंचपुरश्चर्या - विधावपि नसिध्यति ॥

५

दैवमेव महामान्यं - ततो मान्यो महामनुः  
इति निश्चितवान् विप्रो - नत्वं गुरुवैभवम्  
चिरायापि महामंत्रं - सिध्यभावाद्द्विजोत्तमः ॥

६

निर्वेदं परमं चागात् - गुरुविश्वासवर्जनात्  
सिध्यभावे निदानं यत् - गुरुविश्वासवर्जनम्  
एवं न ज्ञातवान् विप्रः तदेव ज्ञातवान् गुरुः ॥

७

सप्तकोटिषु मंत्रेषु - विध्यमानेषु पुष्करः  
दिष्टवान् जडमंत्रं मे - यतस्तन्मंत्रवंचकः ॥

८

- महांतो मुनय स्सन्ति - ता नवेक्ष्याय मथितः  
 मां जहाति न दौर्भाग्यं - वने वा पट्टणेऽपि वा  
 इत्येवं खद्यमानस्सन् - जपा दुपरतोऽभवत् ॥ ९
- अथास्मिन्नंतरे व्याधो - गालोनाममहाधनुः  
 महाव्याधिपरीतांगो दुःखितो व्याधिपीडया ॥ १०
- मृगयावश मापन्नो - नैमिशारण्य माविशत्  
 ध्वजदत्तं ददर्शादौ - दरिद्रध्वजमुत्तमम्  
 तत्समीपं समागत्य - व्याधो वचन मब्रवीत् ॥ ११
- ब्रह्मन्! मे व्याधिपीडास्ति - केनोपायेन शाम्यति?  
 त मुपायं वद स्वामिन्! त्वत्सेवां करवा ण्यहम् ॥ १२
- इत्युक्त स्तेन विपोऽपि व्याधं चेद मुवाच ह  
 अहं दारिद्र्यदुःखाब्धौ - मग्न स्त्वां कथमुद्धरे?  
 कश्चि त्पुष्करनामास्ति - ह्यारा दत्रैव लक्ष्यते ॥ १३
- त मुद्दिश्य नगन्तव्य - यतो वंचकशेखरः  
 दरिद्रता विनाशाय - बहुधा प्रार्थितो मया  
 मंत्राभावं ममादिश्य वंचयित्वा गतो यतः  
 मंत्रभासं जप न्भूयः - सिद्धिं नैवाप्नुया महम् ॥ १४
- दुश्चर्यं हि तप स्तप्तं - तत्तथाऽपि नसिध्यति  
 पुरश्चर्याश्च बहुधा - कृता स्सिद्धिं नंदृश्यते  
 तस्मात् प्रारब्धकर्माणि भोक्तव्यानि न संशयः ॥ १५
- दैवं नास्ति मनु नास्ति गुरुर्नास्तीति मे मतिः  
 अथवा विद्यते मंत्रो - गुरुर्वा दैवत्तं तथा  
 किंतु पुष्कर मासाद्य - मागृह्णीष्व मनुंत्विमम् ॥ १६
- इत्युक्तं ध्वजदत्तेन - व्याध इश्रुत्वा प्रियंवचः  
 ध्वजदत्त निषिद्धोऽपि - दिदृक्षु. पुष्करं मुनिम् ॥ १७
- निवृत्तिकामो रोगस्य - तमेव शरणं ययौ  
 अब्रवीत्पुष्करं व्याधः - सास्टांग नतिपूर्वकम् ॥ १८

- जात्याहंमृगयुर्ब्रह्मन् - गालो नाम्ना महामुने!  
 व्याधिना दुर्निवारेण - पीड्यमानो दिवानिशम् ॥ १९
- अन्नं नरोचते मह्यं - न वा भार्याऽतिसुन्दरी  
 नवा वस्त्राणि मुख्यानि - सुगंधकुसुमान्यपि ॥ २०
- चंदनं चंद्रबिंबाभं - शय्या वा हंसतूलिका  
 रसाश्च षड्विधा वाऽपि - नरोचते महामुने! २१
- नोत्सहे कानि वस्तूनि - व्याधिग्रस्तः निरंतरम् २२
- आखेटनापदेशेन - पर्यटन्गहनांतरे  
 पूर्वजन्मार्जिता त्पुण्या - दद्राक्षं त्वां महामुने! २३
- अधुनाऽहं कृतार्थोऽस्मि - मन्ये व्याधिं विनाशितम् २४
- सम्यक्परीक्षितुं - शीलं - व्याधस्य मुनिसत्तमः  
 सन्मुहूर्तापदेशेन - कालक्षेपं चकार सः ॥ २५
- तथापि मृगयुर्गालः - परिचर्यामुपाचरत्  
 फलानि परिपक्वानि - मधुरास्वादनानि च  
 मुनये दत्तवान् गालो गृहीत्वा वनगह्वरात् ॥ २६
- समित्पल्लव पुष्पाणि - बर्हिश्चाऽपि सकंदकम्  
 समाहृत्यार्पयामास - पुष्कराय महात्मने ॥ २७
- तथाऽपि पुष्करयोगी - किञ्चिन्नादत्त गालकात्  
 मौनमेव समास्थाय - परीक्षन् व्याधवर्तनम्  
 मनसैव मुमोदात् - तस्य विश्वासदर्शनात् ॥ २८
- एवंबहुविधः कालः - तस्स्याऽभूत्परिचर्यया  
 उत्तरोत्तर मत्यंतं - विश्वासं लभते स वै ॥ २९
- तमेवं परिचर्यंतं - व्याधं व्याधिनिपीडितम्  
 कृपया वीक्षयामास - कदाचि त्पुष्करोमुनिः ॥ ३०
- कृपया वीक्षणादेव - गाल स्संहृष्टमानसः  
 निवृत्तं तु तदा मेने - रोगार्तिं भयपीडितः ॥ ३१

|   |    |
|---|----|
| अन्नवीत्पुष्करो वाक्यं - व्याधं गुरुपरायणम् ।   | ३२ |
| व्याधस्य मंत्रदानार्थं - संदेहेन महामुनिः       |    |
| हनुमंत निजाभीष्टं - दध्मौ दैवत शेखरम् ॥         | ३३ |
| हनुमान्! देवदेवेश! स्वभक्तानां परिपालक!         |    |
| श्रीरामचंद्र संप्रीति कारण! त्वामुपाश्रये ॥     | ३४ |
| ध्यातश्च हनुमां स्तेन - भक्ताभ्याश मुपागमत् ॥   | ३५ |
| सुवर्णकुडल द्योति - दीप्त गडस्थल द्वय           |    |
| हेमोपवीत संवीतो - दिव्य पीतांबरावृतः ॥          |    |
| रत्नककणसन्नादी - ध्वन न्मंजीर मंजुलः            |    |
| नवरत्नांशु संवीत - महाहं मकुटोज्वलः ॥           |    |
| पश्चाल्लबि शिखोपेत - क्वधित स्वर्णं वर्णकः      |    |
| सुवर्चलां दधानश्च - वामभागे निजप्रियाम् ॥       | ३६ |
| हनुमत् पादपद्मांत न्यस्तनेत्र मधुव्रताम्        |    |
| ध्यायंतं हृदि भर्तारं - पार्वतीमिव शंकरम् ॥     | ३७ |
| कंबुकंठीं महाभागां - पीनोन्नत कुचद्वयीम्        |    |
| किकिणीजाल सन्नादि - मेखलादाम शोभिताम्           | ३८ |
| पदांगुष्ठ नखज्योति - जितोद्य च्चन्द्रमंडलाम्    |    |
| आदर्शसदृश प्रख्य गडभाग स्फुरन्मुखाम् ॥          | ३९ |
| स्वर्णं ताटकं संरोचि - श्श्रीकार सदृश श्रवाम्   |    |
| नवचंपक सूनाभ - नासां चंद्रनिभाननाम् ॥           | ४० |
| कर्णान्तायित नेत्रां तां - काम चापायित भ्रुवाम् |    |
| मयूर बर्हं धम्मिललां - कलहंसगति स्थिताम् ॥      | ४१ |
| पक्वबिंबाधरोष्ठीतां - स्फुरद्दशन दाडिमाम्       |    |
| मुक्ततिलक संराजित्फाल पट्टांसु मध्यमाम् ॥       | ४२ |
| शिरीषपुष्प मृदुल - बाहुयुग्म मनोरमाम्           |    |
| अंगुलीयक मुद्रांत - स्फुरदगुलि पाणिना           |    |



|  |    |
|--|----|
| वीजयंती स्वभर्तारं - चामरेणशनैश्शनैः ॥   | ४३ |
| रंभा सौंदर्यं सबंस्व - हारि रंभोरु संभ्रमाम्<br>सिकतामय सौंदर्यं - जघनां घन विभ्रमाम् ॥  | ४४ |
| आवर्तं निम्न विवर - स्फुर न्नाभिगुहांतराम्<br>रक्तपकेरुह प्रख्य - रोमराजि विराजिताम् ॥   | ४५ |
| मुक्ताहार स्फुरद्ग्रीवां - सर्वाभरण भूषिताम्<br>मंदस्मितां सुवर्णाभां - सूर्यपुत्रीं सुवर्चलाम् ॥  | ४६ |
| कौशेयं परिधानं च - दधानं च कुशेशयम्<br>एवं सर्वगुणोपेतां - प्रेयसीं मारुतात्मजः<br>वामभागेवहन् भार्या - क्षणा त्प्रादुरभू न्मुने ॥           | ४७ |
| करभकलभवाहः स्वर्णरंभावनांतः<br>प्रचल दक्षलशृङ्गो व्यक्तचंचत्कराब्जः<br>अधिकुतलमगात्त त्पुष्कराधिष्ठितं यत्<br>रविसुतकरधारी लंबहारो हनूमान् ॥ | ४८ |

इति श्री पराशरसंहितायां पंचमुख हनुमद्विवरणे श्री पराशर मंत्रेय  
संवादे सूर्यसुता कथनं नाम दशम पटलः



## श्री पराशर संहिता

एकादश पटलः

-: गाल चरितम् :-

श्री मंत्रेयः :-

श्लो ॥ हनुमन्मुनि संवादं - श्रोतुमिच्छा म्यहं मुने  
तं ममाचक्ष्व पापघ्नं - पराशर! गुरुत्तम!

श्री वराशरः :

|   |    |
|---|----|
| त मागतं हनुमंतं - स्वदृष्टि विषयं द्विजः<br>दृष्ट्वातु सहस्रोत्थाय - साष्टांगं प्रणतोऽभवत् ॥  | :  |
| पुनरुत्थाय संतुष्ट - स्तुष्टावाभीष्ट दैवतम्<br>हनुमंतं मुवाचाथ पुष्करो दीनवत्सलः ॥  | :  |
| गालोऽयं मृगयुर्नीचः - कथं मंत्रस्य ते प्रभो<br>योग्योऽयमिति सदेहो - बाधते मा महर्निशम् ॥  | ४  |
| अयं तु चिररात्राय - मामुपास्ते कृताञ्जलिः<br>कपीद्रस्तमुवाचाथ - मा कुरुष्वान्न संशयम् ॥   | ५  |
| मन्मन्त्रजाल विषये - मद्भक्ते मय्यपि द्विज!<br>उपदेश गुरौ चापि भक्तिरे वात्र कारणम् ॥   | ६  |
| शूद्रोवा विप्रकीर्णोवा - वैश्योवा क्षत्रियोऽपि वा<br>विप्रोवा यश्चतश्चापि - योषिद्वा पुरुषोऽपिवा<br>मन्मन्त्रविषये सर्वे - पात्राण्येव न सशयः ॥ | ७  |
| वचकाय कृतघ्नाय - दांबिकायाऽति लोभिने<br>गुरु विश्वास हीनाय नदेयं मन्त्रं मुत्तमम् ॥   | ८  |
| तस्मादस्तस्य विश्वासः - स्थिरा भक्ति रभूद्द्विजः<br>देयमेवास्य मंत्रं मे - द्वादशाक्षरं मुत्तमम् ॥  | ९  |
| इत्युक्त्वा हनुमान् भक्तं - तत्रैवांतरधीयत ॥  | १० |
| ततस्सारसं चक्रांग - हंसकूजितं शोभितम्<br>जलकुक्कुटकोयष्टिं कात्यूहं कलकूजितम् ॥   | ११ |
| विकचत्कमलं व्रात - अममाणं मधुव्रतम्<br>मल्लिका जातिं लकुचं - सुरभिं क्रांतं काननम् ॥  | १२ |
| हनुमत्पादनिर्मल्यं - शोभितोभयपार्वकम्<br>पुरंध्रीकुचं हारिद्रं - रंजितोच्च विराजितम् ॥  | १३ |

|   |    |
|---|----|
| जपता मुनिबृन्देन - सेव्यमान महर्निशम्<br>सर्वपापहरं नृणा - मविदूरं भयापहम् ॥  | १४ |
| पुण्यतीर्थं मिति ख्यातं - त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्<br>दर्शयामास गालाय - पुष्करो हस्त संज्ञया ॥   | १५ |
| पुण्यतीर्थं प्रदर्श्याशु - प्राह गालं मुनीश्वरः<br>स्नात्वा तत्र महापुण्ये - शीघ्रमागम्यता मिति ॥                                       | १६ |
| गालस्तमब्रवीद्विप्र - भवत्पादांबु दीयताम्<br>तदेव पुष्करं गंगा - तदेव कुशिकात्मजा<br>कावेरी यमुना चैव - कृष्णवेणी सर स्वती ॥            | १७ |
| तदेव मानसंतीर्थं - तदेव सरयूनदी<br>तदेव चन्द्रभागाऽपि - फल्गुनी सिधुसंगमः ॥   | १८ |
| यस्याऽपि नात्र विश्वासो - गुरुपादोदके शुभे<br>नपुनन्त्यथ दुर्नीतिं - तीर्थानामयुता न्यपि ॥  | १९ |
| हत्या इशतसहस्राणि - ह्यगम्यागमनानिच<br>स्वर्णस्तेयादि पापानि - सुरापानं कृतान्यपि<br>गुरुपादोदक स्पर्शात् - सर्वाघानां त्रिनाशनम् ॥     | २० |
| तस्मादिदं शरीरं मे - भवत्पादांबु धारकम्<br>आपाद मस्तकं शीघ्रं - सिच्यतां कर्णानिधे<br>यद्वैभवा दह सद्यः - कार्यसिद्धि मवाप्नुयाम् ॥     | २१ |
| इत्युक्तः पुष्करस्तेन - व्याधेन दृढबुद्धिना<br>स्वगुहं च हनूमन्त - ध्यात्वा योगविदां वरः<br>प्रोक्षयामास तस्यांगे - निज पादोदकं मुनिः ॥ | २२ |
| गुरु पादोदकस्पर्श - विश्वासा द्धत कित्बिषः ।<br>सद्यो निवृत्ति भगमत् - व्याधेः व्याधो दुरात्मनः ॥                                       | २३ |
| ततो विमलदेहस्य - गालस्य विमलात्मनः<br>सुवर्चला समेत श्री हनुमद्द्वादशाक्षरम्<br>मंत्रराजमिति ख्यातं - दिष्टवान् कर्णानिधिः ॥            | २४ |

|  |    |
|--|----|
| गालो जपन् महामंत्रं - सन्निधा वेव सद्गुरोः<br>अष्टोत्तर शतावृत्त्या - सद्यस्सिद्धि मवाप सः ॥   | २  |
| गुरु विश्वास माहात्म्यात् - गुरुपादांबुसेवनात्<br>मनोर्नर्मल्यवत्त्वा च्च - सद्यस्सिद्धि मवाप सः ॥                                     | २१ |
| अतीन्द्रियार्थजालानि - भूत भव्य भवन्ति च<br>दिष्टमात्रे महामंत्रे - बुद्धवा न्मृगयुस्तथा ॥   | २१ |
| एवं सर्वार्थ विज्ञानात् - प्रागहं सुप्तवा नपि<br>बुद्धोऽहं मधुनाचेति - जजाप व्याधवल्लभः ॥  | २८ |
| निधयोऽपि समृद्धाश्च - विषयास्तस्य चक्षुषः<br>गुरुविश्वास माहात्म्यात् - अभवन् तस्य वश्यगाः<br>खेचरत्व मभूत्तस्य - सचार स्सर्वविष्टपे ॥ | २९ |
| सिद्ध चारण गधर्वाः - इन्द्राद्या अपि देवताः<br>व्याधस्य गुरु विश्वासात् - विस्मयं परमं ययुः ॥  | ३० |
| पपात पुष्पवृष्टिश्च - ननृतु श्वाप्सरो गणाः<br>देव दुन्दुभयो नेदुः - वपुर्वाता यथा सुखम्<br>ततः परम संतुष्टो - गालो गुरु मथान्नवीत् ॥   | ३१ |
| कृतार्थोऽस्मि महाभागः - तव पादांबुसेवनात्<br>महामंत्र प्रदावा च्च - सिद्धोऽस्मि जगतांत्रये ॥   | ३२ |
| संप्राथये परं ब्रह्मन् - भवंतु मधुना गुरो<br>तव पादाब्ज युगले - भक्तिर्भूयान्निरन्तरम् ॥   | ३३ |
| इदमेव ममाभीष्ट - मितोऽन्य नास्ति मे मुने<br>आदिस्यता ममाज्ञाप्य - माभूत्काल विपर्ययः ॥   | ३४ |
| व्याधस्य वचनं श्रुत्वा - पुष्करः पुष्करेक्षणः<br>तथेति प्रतिजग्राह - मुख्यशिष्यो भवानिति ॥   | ३५ |
| मंत्रस्सिद्ध इतिज्ञात्वा - न त्याज्योहि कदाचन<br>प्रत्यवायोभवे नून - दारिद्र्यच भवेन्महत् ॥  | ३६ |

|  |    |
|--|----|
| यथाशक्ति जपः कार्यः - हनुमत्प्रीतये सदा<br>भोक्तव्याहि महाभोगा - यथेष्टं बन्धुभिस्सह ॥             | ३७ |
| भुक्त्वा भोगान् ततो गालः - हनुमत्पद माप्नुहि<br>इत्युक्त्वा प्रेषयामास - व्याधं तद्वेश्म पुष्करः ॥ | ३८ |
| प्रेषितो गुरुणा गालो - विसृज्य बाष्पमुत्तमम्<br>प्रदक्षिण नमस्कारैः पूजयामास तं गुरुम् ॥           | ३९ |

अथ गुरु पद पद्म लग्न चेताः  
श्रित निजकार्यभरो गुरु प्रसादात्  
निजगृह मुपचक्रमे निगंतु  
निज गुरु संप्रतिपन्न सौम्य भावः ॥

४०

इति श्री पराशरसंहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
श्री गालचरितं नाम एकादश पटलः



## श्री पराशर संहिता

द्वादश पटलः

-: गुरुभक्ति कथनम् :-

श्री मैत्रेयः :-

कार्यसिद्धि मुपागम्य - व्याधो मन्मथ सुन्दरः  
ततः किंकृतवान् गालः - मध्ये मार्गं पराशर! ॥

श्री पराशरः

मैत्रेय! श्रुणु वक्ष्यामि - गाल वृत्तं यथाक्रमम्  
यद्वृत्त दर्शनाद्भूयो - देवा अपि मुदं ययुः ॥

२

- गच्छन्मार्गे शनैर्गालः - ध्वजदत्त मवैक्षत  
दृष्टमात्रे द्विजे तस्मिन् - त्यक्त्वा तत्पदवीं हठात्  
भीतो मार्गन्तिरं प्राप्तो गुरुं निंदायतोऽभवत् ॥ ३
- गच्छन्त मद्भुताकारं - सूर्यंबिब मिव स्थितम्  
दृष्ट्वा तं राहसोत्थाय - विप्र स्तिर्य कसमागतः । ४
- जवेन महता धावन् - महाविश्वास मुत्सृजन्  
महता रंहमा सोऽपि - क्षणा द्गालेन संगतः ॥ ५
- तं तथा गाल मासाद्य - विप्रो वचन मब्रवीत्  
मामुपेक्ष्यवव गंतासि? सुहृत्प्राण समो मम ॥ ६
- त्व दागमन मेवात्र - प्रतीक्ष्याऽह मवस्थितः  
ऋजुभावं परित्यज्य कथं गतासि वक्रताम्?  
इत्थं रूपं कुतो लब्धं ? कंदर्पस्याऽपि मोहनम्  
कुत्सितं पूर्वं रूपं तु - निवृत्तं केन हेतुना ? ७
- एतत्सर्वं ममाख्याहि - पृच्छतो दीनवत्सल  
एवं संप्रार्थितो गालो - यथा वृत्त मवेदयत् ॥ ९
- पुष्करस्तु महायोगी - गुरु गौरव गोचरः  
निज पादोदकेनैव - दुर्दशां मे जहार सः ॥ १०
- तदनुग्रह एवाऽयं - श्रेयोहेतुः पर मम  
ततो रूपमिदं प्राप्तं - रमणीयं मया द्विज ॥ ११
- इदानी महमागच्छन् - मृगयाभ्यास पाटवात्  
चमरी द्रष्टुकामस्सन् - वक्रमार्गं मुपागतः  
इत्युक्त्वा व्याधवर्योऽपि - निजवेश्म क्षणादगात् ॥ १२
- अगत्य स्वगृहं गालो - भुंजन् भोगान् यधेप्सितान्  
पुत्र मित्र कलत्राद्यै - बहुकालं विहृत्य सः  
हनुमन्मंत्र माहात्म्या - दगम त्परमांगतिम् ॥ १३
- ध्वजदत्तोपि विप्रेन्द्र - स्सिद्ध्यभावा च्चिरादपि  
व्याधाविलंब सिद्धेश्च - निद्धे परमं गतः ॥ १४

- महावेगेन संभ्रांतः - पुष्करं पुन राययौ  
 प्रणम्यशिरसा विप्रो - वचनं पुनरब्रवीत् ॥ १५
- ब्रह्मन्नहं द्विजश्रेष्ठः - वेदवेदांगपारगः  
 सर्वशास्त्रार्थं तत्त्वज्ञ - स्सदाचारो जितेंद्रियः  
 एवं विधो जपन्मंत्रं - न सिद्धिं कथं माप्नुयाम् ॥ १६
- पुरश्चर्याश्च बहुधा - कृताअपि महामुने!  
 महतानियमेनाऽह मजपं मंत्रमुत्तमम् ॥ १७
- निराहारो जितस्वाप - स्नात्वा पुण्यसरिज्जले  
 वर्षासु सिकतास्वेव - हेमते जलमध्यमे ॥ १८
- ग्रीष्मे तप्तशिलायां च - जपन्नपि महामनुम्  
 सिद्धिं कदापि नैवापं - विलंबः केन हेतुना ? १९
- व्याधस्तु तीक्ष्णमोऽपि - दुराचारो द्विपात्पशुः  
 क्रूरकर्म दुराहारा - स्सदा विषयलम्पटः ॥ २०
- सुरापान रतश्चापि ह्यगम्यागमनोत्सुकः  
 दुराचाराश्च येचाऽन्ये - तेषु सर्वत्र तत्परः ॥ २१
- कथं मंत्रस्य योग्योऽयं - कथं जानाति तद्विधिम्  
 भवतावा कथं दत्तं ? व्याधाय क्रूरकर्मणे ॥ २२
- कथं मर्हति गालोऽयं - श्वा यथा हविराध्वरम्  
 आगंतुं वा कथं योग्यः - शुनीवाध्वर मंडपम् ॥
- अथवा जपतो मंत्रं - किं न सिद्ध्यति? मे मुने! २३
- इत्युक्तवन्तं ध्वजदत्तमग्रतः  
 किमेत दाश्चर्यं ? मिहेति चिंतयन्  
 निवारयामास स गालदूषणात्  
 शनैश्शनैः स्सांत्वदचोभि रात्मवान् ॥ २४

|   |    |
|---|----|
| क्षिप्रं दिदृक्षु विश्वधिलान्यकृत्यो<br>महामनो स्सिद्धिबिलंबहेतुम्<br>प्रत्यग्दृशा दैवित सार्वभौमम्<br>विभाषयामास निजांतरंगे ॥          | २५ |
| ततो योगं समास्थाय - दृष्टवान् निखिलंजगत्<br>वर्तमानं यदेवास्य - भूत भावि च यत्पुनः ॥  | २६ |
| विचक्ष्य सकलं पश्यन् - द्विजवृत्तांत संग्रहम्<br>निश्चिकाय महायोगी - हेतुं दास्य विलम्बने ॥   | २७ |
| निश्चित्वैव मुनिस्सम्य - रघ्वजदत्त मथाब्रवीत्<br>अविश्वासो महानस्ति - द्विजते गुरुगोचरः<br>तस्मा द्विलम्बते मंत्र - विधिवज्जपतोऽपि वा ॥ | २८ |
| मंत्रे तीर्थे द्विजे दैवे - दैवज्ञे भेषजे गुरौ<br>यादृशी भावना यत्र - सिद्धिर्भवति तादृशी ॥   | २९ |
| मंत्रे दैवे च विश्वास - स्तवास्ति द्विजसत्तम!<br>किंतु नास्ति तव श्रद्धा - गुरौ मंत्रोपदेष्टरि ॥  | ३० |
| देवादप्यधिकं मान्यां - गुरु मन्त्रोपदेशकः<br>दैवस्वरूपा मखिलं - बोधितं येन चात्मनः ॥  | ३१ |
| गुरु विश्वास माहात्म्या - द्गालो नीचतरोऽपि वा<br>इष्टसिद्धि मवाप्यैवं - भुङ्क्ते भोगान् यथेप्सितान् ।                                   | ३२ |
| गुरुरेव परदैवं गुरोर्वा न्यद्धि किंच न<br>गुरुदैवतयो रैक्य भावात्तरति चेतनः ॥   | ३३ |
| गुरुणोदीरितं वर्णं - व्यर्थं वा सार्थं मेव वा<br>तदेव तारकं मंत्र - मिति वेदविदो विदुः ॥  | ३४ |
| त्वदर्थं महमुद्दिश्य - हनूमन्त मभावयम्<br>मा मन्वगृह्णात्कृपया यथार्थकथनेन सः ॥   | ३५ |
| ध्वजदत्त! भवानेव - सर्वशास्त्रार्थ कोविदः<br>गुरु विश्वास हीनत्वात् - मन्त्रसिद्धि न विदति ॥  | ३६ |



- गुरुविश्वास पर्यंत - पुरश्चर्या विधिपूर्वा  
मन्त्र देवत माहात्म्यं - यस्माद्बोधयति स्फुटम्  
तस्माद्गुरुर्महादेव - मित्यबोचत्कपीश्वरः ॥ ३७
- त दिदानीं पुनर्विप्र! गुरु विश्वासपूर्वकम्  
इद मेव महामंत्रं - जप निश्चल मानसः  
ततस्सिद्धयति मंत्रं ते - मा कुरुष्वऽत्र संशयम् ॥ ३८
- इत्युक्तो गुरुणा विप्रो - हित विश्वास पूर्वकम्  
ध्वजदत्तः पुनः प्राह - गुरु देवतसन्निभम् ॥ ३९
- पापोऽहं पापकर्माहं - पापाऽऽत्मा पाप सम्भवः  
अविश्वासाब्धि मग्नोऽहं - तस्मा न्मा मुद्धर प्रभो?  
गुरुविश्वास हीनस्य - प्रायश्चित्तं वद प्रभो!  
प्रायश्चित्त विहीनस्य नास्ति कर्माधिकारिता ॥ ४१
- अधिकार विहीनस्य - कृत कर्मापि निष्फलम्  
न हि क्षुद्रकृतो यागः - फलती त्यनुशुश्रुमः ॥ ४२
- तस्मा त्पापापनोदाय - प्रायश्चित्त विहीन्यताम्  
दुर्लभं सुलभं वापि - करिष्ये नाऽत्र संशयः ॥ ४३
- एवं दृढव्रति विप्र - मकृतार्थं दरिद्रकम्  
हनूमत्पादतीर्थेन - प्रोक्षयामास पुष्करः ॥ ४४
- संप्रोक्षणा शिवृतश्च - गुर्वविश्वास कर्दमः  
ततो गुरु पदांभोज - जलेन स्नानमाचरत् ॥ ४५
- इदमेव समानंत - जन्म संपादितैनसः  
प्रायश्चित्त मिति व्यक्त - मुच्चैरुच्चारयन् द्विजः ॥ ४६
- अद्यप्रभृति योग्योहं - सर्वकर्मं स्व तीरयन्  
पादसक्तमृदा तस्य - चक्रे स्वस्थोर्ध्वं पुण्ड्रिकम् ॥ ४७
- ततो विप्रो गुरुं नत्वा जप्तु तेन प्रबोधितः  
कार्यसिद्धिं समुद्दिश्य - पुण्यतीर्थं मुपागमत् ॥ ४८

- आचम्य विधिवत्सत्र - ध्यात्वा गुरुपदांबुजम्  
समभावनया युक्तो - गुरुदैवतयोर्द्वयोः  
अष्टोत्तरशतं भूयो - जजाप द्वादशाक्षरीम् ॥ ४९  
सिद्धप्राये महामन्त्रे - जप्तमात्रे महात्मना  
आयासमन्तरेणैव - सिद्धि इतस्याप्यजायत ॥ ५०  
ततो जपंत मन्यग्रं - पुष्करच्चात्रमुत्तमम्  
सुवर्चलापति इश्रीमान् - कर्तुं वै विप्रवीक्षणम्  
अंगदादीन्महाभक्ता - नबादीत्कपिनायकः ॥ ५१  
सज्जं भवंतः कुर्वन्तु - वाहनं गमनाय मे  
यत्रास्ते पुष्करच्छात्रो - ध्वजदत्तो महामतिः ॥ ५२  
तपश्चरत् महाघोरं - पुण्यतीर्थं जलांतरे  
सिद्धिं नाविन्दताऽद्यापि - सदेशो गम्यता मिति ॥ ५३  
भर्तृ राज्ञावच श्श्रुत्वा - सर्वे प्रीति मवाप्नुवन्  
नवरत्नांचिताकार - सिंहासन समन्वितम्  
उष्ट्रं हेमाद्रिसंकाशं - निस्थुः परिजना जवात् ॥ ५४  
भानीत मद्भुताकार - मुष्ट्रं वायुजवान्भितम्  
नीलदत्त करालम्बो - हनुमा नारुरोह तम् ॥ ५५  
मृगेन्द्र इव शैलेन्द्र - भिन्द्र ऐरावतं यथा  
हरि र्यथा गरुत्मतं - वृषं वृषभ केतनः ॥ ५६  
वाहनोत्तम मारुह्य - हनुमा न्मारुतात्मजः  
चित्रावसुकृत स्तोत्र - सेनांगद पुरस्सरः  
जगाम निजवामांक - दीप्यमान सुवर्चलः । ५७  
अथ गुरुपदपद्म भक्तियोगात्  
कृत निजमन्त्रं फलेफलोन्मुखे च  
द्विजवर वरदान संभ्रमोऽगात्  
निजपरिवार मुतो गतो हनुमान् ५८

करभ कलभ संनिरीक्षणान्च  
जय तिनद श्रवणाच्च मागथानां  
हनुमदभिख्य जयांकित ध्वजाग्रा  
त्परिबुबुधे निजदैवतं द्विजेन्द्रः ॥

५९

इति श्री पराशरसंहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
श्री सुवर्चला हनुमद्द्वादशाक्षरी माहान्भ्ये  
द्वादश पटलः



## श्री पराशर संहिता

त्रयोदश पटलः

-: हनुमदनुग्रहम् :-

श्री मैत्रेयः :-

श्लो ॥ ततः किं मकरो द्विप्रः - निश्चिं त्याशु स्वदैवतम्  
आख्याहि तन्महाभाग - पराशर कृपांबुधे ॥ १  
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा - महायोगी पराशरः  
तत्कथाश्रवणे व्यग्रं - मैत्रेय मिदं ब्रवीत् ॥ २

श्री पराशरः

मैत्रेय! एवं कृताभोऽसि - यतस्ते धार्मिकी मतिः  
हनुमद्भक्तिं विषये - नालं बुद्धिं तु विंदति ॥ ३  
अनंतरंतु वृत्तांतं - ध्वजदत्तस्य धीमतः  
मैत्रेय! ते प्रवक्ष्यामि - सावधानमना शृणु ॥ ४  
ततः प्रेक्ष्य हनुमंतं - वरदानार्थं मागतम्  
प्रत्युत्था नाभिवादाभ्यां - पूजयामास वैद्विजः  
निजदैवधुवाचेदं - प्रांजलिं द्विजसत्तमः ॥ ५

- इद मर्घ्यं मिदं पाद्यं - पूजार्थं कुसुमान्यपि  
 फला निमानि गृह्णीष्व - भक्तानुग्रहतत्पर! ६
- पत्रं पुष्पं फलं तोयं - यस्ते भक्त्या प्रयच्छति  
 सिद्ध्यन्तितस्य कार्याणि - श्रेयः परं च विदति ॥ ७
- तदत्र गृह्यतां स्वामिन्! जल पुष्प फलादिकम्  
 भक्त्या समर्पितं तात! मदनुग्रह कांक्षया ॥ ८
- इत्येवं प्रार्थितो भक्त्या - हनुमान्मास्तात्मजः  
 विप्रोपहारं हस्तेन - स्पृष्टवान् सादरं हसन् ॥ ९
- द्विज स्सन्तुष्ट चित्तस्सन् - उपहार परिग्रहात्  
 यथामति यथान्यायं - तुष्टाव प्रयतांजलिः ॥ १०
- वेदवेद्य! महाभाग! - पुराण पुरुषोत्तम!  
 तव संदर्शनेनैव - दुरितं मे निर्वर्तितम् ॥ ११
- तव संदर्शनादेव - योगिना मपि दुर्लभम्  
 बहुजन्मार्जिता त्पुण्यात् - लब्धवानस्मि सांप्रतम् ॥ १२
- ब्रह्मादय स्सुरास्सर्वे - कांक्षन्ते यस्यदर्शनम्  
 निजहस्तांबुजैर्नित्यं - पूजयन्ति पदद्वयम् ॥ १३
- गुर्वनुग्रह माहात्म्यात् - सत्यं साक्षात्कृतो मया  
 तदस्य दुर्लभं प्राप्तं - मद्भाग्यं केन गण्यते ? १४
- सर्वंवेद सिरोभिस्त्वं - भगवान् भूतभावनः  
 स्तोतु न शक्यसे देव! कियान् स्तोत्रु मह प्रभो ॥ १५
- यस्य स्वरूप मज्ञात्वा - तत्त्वत स्सचराचरम्  
 जगद्भ्रमति संसार - चक्रे नक्रायते नृणाम् ॥ १६
- किमन्य दधिकं मय्ये त्वत्पादांबुज सेवनात्  
 अतस्तदेव मे भूया - ज्जम्भजन्मांतरे ष्वपि ॥ १७
- अपवर्गं निदान य - दर्शनं भवतः पुमान्  
 विनियुङ्क्ते भवे नीचे - स नीचः परमो मतः ॥ १८

- त्वन्नामश्मरणे नैव - महापातकराशयः  
 नश्यति तत्क्षणे नैव - तूल भार मिवाग्निना ॥ १९
- प्रसीद जगतांनाथ! - दीनबन्धो दयानिधे!  
 शिशुभावात्कृतं यद्य - तदागः क्षंतु मर्हसि ॥ २०
- त्वामामनन्ति श्रुतयो - जगता मादिकारणम्  
 त्वामेव सृष्टिकर्तारं - पुरुषं प्रकृतेः परम् ॥ २१
- आनन्दांबुधि मग्नोऽहं - विस्मृतान्य प्रयोजनः  
 किं कार्यं करवाण्यद्य - हनुम न्मुच्यतां प्रभो! २२
- अद्य मे पितर स्सर्वे - परांगति मवाप्नुवन्  
 व्रतानि फलिता न्यद्य - फलिता ब्राह्मणाशिषः ॥ २३
- फलिताश्च तपश्चर्या - बहुजन्माजिता अपि  
 गंगादि सर्वतीर्थानि - फलितान्यद्य मे प्रभो! २४
- अद्य मे सफलं जन्म - विजीतं च सुजीवितम्  
 गता न्यहानि सर्वाणि - दुदिना नीति मे मतिः  
 यत्स्वं साक्षात्कृतो देवो - ब्रह्मा छैरपि दुर्लभः ॥ २५
- प्रमादा दथवा लोभा - त्प्रेयसी दैन्य दर्शनात्  
 शैशवा द्वा भया पूर्वं - कांक्षिता स्सर्वसंपदः ॥ २६
- अधुनातु नताः कांक्षे - दुःखभूता हि संपदः ॥ २७
- देव! त्वां प्रणिपत्य नम्र शिरसा याचे वरं सांप्रतम्  
 भावस्ते पदपंकजे भवतु मे भक्तिः परा शाश्वती  
 त्वद्भाव स्तव भक्त जाल विषये भूयात्तदेवाश्रये  
 स्वात्तेकांक्षित मेत देव हनुमन्नत्वा वरं प्रार्थये ॥ २८
- इत्येवं वजदत्तेन - धप्रार्थितो भक्तवत्सलः  
 सुवर्चं लामुखं प्रेक्ष्य - जहास पवनात्मजः ॥ २९

सुवर्चले । पश्य निसांतबल्लभे ।

गुरुप्रसादा न्मतिमांश्च तापसः

मद्भक्त भक्ति निरपाय निर्मलां

पृथ गजनैर्दुर्लभ नामधेयां ॥

३०

अहं तु सर्वलोकस्य - पूज्यो भास्कर नंदिनि ।

मद्भक्तो ममपूज्यस्स्या - दयं पूज्यतरः प्रिये ॥

३१

सद्वंशो निरहंकारो - जितामर्षो जित स्पृहः

बहुश्रुतो महायोगी - तस्मात्पूज्यतरो मम ॥

३२

जितेन्द्रियो जितस्वापो - जितद्वंद्वोजित श्रमः

अध्यात्म विद्यानिरतः - सर्वभूत दयापरः ॥

३३

आत्म प्रशंसा विमुखः - सुमुखो मत्कथाश्रुतौ

परनिदा विहीनश्च - पंचयज्ञपर स्सदा

ध्वजदत्तो द्विजश्रेष्ठः - तस्मात्पूज्यतरो मम ॥

३४

दुश्चरं हि तपस्तप्त - मनेन श्रांत वर्धना

तस्य श्रमापनोदाय - त्वया सह समभ्यगाम् ॥

३५

प्रचलेदपि मेरुर्वा - नेदीयान् भस्करोऽपि वा

मद्भक्तस्य परिश्रान्ति - नद्रक्ष्येऽहं कदाचन ॥

३६

ममावज्ञां च दुस्सोढां वियोगं वा सहे तव

मद्भक्तविषये दैन्यं कदाचिदपि नोत्सहे ॥

३७

सत्यंब्रवीमि सुश्रोणि श्रुणुष्वानन्य मानसा

मद्भक्तस्यावमान तु - हृदि शल्यायते मम ॥

३८

इत्युक्तवंतं निजनमवल्लभम्

सुवर्चला प्राह शुचिस्मितासती

जिज्ञासमाना ध्वजदत्त वैभषम्

पिकस्वरा भास्वर हेमभूषणा ॥

३९

कथं नु तप्तं कथयस्व तैवत  
 त्परिश्रमो भक्तजनेन दुर्लभः  
 अयं तु ते भक्त इतीरितं पुरा  
 विरुद्ध्यते पूर्वमिदं परं प्रभो !

४०

इतीव संदेहपरं प्रियावचो  
 निशम्य भर्ता ध्वजदत्त सन्निधौ  
 प्रचक्रमे वक्तु मसंशयं वच  
 स्सुधारस स्यंदि पदेपदे पुनः ॥

४१

ध्वजदत्तस्य वृत्तांतं - वदेयं तव सुव्रते  
 यस्य श्रवणमात्रेण नश्येत्संदेह ईदृशः ॥

४२

अयं प्रिये ! पूर्वभवेऽथ मुत्तमम्  
 जपन् हि मंत्रं ममसप्तवर्णकम्  
 फलस्पृहालब्ध विलंब मत्सरः

तत्वाजि निंदां गुरु माचरस्फुरः ॥

४३

पुराऽयं पुरुषश्रेष्ठो - धर्मसारो महानभूत्  
 श्रुति स्मृति पुराणज्ञ - ससबं योगांग वित्तमः ॥

४४

नित्यकर्मपरो नित्यं - सदाचारेषु तत्परः  
 स कदाचि दिद्वजश्रेष्ठ - विशिष्यसंघै रनुद्रुतः  
 समित्पुष्प मुपाहर्तु - प्रविष्ट उपवह्वरम् ॥

४५

तत्रापश्य द्वर्म सारः - भरतं क्षत्रियोत्तमम्  
 हनुमद्भक्त मत्यर्थ - तृणीकृत जगत्त्रयम्  
 व्यग्रं जपत मत्युच्चै - हनुम त्सप्तवर्णकम् ॥

४६

गुरुदैवत मंत्रेषु - सम विश्वास संभवात्  
 स्थिरीकृत्य निजस्वांतं - ध्यायंतं निजदैवतम् ॥

४७

तंतु दृष्ट्वा महात्मानं - सर्वे विस्मय मागताः  
 तत्समीर्षं शनैर्गत्वा - धर्मसार स्त मब्रवीत् ॥

४८

|   |    |
|---|----|
| जप्यते किं मिदं मंत्र - मनेन विधिना मुने!         |    |
| मंत्रंतूपांशु जप्तव्य - मिति योगविदो विदुः ॥      | ४९ |
| त्वमेवं भैरवस्वानै - मन्त्रोच्चारण संभवैः         |    |
| प्रोत्सारयन् महासत्वान् - किमिदं जपसे स्वयम् ॥    | ५० |
| न श्रुतोऽपि नवा दृष्ट - ईदृशो जपसभ्रमः            |    |
| मुद्रां च मातृकान्यास - मंगन्यासं पुनःपुनः ॥      | ५१ |
| न्यासहीनजपान्मंत्रः - निष्फलः परिकीर्तितः         |    |
| केनाय मुपदिष्टस्ते - मंत्राभासो गवजितः ॥          | ५२ |
| द्विपात्पशु न संदेहः - सर्वकर्म बहिष्कृतः         |    |
| त्वंचाऽपि तादृशो मूढो - योग्योऽयोग्यो न बुध्यसे ॥ | ५३ |
| आचार्यो वेद संपन्नो - विशुद्धात्मा जितेन्द्रियः   |    |
| विमत्सरः कृतज्ञश्च - मंत्रांग न्यासकोविदः ॥       | ५४ |
| अध्यात्मविद्या निरतो - निर्मायो निरहकृतिः         |    |
| जितक्रोधो जितस्वापो - मंत्र ध्यान परायणः          | ५५ |
| यस्तु नैवं विधः कश्चित् - पशु रेव न संशयः ॥       | ५६ |
| अथवा मुनिवेषेण - भवता पुरुषर्षभ                   |    |
| मनो विनोद लाभाय - जपाभासः यदीप्सितः               |    |
| तथाश्रमातिरेकस्ते - निराहारकृतो वृथा ॥            | ५७ |
| अतिमात्र कृशत्वेन - निराहारोऽनुमीयसे              |    |
| इह चामुत्र चाश्रेयो - मूढोवा नेच्छति स्वयम् ॥     | ५८ |
| प्रयोजन मनुद्दिश्य - न मन्दोऽपि प्रवर्तते ॥       | ५९ |
| इति भिक्षोऽपि वाग्जैः - क्षत्रियो द्विजजन्मनः     |    |
| नच कम्पे विशालाक्षिः धाराहत इवाचलः                |    |
| तथैषोच्चैर्जपन्नास्ते - गुरुदैवत भावनः ॥          | ६० |
| इति हुंकृत्य राजेंद्रं - स्मयमान मुखो द्विजः      |    |
| फलपुष्पादि लोभेन - चचार वनमंडले ॥                 | ६१ |



|   |    |
|---|----|
| अथांतरे सहाप्राज्ञं मृकंडुं महितप्रभम्<br>सप्तकोटि महामंत्रान्यधेषटं दायकं नृणाम् ॥   |    |
| ददर्श सपरीवारं - ब्रह्माणं काश्यपं यथा ॥  | ६२ |
| ततः प्रणम्य विधिवत् - धर्मसारो मुनीश्वरम्<br>जगद्द परम प्रीतः - कंचिन्मंत्रं दिशेति सः ॥  | ६३ |
| मृकंडु रपि धर्मात्मा - प्रार्थयंतं महामनुम्<br>अनुजग्राह विप्रेद्रं - कृपया दीनवत्सलः ॥   | ६४ |
| दिदेश धर्मसारस्य - मंत्रं सप्ताक्षरं मनुम्<br>यथा ध्यानं यथा न्यासं - प्रयोग मुप संहृतिम्<br>दिष्टवान् सरहस्यं च - धर्मसाराय वै मुनि- ॥               | ६५ |
| गुरुपदिष्ट विधिना - धर्मसारो मनुं जपन्<br>मंत्रसिद्धिं तु नोवेत्त स्वयं पंडितवानपि ॥  | ६६ |
| क्षत्रिय स्यावमानेन - तद्गुरो निम्दया पुनः<br>न प्रसन्नो महामंत्र - स्ततो दुःख मवापसः ॥   | ६७ |
| ततो निर्विण्ण चेतस्क - स्त्यक्तवान् मंत्रमुत्तमम् ॥   | ६८ |
| क्षत्रियस्य च धिक्कारात् - मद्भक्तस्य महात्मनः<br>मंत्रसार विहीनोऽभूत् - धर्मसार स्तथाप्रिये ॥  | ६९ |
| उच्चैरुपांशुवा मंत्रं - जपन् भक्त्या न सीदति<br>स्वाचारो वा दुराचार - स्सद्वंशो वाऽपि दुष्कुलः<br>स्त्रीवा पुमान् वा यः कश्चि न्ममे भक्तः प्रणश्यति । | ७० |
| मत्रत्यागा स्तथा विप्रो - गुर्वज्ञान कारणात्<br>तदविश्वास वशगो - मग्नो दारिद्र्यवारिधौ ॥  | ७१ |
| तत्सस्कारवशादेव - भवेऽस्मिन् सूर्यनंदिनि<br>गुर्वनुग्रह हीनस्सन् - सिद्धिं नाविदत द्विजः ॥  | ७२ |
| ततः प्रसादयां चक्रे - स्वगुरुं सिद्धि कारणात्<br>निवृत्त वासनो विप्रो - गुरुपादांबु सेवनात् ॥   | ७३ |

|   |    |
|---|----|
| यदभावा त्सु विप्रस्य - परिश्रांतिरभूत्पुरा<br>तत्प्रसादा महामंत्रः - सिद्ध्यति स्म सुवर्चले ॥   | ७४ |
| ध्वजदत्तः कृतार्थोऽद्य - विहाय फलकामनाम्<br>महामंत्र प्रसादेन - संसारं तर्तुं मिच्छति ॥   | ७५ |
| एतत्ते कथितं देवि - द्विजस्य चरितं महत्<br>यस्य श्रवणमात्रेण - भक्तिस्स्या दनवायिनी ॥   | ७६ |
| द्विजस्य चरितं श्रुत्वा - भर्त्रा सम्यगव्यवस्थितम्<br>भूयोऽपि श्रोतुकामेव - प्रिया वचनमब्रवीत्  | ७७ |
| किमीप्सितम् द्विजस्यास्य किमुद्दिश्य जपत्यसौ<br>त्वया किं दातुमुद्युक्तं - तत्सर्वं वद मे प्रभो ॥   | ७८ |
| एवं संप्रार्थितो देव स्वभार्या मब्रवीद्विजः ॥   | ७९ |
| विप्रोयं पूर्वसंस्कारा - हरिद्रत्व मुपागतः<br>उपादद त्सदाविप्रो - बहुकालं निनायह ॥  | ८० |
| कदाचित्सकलत्रस्य - दैन्यदर्शनं विह्वलः<br>धनमाहतुं कामस्सन् - नैमिशारण्य मागतः ॥  | ८१ |
| इदानीं मन्त्रमाहात्म्यात् - गुर्वनुग्रह वैभवात्<br>महाफलाभिलाषस्सन् - जहाति धनवाञ्छितम् ॥   | ८२ |
| तथापि मम भक्तेन - कांक्षिताः धन संपदः<br>अतस्तु ध्वजदत्तोऽयं निजबन्धु समावृतः<br>भुनक्तु सकलान् भोगा - तन्ते गच्छतु मत्पदम् ॥   | ८३ |
| मम संदर्शना देव सिध्येत् कैवल्य मुत्तमम्<br>महाफलाभिलाषोऽस्य - पुनश्चत्सुवर्चले ॥   | ८४ |
| अतोऽस्य ध्वजदत्तस्य - सर्वसंपत्समृद्धये<br>समर्पय श्रियंसाक्षा - दंशभूतं तव प्रिये!<br>एवं संबोधिता भर्त्रा - तथाज्ञां प्रतिगृह्णती<br>निजांशं प्रेषयामास - ध्वजदत्त गृहं प्रति ॥ | ८५ |

|   |    |
|---|----|
| हनूमद्वचनं श्रुत्वा - निजसंपत्तिकारणम्<br>ध्वजदत्तः पुनः प्राह - स्वदेवं प्रयतांजलिः ॥  | ८७ |
| स्वामिन्! कुतो ममाज्ञातं - पुनस्संसार बंधनम्<br>तव संदर्शनाज्जंतु - स्तरे त्संसार सागरम् ॥  | ८८ |
| दुर्लभं तव पादाब्जं - त्यज्येयं कथ मीश्वर!<br>संसारबंध विच्छेदः - कांक्षितोऽद्यमया प्रभो!   | ८९ |
| सफलं कुरु मत्कामं - विलंबं न सहाम्यहम्<br>सिद्धं फलं प्राप्य को वा - कथं जह्यात्तु बुद्धिमान् ॥                                     | ९० |
| अतस्तुच्छफलं माभूत् - दीयतां शाश्वतं फलम् ॥   | ९१ |
| एव संप्रार्थितो देवो - ध्वजदत्तेन धीमता<br>गृहीत्वा चुबुके विप्रं - प्रार्थयामास मारुतिः ॥  | ९२ |
| इदमेकं मद्वाक्यं - श्रोतव्यमनसूयया<br>भोक्तव्या हि महाभोगा - स्त्वयाद्य सहबन्धुभिः<br>न चे हलोकापवाद स्स्यात् - याव दाचंद्रतारकम् ॥ | ९३ |
| ध्वजदत्तो दरिद्रस्सन् - हनूमन्मंत्र तत्परः<br>संपत्कामो जपन् भूय - स्संपदं नाप्तवामिति ॥  | ९४ |
| अतो मंत्रस्य सिध्यर्थं - ममाज्ञा पालनाय च<br>मन्मंत्र जप सिध्यर्थं - भोगान् भुंक्त्व यथासुखम् ॥                                     | ९५ |
| ततो मत्पदमासाद्य - सर्वोपप्लव वर्जितम्<br>संसार सागरोत्तीर्णो - भविष्यसि न संशयः ॥  | ९६ |
| भक्त संरक्षणार्थाय - पर्यटन् तव वैश्वानि<br>वसामि पिहिताकारः - सर्वोपद्रवनाशकः ॥  | ९७ |
| डिडिमध्वनिना विप्र! प्रतिजानीहि सत्वरः<br>अत्र कुत्रापि विषये - न मे भक्तः प्रणश्यति ॥  | ९८ |

इत्थं प्रभंजन सुतेन निजोन्मुखेन  
 संबोधितो द्विजवरो सचवार्यमाणः  
 अद्वैत निश्चितमति बंधुमान्यदेव  
 मङ्गीचकार नियतोदय मात्मभोगम् ॥ ९९

कामं विभाय सफलं द्विजनन्दनस्य  
 वातात्मजोऽपि गमनाय मतिचकार  
 सुग्रीव मैन्द पनसांगद गीयमान  
 लीलावदातमहिमा गुणभूम दामा ॥ १००

अथ निजपद मुञ्चै रूष्ट्र वाहाधिरूढो  
 हरिरिव गरुडांको धर्मपत्नी सहायः  
 जयजय शुभशब्दै रूपणीय प्रयाणः  
 सकलनिगमवेद्य इश्री हनूमान् जगाम ॥ १०१

इति श्री पराशरसंहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
 श्री सुबर्चला हनुमन्मन्त्र प्रभावे ध्वजदत्त चरित्र  
 कथनं नाम त्रयोदश पटलः



## श्री पराशर संहिता

### चतुर्दश पटलः

:- ध्वजदत्त चरितम् :-

मैत्रेयः :-

१ ॥ किमकारि द्विजेनाथ - ध्वजदत्तेन भीमता  
 पराशर! महाप्राज्ञ! वृत्तांतं ब्रूहि मे प्रभो! १

पराशरः

प्राप्तकामस्तु मैत्रेय! विप्र स्सन्तुष्टमानसः  
 उपपेदेयतात्मानं - पुष्करं गुरुमात्मनः ॥ २

- प्रदक्षिण नमस्कारैः - पूजयन् विधिवद्गुरुम्  
 मुखप्रसादसंभाव्य - कार्यसिद्धि मबोचत ॥
- ब्रह्मघ्नश्च कृतार्थोऽस्मि - तवानुग्रह वै भवात्  
 दैवतं च मयादृष्टं - ब्रह्माद्यैरपि दुर्लभम् ॥
- श्रेयसोऽस्य भवान्मूल-मतस्त्वां शरणं ब्रजे  
 त्वदनुग्रहलेखेन - दरिद्रो भवितामगाम् ॥
- ऋण प्रति कृतिं कर्तु - न शक्नोमि महामुने!  
 अनेकजन्म साहस्रै रिति मे निश्चिता मतिः ॥
- भाबतः प्रियशिष्येण - विधेयेन मया गुरो!  
 किंविधेय मिदानीं ते - तद्ब्रूहि करवाण्यहम् ॥
- इत्युक्तो ध्वजदत्तेन - पुष्करः शिष्यवत्सलः  
 जगाद वदतां श्रेष्ठ - स्मितोदंचितकण्डमुनिः ॥
- हनूमतः प्रसादेन - कृतकृत्योऽस्मि शिष्यक!  
 नास्ति कृत्यावशेषोऽद्य - निष्कामतपसो मम ॥
- हनुमद्भक्तिविषये - माक्रुधाः व्यग्रतां द्विज !  
 त्वमेव योग्यकालेषु - हनुमन्मंत्र मुच्चरन्  
 प्रमादं माभज क्वापि - भजतो निजदैवतम् ॥
- अस्माक मिष्टदेवस्य - त्वमाज्ञां परिपालय  
 उपभुज्याखिलान् भोगान् - शीलया साधुवृत्तया  
 अन्ते हनुमतस्थानं - प्राप्नुहि द्विजसत्तम !
- अहंवसामि दात्रैव - तदाज्ञा गौरवात्सदा  
 हितोपदिष्टो गुरुणा - ध्वजदत्तो महामतिः  
 तथेति प्रतिजग्राह - पादमूल मुपागतः ॥
- अथ सम्मानितशिष्यः - पुष्करेण द्विजोत्तमः ॥  
 द्विभ्रांस्तु पदविभ्यासा - मनुयातो महात्मना ॥

|   |    |
|---|----|
| तिर्यक्कृत्य निजग्रीवां - गुरुं पश्यन् मुहुर्मुहुः<br>तत्पदाब्जं हृदि ध्यायन् - जगाम निजपट्टणम् ॥                     |    |
| शनैर्गच्छन् तथा विप्रो - ददर्श निजमंदिरम्<br>सुधामंडल संस्पधि - प्रासाद शत शोभितम् ॥                                  |    |
| नाना रत्नांचित द्वारं - हेमं प्राकार बेष्टितम्<br>ध्वजदत्ताभिधानां क - ध्वजैश्च समलंकृतम् ॥                           |    |
| महाजलैर्महोत्साहैर्हयैश्च परिवारितम्<br>ऐरावत समाकारैर्गजैश्च गजयूषपैः<br>उष्ट्रैरष्टवदाकारै - बेष्टितं च यथाक्रमम् ॥ | ३  |
| आपीन भारवहनात् - गच्छंतीभि स्सुमंजुलम्<br>धेनुभि बहू संख्याभि - स्समंतात्परिवेष्टितम् ॥                               | २  |
| दाशीभिर्दासमुख्यैश्च - सेवितं तु द्विवानिशम्<br>द्वीपांतर समानीत - नानावस्तु समन्वितम् ॥                              | २  |
| राशीकृतैर्धनैर्धन्यैः रत्नैश्च विविधैरपि<br>पट्टवस्त्रैर्महामूल्यै - दिव्यपीतांबरैरपि ॥                               | २  |
| दुकूलैर्भूषणैश्चापि - समंता दुपशोभितम्<br>अनर्घै स्स्वर्णपात्रैश्च - सर्वतस्समलंकृतम् ॥                               | ११ |
| एवं सर्वसमृद्धं त - द्गृहरत्नं निरीक्ष्य सः<br>विस्मयं परमंप्राप - हनुमद्वै भवं स्मरन् ॥                              | २५ |
| निजागमन संभ्रातै - बन्धुभिर्ब्राह्मणोत्तमः<br>प्रत्युद्गत स्सुहृद्भिश्च - भ्रविवेश गृहोत्तमम् ॥                       | २६ |
| स्वगृहीतांगुलीभिश्च - सखीभिस्संहतोषभिः<br>पश्यन्गृहगरीयस्त्वं - निजांतपुर माविशत् ॥                                   | १७ |
| तत्रसाध्वीं निजांभार्या - सखीभिः परिवारिताम्<br>महाभाग्बततीत्येष - नित्यं बंधुजनैस्स्तुताम् ॥                         | २८ |

|  |    |
|--|----|
| सर्वलक्षणसंपन्नां वामांगीं वारिजेक्षणाम्<br>ताराभध्यगतां तन्वीं - चंद्ररेखा मित्रस्थिताम् ॥  | २९ |
| स्वणताटकं संरोच - त्कपोलद्वय जृम्भिताम् ॥<br>नवरत्न प्रभालिप्त - मेखलादाम शोभिताम् ॥   | ३० |
| क्वणत्कंकण विद्योति - मणिबधां सुमध्यमाम्<br>कंठलंबि महामूल्य - मुक्ताहार मनोहराम् ।  | ३१ |
| मंजुमंजीरनिनदां - दिव्यपीतांबरांचिताम्<br>एवं विचित्र भूषाढ्यां - बालां दृष्ट्वा द्विजोत्तमः<br>उवाच वचनं धीरं - सुहृद्वन्धु समावृतः ॥   | ३२ |
| अयि प्रिये! कृतार्थोऽस्मि - तव सौशील्य वैभवात् ॥<br>पुष्करोनाम धर्मात्मा - महायोगी महातपाः<br>साक्षात्कृत हनुमांश्च - सर्वभूतदयापरः<br>सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः - सदाचारो जितेंद्रियः ॥   | ३५ |
| एवंभूतस्तु विप्रेंद्रो - नैमिशारण्यगह्वरे<br>पुण्यतीर्थं समासाद्य - जपघ्नास्ते निरंतरम्<br>निष्काम जपकर्तासन् - हनुमन्मंत्रतत्परः<br>संपूर्णं सर्वकामोऽपि - दीनानुग्रहवांछया<br>जपत्यनुदिनं साक्षात् - हनुमद्वादशाक्षरीम् ॥              | ३६ |
| अथास्मिन्नंतरे साध्वि! तवदैन्य निरीक्षणात्<br>अतीवदुःखितोभूत्वा - त्वत्संभाषण विह्वलः<br>उपादानच्छलेनैव निष्क्रान्तोऽहं गृहांगणात् ॥<br>निर्गत्यतु चिरंध्यात्वा - स्मृत्वा तव मुखांबुजम्<br>क्वगंतव्यं मयाचेति - चिताक्रान्त मिवाभव मू ॥ | ३७ |
| ततोर्ध्वसमास्थाय - सर्वसंपज्जिघृक्षया<br>निद्राहारविहीनोऽहं - नैमिशारण्य माधिशम् ॥   | ३८ |

प्रविश्यतु महारण्यम् - मद्राक्षं पुष्करं मुनिम्  
 दृष्ट्वातु सुमहात्मानं - जपंतं पापकोपमम्  
 विज्ञाप्य ममवृत्तान्तं - गतोऽस्मिन्न शरणं मुनिम् ॥  
 ततश्श्रुत्वातुमद्वाक्यं - पुष्करो दीनवत्सलः  
 हनुमन्मंत्रदानेन - सद्योमामनुगृह्णत ॥  
 तदनुग्रहमाहात्म्या - द्दृष्टं देवतमुत्तमम्  
 ततो हनुमतातेन - दत्तो मे वर उत्तमः ॥  
 इह सर्वसमृद्धिश्च - परत्रच परागतिः  
 एवं वरं गृहीत्वाऽह - मागतोऽस्मितवातिकम् ॥  
 बिना तव वियोगार्तिः - नास्तिक्लेशो ममप्रिये !  
 त्वद्दैन्य स्मरणादेव - भेदो भवति नान्यथा  
 तय्यैव तु महाकष्टं - भुक्तं दारिद्र्य संभवम् ॥  
 इत्युक्तवतं प्रोवाच - पतिशीला पतिव्रता  
 स्वामिन्न किञ्चित्कष्टं मे - त्वत्पादासक्त चेतसः ॥  
 किंतु धिङ्मामिमां दुष्टां - त्वद्वियोगेऽपि जीवितम् ॥  
 ज्ञात्वातु नानुगत्री मा - भवतः पादपद्धतिम्  
 अंतरङ्गमिद मन्ये - शत्रुरेव न संशयः ॥  
 त्वद्गतं खिद्यमानाया - स्तद्वार्ता मे न बक्ष्यति  
 उपकर्त्रीतु तां मन्ये - मूर्च्छनां तु कथंचन  
 यया वियोगदुःखानि - नैव ज्ञातवली ह्यहम् ॥  
 पुरस्सरं ममस्वांतं - त्रवमार्गं प्रदर्शकम्  
 पुनर्नायाति शत्रुत्वा - तवामुपादाय संभ्रमात् ॥  
 इदानीं बहुमन्येतां - गथां जौबं त्यहं पुनः  
 त्वद्दर्शनं महानंद - समुद्रोदक संप्लुताम् ॥  
 एवं वदतीं भार्यां तु - बाष्पपूरित लोचनः  
 आलिंग जवा द्विप्र! परमानन्द निर्भरः ॥



- तत्संस्तुष्टचित्तस्सन् - स्वभार्यामिदमब्रवीत्  
 कष्टान्यहाम्यतीतानि - लङ्घितो दुःखसागरः  
 इदानीं त्यज कष्टानि - हनुमद्दय मा प्रिये ॥ ५
- अधुना त्वं महाभागे - भुङ्क्व भोगान् यथेप्सितान्  
 भुनक्तु सकलान् भोगान् - भद्रबाहु र्यथेप्सितम्  
 भद्रगोऽपि महाप्राज्ञो - भ्राता मे भ्रातृवत्सलः ॥ ५
- गुर्वनुग्रह माहात्म्यात् - हनुमन्मंत्रवैभवात्  
 तव भाग्योदयान्चैव - समृद्धा स्सर्वसम्पदः ॥ ५'
- अतो यथेष्ट मन्त्रानि भुजंता मर्थिन स्सदा  
 बान्धवाश्च यथाकाम - मीप्सिताधान् भुजंतु नः । ५५
- इत्यादिश्य बधूं विप्रो - विरराम महामतिः  
 चक्रे तदाज्ञां शीलापि - सुशीला भर्तृचोदिता ॥ ५६
- ततः कदाचि द्विप्रेन्द्र - पुण्यकाले नदीतटे  
 स्नात्वा सुशीलया पूर्वं - शीलया भार्यया सह ॥ ५७
- यथाविधि यथान्यासं - हसुमद्वादशाक्षरम्  
 दारिद्र्यबन्कशमन - मज्ञानध्वांत नाशनम्  
 एवं विधं महामन्त्रं - कलत्राय दिदेश सः ॥ ५८
- अष्टाक्षरं महामन्त्रं - भद्र काय दिदेश वै  
 सप्तमंत्रात्मिकां विद्यां - भद्रबाहोस्तु दिष्टवान् ॥ ५९
- एवं हनूमतो मंत्रान् - पितृ मातृ कुलद्वये  
 विप्रः प्रवर्तयामास - यथान्यासं यथारुचि ॥ ६०
- ध्वजदत्तो महाप्राज्ञ - स्सुहृद्बन्धु समन्वितः  
 यथासुखं यथान्याय्यं - सर्वान्कामानभुंजत ॥ ६१

इति बहुतिथिकालं भुक्तभोगो द्विजेन्द्रो  
दुरित चरित दूरं वायुसूनो पदं तत्  
अलभत सुलभात्मा शांतचित्तप्रचारो  
भव निधन निरासं कर्तुकाम स्सकामः ॥

६२

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
सुवर्चला हनुमन्मन्त्र विवरणे श्री सुवर्चला हनुमद्द्वादशाक्षर  
प्रभावे ध्वजदत्त चरित्र कथनं नाम अतुर्वंश पटलः



## श्री पराशर संहिता

पञ्चदश पटलः

-: विजय चरितम् :-

श्री मैत्रेयः :-

श्लो ॥ हनुमन्मन्त्र राजस्य - द्वादशाक्षर संज्ञितः

प्रभावस्तु परिज्ञातः - त्व! त्प्रसादान्महामुने ॥

१

अष्टाक्षरी प्रभावंतु - श्रोतु मिच्छामि संप्रति

सत्प्रभावं समाचक्ष्व - श्रोतुकामस्य मे प्रभो !

यत्प्रभावेन लोकोऽयं - मुच्यते भवबन्धनात् ॥

२

एवं सम्बोधितस्तेन - मैत्रेयेण महात्मना

पराशरस्तु तं प्राह - विवक्षुर्मन्त्र वैभवम् ॥

३

श्री पराशरः

धन्योऽसि कृतकृत्योऽसि - मैत्रेय! मुनिसत्तम?

यतस्ते बुद्धिमारूढा - मन्त्रविद्या हनूमतः ॥

४

|   |    |
|---|----|
| मग्नोऽह मधुना ब्रह्मन् - परमानन्दसागरे<br>स्मारयन् मन्त्र विद्यां हि - मांकृतार्थं करोषियत् ॥   | ५  |
| तस्मादष्टाक्षरी विद्या - वणं यिष्ये यथामति<br>यद्वर्णनेन सद्योऽहं - जन्मसाफल्य माप्नुयाम् ॥   | ६  |
| आदा वष्टाक्षरी मन्त्र - समुद्धारं वदामि ते<br>गोपनीयं तु यत्नेन - योगिनामपि दुर्लभम् ॥  | ७  |
| आदौ प्रणव मुच्चार्य - हनूमद्बीज मुच्चरेत्<br>आंजनेय पदज्ञेयं - नमश्शब्दं - समुच्चरेत्<br>सोऽयमष्टाक्षरः प्रोक्तं - हनूमन्मंत्र सत्तमः ॥   | ८  |
| तस्य षिरीश्वरः प्रोक्तः - छन्दोनुष्टु प्तथैव च<br>हनूमान् देवता प्रोक्ता - बीजमामिति कीर्तितः ॥   | ९  |
| नमश्शक्तिस्तु विज्ञेया - मध्ये त्युक्तं तु कीलकम्<br>श्रीहनूमत्प्रसादार्थ - जपेस्तु विनियोजनम् ॥  | १० |
| त्रिभिराद्यस्वरैर्दीर्घै - बिन्दुक्रान्तैस्तथैव च<br>अंगुष्ठाद्यगुलिन्यासान् - त्रीन्प्रकुर्वीत मंत्रवित् ॥   | ११ |
| अवशिष्टांगुलीन्यास - मैमौ कुर्यात्ततः परम्<br>विसर्जनीयमात्रेण - करस्य तलपृष्ठयोः । -<br>न्यासं कृत्वा ततः कुर्या - द्वयाहृत्या बन्धनं दिशान्<br>ततस्तु देवतांध्याये - देवं रूपा मतन्द्रितः ॥ | १२ |
|   | १३ |

ध्यानं -

|   |    |
|---|----|
| आंजनेय मतिपाटलाननम्<br>कांचनाद्रि कमनीय विग्रहम्<br>पारिजाततरुमूल वासिनम्<br>भावयामि पवमाननन्दनम् ॥ | १४ |
| लक्षसंख्या पुरश्चर्या - दशांशं तर्पणं भवेत्<br>हवनं तद्दशांशं स्या तद्दशांशं तु भोजनम् ॥            | १५ |

|   |    |
|---|----|
| मधुत्रयेण हवनं - कुर्याम्भंत्रविचक्षणः              |    |
| गोक्षीरैश्शकंरामिश्रैस्तर्पणंतु समाचरेत् ॥          | १६ |
| एव शास्त्रोक्तविधिना - जपमनष्टाक्षरीं मनुम्         |    |
| अष्टाक्षरी प्रभावेन - शुद्धांत करणो भवेत् ॥         | १७ |
| सिद्धिञ्च सर्वकार्यस्य - प्रसिद्धिं जगतांत्रये      |    |
| अन्ते कैवल्यसंपत्ति - लभते नात्र संशयः ॥            | १८ |
| अत्रैवोदाहरं तीय - मितिहासं पुरांतनम्               |    |
| सर्वपापहरं नृणां - सर्वसंपत्ति कारणम् ॥             | १९ |
| योऽयं श्रवणमात्रेण - सकृद्वा मुनिपुंगव!             |    |
| वक्तारं पृच्छकं श्रोत्रून् - त्रीन् पुनाति नसंशयः ॥ | २० |
| आसीत्त्रेतायुगे भूमौ - चंद्रकोणं महापुरम्           |    |
| सर्ववस्तुसमृद्धांत - त्रिलोकेषुच विश्रुतम् ॥        | २१ |
| तत्राभू द्विजयोनाम - क्षत्रियो रिपुमर्दनः           |    |
| महाशूरो महेष्वासो - युद्धकर्म समुत्सुकः ॥           | २२ |
| स कदाचि न्महावीरो - राज्यमारोप्य नंदने              |    |
| चकमे दिग्जयं कर्तुं - विजयो नृपसत्तमः ॥             | २३ |
| ततः प्रतस्थे नृपति - विजयो जयकांक्षया               |    |
| मध्येमार्गं ददशथि - गर्गनाम महामुनिम् ॥             | २४ |
| दृष्ट्वा मुनिं नृपाध्यक्षः - तुरंगा दवतीर्यसः       |    |
| दूरे निहित सैन्यस्सन् - मुने रतिकमायमौ ॥            | २५ |
| ततः कृतानति भूत्वा - राजा तस्थौ कृतांजलिः           |    |
| गर्गोदृष्ट्वा महाराज - मन्त्रवी न्मुनिसत्तमः ॥      | २६ |
| इत एहि नृपश्रेष्ठ! कुत आगमनं तव?                    |    |
| कच्चित्ते स्वागतं राजन् - सर्वत्र कुशलं ननु ॥       | २७ |
| कच्चित्ते शत्रुसामंताः - प्रयच्छंति बलिं बलात्      |    |
| इत्युक्तो विजयस्तेन - गर्गेण सुमहात्मना             |    |
| प्रत्युवाच मुनिं राजा - विजयो जयतां वरः ॥           | २८ |

भवतोऽनुग्रहा द्ब्रह्मन् - सर्वे कुशलिनो वयम्  
 दिग्दिगीषु रहं तात! चंद्रकोणा दिहागतः ॥  
 तव संदर्शना दद्य - कृतार्थोऽस्मि महामुने!  
 इतःपरंतु कर्तव्य - मुपदिश्य ममाधुना  
 अनुगृह्णीष्व दीनं मां - त्वमेव शरणं मम ॥  
 एव संप्रार्थितो गर्गो - विजयेन जयार्थिना  
 उपदेष्टुं हितं तस्य चकमे दीनवत्सलः ॥  
 हनूम न्मन्त्रराजं च - गृहाण विधिव न्मनुम्  
 आयास मंतरेणैव - विजयस्ते भविष्यति ॥  
 एव मुक्त्वा मुनींद्रस्तु - प्रादा दष्टाक्षरं मनुम्  
 यथाबीजं यथान्यासं - मंत्रोद्धारं प्रणीतवान् ॥  
 उपदिष्टं महामन्त्रं - गर्गेण सुमहात्मना  
 प्रतिजग्राह राजेन्द्रो - निगृहीतेन्द्रियस्तदा ॥  
 गृहीत्वा मंत्रराजं तु - जजापाष्टोत्तरंशतम्  
 गुरुदैवतमंत्रेषु - समविश्वासगौरवात् ॥  
 जप्तमात्रे महामंत्रे - हनुमान्मारुतात्मजः  
 आविर्बभूव तस्याग्रे - सुप्रीवादि समन्वितः ॥  
 तमागतं हनूमंतं - दृष्ट्वा नृपतिनन्दनः  
 साष्टांगप्रणतो भूत्वा - लुष्टाव प्रयतांजलिः ॥  
 चतुर्मुखं षण्णमुखो वा - सहस्रवदनोऽपि वा  
 यथा विस्मयमापेदे - प्रशशंस तथा नृपः ॥  
 तस्य स्तबेनसन्तुष्टो - वायुसूनुस्तमब्रवीत्  
 अनेन स्तोत्रपाठेन - प्रीतोऽस्मि नृपनन्दन!  
 वरं वरय भद्रं ते - मा कुक्ष्वात्र संशयः ॥  
 इत्युक्तो नृपशादूलो - दैवतेन हनूमता  
 प्रत्युवाच विनीतस्सन् - विजयो वदतां वरः ॥

- स्वामिन्नद्य कृतार्थोऽस्मि - ब्रह्मसंदर्शनादहम्  
 श्रेयस्स्यादिद मत्यर्थ - ब्रह्माद्यैरपि दुर्लभम् ॥ ४१
- किंतु सद्यो जिगीषास्ति - मुसलाग्रमते मम  
 यथा मदीप्सित सिद्ध्ये - तथा मयि दयां कुरु ॥ ४३
- इति संप्रार्थितो राजा - हनुमान्मास्तात्मजः  
 उवाच विजयं देवो - भक्तानुग्रहतत्परः ॥ ४४
- विजयस्व यथेच्छं वै - दिशो दश महामते  
 किंतिवदामीं दिशोजेतुं - न यतस्व नराधिप ॥ ४५
- द्वापराख्येयुगे राजन् - कार्यहि महदुद्यमम्  
 त्वयाविना महाबाहो - तत्कार्यं नैव सिध्यति ॥ ४६
- अतो ममाज्ञया राजन् - इन्द्रसूनुत्वमाप्स्वसि  
 कृष्णं सारथि मासाद्य - रणरङ्गे नराधिप  
 तदा विजयनाम्नैव - कौरवांस्त्वं विजेष्यसि ॥ ४७
- ततो यथाक्रमं राजन् दिशोदश विजेष्यसि  
 भजेया विजया यांते - वैजयन्ती जयांकिता ॥ ४८
- बहुनात्र किमुक्तेन - भवत्यहं पराजितः  
 कपिध्वज इति ख्यातिं - गमिष्यसि न संशयः ॥ ४९
- इति विजयमुदीर्य कायंसारम्  
 पवनसुक्तस्तु तिरोदधौ तदानीम्  
 नरपतिरपि पट्टणं प्रपेदे  
 गुरुमभिवाद्य गृहीत दैवतज्ञः ॥ ५०

इति श्री पराशर संहिताया श्री पराशर मैत्रेय संवादे

षड्दशमुख हनुमन्मंत्र विवरणे विजयचरित्र

कथनं नाम षड्दश पटलः



# श्री पराशर संहिता

## षोडश पटलः

अष्टाक्षरी प्रभाव - विजयचरितम्

श्री मंत्रेयः -

श्लो॥ गत्वातु विजयस्तत्र - किंबुद्धिरभवन्मुने  
पराशर महाप्राज्ञ! - तद्वृत्तं वक्तुमर्हसि ॥ १

श्री पराशरः :

विजयो गृहमासाद्य - प्रजावर्मेण रंजयन्  
भुंजान स्सकलाभोगान् - बहुकाल त्रिनाय सः ॥ २  
राजा हनुमदादेशा - जिज्वृक्षुः पपरां तनुम्  
सुखतामपि पूर्वा तु - मेने भारगिवात्मना ॥ ३  
ततो हित्वा तनुपूर्वा - विजयो जयर्काक्षया  
पांडुपत्न्यां पृथायांतु - लेभे देवेन्द्रपुत्रताम् ॥ ४  
यस्याग्रजो महाराज - स्सत्यसंधो युधिष्ठिरः  
तदग्रजो भीमसेनः - भीमकर्मा महाबलः ॥ ५  
तस्यानुजस्तु विजयो - ववृधे मातृ सन्निधौ  
स एवार्जुननाम्नाऽसौ - जगृहे सकलाः कलाः ॥ ६  
कदाचि द्विजयोराजा - जगदेकधनुर्धरः  
प्राचीदिश मगात्पूर्व - जिगीषु स्सपरिच्छदः ॥ ७  
प्राचीनान्शत्रुसामंतान् - जित्वा भुजबलेन सः  
अनुयातस्तु तैर्भूपैः - प्रपेदे दक्षिणां दिशम् ॥ ८  
दाक्षिणात्यान्त्रिपुत्राजा - प्रोत्सार्य च गुणस्वनैः  
सेतुं ददर्श विजयः - सूत संस्तुत विक्रमः ॥ ९  
किमेतदिति पप्रच्छ - मंत्री न्वृद्धा नपुराविदः  
तैरुचे विजयोराजा - सेतुदर्शन विस्मितः ॥ १०

- राजन् रघुपती रामो - राक्षस्य दुरात्मनः  
वधाय बंधयामास - समुद्रं पर्वतोत्तमैः ॥ ११
- शतयोजन पर्यंता - सेयं सेतुरिवांबुधौ  
इति मंत्रिवचश्रुत्वा - जहास विजयोत्तमः ॥ १२
- स्वयं धानुष्कतां प्राप्य - शराणामपि संपदम्  
किमर्थमन्वभूद्राम - प्रयासं रघुनन्दनः ॥ १३
- शरपंजर बंधेन - सुतरोऽयं तु सागरः  
प्रयोजनं न जानेऽस्य - प्रयासस्य महात्मनः ॥ १४
- अथास्मिन्नन्तरे श्रीमान् - हनुमान्मास्तात्मजः  
रामवृत्तांत विज्ञाना - दाजगाम कृतांजलिः ॥ १५
- अब्रवीन्मासतिभूप - गर्बाधतमसावृतम्  
घटुक्तमधुना राजन् - भवता हेलयावृतम् ॥ १६
- भापात रमणीयत्वा - तन्नक्षोदक्षमंचः  
ऋक्षवानर मुख्यास्तु - महापर्वत सन्निभाः  
शरपंजर मार्गेण - तरेयुर्जलधिं कथम्? ॥ १७
- शकुन्त पात मात्रेण - भिद्यते शरपंजरः  
एतादृशंतु पंथानं - श्रद्धधातु कथं जनः । ॥ १८
- पिपासो रधिकं जंतोः - पिधाय मधुरोदकम्  
मरीचिका तोयमिव - भवे त्पजरपद्धतिः ॥ १९
- अथवा जानकीनाथो - ममस्वामी रघूद्वहः  
अभिमृश्य कथं कुर्यात् - वृभालापै रलं तव ॥ २०
- अर्हंत्येष समारोहं - यदि वा शरपंजरः  
गजवाजिरथोपेतां - तथा सेनां वहिष्यति ॥ २१
- इत्सुक्तः ऋपिनाथेन - नृपो वचन मब्रवीत्  
बध्यते जलधिधीरः - मया सायक पंजरैः  
शिथिलीकुरुतां तत्तु - असभं शरपंजरः ॥ २२



|   |    |
|---|----|
| दृढगत्या यथाशक्ति - धावनेन जवेन वा<br>येनकेनापि योगेन - शिथिली कुच पंजरम् ॥   | २३ |
| समयः क्रियते सौम्यः - मया निश्चलबुद्धिना<br>भिद्यते शरबंधोऽयं - भवता यदि मारुते   |    |
| तदा सद्यः प्रवेश्यामि - सगांडीवो हुताशनम् ॥   | २४ |
| इत्युक्त्वा शरजालेन - बबन्ध जलधिं नृपः ॥  | २५ |
| कपीन्द्रोऽपि तदा दृष्ट्वा - शरबन्धं तधाविधम्<br>राजान मब्रवीद्वाक्यं - सीताराम मनुस्मरन् ॥  | २६ |
| सीताराम पदद्वन्द्व - ध्यान संभृत विक्रमः<br>भजेयं शरबन्धं ते - पदेनैकेन भूमितः ॥  | २७ |
| न चेत्तव पताकांको - भवेयं विजयोन्मुखः   | २८ |
| इत्युक्त्वा हनुमान्भूपं - प्रहसनमुख पङ्कजः<br>द्वित्रैस्तु पदविन्यासै - बभञ्ज शरपञ्जरम् ॥   | २९ |
| दृष्ट्वा पञ्जरभंगंतु - निर्विण्णवदनो नृपः<br>गांडीवं पातयामास - किमेतदिति विस्मितः ॥  | ३० |
| निनिन्द बहुधाऽऽत्मानं - गाण्डीवंच पुनःपुनः<br>अथ चिंतां समापेदे - विजयो जय निस्पृहः ॥   | ३१ |
| अद्यप्रभृति मच्छक्ते - रवसादोऽथवा ननु<br>रक्षो मायाथवानूनं - स्वप्नोय मथवा पुनः ॥   | ३२ |
| यदिवा मम दिङ्मोहः - बुद्धिभ्रंशोऽपि वा पुनः<br>अन्यथा कथ मेतत्तु - विपरीतं महद्भवेत् ?  | ३३ |
| इति संचित्य मनसा - सहसा नृपनायकः<br>प्रज्वाल्य पावकं तत्र - प्रवेष्टु मुपचक्रमे ॥   | ३४ |
| अथास्मिन्नस्तरे कृष्णः - पाण्डवानुजिघृक्षया<br>तं देशमागमात्तूर्ण - निरस्ताभ्यघ्नप्रयोजनः<br>आगत्य वासुदेवस्तु - पप्रच्छ हनुमन्नृपौ ॥ | ३५ |

|  |    |
|--|----|
| युवाभ्यां किकृतं घोरौ - वद तं मे नियुंजतः<br>किमर्थं ज्वलितोवह्निः - भग्नोवा शरपञ्जरः ॥  | ३६ |
| तावन्नूतां यथावृत्तं - कृष्णस्य परमात्मनः<br>श्रुत्वा निगदितं ताभ्यां - प्राह तौ गरुडध्वजः ॥   | ३७ |
| असाक्षिक मिदं कर्म - कृतवन्तं कथं युवां?<br>शरपञ्जर संस्थानं - कीदृशं भवताकृतम् ॥  | ३८ |
| त्वया वा शरबन्धस्य - विश्लेषः कथमाहृतः<br>पश्येयं युधयोः कर्म - पुनरेव विधीयताम् ॥   | ३९ |
| श्रुत्वा कृष्णवचस्तत्र - पांडवो हृदयप्रियम्<br>बबन्ध जलधिं तूर्णं - पुनरेव शितैश्शरैः ॥  | ४० |
| ततो हरिस्तु सर्वात्मा - सर्वभूत दयापरः<br>अधस्ताच्छरबन्धस्य - प्रविष्टः कमठाकृतिः ॥  | ४१ |
| हनुमानपि सन्नद्धः - शरपञ्जर भंजने<br>आरुरोह शरारोहं - पंजरीकृत निग्रहः ॥   | ४२ |
| अवष्टभ्य पदद्वन्द्वम् - यथाशक्ति स मारुतिः<br>अधोनिनीषया तूर्जं - चालयामास पंजरम् ॥  | ४३ |
| तथापि दृढसंस्थाना - न्नचचालेषु संहतिः<br>धावतिस्म ततःशशीघ्रं - मारुतिः शरवर्त्मना ॥  | ४४ |
| तथापि न चकपेऽसौ - कूर्मावष्टंभ वैभवात्<br>उड्डीयोड्डीय वेगेन - न्यपत त्पुतविक्रमैः ॥   | ४५ |
| तथापि शर संघातः - किञ्चिन्नैवाप वैकृतम्<br>दुष्कर प्रतिघातस्य - स्ववीर्यस्य जगत्त्रये<br>अपूर्वं प्रतिघातेन - बह्वमन्यत सोऽर्जुनम् ॥ | ४६ |
| हनूमत्पदविष्टंभ - जर्जरीकृत चर्मणः<br>कमठेश्वर पृष्ठाग्रा - त्सुस्त्रावासृङ्मधीततः ॥   | ४७ |

- अथाजनासुतश्श्रीमान् - निजविक्रम वक्रताम्  
असृङ्मयं जलंचापि - निरीक्ष्यावरुह सः ॥ ४८
- कपीन्द्रो भक्तवात्सल्या - द्वरदानात्स्वयं पुरा  
लक्ष्मीशपक्षपाताच्च - निवृत्तः शरभंजनात् ॥ ४९
- स्वभवतं विजयं वीक्ष्य - संप्रहृष्टमनाभृशम्  
पराजितोऽहमस्मीति - बभाषे वायुनंदनः ॥ ५०
- राजन् त्वमपि मद्भक्तो - विजयः पूर्वजन्मनि  
मन्मंत्रजपनिष्णातो - निष्णातो नित्यकर्मसु ॥ ५१
- दिग्जिगीषुः भवान्सद्य - स्सत्वरं सर्वबिग्रहः  
सत्वंमयासुनीतस्सन् - भाविकार्यवशाद्भृशम्  
निवृत्तो विजिगीषात् - स्तदानीं नृपनंदनः ॥ ५२
- इदानीं समयोराज - न्विजेतुं सकलादिशः  
अद्यप्रभृति शत्रुभ्यो - नस्यात्तवपराभवः । ५३
- दुर्भरोऽयं महाभारो - मद्भक्तस्य पराभवः  
ससरित्सिन्धुशैलाभू - तंमे भारायकल्पते ॥ ५४
- वरदान प्रतिज्ञातु - विजयार्जुन जन्मनि  
पराजय छलेनाद्य - प्राप्नोमि ध्वजचिह्नताम् ॥ ५५
- इत्युक्त्वा वचनं श्रीमान् - हनूम न्भक्तवत्सलः  
विजयस्य स्वभक्तस्य - ख्यातये जगतांत्रये  
प्रतिज्ञारक्षणार्थं च - लेभे तस्य ध्वजाङ्कताम् ॥ ५६
- तदाप्रभृति लोकेषु - पाण्डव स्सफलोद्यमः  
कपिध्वजइति ख्याति - जगाम जगतांचरः ॥ ५७
- ततः कपिध्वजो राजा - स्मयमान मुखांबुजः  
कृष्णं निरीक्ष्य वश्यंतं - वचनंचेद मन्नवीत् ॥ ५८
- कृण! पश्य मम प्राज्ञ - भुजवीर्यं मनर्गलम्  
नमेऽस्ति त्रिषुलोकेषु - प्रतियोद्धा कथंचन ॥ ५९

- अजेयोऽसुरजेतापि - हनूमा भिष्वनन्दनः  
 भुजवीर्याञ्जितो यस्मात् - ध्वजलक्षणतामगात् ॥ ६०
- इति गर्वितचेतस्कं - पाण्डवं यदुनन्दनः  
 उवाचवचनं धीमान् - तस्यगर्वं प्रशांतये ॥ ६१
- यदा ते विजिगीषा स्या - त्प्रतिज्ञापूर्विकार्जुनः  
 तदाश्रमातिरेकोमे - दीयते सुहृदात्वया ॥ ६२
- प्रणवाभो वयं पार्थ! - सदा स्वाभीष्टदेवताम्  
 प्रबलद्वेषिणं जिष्णो - संयद्वामा भवत्विति ॥ ६३
- नृपते समयोत्सेक - स्तावको मामकं वपुः ॥  
 हनूमत्पदविष्टं - बाधितं बाधते पुनः ॥ ६४
- पश्यराजन्मदीयांगं - शोणिताक्तत्वगन्तरम्  
 शिथिलीकृतशल्याग्रं - निष्ठ्यूत बहुमेदसम् ॥ ६५
- त्वत्प्रतिज्ञां समालोक्य - कूर्मनायकविग्रहः  
 अथस्तात्पंजरस्याह - मवष्टभ्यावतस्थिवान् ॥ ६६
- तदापादप्रहारेण - वायुसूनोर्महात्मनः  
 जर्जरीकृत सर्वांगो - बहुसंकटमभ्यगाम् ॥ ६७
- को वा युधि कपीन्द्रस्य - स्थाताऽतिकुपितात्मनः  
 यत्र वज्रादिशस्त्राणि - तूलप्रायाणिजग्मिरे ॥ ६८
- किं तु मच्छ्रम वेदित्वा - द्वरदानात्तु ते पुरा  
 भाविकार्यं प्रभावाच्च - ध्वजाग्रे समुपस्थितः ॥ ६९
- इत्युक्त्वा तस्य तोषाय - प्रशशंस हरिः पुनः  
 कृतार्थोऽपि महाभाग! - हनूमान्भक्ति तोषितः  
 आस्ते ध्वजपताकायां - जयमिच्छस्सदा तव ॥ ७०
- इति सांस्व वचस्सारै - स्तदवज्ञां ममार्जं सः  
 ततो हृष्टमनाः पार्थः - कपीन्द्रध्वज लाभतः  
 अबशिष्टदिश स्सर्वाः - जिगाय भुजविक्रमैः ॥ ७१

इति पधनसुत प्रसाद लाभात्  
 सकलहरिज्जय संप्रहृष्ट चेताः  
 अलभत निजमन्दिरं सजिष्णुः  
 पथि यदुनायक दत्त सूतभावः ॥  
 अथ सुरपतिसूनु रिद्धतेजाः  
 सकल दिगीश किरीट जुष्टपीठः  
 चिर मरमत कृष्णया सकृष्णः  
 कुरुपति गौरवभङ्ग हेतुलीलः ॥

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
 पञ्चमुख हनुमन्मंत्र विवरणे हनुमदष्टाक्षरी प्रभाव  
 विजयचरित्र कथनं नाम षोडश पटलः



## श्री पराशर संहिता

सप्तदश पटलः

- न्यासमुद्रादि लक्षण कथनम् -

श्री मैत्रेयः -

समस्तागमजालानि - श्रुतानि स विशेषतः  
 पुनर्विशेषं पृच्छामि - स्वामि न्मे वद मारुतेः ॥  
 स्नानं संध्या जपो होमः - मुद्राऽऽवरणदेवताः  
 अंगमंत्रा न्यासविधिः - प्राणायाम श्रद्ध तर्पणम्  
 पीठपूजां हनुमतौ - मे घदस्व महामुने ॥

श्री पराशरः :

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय - शुचि भूत्वा सितांबुजे  
 अनन्तदल संदीप्ते - कर्णिकामध्यमे शुभे ॥

ध्यायेन्मूर्ध्नि सितांभोजे - सहस्रदल संयुते  
 सर्घान्तर्यामिनं देवं - भगवंतं सनातनम् ॥  
 प्रातः शिखारसि शुक्लाब्जे - द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुम्  
 वराभयकरं शांतं - स्मरेत्तं नामपूर्वकम् ॥  
 गुरुं चा भेदबुद्धि वँ - ध्याये तन्मध्यमे सुधीः  
 सिंहासने पुरोदेशे - संस्थाप्य गुरुदैवतम् ॥  
 गुकारं गुरवे दद्या - द्गणनाथाप्य गं वदेत्  
 क्षं वदेत् क्षेत्रपालाय - सरस्वत्यै च सं वदेत् ॥  
 पकारं च ततः कुर्यात् - परमात्मन इत्यपि  
 नमस्कुर्याद्गुरुं मूर्ध्नि - गणेशं दक्षिणे भुजे ॥  
 वामेभुजे क्षेत्रपालं - दक्षिणांसे सरस्वतीम्  
 वामांसे परमात्मानं - क्रमेण विधिना मुने!  
 गन्धपुष्पैश्च धूपैश्च - दीपे नामिततेजसा  
 नैवेद्येन च संपूज्य - नमस्कुर्याद्यथाविधि ॥ १  
 आदाय स्नानसामग्रीं - नदी मभिवसेत्ततः  
 यथाविधि ततः स्नोयात् - स्मार्ताचारानुसारतः ॥ १  
 मंत्रस्नानं ततः कुर्यात् - एवं तद्विधिरुच्यते  
 हस्तेन फेनं निष्कास्य - आत्मनः पूर्वभागतः  
 वर्तुलं कवचेनाऽथ - विलिखेत्तत्र संयुतः ॥ १  
 विलिखेदष्टकोणं च - चक्रं तत्र प्रयत्नतः  
 मन्त्रराजस्य वर्णांश्च - अष्टकोणेषु विन्यसेत् ॥ १  
 अष्टाक्षरीं त्रिरुच्चार्य - अष्टमुद्राः प्रदर्शयेत्  
 तदीयमुदकं तत्र - भावये दमृतात्मना ॥ १  
 तत्र दिव्यानि तीर्थानि - अंकुशेनाऽऽहरन्मुने!  
 सूर्यमण्डलमध्यस्थं - हनूमंतं प्रयत्नतः  
 प्रसन्नमुद्रया तत्र - चक्रे संस्थापयेद्बुधः ॥ १

- प्राणायामं तत कृत्वा - ततः स्नानंविधीयते  
 तत्पादोपरि मूर्धानं - त्रिवारं प्रापयेज्जले  
 जपेदष्टाक्षरीं तत्र मन्त्रराजं त्रिवारकम् ॥ १६
- मुखादि सर्वगात्रेषु - प्रोक्षयेत्कुम्भमुद्रया  
 त्रिवार मष्टवारं वा - मन्त्रराजं मुदाहरेत् ॥ १७
- सहारं मुद्रया देवं - स्थापयेत्पूर्वमण्डले  
 ततस्तीरं समासाद्य - धारयेद्द्वैतयुग्मकम् ॥ १८
- मन्त्रस्नानं विधानोऽयं - सकलागमसम्मतः  
 इमार्तसध्यां ततः कुर्यात् - मन्त्रसध्यां पुनस्ततः ॥ १९
- पूर्ववद्विलिखेच्चक्रं - प्राणायामं च मूलतः  
 तच्चक्रमध्ये हनुम - त्पादपद्मोदकं त्रिभिः  
 आचम्य मूलमन्त्रेण - स्पृशेदंगानि मूलतः ॥ २०
- त्रिवारं मष्टवारं वा - मार्जनं भस्तकादितः  
 मूलेन सकलांगानि - पुनराचम्य मूलतः  
 मनुना मन्त्रगायत्र्या - दद्यादर्घ्यत्रयं ततः ॥ २१
- आत्मप्रदक्षिणं कुर्यात् - मूलमन्त्रेण यत्नतः  
 मूलेन पुनराचम्य - प्राणायामं चरेत्पुनः ॥ २२
- मूलमन्त्रं च गायत्रीं - यथाशक्ति जपेत्सुधीः  
 प्राणायामं पुनः कुर्यात् - आचम्य विधिवत्पुनः ॥ २३
- संहारमुद्रया चक्रे - स्थितं वेदं हृदि न्यसेत् ॥ २४
- नित्यमन्त्रजपं वक्ष्ये - शृणुष्व मुनिपुङ्गवः  
 मूलेन पुनराचम्य प्राणायामं त्रयं पुनः ॥ २५
- विरेच्य दक्षिणेनासा - त्रिवारं मूलमन्त्रतः  
 नासारंध्रेण बाभेन - षड्वारं पूरयेत्ततः ॥ २६
- कुम्भये न्मनुना चेन - द्वादशावृत्तिमात्रतः  
 षड्वारं रेचयेत्तत्र - पुनर्दक्षिणभागतः  
 एवं हनुमतो मन्त्र - प्राणायामस्य लक्षणम् ॥ २७

|  |                |
|--|----------------|
| भूशुद्धिं भूतशुद्धिञ्च - न्यासान्कुर्यात् प्रयत्नतः<br>क्रमेणवक्ष्ये मौनीन्द्र - समाहितमना श्शृणु ॥  | २८             |
| भूशुद्धि मादौ वक्ष्यामि - श्रूयतां मुनि पुङ्गव!<br>पृथिव्या इत्युदीर्यादौ - मेरुपृष्ठऋषिस्तथा ॥  | २९             |
| सुतलं छन्दइत्येवं - कूर्मो दैवतमुच्यते<br>आसने विनियोगेऽपि - एवं किञ्चिदथो न्यसेत् ॥   | ३०             |
| ततोऽनन्तासनायेति - नमोन्तं समुदीरयेत्<br>कमलासन शब्दं च - चतुर्थ्यंतं नमोन्तकम् ॥  | ३१             |
| विमलासन शब्दं च - चतुर्थ्यंतं नमोऽन्तकम् ॥<br>पृथ्वी! त्वया धृता लोका - देवि! त्वं विष्णुनाधृता<br>त्वं च धारय मां देवि ! - पवित्रं कुरु चासनम् ।  | ३२<br>३३       |
| अपसर्पंतु ये भूता - ये भूता भुविसंस्थिताः<br>येभूता विघ्नकर्तारि - स्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥   | ३४             |
| त्रिवारं घातयेद्भूमा - वासनेवामपाष्णिना<br>तालत्रयं प्रकुर्वीत - कराभ्यां मूलमन्त्रतः ॥<br>मूलमन्त्रेण दिग्बंधं - कुर्यान्नियतमानसः ॥<br>मूलमंत्राग्निबीजाभ्यां - कुर्यात्प्राकारमात्मनः<br>एवंप्रकारा भूशुद्धिः - यथाशास्त्र मुदाहृता<br>ब्रह्महत्याशिरस्कंच - स्वर्णस्तेय भुजद्वयम्<br>सुरापान हृदायुक्तं - गुरुतल्प कटिद्वयम् ॥ | ३५<br>३६<br>३७ |
| तत्संयोग पदद्वंद्व - मंग प्रत्यंग पातकम्<br>उपपातकरोमाणं - रक्तविश्रुत लोचनम् ॥  | ३८             |
| अचैतन्य मधोऽक्षत्रं - दग्धपादप सन्निभम्<br>अंगुष्टमात्रं पुरुषं - दुरात्मानं दुरासदम् ॥<br>खड्गचर्मधरं कृष्णं - कुक्षौ वामे विचिन्तयेत्<br>एवं विचिन्त्य पाप्मानं - वामकुक्षौ प्रयत्नतः ॥  | ३९<br>४०       |



|  |    |
|--|----|
| तस्यांगं सर्वतःस्थाप्य - तज्जीवं मूर्ध्नि विन्यसेत्<br>तस्यैवांगं प्रयत्नेन - वायुबीजेन शोषयेत् ॥  | ४१ |
| ततः पावकबीजेन - तमेव प्रदहेत्पुनः<br>ततो मारुतबीजेन - भस्मीभूतं विसर्जयेत् ॥   | ४२ |
| दिव्यमङ्गल रूपांगं - मनसा कल्पयेत्पुनः<br>देवं मूर्ध्नि स्थितंतत्र - प्रविश्याऽमृतबीजतः<br>प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रेण - प्राणांस्तत्रोपकल्पयेत् ॥ | ४३ |
| हृदये न्यस्तपाणिस्सन् - तदेकाग्र महामनाः<br>प्राणप्रतिष्ठामंत्रं च - त्रिवारं समुदीरयेत् ॥   | ४४ |
| वायुबीजाऽग्निबीजेन - दक्षिणेन प्रपूरयेत्<br>प्राणान् संरुध्य विधिवत् - वामेनैव विसर्जयेत् ॥  | ४५ |

व॥ अस्य श्री अन्तर्मातृका सरस्वती महामन्त्रस्य । ब्रह्मा  
ऽपि । गायत्री छन्दः । अन्तर्मातृका सरस्वती देवता । हलः बीजानि ।  
। राशक्तयः । बिंदवः कीलकम् । मम अन्तर्मातृका प्रसादसिद्धयर्थे  
ये विनियोगः ॥

पानम् -

बंधूकाभां त्रिनेत्रां पृथुतरविलसच्छुक्तिमद्रक्तवस्त्राम्  
पीनोत्तुङ्गप्रवृद्धस्तनजघनभरां यौवनारम्भरूढाम्  
सर्वालङ्कारयुक्तां सरसिजनिलयामिन्दुसंक्रान्तमूर्तिम्  
अम्बां, पाशांकुशाढ्यां अभयवरकरामंबिकां तां नमामि ॥ ४६

अधांतर्मातृकान्यासः - कण्ठहृन्नाभिगुह्यके

पायौ भ्रूमभ्यगे वक्त्रे - षोडश द्वादशान्विते

दशपत्रे च षट्पत्रे - चतुष्पत्रे द्विपत्रके ॥

आधारे लिङ्ग, नाभौ, हृदयसरसिजे. तालुमूले, ललाटे  
द्वीपत्रे षोडशारे, द्विदश, दशदले, द्वादशार्धे, चतुष्के,  
नासांते, तालुमध्ये, ढ फ क ट सहिते कण्ठमूले स्वराणाम्  
हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलमुनिनुतं वर्णरूपं नमामि ॥ ४८

व॥ अस्य श्री बहिर्मातृकामन्त्रस्य..... अन्तर्मातृकावत् ॥)

ध्यानम्

पंचाशलिलपिभिर्विभक्तमुखदोर्मध्यस्थ वक्षस्थलाम्  
भास्वन्मौलिनिबद्ध चन्द्रशकला, मापीन तुङ्गस्तनीम्  
मुद्रा मक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च हस्तांबुजैः  
विभ्राणो, बिशदप्रभां, त्रिणयनां, वाग्देवता माश्रये ॥ ४९

व॥ आसन हृत्कुक्षिश्रुतिनासागण्डोष्ठ दन्त मूर्धास्थेदोःपत्संध्यगु-  
त्यग्रेषु पाश्वद्वय पृष्ठनाभि जठरेष्वधोमूलापरगल कक्षेषु  
हृदिकरपदद्वय जठराननयोर्व्यपिक सज्ञान्यसे दक्षरान्क्रमशः  
(ग्रन्थान्तरे) ५०

शिरो वदन वृत्ते च - चक्षु र्श्रोत्रद्वयेपि च  
नासा कपोलयुगले - तथोष्ठाऽधरयोरपि  
ऊर्ध्वार्थो दन्तपंक्तौ च - मूर्धास्थे षोडश स्वराः ॥ ५१

क च वर्गद्वयं बाह्वोः - पञ्च सन्धिस्थलिं न्यसेत्  
ट त वर्गद्वयं पाद - संध्यग्रेषु तथान्यसेत् ॥ ५२

प वर्गं पाश्वर्युगले - पृष्ठ ना भ्युदरेषु च  
यकारादि क्षकारांत - दशवर्णा न्समुच्चरेत् ॥ ५३

हृद्दीर्मूल कक्रु त्कुक्षि - हृदादि करपद्वये  
जठराऽऽननयोर्ष्वैव - व्यापकं विनियोजयेत् ॥ ५४

- ऋषिश्छन्दो देवता च - बीजं शक्तिं च कीलकम्  
शिरोवदन हृद्गुह्य - जंघ पादा न्यसेत्क्रमात् ॥ ५५
- ऋषिं मूर्ध्नि मुखे छन्दः - देवतां हृदि विन्यसेत्  
आधारे शक्तिबीजं च - कीलकं पादयो न्यसेत् ॥ ५६
- न्यासात्परं प्राणनिरोधनं मुने!  
ध्यानं च कृत्वा विधिव उज्जपे न्मगुम्  
देहांगुलिन्यास विधिं च कृत्वा  
ध्यात्वा च संक्षिप्य जलं विसर्जयेत् ॥ ५७
- ततोऽङ्ग मन्त्रजालानि - जपेच्छास्त्रानुसारतः  
प्रवक्ष्याम्यङ्गमन्त्राणां - लक्षणानि यथाक्रमात् ॥ ५८
- हनूमत्सर्वमन्त्राणां - अङ्गमन्त्रा वितीरितौ  
सुग्रीवाङ्गद मन्त्रौ द्वौ - तत्प्रकारं वदेच्छृणु ॥ ५९
- आदौ प्रणव मुच्चार्य - सुग्रीवपद मुच्चरेत्  
नमश्शब्दं ततः कुर्या - देत देवांगदस्य च ॥ ६०
- ब्रह्मा ऋषिर्द्वयोर्मन्वो - गायत्री छन्द एव हि  
तद्देवता प्रसादार्थं - विनियोगं वदेन्मनोः ॥ ६१

### ध्यानम् :

- सुग्रीवं हृदये ध्याये - सूर्यपुत्रं महद्वलम्  
देदीप्यमान सर्वांगं - रामकार्यं दुरंधरम् ॥ ६२
- अङ्गदाय नमस्तुभ्यं - कनकाङ्गद बाह्वे  
सर्वाङ्गलक्षणैर्युक्तं - गदा संयुक्त बाह्वे ॥ ६३
- हनुमन्मन्त्रजालानि - जप्त्वाऽनन्तर मुच्चरेत्  
सुग्रीवाङ्गद मन्त्रौ द्वौ - तेन सिद्धिर्भविष्यति ॥ ६४
- कुर्यान्नित्यजपं चैव - तर्पणं विधिना शृणु  
मन्त्रांग तर्पणं कुर्या - दिति पूर्ववदाचरेत् ॥ ६५

- जले चक्रं लिखे त्सम्य - गमृतं भावये ज्जले  
 तर्पये च्च स्वहस्तेन - स्वर्णपात्रेण तज्जलम् ॥ ६६
- गुडोदकेन वा कुर्या - न्नारिकेलजलेन वा  
 द्वादशांजलिभिः क्षीरं - हनूमंतं प्रतर्पयेत् ॥ ६७
- इत्युच्चायं प्रतिदिनं - तर्पणं कारयेत्सुधीः  
 उत्पत्तिस्थिति सहार - न्यासभेदाः त्रिधा स्मृताः ॥ ६८
- ब्रह्मचारिणि आद्यस्य - द्वितीयो गृहमेधिनः  
 यतीनामंत्यमः प्रोक्तः - क्रमा दाश्रमिणां बिदुः ॥ ६९
- ब्रह्मरंध्रं समारभ्य - पादांतोत्पत्ति रुच्यते  
 ब्रह्मरंध्रादि नाभ्यंतं - लिंगं जान्वादि मूलतः  
 स्थितिन्यास इति प्रोक्त - व्यवस्था गृहमेधिनाम्  
 पादादि ब्रह्मरंध्रांतं - संहारो यतिसम्मतः ॥ ७०
- शिखा ललाट नेत्रास्य - गल दोर्हृदये ष्वपि  
 सकुक्षि नाभि लिंगाख्य - जानु पादेषु विन्यसेत् ॥ ७१
- हृत्कुक्षि नाभिषु तथा - गुह्य जानु पदेष्वपि  
 करकंठास्य दृङ्नास - शिखा नूर्ध्वं च विन्यसेत् ॥ ७२
- सपाद जानुयुगले - लिङ्गनाभ्युदरेषु च  
 हृद्दोर्गलास्य दृङ्नास - शिखास्वक्षरशोन्यसेत् ॥ ७३
- एतेच त्रिविधा न्यासा - स्सम्य गेवं फलं शृणु  
 संहृते सर्वसंहारः - सृष्टेश्च शुभसृष्टयः ॥ ७४
- स्थितेश्च शांतिविन्यासाः - तस्मात्कार्यास्त्रयोमतः  
 एतद्रूपं मंत्रवर्णैः - क्रियते मंत्रवेदिभिः ॥ ७५
- हृदयाय नमः प्रोक्तं - स्वाहा तु शिरसे मता  
 शिखायै वषडित्युक्तं - बौषण्णेत्रत्रयायवै ॥ ७६
- ततः परमसंकीर्णं - मुच्चरे त्कवचाय हुम्  
 ततोऽस्त्राय फडित्यंते - हृदयन्यास लक्षणम् ॥ ७७

- बहुधा मुनिभिःख्याता - न्यासमुद्राऽसनानि च  
प्राणायाम न्यासविधं - लघुमार्गेण ते वदौ ॥ ७८
- जप्यमंत्राङ्गमंत्राश्च - न्यासाश्च बहुधा स्मृताः  
प्राणायामादयश्चापि - आसनानि बहून्यपि ॥ ७९
- यच्चापि कीर्तितं तत्र - बहुधैव प्रकीर्तितम्  
तथापि गुरुणोक्तेन - प्रकारेण समाचरेत् ॥ ८०
- यस्यदेवी पराशक्तिः - यथा देवे तथा गुरौ  
तस्यैतेकथिताह्यर्थाः - प्रकाश्यन्ते महात्मनः ॥ ८१
- गुणदोष विमर्शेन - गुरोर्मूढः पते दधः  
निज विश्वास संदिष्टः - गुणदोष समोभवेत् ॥ ८२
- मुद्राषोडशविख्याताः - न्यासपञ्चक मित्युत  
प्रसन्ना, गालिनी, पद्मा, शङ्ख, चक्र, गरुडमती ॥ ८३
- धेनु नत्यंकुश मृगी - कुम्भ संहार मुद्रिकाः  
मल्लताण्डव वालाख्या - हनूम दभिधाऽपि च  
मुद्रा षोडश संप्रोक्ता - इत्यागमविदो विदुः ॥ ८४
- हनूमतो विशेषेण - कथिता मुनिसत्तम!  
गुरुध्याने मृगीमुद्रा - तीर्थाऽऽकर्षणोऽकुशम् ॥ ८५
- स्नानकाले कुम्भमुद्रा - समाप्तौ हरणं तथा  
अन्याऽऽष्टमुद्रिकास्सर्चं - कर्मसु प्रतिदर्शयेत् ॥ ८६
- जपादौ तीर्थपात्रे च - स्नाने चक्रविलेखने  
संत्रतर्पण संध्यासु - शंखे दैवतपूजने  
एतेषु कर्मसु प्रोक्ताः - अष्टमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ ८७
- गालिनी पद्म चक्रे च - शंख गरुड धेनुकाः  
नुति प्रसन्ना इत्येता - अष्टमुद्राः प्रकीर्तिताः ॥ ८८

अंतर्बहि मर्तृकयो - रंगुली देहयो मंनोः  
 न्यास पञ्चक मेतच्च - कुर्याच्छ्रीहनुमन्मनोः  
 जप्त्वातु विधिवन्मंत्र - मिष्टदैवं प्रपूजयेत् ॥

८९

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेय संवादे  
 पञ्चमुख हनुमन्मंत्र विवरणे न्बास मुद्रादि लक्षण  
 कथनं नाम सप्तदश पटलः



## श्री पराशर संहिता

### अष्टादश पटलः

—: स्नान संभ्यानन्तर विधिः :-

- श्लो॥ चित्रासने समासीनः - पश्चासन विधानतः  
 उदङ्मुखः श्राङ्मुखो वा - पूजये हनुमत्प्रभुम् ॥ १
- प्राणानायम्य विधिवद्गायत्री मन्त्रपूर्वकम्  
 भूर्शुद्धिं च प्रकुर्वीत रंगवल्लीं न्यसेद्बुधः ॥ २
- सिंहासनं न्यसेत्तत्र - वस्त्रालंकार संयुतम्  
 चक्रं कर्णिकयायुवतं - अष्टकोणं प्रकल्पयेत् ॥ ३
- मन्त्रराजं सप्रणवं - भावये दष्ट वर्णकम्  
 अमर्कमण्डलायाथ - उपर्युपरि सर्वदा ॥ ४
- चं चन्द्रमण्डलायेति - ध्यात्वाध्यात्वा नमाम्यहम्  
 र मग्निमण्डलायेति - संपूज्येव प्रयत्नतः ॥ ५
- कमलंचितयेत्तत्र - दलाष्टकसमन्वितम्  
 विमलोत्कर्षिणीज्ञान - क्रियायोगाढ्य इत्यपि ॥ ६
- नमाम्यहिंसासत्याभ्यां - ईशानायैदलांतरे  
 अनुग्रहायै नमः कुर्यात् - ओंनमो भगवस्तेपि च  
 विष्णवेचेति तत्रैव - सर्वभूतात्मनेऽपि च ॥ ७

- पुनरोंकारमुच्चार्य - योगपीठात्मनेऽपि च  
 पुनःप्रणवमुच्चार्य - मंत्रपीठात्मने नमः  
 इति ध्यात्वा ततःकुर्या - दावाहन मुपक्रमम् ॥  
 पूर्वादीनि च चत्वारि - द्वाराणि परिकल्पयेत्  
 द्वारपालान्यथापूर्वं - पूजयेत्तत्र संयुतः ॥  
 संतप्तहेमवपुषं - ब्रह्मविष्णुवीश संयुतम्  
 हनूमत्परमात्मानं - ध्यायेद्देवं जगत्पतिम् ॥ १  
 उपरिस्वामिनंकृत्वा - आवाहित इतीरयेत्  
 स्थापितस्सन्निधिश्चैव - सन्निरुद्धो भवेत्यपि ॥ १  
 सम्मुखो भवतस्याऽग्रे - अबकुण्ठो भवेत्यपि  
 प्रसन्नो भव चेत्यग्रे - अमृतो भव सम्मुखे ॥ १  
 प्रसीदेति प्रसीदेति - स्वागतं समुदीरयेत्  
 चतुर्ष्वऽऽवरणेष्वेवं - कीर्तयेद्देवताः क्रमात् ॥ १  
 षडङ्गन्यास संज्ञं च - प्रथमावरणं विदुः ॥  
 द्वितीयावरणंचापि - विदुर्जाबवते नमः ॥ १  
 तृतीयावरणंचैव - लोकपालाख्यया युतम्  
 तुरीयावरणंचैव - तदायुध पथार्चयेत् ॥ १  
 षडङ्गाऽऽवरणस्यैवं - प्रकारोऽयं बुधैस्मृतः ॥ १  
 आमंजनासुतायेति - नम इत्युक्तिपूर्वकम्  
 हृदये देवमित्युक्त्वाऽऽवाहयामीति संबदेत् ॥ १  
 ई रुद्रमूर्तय इति - नम इत्युक्ति पूर्वकम्  
 शिरसि देव मित्युक्त्वाऽऽवाहयामीति संबदेत् ॥ १  
 ॐ वायुपुत्रायेत्युक्त्वा - नम इत्युक्तिपूर्वकम्  
 शिखायै देव मित्युक्त्वाऽऽवाहयामीति संबदेत् ॥ १  
 ऐ मग्निगर्भकायेति - नम इत्युक्ति पूर्वकम्  
 कवचे देवमित्युक्त्वाऽऽवाहयामीति संबदेत् ॥ २

|   |    |
|---|----|
| ओं राममुख्य दूताय - नम इत्युक्ति पूर्वकम्<br>नेत्रत्रयाय देवं चाऽऽवाहयामीति संबदेत् ॥   | २१ |
| अः ब्रह्मास्त्रनिवारणाय - नम इत्युक्ति पूर्वकम्<br>अस्त्राय देवमित्युक्त्वाऽऽवाहयामीति संबदेत् ॥  | २२ |
| एवं षडङ्ग वि यासं - प्रथमावरणे विदुः ॥  | २३ |
| जांबवा न्विनतो नीलः - पद्मनो गन्धमादनः<br>सुषेण मैन्द द्विविदा - द्वितीयावरणे विदुः ॥   | २४ |
| इन्द्राग्निश्च यमश्चैव - निरृति, वंरुण स्तथा<br>वायुः कुबेर ईशान्या - स्तृती यावरणे विदुः ॥   | २५ |
| वज्र शक्तिश्च दण्डश्च - खड्गः पाशो ध्वज स्तथा<br>गदा त्रिशूलकंचेति - तुरी यावरणे विदुः ॥  | २६ |
| एता न्यावरणाङ्गानि - कुर्यात्पूजाविधिर्हरेः<br>न कुर्यादन्यकाले तु - आवरणानि कदाचन ॥  | २७ |
| धाता बिधाता प्राग्द्वारे - जय विजयौ च दक्षिणे<br>चण्डप्रचण्डौ पश्चिम्यां - उत्तरद्वार संस्थितौ<br>बलप्रबल नामानौ - द्वारपाला वितीरितौ ॥   | २८ |
| ऐश्वर्याऽनैश्वर्यौ तौ - उपपालकसंज्ञकौ<br>प्राकाररक्षकावेतौ - प्रपूज्यौ देवसन्निधौ ॥   | २९ |
| ततः पुरुषसूक्तं च - कीर्तयेदवितन्द्रितः<br>षोडशोह्युपचारांश्च - कुर्याद्योगी हनुमतः ॥   | ३० |
| सर्वावरण देवाश्च - सायुधास्सपरिच्छदाः<br>सयोग्य वाहनच्छत्र - विजामर विभूषणाः ॥<br>सोपस्करा नदीमुद्रा - सहिता सुखिनोभृशम्<br>तिष्ठन्त्विति समुच्चार्य - स्वाहांतं प्रजपेद्गृही । | ३१ |
| सुषेणांगद सुग्रीवाः - जाम्बवान्नील संज्ञितौ<br>गन्धक्ष मैन्द द्विविदा - शशरभो गन्धमादनः ॥   | ३२ |



|  |    |
|--|----|
| गवयश्च प्रहस्तश्च - सुशेण नलनामकौ<br>हनूमतः प्रसादोऽयं - सर्वेगृह्णन्तु वानराः ॥   | ३३ |
| नित्यहोमविधिं वक्ष्ये - हुवेत्स्मातीग्निहोत्रके<br>पंचद्वादश वा प्रोक्ता - आहुतीर्नित्यहोमके ॥   | ३४ |
| हव्येन तण्डुलैर्धृथ - गोघृतेन विशेषतः<br>सप्ताक्षरी हनुमतः - प्रोच्यन् प्रत्यहं हुनेत् ॥   | ३५ |
| सकालनियमस्तत्र - चोक्ता होमविधानके<br>कर्मिणस्तु यथाकर्म्म - कर्मणानन्तरं विदुः ॥  | ३६ |
| पुरश्चर्याङ्गहोमेषु - तत्कल्पोक्त दशांशतः<br>अनेन विधिनासाङ्ग - साचरेद्यस्तु कर्मतः ॥  | ३७ |
| सयाति परमांसिद्धि - यथाशास्त्रं त्रिवानतः<br>मुधुक्षुरर्चयेस्तत्र - निबन्धोऽत्र न विद्यते ॥  | ३८ |
| यदाकदा वा यत्किञ्चि - त्कुर्याच्छ्रवत्यानुसारतः<br>तावन्मात्रेण संपूर्णं - फलमाप्नोत्यसशयः ॥   | ३९ |
| दूर्वारयुगमं जुहुया - देकं च समिधं तथा<br>फलपत्रसुमान्येकं - चरुमामलकोपमम् ।   | ४० |
| धारारूपं घृतं दद्या - न्मंत्रांगे होम कर्मणि<br>तर्जनीमध्यमानासु - सर्वंभिस्तण्डुलान् हुनेत् ॥   | ४१ |
| हनूमन् मंत्रमाहात्म्यं - केनस्तोतु हि शक्यते<br>साकल्येवाह्वयैकल्ये - मेरुतुल्यं फलं लभेत् ॥   | ४२ |
| तिष्ठन्गच्छन्समासीनः - शयालुर्वा स्वपन्नपि<br>भुञ्जानो भाषमाणो वा - मलमूत्रं विसर्जने<br>अगुलोम विलोमाभ्यां - हनुमन्मंत्रं मुच्चरेत् ॥ | ४३ |
| न्यूनाधिकाक्षरत्वेन - रतिकालेऽपि ध्या जपन्<br>परा सिद्धिं मवाप्नोति - नात्रकार्यं विचारणा ॥  | ४४ |
| देवतातर मंत्राणां - साङ्गत्वेन फलं लभेत्<br>ईपन्मंत्रस्य वैकल्ये - वृथायासो भवेन्नुणाम् ॥  | ४५ |

|  |    |
|--|----|
| बहुनात्र किमुक्तेन - वाचापि मनसा मुने!             |    |
| ऐहिकामुष्मिकेभ्यो वा - हनूमद्भक्तिमान् भवेत् ॥     | ४६ |
| अनौपाधिकभक्ति स्स्या - दैवते यत्रयस्य च            |    |
| अनायासेन तस्यैव - तन्मंत्रस्सिध्यति ध्रुवम् ।      | ४७ |
| कलशेऽपि च चक्रे च - मुद्रिका न्दर्शयेत्ततः ॥       | ४८ |
| मन्त्रस्नानं मंत्रसंध्या - कर्तव्यं सदनेष्वपि      |    |
| भृशुद्धिभूतशुद्धि श्र - मातृके बहि रन्तरे          |    |
| समस्तमन्त्रजालानां - समानं मनु रब्रवीत् ॥          | ४९ |
| ऐश्वर्यार्थं चरुं भक्षेत् - मधुरत्रय संयुतम्       |    |
| शर्करामधुसर्पीषि - मधुरत्रय मीरितम् ॥              | ५० |
| हनूमन्मंत्रचक्राणां - मुद्रिका षोडश स्मृताः        |    |
| अवराणि च चत्वारि - कर्तव्यं न्यासपंचकम् ॥          | ५१ |
| उपदिष्टेषु मंत्रेषु - प्रथमो मूल मुच्यते           |    |
| प्राणायामत्रयं कुर्या - म्मंत्रस्याद्यंतयो मुंते ॥ |    |
| इतरेषांतु मंत्राणा - मेक माद्यंतयोर्मतम् ॥         | ५२ |
| यद्यन्मंत्रं जपेत्तत्र - तैस्तैः प्राणान्निरोधयेत् |    |
| आद्यन्तयो स्सदा कुर्या न्मालामंत्रस्य मूलतः ॥      | ५३ |
| अङ्गन्यास करन्यास - ध्यानानि च पृथक्पृथक्          |    |
| शुद्धा नमोता स्वाहाता - तर्पणांता जयांतिकाः        |    |
| प्रवृत्तयः पंचधा स्युः - मालासु निखिला स्वपि ॥     | ५४ |
| शुद्धा संबुद्धिमात्रा स्या - ज्जपस्तेन विधीयते ॥   | ५५ |
| मनसा पूजनंदेव - पादुकां पूजयामि च                  |    |
| स्वाहेति होमरचना - तर्पयामीति तर्पणम्              |    |
| जयद्वन्द्व समायोगः - स्तुतिरुक्तातु पंचमी ॥        | ५६ |

|  |    |
|--|----|
| यो लिखे त्प्रवदेद्ध्याये - द्वावये त्प्रतिपादयेत्<br>पूजये त्पुस्तकंधन्यः - समर्थो मुक्तिमान् भवेत् ॥  | ५७ |
| जानूर्वोरंतरेसम्य - कृत्वा पादतले उभे<br>ऋजुकाय रसमासीनः - स्वस्तिकं तत्प्रचक्षते ॥  | ५८ |
| अवन्यामात्मनः पाश्वे - गुल्फौ निक्षिप्य पादयोः<br>सव्ये दक्षिणगुल्फन्तु - दक्षिणे दक्षिणोत्तरम्<br>एतच्च स्वस्तिकं प्रोक्त - नर्वपाप प्रणाशनम् ॥ | ५९ |
| ऊर्ध्वोरूपरि विप्रेन्द्रः - कृत्वा पादतले उभौ<br>पद्मासनं भवेदेत - त्सर्वेषामपि पूजितम् ॥  | ६० |
| एकपाद मथैकस्मिन् - विन्यस्योरुणि संस्थितम्<br>इतरस्मिन्तथाचौरं - वीरासन मुदाहृतम् ॥  | ६१ |
| मेढ्रा दुपरिनिक्षिप्य - सम्यग्गुल्फं तथोपरि<br>गुल्फांतरं तु निक्षिप्य - सिद्धिस्सिद्धासनं विदुः<br>हनुमन्मंत्रविषये - आसनानि शुभानि वै ॥        | ६२ |

इति श्री पराशर संहितायां षट्चमुख हनुमन्मंत्र विवरणे  
श्री पराशर मैत्रेय संवादे स्नान सध्यानन्तरविधि  
नाम अष्टादश पटलः



## श्री पराशर संहिता

एकोनविंशतितमः पटलः

—: षट्पल्लवादि विवरणम् :-

मैत्रेयः :-

षट्पल्लव प्रकारस्तु - षट्प्रयोगस्तु कीदृशः?  
केवा स्त्रीमंत्र पुंमंत्र - क्लीबमंत्राः स्मृताः मुने! ॥

|   |   |
|---|---|
| हनुमन्मंत्रसंख्याका - चक्राणां च विशेषतः<br>भक्तिः कतिविधाज्ञेया - कथं जप्यं हि सूतके ॥ | २ |
| सोमसूर्योपरागेच - पुरश्चर्या कथं भवेत्?   |   |
| मन्त्रश्च कोऽर्वणं प्रोक्त - मविरोधी च किं पुनः?  | ३ |
| हनुमन्मन्त्रजालस्य - विरुद्धं वा किमुच्यते  |   |
| एत त्संगृह्य वक्तव्यं - कृपया मुनिसत्तम!  | ४ |

श्री पराशरः :

|  |    |
|--|----|
| षट्पल्लवादिकं पृष्टं - भवता मुनिसत्तम!                   |    |
| अधुना तत्प्रवक्ष्यामि - क्रमेणैव विभाव्यताम् ॥           | ५  |
| पल्लवाश्च प्रयोगाश्च - बहवस्सस्मि वै मुने!               |    |
| नमो वषट् च खेखे च हुं वौषट्च फडित्यपि ॥                  | ६  |
| एते षट्पल्लवा प्रोक्ताः - षट्प्रयोगे फलंशृणु ॥           | ७  |
| नमस्संपद्वषड्वश्ये - वौषडाकर्षणे तथा                     |    |
| हुं द्वेषे च फ डूच्चाटे - खेखेच मारणं विदुः              |    |
| स्वाहा पुष्टिकरं चेति - पल्लवाग्ने निगद्यते ॥            | ८  |
| शांति रुच्चाटनं द्वेष - स्तंभनं मारणं तथा                |    |
| वश्यं चावश्य मीषच्च - षट्प्रयोगा उदाहृताः ॥              | ९  |
| तत्तत्पल्लव सत्वेऽपि - वर्णसंज्ञा नपूरयेत्               |    |
| उचितं षट्प्रयोगानां - पुनः पल्लवमुच्यते                  |    |
| पुनः पल्लवसंयोगे - प्रत्यवायो न विद्यते ॥                | १० |
| स्त्रीमंत्रस्तु नभोन्तस्स्या - त्स्वाहांतः पुरुषस्तथा    |    |
| क्लीबस्तु वषडंतस्स्यात् - स्त्रीक्लीबाश्च अमीस्मृताः ॥११ | ११ |
| स्त्रीमंत्र इशीघ्नफलदः - आलस्यं पुरुषस्य च               |    |
| क्लीबो महाविलंबश्च - एतेषां फलमीरितम् ॥                  | १२ |
| कत्यांजनेय मनवः - इति वक्ष्यामि ते शृणु                  |    |
| सुवर्चला समेत श्री हनुमद्वादशाक्षरीम् ॥                  | १३ |

- सव्यंजनेऽव्यंजनेषु - व्युत्क्रमश्च क्रमोपि च  
महर्षयो मंत्रसिद्धाः - एतद्रूप जपान्मुने ॥ १४
- शंभुनाचोपदिष्टं त - त्पार्वत्यै हित काम्यया  
खिल संयुतया चैवं - प्रत्यपादि मनोर्मुने ॥ १५
- अथैषा विविधाप्रोक्ता - केवलद्द्वादशाक्षरी  
अष्टाक्षरी कपीन्द्रस्य - पंचथा परिकीर्तिताः  
पंचाक्षरी तु तस्यैव - त्रिविधा परिकीर्तिताः ॥ १६
- पंचविंशति संख्याका - मालामन्त्राः प्रकीर्तिताः  
एकाक्षरी महामन्त्रो - द्विविधा परिकीर्तितः  
षडक्षरी चतुर्था तु - कीर्तिता हनुमत्प्रभो! ॥ १७
- आरभ्यैकाक्षरी मंत्रं - वायुसूतो र्महात्मनः  
द्वात्रिंशद्वर्णं पर्यन्ताः - मन्त्रास्तु सुव्यवस्थिता ॥ १८
- सप्तमन्त्रात्मिकाविद्या - पञ्चवक्त्र हनुमतः  
सप्तविंशति मंत्रैश्च - विद्या तस्यैव धीमतः  
शौनकी संहितायां तु - सम्यगेव व्यवस्थिता ॥ १९
- शावरा अपि मन्त्राश्च - बहवः कथिताः कपेः  
हनुमन्मंत्रजालानि - शतपञ्चक संख्यया ॥  
इतिहास पुराणेषु - कथितानि महामुने ॥ २०
- पुरश्चर्या मपेक्षते - महामन्त्रास्तु सर्वशः  
शावराणां तु मन्त्राणां - तदपेक्षा न विद्यते ॥ २१
- गुरूपदिष्ट मंत्रेण - यथाशक्ति जपेत्सुधीः ॥ २२
- मन्त्राणां समसंख्यानि - चक्राप्यपि हनुमतः ॥ २३
- भक्ति बहुविधा प्रोक्ता - तथा नवविधा स्मृताः  
श्रवणं कीर्तनं विष्णोः - स्मरणं पादसेवनम्  
अर्चनं वन्दनं दास्यं - सख्यं चात्मनिवेदनम् ॥ २४

- उपदिष्टानि मंत्राणि - मृतजातक सूतके  
जपेस्थित्वाहि मौनेन - जपेदेव न संशयः ॥ २५
- अज्ञानाद्यदि वा लोभात् - मंत्रत्यागे दरिद्रता  
सोम सूर्योपरागेषु - जपेन्मंत्रं मतंद्रितः ॥ २६
- ग्रस्त्यमाने भवेत्स्नानं - ग्रस्ते होमो विधीयते  
मुच्यमाने भवेध्यानं - मुक्ते स्नानं विधीयते ॥ २७
- मुच्यमाने वदेन्मंत्रं - जपेदेव परागके  
पुरश्चर्या विधानेन - यथोक्त फलमाप्नुयात् ॥ २८
- कुर्यादिवावकाशे तु - तथा होमं च तर्पणम्  
नास्तित्चे दवकाशस्तु - परेद्युर्होमतर्पणे ॥ २९
- अर्वणं ते प्रवक्ष्यामि - मंत्राणा मितरेतरम् ॥ ३०
- स्वप्नदत्ते स्त्रियादत्ते - मालामंत्रेऽत्र बीजके  
श्रीविद्या सिद्धविद्याभ्यां - सिद्धारी न्नैव शोधयेत् ॥ ३१
- स्त्री दत्तं स्वप्नलब्धं वा - भाषामन्त्रं त्वशाबरं  
प्रणवं वैदिकं चैव - अरिमित्रं न शोधयेत् ॥ ३२
- प्रणवत्र्यक्षरी भूया - द्वयोमभावा षडक्षरं  
प्रसादा बहुरूपी च - सर्वसाधारणा स्मृताः ॥ ३३
- ततोऽतिरिक्त यन्त्राणां - शोधये दात्मनोऽर्वणम् ॥ ३४
- जननं जीवनं चैव - ताडनं बोधनं स्मृतम्  
अथाभिषेको विमली - करणाऽऽप्यायिनी पुनः  
तर्पणं दीपनं गुप्तः - दशैता मंत्रसंत्क्रियाः ॥ ३५
- चिंतामणिं कार्तवीर्यं - नामत्रय सुदर्शनम्  
आंजनेयं हयग्रीवं - राममन्त्रं न शोधयेत् ॥ ३६
- सुदर्शनो वराहश्च - नारसिंह स्तथैव च  
श्रीमदष्टाक्षरीचैव - चत्वारो मन्त्रसत्तमः ॥ ३७

|   |    |
|---|----|
| सुदर्शनो विशेषेण - चतुर्णां शीघ्रसिद्धिदः<br>सर्वेषां मन्त्रजालानां - वाग्भवं भुवनेश्वरम्<br>महालक्ष्मीं पुरस्कृत्य - जपे त्सर्वार्थसिद्धये ॥ | ३८ |
| तारादि वासरादि वा यदि वाऽप्यथवापि वा<br>वाङ्मयादिक मन्त्राणां - जपः प्रोक्तश्च दोषहृत् ।  | ३९ |
| प्रसादं प्रवणं लक्ष्मीं - अष्टाणं द्वादशाक्षरीं<br>गोपालं वामनं विष्णुं - मित्रारी नैव शोधयेत् ॥  | ४० |
| प्रणवेन विहीनस्तु - तन्मन्त्रः प्राणहीनकः<br>सर्वमन्त्राक्षरार्णां च - प्रणवः प्राण उच्यते ॥  | ४१ |
| सप्तकोटि महामन्त्राः - विना ब्रह्मास्त्र विद्यया<br>हनुमन्मन्त्रजालं वा - मन्त्रानेति विदुर्बुधाः ॥   | ४२ |
| यस्योच्चारण मात्रेण - देवताह्वान माचरेत्<br>देवताभि निविष्टं त - द्बीजाक्षर मुदाहृतम् ॥   | ४३ |
| महामन्त्रेषु सर्वत्र - वर्णसंख्याः व्यवस्थिताः<br>क्वचित्प्रणवसाहित्या - त्क्वचित्प्रणवं विना ॥   | ४४ |
| तस्मान्यूनानाति रेकत्वं - संदेहो नैवयुज्यते ॥   | ४५ |
| मोक्षकामी शुक्लवर्णं - पीतं तु धनकामवान्<br>वश्यकामो रक्तवर्णं - मारणं नीलवर्णकम् ॥   | ४६ |
| उच्चाटने धूम्रवर्णं - विद्वेषे ह्यग्निवर्णकम्<br>सर्वजन वश्यकामः - पद्मवर्णं मनुश्मरेत्<br>अभीष्टदेवतामेवं - षट्प्रयोगेषु चिन्तयेत् ॥         | ४७ |

इति श्री पराशर संहितायां पञ्चमुख हनुमन्मन्त्र विवरणे

श्री पराशरमैत्रेय संवादे षट्पल्लवादि विवरणं नाम

एकोनविंशति पटलः



# श्री पराशर संहिता

## विंशतितमः पटलः

-: श्री हनुमत्षोडशार्णव प्रभावकथनम् :-

पराशरः

|   |   |
|---|---|
| १॥ हनुमत्षोडशार्णवस्य - माहात्म्य मधिकं द्विजः    |   |
| शृणु वक्ष्यामि मंत्रोयं - भुक्ति मुक्ति फलप्रदः ॥ | १ |
| अगस्त्यऋषिरेतस्य - गायत्री छन्द उच्यते            |   |
| सुवर्चलावल्लभस्स - हनूमान्देवता भवेत् ॥           | २ |
| बीजं पिंगलनेत्राय - शक्तिश्चैव महाबलः             |   |
| धनजय सखानाम - कीलकं समुदीरितम् ॥                  | २ |
| सुवर्चला वल्लभ स्स - हनूमान् देवता भवेत्          |   |
| तत्प्रसादस्यसिद्ध्यर्थे - विनियोगः प्रकीर्तितः ॥  | ४ |
| न्यासद्वयं ततःकुर्यात् - क्रमेणैव मुदाहरेत्       |   |
| आदौ संजीवनी हर्त्रे - कालनेमि हराय च ॥            | ५ |
| भीमसेनाग्रजायेति - भरतं रक्षकाय च                 |   |
| धान्यमाली शापहर्त्रे - ततः छाया प्रहारिणी ॥       | ६ |
| दैवतांते करांते च - चतुर्थ्यां च नमो भवेत्        | ७ |
| आदौ प्रणवमुच्चार्य - मायाबीजं ततः परम्            |   |
| श्रीं बीजं ततोच्चार्य - श्रीपर्णं च ततः परम् ॥    | ८ |
| सुवर्चलावल्लभेति - हनुमत्पद मुच्चरेत्             |   |
| अन्ते स्वाहावदेदेवं - मन्त्रमेनं प्रपूरयेत् ॥     | ९ |

तन्मः :-

एकेनाभयदं परेण वरदं भोज्यं परं चाऽपरे  
अन्येनापि सुवर्चला कुचयुगं हस्तेन संबिभ्रतः  
कारुण्यामृतपूर्णलोचनयुगं पीतांबरालंकृतम्  
रम्यं वायुसुतं चतुर्भुजयुतं ध्याये हनू मत्प्रभुम् ॥



|   |    |
|---|----|
| लक्ष्मेकं पुरश्चर्या - दशांशं तर्पणं भवेत्<br>तद्दशांशं होमकर्म - तद्दशांशं तु भोजनम् ॥   | ११ |
| अत्रैवोदाहरं तीय - मितिहासं पुरातनम्<br>बार्हस्पत्यपुरां नाम - गङ्गातीरे महामुने!   | १२ |
| स्थितो जनपदस्तत्र - कपिलो नाम भूसुरः<br>सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः - वेदवेदांगपारगः ॥  | १३ |
| दरिद्रो बहुपुत्रस्स - स्वीतरागस्तु शोधनः<br>भागीरथ्यां जपेन्मंत्रं - हनूमत्षोडशाक्षरम् ॥  | १४ |
| असायं प्रत्यहं शाकं - गृहीत्वा गृहमेति सः<br>इतस्ततस्तस्य भार्या - याचित्वा तण्डुलादिकं<br>अन्नं पचति तच्छाकं - तेन जीवति नित्यशः ॥ | १५ |
| एवं बहुतिथिं तस्य देहयात्रां प्रकुर्वत<br>व्यतीताय सुखेनैव - प्रत्यहं निमिषोद्यथा ॥   | १६ |
| प्रातःस्नात्वा शुचिभूत्वा - भागीरथ्यां शुभोदके<br>जपतो हनुमन्मंत्रं - कपिलस्य महात्मनः ॥  | १७ |
| आविर्बभूव हनुमान् - एकदा भक्तवत्सलः<br>सुवर्चलापतिं श्श्रीमान् - ध्यायमानो रघूद्वहम् ॥  | १८ |
| चतुर्भुजश्चंद्रसमप्रभावान्<br>सितोपवीतिर्नैवरत्नकुण्डलः<br>दुकूलमुक्तामणिहारशोभितः<br>पिशङ्गमौजीधवलोधर्वपुण्ड्रः ॥                  | १९ |
| करैश्चतुर्भिश्चतुरो पुमर्थान्<br>ददाति यो भक्तजनाय नित्यम्<br>सीतागनोत्लासकरो हनुमान्<br>पुनाति लोकत्रितयं महात्मा ॥                | २० |

|  |    |
|--|----|
| जांबवान् विनता नीलो - पनसो गन्धमादनः<br>सुषेण भैन्द द्विविद - मुखैः परिवृतः कपिः ॥   | २१ |
| त्रिलोक्यतं स्तोत्र परम्पराभिः<br>स्तुवन्नमस्कार पुरस्सर द्विजः<br>विधायपूजा मनसोपचारैः<br>स्मितो मुदा बाष्पकणाकुलेक्षणः ॥ | २२ |
| भकोमुहूर्तं निर्मज्ज - महदानन्दसागरे<br>चिराय लब्ध्वा संज्ञावै - इद माह कथंचन ॥  | २३ |
| अद्य प्रभृति योग्याहं त्वया सन्दर्शनात्प्रभो!<br>सर्वताप विनिर्मुक्ता - नस्मरेयं मयालयम् ॥                                 | २४ |
| भक्त्यासमर्पितं तात! - फलं वा पत्र मेव वा<br>मदनुग्रहलाभेन - गृहाण कपि पुङ्गव! ॥   | २५ |
| जायाचाऽपि सुवचला रविमुक्ता - दिव्यं च हेमांबरम्<br>माणिश्यांचितकुण्डले श्रवणयोः - कण्ठेच मुक्ताबलिः                        | २६ |
| सुग्रीवाङ्गद गन्धमादनमुखाः - सत्षार्षदा स्सन्ति ते<br>किं दास्यामि मनःप्रियं हि हनुमान् - संपूर्णकामोभवान् ॥               |    |
| एवं स हनुमान् तस्य - कपिलस्य महात्मनः<br>भक्त्युद्रेकं समुद्वीक्ष्य - नन्दयामास तं वरैः ॥                                  | २८ |
| न यथाचे वरं कंचि - न्मुमुक्षुर्वीतरागवान्<br>हनूमन्त मुवाचेदं - एते के वानरोत्तमाः ॥                                       | २९ |

श्री हनुमान् :

|  |    |
|--|----|
| गन्धमादन नाम्नावै - पर्वतो धातुमण्घितः<br>हेम रम्भातरुवृतः - श्रीमान् शिखरभूषितः ॥ | ३० |
|--|----|

- एते तत्र महाभागा - स्संति मत्पार्षदः द्विजः  
जांबवान् विनतो नीलः - पनसो गन्धमादनः  
सुषेण मैन्द द्विविदा - ममकार्यं धुरन्धराः ॥ ३१
- नित्याभिषेकं कुर्वन् तं - धूपदीप फलप्रदः  
दिनाभिषेकतीर्थेन - वालाग्रात्प्रत्युतेन च  
वालसागर नाम्नात्र - नदी जाता सुपावनी ॥ ३२
- तत्र स्नात्वा च पापात्मा - शुद्धो भवति मानवः  
सर्वसिद्धि मवाप्नोति - शीघ्रमेव न संशयः  
अनेनाराधनेनाहं - सन्तुष्टो द्विजसत्तमः ॥ ३३
- वरयध्वं यथा न्यायं - इत्यवोच न्महात्मनः  
ऊचुस्ते परमप्रीता - जांबवत्प्रमुखा इमे  
प्राप्तुयामः परं पूजा - भवता वरणे वयम् ॥ ३५
- उत्तमान्तं महाभागान् - आराध्य प्रयमं द्विजः  
अनन्तरं तु तत्पूजां - कुर्वतु ममचोत्तमाम् ॥ ३६
- मद्भूक्त्ताराधनादेव - अत्यन्तं परितोषवान्  
मद्भूक्तस्यावमानेन - ह्यत्यन्तं मवमानितः ॥ ३७
- ममावताराः बहवः - मद्रूपानि बहूनि च  
यथामां भजते भक्त - स्तथैवाविर्भवाभ्यहम् ॥ ३८
- एवमुक्तस्तु कपिलो - नमस्कृत्यांजनासुतम्  
एवं हितोपदेशेन - तोषयित्वा द्विजोत्तमम् ॥ ३९
- जगाम मनसा रामं - चिंतयन् न्जनासुतः  
संध्यामुपास्य विधिवत् - कपिलस्सदनं ययौ ॥ ४०
- तस्य भार्याविदं द्विप्रं - शाकं नानीतवा नपि  
सोऽवदत्तामद्य साध्वि - हनूमान् जपतस्सतः ॥ ४१
- भगवान्भक्तवात्सल्या - न्मम प्रत्यक्षतांगतः  
तेन संभाषमाणस्य - प्रत्युत्थानाभिवन्दनैः  
स्तुवतो नावकाशोभू - च्छाकस्या हरणे मम ॥ ४२

- इति श्रुत्वा वचस्तस्य - भार्या कौतुकान्विता  
हनुमान् यदि ते ब्रह्मन् - देवः प्रत्यक्षतां गतः  
अस्मद्गृहे महत्क्रूर - दारिद्र्यस्य स्थितिः कथं? ४३
- दैवं यदि भवेत्सत्यं - प्रत्यक्ष वा भवेद्यदि  
सर्वं कामाः प्रसिध्यन्ति - ह्यतो मध्येति मे मतिः । ४४
- त्वत्प्रसादान्मया लब्धाः - कुमाराश्च कुमारिकाः  
बहव स्सूर्य संकाशाः - चन्द्ररेखासमा इमाः ॥ ४५
- नाम्नाप्येषां न वस्त्रं वा - न सुवर्णादि भूषणम्  
न विवाहाद्युत्सवानां - मन्मनोरथसिद्धयः ॥ ४६
- किं केवलं वेदपाठैः - श्रौतस्मार्तादि कर्मभिः  
न वा दंदह्यमानानां - बालानां जठराग्निना ॥ ४७
- कथं रक्षति दैवं ते - हनुमान् वरदो ह्यतः  
कथं वा त्रायते सोऽस्मान् - क्षुधार्तान् सहपुत्रकान् ॥ ४८
- अविज्ञाय तथाप्यन्नं - मृतानस्मा नवत्यसौ ॥ ४९
- पिता मे न विजानाति - भवन्तं पुरुषाधमम्  
अहो बत सुता बालाः - मनसैवाघ्न भोजिनः ॥ ५०
- पटच्छर्धैः कन्दमूलैः - पत्रशाक विसैर्जलैः  
भृत्याचोपार्जितैर्घान्यैः - अपर्याप्तैश्च वस्तुभिः ॥ ५१
- शरीरस्थिति मात्रेण - पुत्रा जीवन्ति मे भृशम्  
हितं सर्वमपि त्यक्तं - तपसाचैव तेनते ॥ ५२
- विवाहाद्युत्सवैरन्यैः - तथा पुंसवनादिभिः  
प्रीतिदानैश्च बन्धुभ्यो - मुकुन्दाराधनोत्सवैः ॥ ५३
- वैतानिक क्रियाभिश्चा - प्यातिथ्येन च सर्वदा  
हृष्टपुष्टाश्च दृश्यते - न पोष्या गृहमेधिनः ॥ ५४
- इति श्रुत्वाऽवदद्विप्रो - भार्या दारिद्र्यकशिताम्  
श्रुणुमहे! न भोगार्थं - तपो मे मुक्तिकारणम् ॥ ५५

|  |    |
|--|----|
| साहित्वाऽवदत्साध्वी - नददा त्यैहिकं सुखम्<br>आमुष्मिकं कथं दद्या - हृदयं योगि दुर्लभम् ॥   | ५६ |
| इति श्रुत्वा तदाविप्रो - हनुमद्द्वेषणं वधः<br>तस्माद्देशादवक्राम - द्वीतरागस्तपोधनः ॥  | ५७ |
| ततः प्रादुरभूत्तत्र - हनुमद्भक्तवत्सलः ॥   | ५८ |
| दैत्यानामशनिर्नृणां कपिवर-स्स्यादंजनायाश्शिबुशः<br>मृत्यू रावणराक्षसस्य नितरां - रामानुजप्राणदः<br>सीताहर्षधुरन्धरो रघुपतेः - कार्यप्रधानाग्रणी<br>योगिध्येयसुवर्चला प्रियसख - स्तन्मंदिरं प्राविशत् ॥ | ५९ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशरप्रैत्रेय संवादे

श्री हनुमत् षोडशार्णव महामंत्र प्रभावकथनं

नान विशतितमः पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

एकाविंशतितमः पटलः

—: कपिलचरित्र कथनम् :—

श्री पराशरः

|   |   |
|---|---|
| उवाच कुशलंभार्या - तव किं वक्ति मे वद<br>तमुवाच महाबाहू - षोडशवर्गस्य कारणात् ॥         | १ |
| वन्यशाक मुपादाय - जपान्ते गृहमागतः<br>नयामि दिवसा नद्य - शाकं नानीतवानहम् ॥             | २ |
| अतएवं विधावाचः - क्षुधातां वक्ति मामिति<br>प्रहस्योवाच विप्रेन्द्र - हनुमा न्भूतभावनः ॥ | ३ |

- वरंवरय भद्रं ते - मा कुरु ष्वात्र संशयम्  
श्रुत्वा हनुमतो वाक्यं - कपिलो हृष्टमानसः ॥ ४
- उवाच वचनं धीमान् - देशकालोचितं यथा  
वरमन्यं न याचेऽहं - त्वत्पादांबुज भक्तितः ॥ ५
- ततः प्रोवाच हनुमान् - भक्तिं मुक्तिं ददामि ते  
तवभार्या वद ब्रह्मन् - पश्चाद्भ्रागे गृहस्यते । ६
- बदरीवृक्षमूलेतु - निक्षेपो वर्तते महान्  
तद्गृहीत्वा धनं प्राज्यं - यधेष्टं भुज्यता मिति ॥ ७
- तथैवोक्ता स्वपतिना - प्रहस्य प्राह तं द्विजम्  
अहंतु मंदभाग्यास्मि - मादृशी न जगत्रये ॥ ८
- यतो दारिद्र्यदुःखेन - सर्वेषामस्मि गोचरा  
गृहेतु परुषंचोर - मादिश्य बिलभेदने ॥ ९
- वृथा मांवाधते ब्रह्मन् - एतद्दैनस्य वंचनम्  
अथवा विद्यतेनाथ! कटहो धनसंपदाम् ॥ १०
- तमुद्धर्तुं कथं नालं - दैवंते गिरिभेदकम्  
कथंवा शक्तिरुद्धर्तु - शाकसात्कृतवर्त्मनः  
नितांतकृशदीनायाः - क्षुधिताया दिवानिशम् ॥ ११
- अस्मासु यच्चनुक्रोशः - कपिराजस्य धीमतः  
उद्धृत्य नखराग्रेण - दीयतां धनपेटिका ॥ १२
- अस्माक मतिमूढानां - हतभाग्योपजीविनाम्  
नचास्यमहतलोके - विद्यते शक्त्यगोचरः ॥ १३
- गिरिंच गिरिशृंगाणि - बहतो लीलयाकपेः  
निक्षेपपात्राहरणे - कियाम्भारो भविष्यति ॥ १४
- उपच्छं देनवाक्येन - नसंतोषो भवेदिति  
इतिश्रुत्वातु हनुमान् - निद्रांच भजते वधूः ॥ १५

- ततो गत्वा धनस्थानं - हनुमा न्पादकुट्टनैः  
भित्त्वा तद्धनपत्रं मे - शिरसि स्थापयद्विज ! ॥ १६
- इत्युक्तः प्राह तं विप्रः - कथते शिरसि प्रभो !  
स्थापया मीदृशं भार - मपराधस्य कारणम् ॥ १७
- तमुवाच हरिर्विप्रं - मम भक्तार्थं भारतः  
न मे ग्लानि भवेदेव - महात्मा न तु सीदति ॥ १८
- पुराऽहं सेतुबंधार्थं - समुद्रे रामचोदितः  
कनकाचलमालोक्य - बालेनोद्धर्तुं मीप्सितः ॥ १९
- एतद्ज्ञात्वा सुरश्रेष्ठो मां प्रार्थयितुं मागतः  
अबोचं स्त्रिदशा स्सर्वे - लोकपाला मरुद्गणाः ॥ २०
- वसवस्सिद्धसाध्याश्च - गंधर्वाप्सरसांगणाः  
देवर्षयो वसन्त्यत्र - कथं नेतुं मिहार्हसि ॥ २१
- विरिञ्चिनैव मुक्तोऽहं - अबोचं भारतीपतिम् ॥ २२
- रामो दाशरथि इश्रीमान् - सत्यसंधो महाबलः  
रावणं जेतुकामस्सन् - सेतुबंधं समुद्यतः ॥ २३
- तदर्धमेनं हेमाद्रि - शीघ्रं नेतुं निहागतः  
किमन्यैः पर्वतस्तो कैं - इति मत्या निमंत्रितः ॥ २४
- प्रसारयामि लांगूलं - तस्याग्रे सर्वदेवताः  
तिष्ठंस्त्विमं महाशैलं - न त्यजामि कथंचन ॥ २५
- श्रुत्वा तु मे बलोपेतं - चलवाक्यं पितामहः  
उपायेन जगत्कर्ता - सुंदरं रामविग्रहम् ॥ २६
- कल्पयित्वा तन्मुखेन - मां व्यदारय दीश्वरः  
वृत्तांतमेतद्ज्ञात्वाऽपि - रामशासन गौरवात्  
अहं मेघं परित्यज्य - गिरीनन्या न्मृहीतवान् ॥ २७

|  |    |
|--|----|
| मदानीतैश्च वै रामो - बंधयामास सागरम्<br>अतो धनकटाहोऽयं - तमे भाराय कल्पते ॥                      | २८ |
| द्विजस्संचोदितोऽप्येवं - कपीन्द्रेण महात्मना<br>समेने तस्य तद्भारं - मूर्ध्ना वाहयितुं पुनः ॥    | २९ |
| कपीन्द्रोऽपि निरीक्ष्यैवं - तस्य भक्ति महैतुकीम्<br>स्वयमे वानुमेनतं - भारमुद्रोढु मादरात् ॥     | ३० |
| इति निश्चित्य मनसा - भारमुद्राह्य मौलिना<br>निद्रालोद्विजभार्यायाः - पुरोदेशे न्यपातयत् ॥        | ३१ |
| ततः कपिलमाहूय - हनुमा ऋभक्तवत्सलः<br>आमुष्मिकं च दास्यामी - त्युक्त्वैवांतरधीयत ॥                | ३२ |
| सावधूः प्रातरुत्थाय - धनराशिं विलोक्यतम्<br>कौतूहल समाविष्टा - प्रोवाच स्वपतिसती ॥               | ३३ |
| तपःप्रभावं विपेन्द्र - तव पूर्वं मजानती<br>साधारणं द्विजं मत्वा - त्वांतु लोकविलक्षणम् ॥         | ३४ |
| दारिद्र्यकर्षिता नित्यं - क्षुत्कीर्णैश्चैव बालकैः<br>अवोचमह मेतावत् - तद्भ्रवान्क्षंतु मर्हसि ॥ | ३५ |
| इत्युक्तो ब्राह्मणश्रेष्ठो - भार्या सुतसमन्वितः<br>भुक्त्वा भोगा न्वीतरागः - काले मुक्तिमवापसः ॥ | ३६ |
| इत्येवं षोडशार्णस्य - महिमा स हनूमतः<br>कथितस्तव मैत्रेय! पुनः किं श्रोतुमिच्छसि ॥               | ३७ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशरमैत्रेय संवादे

षोडशाक्षरीप्रभाव कपिलचरित्रकथनं नाम

एकविंशतितमः पटलः

\*

\*

\*



# श्री पराशर संहिता

## द्वाविंशतितमः पटलः

—: कश्यपचरित्र कथनम् :-

श्री मैत्रेयः :-

श्लो ॥ महादेवांशसंभूतं - वायुना प्रेरितंबलात्  
अंजनागर्भं संभूतं - हनुमंत मुपास्महे ॥  
हनुमामंत्र माहात्म्यं - श्रुतं विस्तरतो मया  
तद्भक्तानां प्रभावंच - श्रोतुमिच्छा म्यहंप्रभो ॥

श्री पराशरः

ब्रह्मावर्तइति ग्रामः - सर्वसंपत्समृद्धिमान्  
ब्राह्मणः कश्यपोनाम - स्थितस्तत्र गृहाश्रमी ॥  
सदाचाररतश्शांतो - वेदवेदांगपारगः  
हनुमंतं भजन्नित्यं - अर्घ्यपाद्यासनादिभिः ॥  
पुष्पैःपत्रैर्धूपदीपैः - बलिभिर्वदनैःस्तवैः  
नामसंकीर्तनैर्ध्यानैः - सदारोधनतत्पैरः ॥  
एवं निवसतस्तस्य - बिप्रस्य द्विजपुंगव!  
हनुमानेव धर्मिष्ठ - धनादृचानां हृदिस्थितः ॥  
प्रैरयन् सर्ववस्तूनि - तैर्दापयति नित्यशः  
धनेन बहुनातेन - समृद्धोऽभू द्विजोत्तम! ॥  
तस्य हर्तुं धनंचोरं - कश्चिन्नश्चितपापभृत्  
अवकाशंप्रतीक्षन्वै - करोत्येव गतागतम् ॥  
यदायदातद्गटःमेतचोरः  
तदातदाभिन्नविचित्रवेषः  
विभीषयत्येव निगूढरूपः  
कपिप्रवीरः परवीरहंता ॥

- दंडीकदाचि न्मुसलीकदाचित्  
 खड्गीकदाचि क्तवचीकदाचित्  
 शिखीकदाचि द्विशिखीकदाचित्  
 विप्रःकदाचि त्मुभटःकदाचित् ॥ १०
- एवं सदारक्षणतत्परःप्रभुः  
 विलोचन पक्षम यथाकर्पीद्रः  
 स्वभक्तवात्सल्य मथप्रकाशयन्  
 गृहेतुकामो नहि दर्शनंगतः ॥ ११
- अवकाशंतोलबध्वा - संतोषेणमलिभ्लुचः  
 चिरायचितयामास - प्राप्तमेवमहाधनम् ॥ १२
- अद्यास्यविप्रस्य - गृहंप्रविष्टः  
 प्राज्यंधनंप्राप्य - नयामि गेहं  
 भार्याचयुवतिः तनयाम्कुमारिकान्  
 संतोषयिष्यामि सहात्मबंधुभिः ॥ १३
- इतिबध्वा परिकरं - चतुर्भिस्सहबंधुभिः  
 आजगामास्यविप्रस्य - गेहंपाटच्चरःखलः ॥ १४
- निशिसर्वेषुसुप्तेषु - धनंहर्तुमथैकदा  
 कुड्यंभित्त्वाखनित्रेण - प्रवेष्टुमुपपन्नक्रमे ॥ १५
- हनुमानपिसर्वात्मा - भक्तपालनदीक्षितः  
 प्रविशंतंबिलद्वारा - चोरंजग्राहपाणिना ॥ १६
- काश्यपंवेषमाश्रित्य - चोरांतिकमुपागतः  
 दृष्ट्वा चोरानुगाश्चैनं - द्रुद्रुर्भयविह्वलाः ॥ १७
- बलादाकृष्यमाणेऽपि - गृहीत्वोरुयुगेमुहुः  
 ननिर्गच्छतिलोभेन - ब्रह्मस्वीष्टुमलिभ्लुचः ॥ १८
- नहिनस्तिकपिश्चैनं - सर्वभूतदयापरः  
 निवर्तयितुकामस्सन् - आचकर्षपुनःपुनः ॥ १९

- चोरस्तु धनलोभेन - बलदर्पेण भूयसा  
 मामाक्रष्टुमयं विप्रो - नालमित्येव मन्यते ॥ २०
- कपिस्त्वाकृष्य चोरं वै - ताडयामास मुष्टिभिः  
 इदमेवैनसस्तस्य - प्रायश्चित्तमितीरयन् ॥ २१
- अहतोऽपिन चक्रंद - भिदुरैरिव मुष्टिभिः  
 तथा हनूमान्सर्वज्ञः - कश्यपस्य स्वरूपधृत् ॥ २२
- क्रंकोऽत्र इति शब्देन - उच्चैश्चोरमथागिरत्  
 नजानंति यथागेहे - सवऽपि गृह्वर्तिनः ॥ २३
- तथा गृहीत्वा तंचोरं - बहिरानीय वेगतः  
 मुष्टिजानुपदाघातैः - अकुट्टयदरिदमः ॥ २४
- अक्षमः क्रंदितुं भूयो - धैर्येण त्रपयापुनः  
 असोढवेदनश्चोरः - उच्चैश्चक्रंद दीनवत् ॥ २५
- तस्याक्रंदनशब्देन - संबुद्धाः प्रातिवेशिकाः  
 विलोक्यानुनयंतस्ते - तथा तंगृहमेधिनम् ॥ २६
- राजभृत्या वधं कुर्यु - ज्ञायियु र्यदि यामिकाः  
 इति चोरं विनिर्भत्स्य - पुनरेवं न कुर्विति ॥ २७
- कृपया मोक्षयित्वा तं - सर्वेजग्मु र्यं धागतम् ॥ २८
- ततः प्रात स्समुत्थाय - कश्यपो ब्राह्मणोत्तमः  
 भित्तिरंध्रं समा लोक्य - विस्मयं परमंगतः ॥ २९
- बहिरागत्य तद्वीध्यां - चोराश्चोरा इति ब्रूवन्  
 क्रंदयामास वच्छृत्वा - तमूचुः प्रातिवेशिकाः ॥ ३०
- अकांडे क्रियते ब्रह्मान् - किमिदं क्रंदनंवृथा  
 अस्माभि मींचितश्चोरो - निष्पिष्टो भवतानि शि ॥ ३१
- याभिका यदि शृण्वन्ति - ह्यानर्धस्तु महान् भवेत्  
 इत्युक्तः कश्यपो विप्रः - तूष्णीं चिंतापरोऽभवत् ॥ ३२

|  |    |
|--|----|
| हनुमत्कृत्यमेतद्धि - नान्यथा भवतीदृशम्<br>चोरयेव महाधम्बो - हनुम स्मूर्तिदर्शनात् ॥  | ३३ |
| पाणिपादतलस्पर्श - प्राप्तोनास्तितुतन्मम !<br>सदातदाराधनतत्परोऽपि<br>नप्राप्तयेवाह ममुष्मदर्शनं<br>चिरंमहापाप परायणस्य<br>चोरस्यदेवः कथमाविरासीत् । | ३४ |
| मलिम्लुचोयो मनुजाधमकथं<br>मुनीद्रवृन्दैरपिमाननीयः ।<br>यमाञ्जनेयो निजपादपंकजैः<br>समर्धयामास करान्बुजैरपि ॥  | ३५ |
| अहंतु निर्भाग्यतरो वृशोद्यमः<br>खलश्च नीचोऽतिनृशंसचेष्टितः<br>कथंतमद्राक्ष महंकपीश्वरं<br>तपोबळेनाति निकृष्टकर्मणा ॥                               | ३६ |
| चोरोऽपितेनैव समीक्षितोमहान्<br>साक्षात्कृतो नैव मया चमूर्तिना<br>श्रुतोमया चोर कपीश्वरोद्यमो<br>मदीय दौर्भाग्यविभूतिरीदृशी !                       | ३७ |
| अथवा मय्यनुक्रोशो - विद्यते मास्तैर्धृवम्<br>कथंरक्षितु मारब्धः - चोरं मत्पीडनोद्यमम् ॥  | ३८ |
| योगीश्वराणामपियत्नदुर्लभं<br>यद्दर्शनं किंच सुरासुराणां<br>पापीयसादृष्टि पथंगतोयः<br>संवानरेंद्रं शरणं भजामि ॥                                     | ३९ |
|  | ४० |

|   |    |
|---|----|
| लक्ष्मणो जनविस्तीर्णं - द्विलक्षोन्नतभास्करं<br>नमोऽस्तु वायुपुत्राय - ग्रसते बाललीलया ॥  | ४१ |
| उदयास्ताचलद्वंद्वे - पादमूलंप्रसार्य च<br>अध्येतुं भास्कराद्वेदान् - अखिला न्गृह्णते नमः ॥  | ४२ |
| सर्वदेदांतवेद्याय - पूर्णाय परमात्मने<br>सच्चिदानंदरूपाय - भविष्यद्भ्रह्मणे नमः ॥   | ४३ |
| इत्यसौ कश्यपो विप्रः - स्मरन् हनुमतः कृपां<br>बुभुजे सकलान्भोगान् - पुत्रमित्रकलत्रवान् ॥   | ४४ |
| भुक्त्वा तु सकलान्भोगान् - इंद्राद्यैरपि दुर्लभान्<br>अंते जगाम कैवल्यं - हनुमत्कृपया द्विजः ॥  | ४५ |
| मैत्रेय! वायुतनयस्य हरेः प्रभावं<br>भक्त्या शृणोति कथय त्यमलं जनेभ्यः<br>यस्सर्वकामनिवहं परिभुज्य लोके<br>संसारतापविरतिं सपुमान् लभेत ॥ | ४६ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशरमैत्रेय संवादे  
कश्यपचरित्र कथनं नाम द्वाविंशतितमः पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

त्रयोविंशतितमः पटलः

—: हरिशर्मचरित्र कथनम् :-

पराशरः

पुनर्दक्ष्यामि मैत्रेय - हनुमद्भक्त सत्कथाम्  
शृणुष्व वावहितो ब्रह्मन् - मनो मे सुप्रसीदति ॥

|   |    |
|---|----|
| पुण्ये गोदावरी तीरे - महामुनि निषेविते<br>ब्राह्मणो हरिशर्भेति - न्यवसत्कुक्षतर्पणे ॥             | २  |
| वेदवेदांगसारज्ञो - दृढभक्तो हनूमति<br>तस्यमन्त्रार्चनध्यान - नामकीर्तन तत्परः ॥                   | ३  |
| सत्त्ववादी तपोनिष्ठो - विशुद्धात्मा जितेन्द्रियः<br>गुरौच हनुमद्भक्ते - ष्वन्यविद्वत्सु सत्सु च ॥ | ४  |
| विनीतस्सत्यसम्पन्नः - सर्वभूतहितेरतः<br>करोति हनुमत्प्रीत्यै - श्रौत स्मार्तादिकाः क्रियाः ॥      | ५  |
| एकदा चिन्तयामास - सन्नु तीर्थंपरायणः ॥  | ६  |
| अहंसंसार जलधौ - निर्मग्नोदुरितालये<br>बध्वा भार्या सुतान्कण्ठे - तरितुं नैष शक्तवान् ॥            | ७  |
| किमियंममदुर्बुद्धिः - हनुमन्नाम्निसंस्थिते<br>पारंगंतुमशक्तस्सन् - कार्पण्यंपरमंगतः ॥             | ८  |
| क्षस्यप्रसादतस्सर्व - पुण्यक्षेत्राणिपर्यटन्<br>सर्वपाप विनिर्मुक्तो - गच्छामिपरमांगतिम् ॥        | ९  |
| एवंनिश्चित्य विप्रेन्द्रो - निर्गत्यस्वगृहात्तदा<br>श्रीशैलमार्गतो गच्छन् - आससादमहानदीम् ॥       | १० |
| कृष्णवेणीमहाभागां - कृष्णदेहसमुद्भवाम्<br>तत्र स्नात्वाचपीत्वाच - तर्पयित्वा पितृनथ ॥             | ११ |
| निवासं पार्वतीजानेः - संप्राप्तः श्रीगिरिं द्विजः<br>तत्रगत्वा महादेवं - देवदेवं वृषध्वजम् ॥      | १२ |
| प्रणम्याराधनं चक्रे - भवानीसहितं शिवम्<br>ततो गच्छन्सविप्रेन्द्रो - गरुडान्निदिदृक्षया ॥          | १३ |
| आससादमहापुण्यं - श्रीगाञ्छीमदहोबिलम्<br>तत्रलक्ष्मीसमायुक्तं - नृसिंहं करुणालयम् ॥                | १४ |

- त्रैलोक्यनाथं देवेशं - ब्रह्मादप्रणवं हरिम्  
 श्रीभूमिसहितं देवं - श्रीनिकेतं नरं हरिम् ॥ १५
- हिरण्यकशिपुघ्नं तं - भक्ताभीष्टवरप्रदम्  
 भक्तिपूर्वं नमस्कृत्य - स्तोत्रैस्तुष्टावचक्रिणम् ॥ १६
- सरःस्थानानि पुण्यानि - समाराध्य महामतिः  
 तर्पयित्वा पितं स्तत्र - वेङ्कटाख्य गिरिगतः ॥ १७
- मार्गचण्डांशुकिरणैः - तप्तदेहः क्षुधातुरः  
 तृष्णापरीतस्तन्मार्गं - मूर्च्छितोन्यपतद्भुवि ॥ १८
- हनुमान्भक्तवात्सल्यात् - दृष्ट्वाविप्रं कृतश्रमम्  
 आगत्य शूद्ररूपेण - तमुवाच दयाकुलः ॥ १९
- उत्तिष्ठ विप्रकिशेषे - भूमावातपतापितः  
 किमर्थमागतः किं वा - तबागमनकारणम् ॥ २०
- इत्युक्तः प्राहृतं शूद्रं - वेङ्कटेश दिदृक्षया  
 समागतः क्षुधातोऽहं - मूर्च्छितो विजनेपथि ॥ २१
- उवाचासौ ममाभ्यासे - पेटिकायां महागुणम्  
 वर्ततेऽन्नं प्रदास्यामि - भुक्त्वा तृप्तिमवाप्स्यसि ॥ २२
- उवाच त्वं शूद्रवर्णः - कथमश्नाम्यहं द्विजः  
 सुपक्वानि फलानि त्वं - देहि कारुण्य मस्ति चेत् ॥ २३
- इत्युक्तस्स ददौ पक्व - फलानि विविधानि च  
 रंभा म्रबदरी जंबू - कपित्थ पनसानि च ॥ २४
- आनीयामृतकल्पानि - सुगन्धीनि द्विजातये  
 भक्षयित्वा द्विजस्तृप्ति - मवाप्य विगतश्रमः ॥ २५
- तेन संभाषितुं बुभूया - समन्तादवलोकयन्  
 न ददर्श द्विजश्शूद्रं विस्मयं परमं गतः ॥ २६
- किमाश्चर्यमिदं शूद्रो - मह्यं दत्त्वा फलानि च  
 क्षणेनाऽतर्द्धकोऽयं - हनुमान्वा भविष्यति ॥ २७

|  |    |
|--|----|
| बाल्यात्प्रभृत्यर्चयतो - जपतः स्तुवतस्सदा<br>स्वरूपं द्रष्टुकामस्य - हनूमान्वानरोत्तमः ॥   | २८ |
| कदाचिदपि मे प्रीतो - नहि प्रत्यक्षतांगतः<br>पापीयसोमे दौर्भाग्यं - महदस्ति न संशयः ॥   | २९ |
| महापदंवा गच्छामि - प्रवेक्ष्यामि हुताशनम्<br>वदन्ति वेदज्ञत्वज्ञाः - दैवमस्तीति सर्वदा ॥   | ३० |
| संशयोमे महानत्र - मिथ्येव प्रतिभाति मे<br>इति चिंतापरेविप्रे हनूमा ऋकृपयाऽन्वितः ॥   | ३१ |
| स्वरूपं दर्शयामास - देवानामपि दुर्लभम्<br>कण्ठेहारंश्रवणपुटयोः कुण्डलेस्कन्धदेशे<br>ब्राह्मं सूत्रं करकमलयोः कंकणाभ्यंचितानि<br>मध्येपीतं कनकवसनं चोर्ध्वं पुण्ड्रं ललाटे<br>वामेदेवीं मिहिरतनयां भिभ्रतं वानरेन्द्रम् ॥ | ३३ |
| विलोक्यविस्मितो भूत्वा - प्रणम्यशिरसाहरिम्<br>स्तोत्रैश्चविविधैर्नत्वा - प्रदक्षिणपुरस्सरम् ॥  | ३४ |
| ननामशिरसाभूयो - हरिशर्माजिनासुतम्<br>बाल्यात्प्रभृति तेरूपं - द्रष्टुकामोऽहमीश्वरम् ॥  | ३५ |
| भवान्कदाचिदपिमे - नचक्षुर्विषयंगतः<br>इतिदुःखाकुलस्वासीः - भवान्लोचनगोचरः ॥  | ३६ |
| धन्योऽहंकृतकृत्योऽहं - नास्तिमत्सदृशोभुवि<br>इत्युक्तः प्राह हनुमान् - नाऽहं वर्तेत्वयाविना ॥  | ३७ |
| निगूढरूपं स्सततं - त्वयिभक्तिपरायण<br>ममभक्तइति ब्रह्मन् - इदानीं शूद्ररूपिणा ॥  | ३८ |
| फलैरभृतपिडाभैः - भवान्संतपितोमया<br>वरंवरय भद्रंते - प्रसन्नोऽहं तवानघ ॥   | ३९ |



- इत्युक्तः प्राह विप्रैर्द्रुः - तवपादाब्जभक्तितः  
 त्वद्भक्तजनवात्सल्यात् - नान्यमिच्छाम्यहंवरम् ४०  
 इति श्रुत्वाऽवदद्विप्रं - हनूमान्भक्तवत्सलः  
 भक्तिं मुञ्चत प्रदास्यामी - त्युक्तवैवांतरधीयत ॥ ४१  
 हरिशर्माऽपिसंतुष्टः - प्रभावं श्रीहनूमतः  
 स्मरन्वेंकटशैलस्थं - वेंकटेश मुदीक्षितुम् ॥ ४२  
 गत्वाकुमारसरसीं - संप्राप्तः पापनाशनम्  
 तत्रस्नात्वाचपीत्वाच - संतर्प्यच पित्रूनथ ॥ ४३  
 श्रीवैकुण्ठपरित्यज - लक्ष्म्यासह मुदायुतम्  
 आनंदनिलयांतस्थं - नारायणमुदैक्षत ॥ ४४  
 प्रणम्यशिरसाभूयः - प्रदक्षिणपुरस्सरम्  
 नानाभिधैःस्तोत्रजालैः - स्तुत्वा मुदमवाप सः ॥ ४५  
 प्रसादान्नं समासाद्य - मधुरं पावनंहरेः  
 सर्वपापविनिमुक्तो - बभूवविगत ज्वरः ॥ ४६  
 समस्ततरुभंडितं - सकलपुष्पसंवासितम्  
 सहस्रगिरिनिर्झरं - सकलसिंहशाबाकरम्  
 विशालसरसीयुतं - विविधविध्वदाराधितम्  
 सरोजवनवासिनी - नखविलाससचारितम् ॥ ४७  
 शेषाचलसमालोक्य - वैकुण्ठच्छांपरित्यजन्  
 उवासकतिचिन्मासान् - मुकुंदाराधनेच्छया ॥ ४८  
 ततोधरदराज तु - स्तितकांक्ष्यां विलोक्यच  
 श्रीरंगदिव्यभवनं - द्रष्टुकामोययौद्विजः ॥ ४९  
 तत्रचोभयकावेरी - मध्ये श्रीरंगमंदिरे  
 स्वयंप्रयुक्तं जगन्नाथं - भुजंगशयमीश्वरम् ॥ ५०  
 लक्ष्मीभूमिसमायुवतं - युक्तंपरमयोगिभिः  
 चंद्रपुष्करिणितीरे - विराजंतं श्रियःपतिम् ॥ ५१

|  |    |
|--|----|
| दृष्ट्वास्तुत्वास्तवैर्भूयो - मुदापरमयायुतः<br>तत्रस्नात्वाचपीत्वाच - संतर्प्यञ्च पितृनथ ॥   | ५२ |
| महापापहरसेतुं - दृष्ट्वातीर्थं हनूमतः<br>तस्यतीरेहनूमतं - विलोक्यतमपूजयत् ॥  | ५३ |
| ततोरामेश्वरदेवं - अर्चयामास सद्विजः<br>तस्माद्देशात्समृद्दार्थः - पुनस्स्वगृहमागतः<br>भुक्त्वाभोगान्सधर्मात्मा - कालेमुक्तिमवापह ॥ | ५४ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
हरिशर्मचरित्र कथननाम त्रयोविंशतितमः पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

चतुर्विंशतितमः पटलः

—: नित्यकर्मविधान कथनम् :-

श्री मैत्रेयः :-

|   |   |
|---|---|
| हनूमान्बलसंपन्नो - ह्यजनांन्दवर्धनः<br>कस्मिन्देशे निवसति - किमाचरति सर्वदा ॥       | १ |
| कीदृशापार्षदास्तस्य - किंकुर्वन्तिमहात्मनः<br>किमाहारोविहारोवा - कालक्षेपंकथंहरेः ॥ | २ |
| श्रोतुमिच्छाम्यहंब्रह्मन् - वक्तुमर्हसिसुव्रत! ॥                                    | ३ |

श्री पराशरः

|   |   |
|---|---|
| साधुपृष्टं त्वयाविद्वन् - हनूमच्चरितंशुभम्<br>शृणुष्वेकमनाभूयो - वक्ष्यामि मुनिपुंगव! ॥ | ४ |
|---|---|

सुमेरोःनैरूतेभगि - पर्वबोगंधमादनः  
 सर्वपादपसंकीर्णो - विचित्रोधातुमंडितः ॥  
 नानाशकुंतविरुतैः - नानाकुसुमराशिभिः  
 सुवर्णकदलीषंडैः - नीरंध्रफलराजिभिः ॥  
 मुनीनांपर्णशालाश्च - ब्रह्मयज्ञसुशोभनाः  
 गंधर्वमिधुनानांच क्रीडाकुजास्सहस्रशः ॥  
 एलालवंगतककोल - चंदनागरुशाखिनः  
 कपूररंभाजंबीर - मत्तुलुंगकदंबकाः ॥  
 नारिकेलाम्रपनस - जंबूखर्जूरदाडिमाः  
 द्राक्षाबदरनारंग - सेमंतीचंपकादयः ॥  
 पुष्पागाशोकमालत्यः - वासंतीनवमल्लिकाः  
 तालास्तमालाहितालाः - बकुलाःकेतकादयः ॥ १  
 तत्रत्यसर्वसत्वानां - जातिवैरनविद्यते  
 तरवस्सर्वकालेषु फलिता स्तत्रपुष्पिताः ॥ १  
 पुष्पांबुकुल्यासर्वत्र - कस्तूरीमृगिणस्तथा  
 बहुकुंकुमकेदाराः - सन्तिकपूरराशयः ॥ १  
 एवंविचित्रशैलेन्द्रे - कपीद्रोगंधमादने  
 मनोहरैः महाकुंजैः - मकरंदसरोवरैः ॥  
 सर्वर्तुगुणसंपन्ने - सर्वप्राणिमुखावहे  
 गिरिनिर्घरसाहस्रैः - शतैश्चकमलाकरैः ॥  
 सिंहव्याघ्रवराहैश्च - शरभैर्गव्यैश्शशैः  
 मृगैरन्यैर्द्विजैरन्यैः - श्वापदैश्चसमाकुले ॥  
 तत्रदिव्यगुहारम्या - विशालायुक्तमारुता  
 दशयोजनविस्तीर्ण - सुवर्णमणिरंजिता ॥  
 तस्यांहनूमत्प्रीत्यर्थ - निर्मिताविश्वकर्मणा  
 महेंद्रस्याज्ञयारत्न - शालासौवर्णशालिकाः ॥

|   |    |
|---|----|
| काश्चिद्गारुडशालाश्च - काश्चिन्मौक्तिकशालिकाः     |    |
| इंद्रनीलमयाश्शालाः - प्रवालखचितांतराः ॥           | १८ |
| पद्मरागमयाःकाश्चित् - कुरिविंदैश्चभूषिताः         |    |
| वैदूर्यमणिकुड्याश्च - शुद्धस्फटिकवेदिकाः ॥        | १९ |
| शातकुंभमयाःशतंभाः - दांतराजिततोरणाः               |    |
| पुष्यरागमयद्वाराः - मणिकुट्टिमभूमयः ॥             | २० |
| मुक्तावितानसाहस्रैः - ग्रथिताश्च समंततः           |    |
| महासस्करणोपेताः - वैजयंताधिक प्रभाः ॥             | २१ |
| सुधर्मानुल्यसौभाग्याः - विचित्रापुष्पकोपमाः       |    |
| सुवर्चला युतोनित्यं - तासुक्रीडतिमार्शतिः ॥       | २२ |
| हनुमान् प्रातरुत्थाय - स्मरन्रामं गुणोत्तमम्      |    |
| पद्माक्षतुलसीमाला - नूध्वंपुंड्रं च धारयन् ॥      | २३ |
| कृत्वामैत्रादिकंसव - प्रतिष्ठा देवतालयम्          |    |
| राघवं जानकीनाथं - भरतादिभि रूर्जितम् ॥            | २४ |
| अर्घ्यपाद्यादिभिर्धूपैः - दीपैर्बलिभिरुत्तमैः     |    |
| तुलसीपुष्पमालाभिः - गन्धकस्तूरिकादिभिः ॥          | २५ |
| आराधयित्वा देवेशं - पार्षदैस्सहभक्तमान्           |    |
| नृत्तगीतादिभिर्वाद्यैः - प्रतूर्यै बंधुभिस्तवैः ॥ | २६ |
| पुलकांचितसर्वांगो - बाष्पपर्याकुलेक्षणः           |    |
| ध्यायन्मुहूर्तं निश्चेष्टो - परमानदसंप्लुतः ॥     | २७ |
| ततोभागवतान्धन्यान् - अर्चयित्वामहामतिः            |    |
| रामोपभोगत्वग्गंध - वासालंकारभूषितः ॥              | २८ |
| तस्यैवोपनिषत्पुण्य - मीमांसाश्रवणोत्सुकान्        |    |
| आनंदयितुमासीने - हनूमति वरासने ॥                  | २९ |
| सेवार्धकपिसिंहस्य - सायप्रातस्समाहितः             |    |
| गंधर्वाप्सरसोदेवाः - सिद्धास्साध्याश्चचारणाः ॥    | ३० |

विद्याधराश्च यक्षाश्च - नागाश्च सहकिन्नराः

समागप्य प्रयत्नेन - मुनयः परमर्षयः ॥ ३१

आराधयंतो सततं - गानोपायन पाणयः

गंधपुष्पाक्षतैश्चैव - बलिभिर्धूपदीपकैः ॥ ३२

दिव्यांबरैर्भूषणैश्च - फलैरमृतसन्निभैः

नृत्यंतश्चाऽपि गायंत - स्तुवंतः पुष्कलैस्तयैः

एवंसंभाषयंतस्ते - गच्छत्येवयथागतम् ॥ ३३

सर्वदेवता स्तुतिः

गद्य :- श्रीवर मखिलवेदस्वरूप ममितप्रतापं अंजनागर्भसंभूतं, अखिलभुवनप्रख्यातं, केसरिप्रियतन्दनं, कौंडिन्यवंशोद्भवं, कबलीकृत बालभानुं, गंधवहसूतं, सुग्रीवसचिवं, अमितप्रभावं, रामकार्यधुरंधरं, राक्षससंहारं, सागरलघनजंघाल, सामगानलोल, दशग्रीवदर्पहरं, दारिताक्ष प्रमुखासुरनिकरं, सीताशोकविनाशिनं, श्रीरामप्रीतिवर्धनं, मकरीशापमोचन मर्दितकालनेमिं, मैरावण मदन सौमित्रि प्राणदातारं, सकललोकाधारं, श्रीसीतारामयोः परमसन्तोषयोगकारणं, श्रितभक्त मन्दारं, भविष्यद्ब्रह्म रूपं, भगवत्स्वरूपं, घनवाल रोमनिमित्त शिवालिंगं, करुणांतरंग, उदयास्ता चर्लांचितपादयुगल, सुरमुनिविनुत सुचरितं, श्रीसुवर्चलाकलत्रं, भक्तप्रतिज्ञा निर्वहणचातुर्यं, भुक्तिमुक्तिदायकं, पुरुषव प्यं, आदिपुरुषं, अतिविजयं, श्रीमत् हनुमन्त मुपास्महे ॥ ३४

इत्याश्च यंकरं तस्य - सुन्दरत्वं सुरादयः

दृष्ट्वा भवन्ति निश्चेष्टाः - काले मदन मोहिताः ॥ ३५

लावण्यं सर्वलोकस्य - राशीभूत मिवस्थितम्

दृष्ट्वात्मानं विनिंदन्ति - जयंत मदनादयः ॥ ३६

दायोःकुमारोबलवान् - पुण्यगंधमयश्शुचिः

नारण्यवर्णो दीर्घांगो - पृथुवक्त्रः कपीश्वरः ॥ ३७

रूपंधारयतेदिव्यं - तत्तत्काले यथोचितम्

वदनामृतकासार - संभूतनयनांबुजः ॥ ३८

|  |    |
|--|----|
| गंगाप्रवाहविलस - त्वांगूलकृतमेखवत्<br>विलक्षणतमश्चाऽस्मिन् - रत्नसिंहासनेस्थितः ॥              | ३९ |
| ददातिसकलान्कामान् - वाख्यायम्ब्रह्मसंहिताम्<br>अपचारक्षमीवीर्यं शौर्यतेजः पराक्रमः ॥           | ४० |
| रत्नतेजप्रभासूर्ये - यथाचंद्रेऽपिचंद्रिका<br>मूर्तित्रयात्मकेतस्तिन् - नित्यंसन्तिस्वभावतः     | ४१ |
| श्रुत्वाद्दृष्ट्वाचरित्राणि - भूर्भुवस्स्वर्गवासिनः<br>महजंतस्तपस्सत्य - लोकस्था अपि नित्यशः ॥ | ४२ |
| अद्भुतंपरमंगत्वा - संस्तुवन्तिमहात्मनः<br>ततोऽध्याह्नसमये - निर्वर्त्याविश्यकक्रियाः ॥         | ४३ |
| पूर्ववद्रामचद्रस्य - समाराधनमीहते<br>तच्छेषफलमूलान्न - मास्वाद्यसमहामतिः ॥                     | ४४ |
| रामायणकथां दिव्यां - पुरावाल्मीकिनाकृताम्<br>आसायमनुसंधत्ते - रामसंतोषकारणात् ॥                | ४५ |
| कृत्वासायंतनंकर्म - पूर्ववज्जानकीपतिम्<br>अभ्यर्च्यराममंत्रार्थं - तत्परोध्यानसभृतः ॥          | ४६ |
| योगनिद्रा मनुभवन् - सुखशय्यां भजत्यसौ<br>कदाचिदुष्टमारुह्य मनोवेगं महाबलम् ॥                   | ४७ |
| पयंटस्सकलान्लोकान् - संतोषयतिदेवतान्<br>एवंदृष्ट्वा हनुमतो - महिमानंमहाद्भुतम् ॥               | ४८ |
| इंद्रादयोलोकपालाः - विस्मयंपरमंगताः<br>हनुमद्विग्रहानष्ट - दिक्षुसंस्थाप्य भक्तितः ॥           | ४९ |
| तत्पार्षदेभ्यः प्रददुः - अष्टौतेगंधमादने<br>गुहायाः पूर्वदिग्भागे - दूरतस्सरसीतटे ॥            | ५० |
| हनुमंतं प्रतिष्ठाप्य - शक्रोजांबवतेददौ<br>आनेयेपावकःश्रीमान् - आजनेयनिधिंशुभाम् ॥              | ५१ |

- संस्थाप्य विधिबद्धकृत्या - विनताय ददौप्रभुः  
 तथैव दक्षिणेभागे - धर्मराजसभक्तिमान् ॥ ५२
- नीलायप्रददौदेवो - हनुमत्प्रतिमांशुभाम्  
 नैरृतेऽप्यथदिग्भागे - फलादानमधीश्वरः ५३
- पनसायददौप्रीत्या - हनुमन्मूर्तिमस्पृशन्  
 वरुणःपश्चिमेभागे - व्यावाह्य हनुमत्तमम् ॥ ५४
- गंधमादनपूजार्थं - समाराध्य ददौसुधीः  
 वायुवै वायुदैवत्ये - हनूमद्विग्रहं शुभम् ॥ ५५
- आंजनेयप्रियार्थवै - सुषेणायार्पयेत्सुधीः  
 कुबेरस्सोमदिग्भागे - यक्षगंधर्व नायकः ॥ ५६
- हनूमति प्रतिकृतं - मैदाय प्रतिपादयत्  
 ईशान्ये पार्वतीनाथः - शकरो लोकशंकरः ॥ ५७
- हनूम दुपमादेवो - द्विविधाय प्रदत्तवान् ॥ ५८
- देवैःकृताभिषेकोत्थ - तीर्थेनहनूमत्प्रभुः  
 वालाग्रात्प्रच्यतेतेन - नद्यास्तेवालसागराः ॥ ५९
- राजहंस सहस्राणि - सुवर्णं कमलानिच  
 स्वर्णभ्रमर वृन्दानि - चक्रवाकानि तत्रवै ॥ ६०
- हैमवेतसकुंजेषु - गंधर्वाप्सरसांगनाः  
 क्रीडतिमिधुनीभूयाः - तत्रपुष्पफलेषुच ॥ ६१
- तस्यांसर्वे निमज्जन्ते - मुनयो देवमानुषा  
 चतुर्विधा न्पौरुषार्थान् - प्राप्नुवन्ति सुनिर्मलाः ॥ ६२
- एवंमहात्मापश्नात्मजोहरिः  
 रामाभिधानस्य परस्यपुंसः  
 नित्यंसमाराधनतत्परोबली  
 प्रतीक्षते ब्रह्मपदंभविष्यति ॥ ६३

चतुर्भुजो भक्तजनावलीभ्य  
स्त्रिंहासने रत्नमयेनिषण्णः  
अध्यापयन् तारकमंत्रराजं  
धिराजितेऽसौ कमलासनो यथा ॥ ६४

चतुर्मुखः पञ्चमुखश्च षण्मुख  
स्सहस्रजिह्वादय सम्मुखावा  
त्रिमूर्त्तितेजोमय मांजनेयं  
ज्ञातुसमर्थोऽस्ति नहित्रिलोक्याम् ॥ ६५

—: अथ सप्ताक्षरी मंत्र विधानम् :—

अथ मंत्रप्रदक्ष्यामि - सप्तवर्णहनूमतः  
बोधदाति नृणांलोके - पुरुषार्थाश्चतुर्विधान् ॥ ६६  
उच्चार्यतारंश्रीवर्णं - ततोहनुमतेनमः  
अंगन्यास करन्वासौ - मूलमंत्रेण संस्पृशेत् ६७  
इदं सप्ताक्षरं लब्ध्वा - गुरोर्लक्षत्रयं जपेत्  
तत्तद्दशांशतः कुर्यात् - तर्पणं होमभोजने ॥ ६८  
ऋषिः शौनके एवात्र - गायत्री छंद एव च  
हनुमान् देवता बीजं - मास्तत्तमज एव च ॥ ६९  
शक्तिरत्रांजनासूनुः - वायुपुत्रस्तु कीलकम्  
दिवबंधनंतु गायत्र्या - कृत्वा ध्यानं समाचरेत् ॥ ७०

ध्यानम् :

चित्तितार्षप्रदं देवं - शांताकारं महाप्रभुम्  
संततं चित्तये चित्ते - हनूमंतमनूपमम् ॥ ७१  
ऋक्षवानरगोपुच्छ - इमं मंत्रमुपासते  
जांबवान् विनतो नीलः - पनसो गंधमादनः  
सुषेणमैदं द्विविदाः - प्रधनास्तत्रवानराः ७२



|  |    |
|--|----|
| अन्येच बहवश्शूराः महात्मानो महाबलाः<br>परिवारै स्त्रयस्त्रिंश - त्कोट्यर्बुदगणै वृतः ॥   | ७३ |
| अकुतोभय संचारो - एवंस रमयतेहरिः<br>नमस्काराश्च साष्टांगा - पंचसंख्या प्रकीर्तिताः ॥      | ७४ |
| प्रदक्षिणविधि स्तद्व - त्कथित श्रीहनुमतः ॥   | ७५ |
| अदौ नीलं नमस्कृत्य - पश्चा च्छ्रीहनुमत्प्रभुम्<br>यः करोति नमस्कारं - स धन्यो लोकपावनः ॥ | ७६ |
| हनुगमक्षिणेभागे - स्थितोनीलस्सुसेवितः<br>पश्चात्सेव्यो सहाभक्त्या - हनूमा ऋमुनिसत्तम ॥   | ७७ |
| ज्येष्ठशुद्धदशम्यांच - पद्मबंधु स्सुबर्चलाम्<br>हनूमते ददौबालां - स्वतनूजां महात्मने ॥   | ७८ |
| अंजनागर्भं संभूतं - बहुवानरसंयुतम्<br>सर्वदेवमयं देवं - हनूमंतं नमाम्यहम् ॥              | ७९ |
| ज्येष्ठशुद्धदशम्यांच - भक्त्या पूजां करोति यः<br>उपचारैः हनुमते - स भवेत्समनोरथः ॥       | ८० |
| बीजावापे विबाहेच - प्रयाणे प्रभुदर्शने<br>सिंहश्च मकरव्वाघ्र - सर्पदोषादिसंकटे ॥         | ८१ |
| आपत्कालेऽप्यरण्येच - नव्याभरणधारणे<br>नदीसगुद्रतरणे - गृहस्तभे महाभये ॥                  | ८२ |
| गृहप्रवेशेयुद्धे च - विद्याभ्यासेचसंगमे<br>क्षुतेऽधूतेविनोदेच - जूम्भणे शुभकमंसु ॥       | ८३ |
| धारणे नव्यवस्त्राणां - औषधे भोजने तथा<br>तुर्दशनमहोत्पाते - गजाश्वारोहणे तथा ॥           | ८४ |
| भूतप्रेतपिशाचादि - संकटेस्फोटके तथा<br>दुस्स्वप्नेऽपि महाव्याधौ - तापशीतज्वरेऽपि च ॥     | ८५ |

पवित्रं हनुमन्नाम - द्वादशवृत्तिमात्रतः  
 येस्मरन्ति जनास्तेषां - कार्यसिद्धिर्भवेद्भ्रुवम् ॥  
 हरिः ओं तत्सत्

८६

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
 नित्यकर्मविधान कथननाम चतुर्विंशतितमः पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता पंचविंशतितमः पटलः

—: श्री हनुमन्माला मन्त्र विवरणम् :—

श्री मैत्रेय :-

पंचास्यहनुमन्माला - मंत्रं मे वद सद्गुरो! ॥

१

श्री पराशरः :

सरहस्यं प्रवक्ष्यामि - ब्रह्मविष्णुवीशकल्पितम्

पार्वत्यै च पुराप्रोक्तं - शंकरेण महात्मना

मैत्रेय तत्प्रवक्ष्यामि - शृणुष्वानन्य मानसः ॥

२

श्रीकराकारदृङ्मूर्ते - मोहिताखिलमूर्तये

स्त्रीपुंसमाय महते - परेशाय नमोनमः ॥

३

वागर्धंसृष्टिविषये सुरवैरि निबर्हणे

रामदृक्पद्मरवये - भविष्यद्ब्रह्मणे नमः ॥

४

तद्रहस्यमिदंमंत्रं - सांगं सम्यग्ब्रवीमि ते

तं शृणुष्वेकचित्तेन - गुह्यमिष्टार्धं मुने ॥

५

|   |    |
|---|----|
| मंत्रोद्धारं च यंत्रं च - छन्दषिन्यासदेवताः             |    |
| मंत्रसंग्रहमेवास्य - पुरश्चर्या क्रमंपुनः ॥             | ६  |
| नित्यमंत्रक्रमंचाऽपि - प्रयोगस्य पृथक्पृथक्             |    |
| ततदासनभेदांश्च - मानकालफलान्यपि ॥                       | ७  |
| हवनक्रममेवांग - कलशैरभिषेचनम्                           |    |
| कालविज्ञानमानस्य - विभूतियोगमेव च ॥                     | ८  |
| स्वस्वरूपानुसंधान - मेवमाद्यत्र सन्ति वा                |    |
| सर्वानितान् क्रमान् वक्ष्ये - विबिच्यैव पृथक्पृथक् ॥    | ९  |
| शृणुष्ववावहितोभूत्वा - सम्यग्बक्ष्यामि पार्वति          |    |
| आपदुद्धारकं दिव्यं - अयत्नफलदं नृणाम् ॥                 | १० |
| सर्वेषांचैव लोकानां - साधनं त्वभिलाषितं                 |    |
| विशेषतो नृपाणां च - शत्रुविद्रावकं महत् ॥               | ११ |
| स्तम्भनोच्चाटनोद्धारं - शांतिप्रज्ञाविबर्धनं            |    |
| अंगन्यास करन्यास - देहन्यास समन्वितम् ॥                 | १२ |
| नवन्याससमायुक्तं - सांगावरणपूर्वकम्                     |    |
| बहुमंत्रान्वितं यंत्र - मूलमंत्र पुरस्सरम् ॥            | १३ |
| प्रत्यर्थिकृत मंत्राग्नि - यंत्रौद्यामय नाशनम्          |    |
| पापशोकप्रशमनं - सर्वशत्रु विमर्दनम् ॥                   | १४ |
| ज्वरापस्मार रोगाणां - क्षयादीनां विशेषतः                |    |
| नाशनं स्मृतिमात्रेण - मंत्रराजप्रभावतः                  | १५ |
| राज चोर ग्रहादीनां - शमनं सुखवर्धनम्                    |    |
| चित्तशुद्धिकरं मोक्ष - दायकं सर्वसिद्धिदम् ॥            | १६ |
| रहस्यातिरहस्यं श्री - करं त्रैलोक्यदुर्लभम्             |    |
| रत्नेहाद्वक्ष्यामि ते मंत्रं - मंत्रसारं च त्व प्रिये ॥ | १७ |
| मामक प्रिय मत्यंतं - सर्वोत्कृष्ट मनुत्तमम्             |    |
| सर्वकामार्थदं राज्य - भोग श्रीकर मुत्तमम् ॥             | १८ |

|  |    |
|--|----|
| अवितर्क्यं मनिर्देश्यं - देवदानव दुर्लभम्<br>अद्विकास्यमिदं मंत्रं - सर्वशक्तिद मद्भुतम् ॥         | १९ |
| स्मरणादेव नश्यति - भूत प्रेत पिशाचकाः<br>विद्रवन्ति भयाद्भ्रान्ताः - शक्रस्ये वासुरादयः ॥          | २० |
| पठेद्वा धारयेद्धस्ते - पूजयेद्वापि पुस्तके<br>चोराग्निजं भयं नास्ति - बालरोग ग्रहादिकम् ॥          | २१ |
| नास्तिमारीभयं तत्र - सवत स्सुख माप्नुयात्<br>आयुरारोग्य सैश्वर्यं - पुत्रपौत्रादि संपदम् ॥         | २२ |
| लभन्ते जातकस्यास्य - पुस्तकस्याऽपि पूजनम्<br>मंत्रं यंत्रादि संहार - मपमृत्युं तरिष्यति ॥          | २३ |
| कालमृत्यु मतिक्रम्य - जीवेद्युक्तायुषं नराः<br>यो नित्यं जपते तस्य - सम्यग् वक्ष्यामि तत्फलम् ॥    | २४ |
| सेवका इव भूपालाः - दासीजन इवांगनाः<br>वश्या भवन्ति चावश्यं फलायते च शत्रवः ॥                       | २५ |
| नचोरादिभयं तत्र - नास्ति व्याधि मृगा द्युयम्<br>लाभास्ते सिद्धय स्सर्व - विधा हनुमदाज्ञया ॥        | २६ |
| नाभिदघ्नजले सम्यक् - जपेद्वा सिद्धिमाप्नुयात्<br>अयुतं जपतस्तस्य - भवेद्वै बंधमोक्षणम् ॥           | २७ |
| सलोककामदं सद्यः - शृणु पंचदशाक्षरम्<br>एतद्विज्ञानमात्रेण - सर्वशत्रुजयं भवेत् ॥                   | २८ |
| सर्वैश्वर्यकरं हृद्यं - सर्वकामप्रदं नृणाम्<br>खेचरत्वं च घटका - चाऽदृश्याऽचाऽपिचाऽजनम् ॥          | २९ |
| मृत संजीवनं पादु - कागितंच ददात्यसौ<br>पंचवक्त्रस्य हनुभा - नुक्तानुष्ठानकारिणः ॥                  | ३० |
| तस्मा त्सर्वं प्रयत्नेन - यंत्रोद्धारण पूर्वकम्<br>मंत्रं स्वरूपं विज्ञाय - यंत्रं चाऽपि विशेषतः ॥ | ३१ |

|  |    |
|--|----|
| हनुम न्मनुमुख्येषु - सर्वकामार्थ सिद्धये<br>इम मेव परं जप्यं - मंत्रराज मयोच्यते ॥   | ३२ |
| अथेदानीं जगत्पूज्यं - पंचवक्त्र हनुमतः<br>पंचाक्षरी महामंत्रं - षट्पल्लव समन्वितम् ॥   | ३३ |
| हरिं नृसिंहं पक्षीं ब्रं - वराहं तुरगाननम्<br>षट्पल्लवेन संयुक्तं - मंत्रमिष्टार्धदं नृणाम् ॥  | ३४ |
| पंक्तिश्छंदो ऋषिस्तस्य - ईश्वरः परिकीर्तितः<br>देवता पंचवक्त्राख्या - हनुमा म्बीजमैश्वरम् ॥  | ३५ |
| नृसिंहशक्ति रित्युक्ता - फट् कीलक मुदीरितम्<br>करांगन्यास मेवास्य - मंत्रेणैव सुविन्यसेत् ॥  | ३६ |
| शिरोवदनहृत्कुक्षि - गुह्यव्यापकमाचरेत्<br>मंत्राक्षर विधानस्य - न्यासं सम्यक्प्रकीर्तितम्<br>दिग्बन्धनंतु पूर्वेण - ध्यायेद्देवं समीहितः ॥ | ३७ |

ध्यानं :-

|  |    |
|--|----|
| बंदे वानर नारसिंह खगराट् - क्रोडाश्व वक्त्रांचितं<br>नानालंकरणं त्रिपंच नयनं - देदीप्यमानं रुचा<br>हस्ताब्जैरसि खेट पुस्तक सुधा - कुंभां कुशाद्रीन् हलं<br>खट्वांगं फणि भूसहं च दधत - गर्वारि दैत्यापहम् ॥ | ३८ |
| आथ मंत्रांतरं वक्ष्ये - स्वाहांतं प्रणवादिक्<br>हरिमर्कट मकंटाय - इत्युक्तं तन्मनुंस्मरेत् ॥   | ३९ |
| छंदोमात्रंतु जगती - पृथगुक्तं महेश्वरी<br>भेदमेवहि मंत्रस्य - तत्सर्वं पूर्वमंत्रवत् ॥   | ४० |
| एवंध्यात्वा जपेन्मंत्रं - नवलक्ष मिमं प्रिये !<br>पुरश्चर्याक्रमंचाग्रे - ह्युच्यते सर्वसंग्रहः ॥  | ४१ |
| अथ मंत्रांतरं वक्ष्ये - पंचवक्त्र हनुमतः<br>प्रत्यर्थिकारितस्यास्य - श्रुत्खलस्य विभेदतः ॥   | ४२ |

- आदौ प्रणव मुञ्चार्य - हरिमर्कटमर्कटः  
 मर्कटायापदंचोक्त्वा - परिलिख्यति लिख्यते ॥ ४३
- ततो भूमितलेत्युक्त्वा - यदि नश्यति नश्यति  
 ततो वामकरेत्युक्त्वा - प्रतिमुञ्चति मुञ्चति ॥ ४४
- अथ शृंखलिकांचोक्त्वा - मंत्रमेवं पठेद्यदि  
 अष्टोत्तरसहस्रेण - शृंखला मुच्यते नरः ॥ ४५
- मासत्रितयमुद्दिश्य - पठते नियत पुमान्  
 नामधेयपदक्षिप्त्वा - तद्विषु न्नाशयेध्रुवम् ॥ ४६
- षट्कोणे रिपुमालिख्य - कोणेष्वनलसंभवान्  
 बीजान्विलिख्य तद्बाह्ये - वायुबीजां समालिखेत् ॥ ४७
- अंगारेणैव संलिख्य - तद्यंत्रोपरिसस्थितः  
 मासमात्रं जपेन्मंत्रं - रिपुं नाशयति ध्रुवम् ॥ ४८
- अथेदानीं प्रवक्ष्यामि - पंचवक्त्र हनुमतः  
 मन्त्रोत्पत्तिं च छंदसि - देवताशक्तिकीलकान् ॥ ४९
- बीजं दिग्बंधनंचाऽपि - तत्प्रयोग पराक्रमान्  
 सतारकसितचादौ - समुञ्चार्यारिमर्दनम् ॥ ५०
- संबोधनपदंचोक्त्वा - मर्कटायेतिचोच्चरेत्  
 सपंचवक्त्रो हनुमान् - देवता परिकीर्तिताः ॥ ५१
- वराहबीज मुञ्चार्य - षट्पदंसमुदीरयेत्  
 योजये द्वह्निजायांतु - एषापंचदशाक्षरी ॥ ५२
- अस्य छंदोऽमृतविरा - डीश्वरो ऋषि रच्यते  
 सपंचवक्त्रो हनुमान् - देवता परिकीर्तिताः ॥ ५३
- बीजंच शिवबीजस्या - च्छक्तिस्याद्बहनांगनाम्  
 नवात्रिषट्पदंचैव - कीलकं समुदीरितम् ॥ ५४
- शत्रुसंहार एवास्य - विनियोग मुदाहृतम् ।  
 षड्भिर्भंत्रपदैर्प्यास - द्वयं मंत्रांगमूलतः ॥ ५५

|   |    |
|---|----|
| कृत्वा दिग्बंधनं पश्चा - दक्षरन्यास माचरेत्<br>उत्पत्ति स्थिति संहार - न्यासान् कुर्या द्विचक्षणः ॥       | ५६ |
| मूलमंत्राक्षरे णैवं - मूलवर्णस्य सक्रमात्<br>शिरौ ललाट नेत्रास्य - कंठहृन्नाभि गुह्यके ॥                  | ५७ |
| भुजपाश्वर्षे च पादे द्वे - सर्वेण व्यापकं न्यसेत्<br>न्यासमेवं क्रमात्कृत्वा - ध्याये दृद्रात्मकं हरिम् ॥ | ५८ |

ध्यानं :-

|  |    |
|--|----|
| ध्याये द्वा नर नारसिंह खगराट् क्रोडाश्ववक्त्रांचितं<br>फालाक्षस्फुट पंचवक्त्र रुचिरं - बालार्ककोटिद्युतिं<br>हस्तैश्शूल कपाल मुद्गर हलं कौमोदकी भूरुहं<br>खट्वांगांकुश पाश पर्वत धरं पीतांबरं वानरम् ॥ | ५९ |
| पंचवक्त्रं महाभीमं - त्रि पंच नयनैर्युतम्<br>दशभिर्बाहुभिर्युक्तं - सर्वकामार्थं सिद्धिदम् ॥   | ६० |
| पूर्वे तु वानरं वक्त्रं - हृदयं सूर्यसन्निभम्<br>सूर्यकोटि कराभासं - कपिवक्त्रं सुतेजसम् ॥   | ६१ |
| दंष्ट्राकरालवदनं - भृकुटीकुटिलेक्षणम्<br>अस्य प्रदक्षिणं वक्त्रं - नारसिंहं महाद्भुतम् ॥   | ६२ |
| अत्युग्रतेजोज्वलितं - भीषणं भयनाशनम्<br>पश्चिमं गारुडं वक्त्रं - वज्रतुंडं महाबलम् ॥   | ६३ |
| सर्वरोगप्रशमनं - विषभूतनिवारणम्<br>उत्तरं सूकरं वक्त्रं - कृष्णदीप्तं नभोनिभम् ॥   | ६४ |
| पाताले सिद्धिदं नृणां - ज्वर रोगादि कृतानम्<br>ऊर्ध्वं ह्याननं घोरं - दानवांतकर परम् ॥   | ६५ |
| येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र - सर्वविद्या विनिर्ययुः<br>एतत्पंचमुखं तस्य - ध्यायता मभयंकरम् ॥  | ६६ |

- खड्गं त्रिशूलं खट्वांगं - पाशं मङ्कुशं पर्वतौ  
द्रुमं कौमोदकीं मुण्डं - दधानं हलमुत्कटम् ।  
द्वौ मुष्टिः संगतौ मूर्ध्नि - सायुधैर्दशभिर्भुजैः  
एताभ्यायुधजालानि - धारयन्तं यजामहे ॥ ६७
- दिव्यं माल्यांबरधरं - दिव्यं गंधानुलेपनम्  
पीतांबरधरं देवं - दिव्याभरणभूषितम् ॥ ६८
- प्रेतासनोपविष्टं तं - पञ्चवक्त्रधरं विभुम्  
विनियोगकरं विश्वं - मोहनं सर्वसाधनम् ॥ ६९
- सर्वरोगप्रशमनं - सर्वपापहरं गुरुम्  
सर्वशत्रुक्षयकरं - सर्वसामर्थ्यदायकम् ॥ ७०
- पञ्चवक्त्रहनुमन्तं - सर्वलोकैकपूजितम्  
एवंध्यात्वा जपेन्मन्त्रं - प्रत्यहं नियतं पुमान् ॥ ७१
- अष्टोत्तरसहस्रेण चापमृत्युतरिष्यति  
किं वक्तव्यमिहैवान्ये - प्रणश्यन्ति क्षुधामयाः ॥ ७२
- पापसंधाः प्रणश्यन्ति - चैकावृत्तैवतत्क्षणात् ॥ ७३
- वानप्रस्थो गृहीभिक्षुः - अज्ञानाद्गुरुदूषकः  
अनुक्तमन्त्रजापीच - सुरापीस्वर्णबचकः  
द्विरावृत्याच तत्पापं - हरत्येव नसंशयः ॥ ७४
- बुद्धिपूर्वं कृतौघेषु - ग्रस्तोऽथ गुरुतल्पगः  
भ्रूणहा गुरुनिदार्थी - मित्रघ्नो गुरुबचकः  
त्रिनाराभ्यासमात्रेण - पापराशिः क्षणाद्दहेत् ॥ ७५
- मन्त्रस्योच्चारणेनैव - विद्ववं त्यघसंचयाः  
आवृत्या षट्सहस्रस्य - सर्वव्याधिहरं परम् ॥ ७६
- भूतप्रेतपिशाचोद्य - भेतालब्रह्मराक्षसाः  
अष्टोत्तरशतावृत्या - व्याधयः पूर्वसम्भवाः ॥ ७७



एकाहिकं च द्व्याहिकं - त्र्याहिकं चतुराहिकम्  
 मासिकं ज्वर मत्युग्रं - सहस्रावृत्तिमात्रतः ॥ ७१  
 क्षयापस्मार कुष्ठाशं - भगन्धर महोदराः  
 कर्ण नेत्रोद्भ्रवान्रोगा न्सहस्रावृत्तितो हरेत् ॥ ७२  
 इत परन्तु देवेशि - विस्तरेण मयोच्यते  
 यन्त्रांगं मूलमन्त्रांगं - पञ्चवक्त्र हनूमतः  
 मूलमन्त्रञ्च वक्तव्यं - यन्त्रपूर्वार्थं मादरात् ॥ ८८

—: श्री हनुमन्माला मन्त्रः :-

ओं ह्रौं क्षौं ग्लौं हुं हसौं ओं नमो भगवते पञ्चवक्त्र हनूमते प्रकट  
 पराक्रमाक्रान्त सकल दिङ्मण्डलाय, निजकीर्ति स्फूर्ति धावल्य वितानाय-  
 मान जगत्त्रितयाय, अतुलबलैश्वर्य रुद्रावताराय, मैरावणमदवारण गर्व  
 निर्वापणोत्कण्ठ कण्ठीरवाय, ब्रह्मास्त्रगर्व सर्वकषाय, वज्रशरीराय, लंका  
 लङ्कार हारिणे तृणीकृताणंवलंधनाय, अक्षशिक्षणविचक्षणाय, दशग्रीव  
 गर्वपर्वतोत्पाटनाय, लक्ष्मण प्राणदायिने, सीतामनोत्सासकराय, राममानस  
 वकीर, मृतकराय, मणिकुण्डलमण्डितगण्डस्थलाय, मन्दहासोज्ज्वलमुखार  
 विदाय, मौंजी कौपीन विराजत्कटितटाय कनकयज्ञोपवीताय, कुर्वारवार-  
 कीर्लित लम्बशिखाय, तटित्कोटि समुज्ज्वलपीताम्बरालंकृताय, तप्त-  
 जांबूनद प्रभाभासुररम्य दिव्यमङ्गल विग्रहाय, मणिमय ग्रैवेयाङ्गदहार  
 किंकिकिरीटोदारमूर्तये, रक्तपङ्केरुहाक्षाय, त्रिपञ्चनयन स्फुरत्पञ्च-  
 वक्त्र खट्वाङ्ग त्रिशूलखड्गोग्रपाशांकुश क्षमाधर भूरुह कौमोदकी कपाल  
 हलभृद्दशभुजाटोपप्रतापभूषणाय, वानरनृसिंह ताक्ष्यवराह ह्यग्रीवानन  
 धराय निरकुशवाग्बैभवप्रदाय, तत्त्वज्ञानदायिने, सर्वोत्कृष्टफलप्रदाय,  
 सुकुमार ब्रह्मचारिणे, भरतप्राण संरक्षणाय, गम्भीर शब्दशालिने, सर्वपाप  
 विनाशाय, रामसुग्रीवसन्धानचातुर्यं प्रभावाय, सुग्रीवाह्लादकारिणे, वालि  
 विनाशकारणाय, रुद्रतेजस्विने, वायुनन्दनाय, अञ्जनागर्भर, नाकरामृत-  
 कराय, निरन्तररामचन्द्रपादारविन्द मकरन्दमत्तमधुकरायमाण मानसाय,  
 निजवालवलीकृत कपिसैन्यप्राकाराय, सकलजगन्मोदकोत्कृष्ट कार्यनिर्वाह  
 काय, केसरीनन्दनाय, कपिकुञ्जराय, भविष्यद्ब्रह्मणे ओं नमो भगवते  
 पञ्चवक्त्रहनूमते तेजोराज्ञे एहो हि देवभयं असुरभयं गन्धर्वभयं यक्षभयं

ब्रह्माराक्षसभयं भूतभयं प्रेतभयं पिशाचभयं विद्रावय विद्रावय, राजभयं  
 चोरभयं शत्रुभयं सर्पभयं वृद्धिकभयं मृगभयं पक्षिभयं क्रिमिभयं कीटक  
 भयं खादय खादय ओं नमो भगवते पञ्चवक्त्र हनूमते जगदाचर्यकरशौर्यं  
 शालिने एह्ये हि श्रवणजभूतानां दृष्टिजभूतानां शाकिनी ढाकिनी कामिनी  
 मोहिनीनां भेताल ब्रह्माराक्षस सकल कूशमांडानां विषदुष्टानां विषम-  
 विशेषजानां भयं हरहर मथमथ भेदयभेदय छेदयछेदय मारय मारय  
 शोषयशोषय प्रहारय प्रहारय ठठठठ खखखख खेखे-धों नमो भगवते पञ्च  
 वक्त्र हनूमते शृङ्खलाबन्ध विमोचनाय उमामहेश्वरते गोमहिमावतार सर्व  
 विषभेदन, सर्वभयोत्पाटन सर्वज्वरच्छेदन सर्वभयभंजन, ओं नमो भगवते  
 पञ्चवक्त्र हनूमते कवलीकृतार्कमण्डल भूतमण्डल प्रेतमण्डल पिशाचमण्ड-  
 लान्निर्घाटयनिर्घाटय, भूतज्वर प्रेतज्वर पिशाचज्वर माहेश्वरज्वर भेताल-  
 ज्वर ब्रह्माराक्षसज्वर ऐकाहिकज्वर द्वयाहिकज्वर त्रयाहिकज्वर चातुर्दिनज्वर  
 पाञ्च-रात्रिकज्वर विषमज्वर दोषमज्वर ब्रह्माराक्षसज्वर भेतालपाश  
 महानागकुलविष निर्विषं कुरुकुरु झटझट दहदह-ओं नमो भगवते पञ्चवक्त्र  
 हनूमते कालरुद्ररौद्रावतार सवग्रह मुच्चाटयोच्चाटय अहअह एहिएहि दश  
 दिशो बंधवध सवतो रक्षरक्ष सर्वशत्रून् कम्पयकम्पय मारयमारय दाहय  
 दाहय कबलयकबलय सर्वजना नावेशय आवेशय मोहयमोहय आकर्षय  
 आकर्षय-ओं नमो भगवते पञ्चवक्त्र हनूमते जगद्गीत कीर्तये प्रत्यधिदर्प  
 दलनाय परमन्त्रदर्प दलनाय, परमन्त्र प्राणनाशाय आत्ममन्त्र परिरक्षणाय  
 परबलं खादय खादय क्षोभय क्षोभय हारयहारय त्वद्भक्त मनोरथानि  
 पूरयपूरय सकल संजीविनीनायकवरं मे दापयदापय । ओं नमो भगवते  
 पञ्चवक्त्र हनूमते ओं ह्रीं क्ष्रौं क्ष्म्र्यौं ग्लौं ह्रसौं श्रीं ख्रीं घ्रीं भ्रौं  
 क्लीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः हुंफट् खेखे हुंफट् स्वाहा । ८

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेय संवादे

श्री हनुमन्माला मंत्रादि विवरणनाम

पञ्चविंशतितमः पटलः

\* \* \*

# श्री पराशर संहिता

षड्विंशतितमः पटलः

∴ श्री हनुमन्मन्त्र पुरश्चरण विवरणम् ∴-

श्री पराशरः

श्लो॥ यस्तृणीकृत ब्रह्मास्त्र - सारस्सर्व सुरार्चितः  
शौर्यसर्वकष प्रज्ञा - स्तं वन्दे वायुनन्दनम् ॥

ईश्वर उवाच :

अथात स्संप्रवक्ष्यामि - पुरश्चर्याक्रमं प्रिये!  
श्रुणुष्वैकाग्रचित्तेन - गोप्यं लोकोपकारकम् ॥  
पुरश्चर्या विधानेन - विना मन्त्रं न सिध्यति  
तस्मात्कार्या पुरश्चर्या - देशकालादि मन्त्रतः  
पुरश्चर्या विधीयन्ते - श्रुणु वत्स शुभप्रदम् ॥  
मूढादिसंयुतं कालं - परित्यज्य दृढव्रतः  
परिशुद्ध शुद्ध काले - स्वस्थचित्तो जितेन्द्रियः ॥  
आलोक्य शुद्धकालादीन् - पुनश्चर्या मुपक्रमेत् ।  
ग्रीष्मकालेतु सन्तापे - वर्षाकालांबु मध्यमे  
शीतकाले प्यटव्यां तु - तत्र सिद्धि भवे न्नुषाम् ॥  
ग्रीष्मकालेतु मध्याह्ने - वर्षाकाले द्विसंध्ययोः  
शीतकाले प्यर्धरात्रौ - जापकस्येष्टसिद्धिदा ॥  
वसन्ते गहने याप्ये - ग्रीष्मर्तौ पर्वतोपरि  
वर्षाया मूषरक्षेत्रे - शर त्पुलिनमध्यमे ॥  
हेमन्ते सलिले मध्ये - शैशिरे सिकतास्थले  
ऋतु ष्वेवं फलं ज्ञात्वा - प्रयत्नेन जपेत्सुधीः ॥  
चैत्रमासेऽर्थं हानिस्स्यात् - व्याधिना पीडितो भवेत्  
वैशाखे भूमिलाभस्स्यात् - ज्येष्ठे तु मरणं विदुः ॥

- बन्धुनाशन माषाढे - नभ स्याद्युष्करं भवेत्  
 पुत्रहानिर्भाद्रपदे - स्या दाश्वीजे न वृद्धिकृत् ॥ ११
- कार्तिके वश्य माकर्ष - मार्गशीर्षे शुभावहम्  
 स्थाननाशाश्च पौष्ये च - माघमासोऽर्थलाभदः ॥ १२
- फाल्गुने पत्निहानिश्च - एवं भासफलं विदुः  
 सौम्येष्टकार्यं सिध्यर्थ - प्रजपे दुत्तरायणे  
 मारणा द्युग्नकार्यार्थ - प्रजपे दक्षिणायने ॥ १४
- स्तम्भनं चैव हेमन्ते - शैशिरे मारणं विदुः  
 आकर्षणं वसन्ते स्यात् - ग्रीष्मे विद्वेषणं विदुः ॥ १५
- उच्चाटनस्स्याद्वर्षर्तौ - वश्यं च शरदि स्मृतम्  
 प्रजपेत् सर्वमन्त्राश्च - सर्वतुषु मुमुक्षुवः ॥ १६
- एवं ऋतुफलं ज्ञात्वा - ज्ञेयं दिनफलं ततः  
 प्रतिपद्विघ्नकारी स्यात् - द्वितीयाभीष्टदायिका ॥ १७
- तृतीया विजयप्राप्तिः - चतुर्थी फलहानिकृत्  
 पञ्चम्या मिष्टसिद्धि रक्ष्यात् - षष्ठि तूच्चाटनप्रदा ॥ १८
- सप्तमी कार्यकारी स्यात् - अष्टम्यां मोहनं विदुः  
 विद्वेषणं नवम्यां तु - दशमी वश्यकृत्परम् ॥ १९
- एकादशी ज्ञानदा च - द्वादशी त्वर्थकृत्परा  
 सर्वसिद्धि स्त्रयोदश्यां - शतवृद्धि चतुर्दशी ॥ २०
- आकर्षणं पौर्णमास्यां - अमावस्यांतु मारणः  
 उपरागादि संक्रान्तौ - षुष्करेषु यथा तथा ॥ २१
- मंत्रसिद्धि भवेन्नूनं - सत्यं सत्यं मयेरितम्  
 सूर्योदयं समारभ्य - घटिका दशकं क्रमात् ॥ २२
- वसन्त ग्रीष्म वर्षर्तु - शरद्धेमन्त शैशिराः  
 पुरश्चर्योपदेशानां - योगेषु शिवरात्रिषु ॥ २३

- न तिथिर्न च नक्षत्रं - न मासो नाऽपि चार्वाणं  
न मंत्रः शुभदः प्रोक्तः स्वयमाहूय दीयते ॥ २४
- एवं दिनफलं ज्ञात्वा - ज्ञेयं वारफलं ततः  
मन्त्र स्यारम्भणे भानु - वासरो वश्यकृत्परः ॥ २५
- इन्दुवारे तु मोक्षस्स्यात् - भौमे मारण मुच्यते  
स्तम्भनं सौम्यवारे स्यात् - गुरौ चाकर्षणं विदुः ॥ २६
- विद्वेषणं भृगोवरि - स्तम्भनं रविनन्दने  
एवं वारफलं ज्ञात्वा - ज्ञेयं कालफलं ततः ॥ २७
- उदयं याम पर्यन्तं - हेमन्ते स्तम्भने जपेत्  
शैशिरे प्यस्तमानादि - द्वियामे मारणे जपेत् ॥ २८
- द्विया माद्यन्त माकर्षे - वसन्ते प्रजपे त्सुधीः  
तृतीयप्रहरे ग्रीष्मे - जपे द्विद्वेषकर्मणा ॥ २९
- वर्षागमे चतुर्यामि - जपे दुच्चाटनं बुधः  
अर्थरात्रौ शरत्काले - प्रजपे द्वश्यकर्मणि । ३०
- मध्याह्ने सर्वऋतुषु - मोक्षार्थी प्रियतो जपेत्  
नंदा भानु सुतोपेता स्तम्भनेऽतिप्रशस्यते  
भद्रेन्दुगुरुणायुक्त वश्यकर्मणि शस्यते ॥ ३१
- जया भृगुसुतोपेता - प्रशस्ता कर्मणीरिक्ता  
रिक्ता भूमिसुतोपेता - शस्ता मारणकर्मणि ॥ ३२
- पूर्णं सोमबुधोपेता - प्रशस्ता शुभकर्मणि  
दुष्टं तिदृक्षवारेषु - मारणोच्चाटनादयः  
मन्त्राङ्गमेषु सर्वेषु - प्रशस्ता शङ्करोदिता ॥ ३३
- सौम्यर्क्षं तिथि वारेषु - सौम्यकर्म प्रशस्यते  
सिध्यति सर्वकार्याणि - संक्रांति ग्रहणादिषु ॥  
संशोध्यैवं प्रकुर्वीत - मांत्रिकास्तत्त्व वेदिनः ॥ ३४

- पूर्वाह्णे वश्यपुष्ट्यर्थ - मध्याह्णे स्तम्भने जपेत्  
मोक्षे शांतौ चार्थरात्रौ - ततोर्ध्वं सर्वकर्मणि ॥ ३७
- एवं कालफलं ज्ञात्वा - ततः कल्पोक्तमार्गवत्  
अनुक्त कालाद्युक्तस्यात् - पुण्यकाले समागते ॥ ३८
- पुरश्चर्योपदेशादौ - मान्त्रिकोऽर्वण पूर्वकम्  
सर्वानितान्विदित्वाथ - स्थल ज्ञात्वा समाहितः ॥ ३९
- शिवालये नदीतीरे - पर्वताग्रे जलाशये  
गोगृहे तुलसी बिल्व - समीपे शक्तिं मन्दिरे ॥ ४०
- स्मशाने चान्तरिक्षे च - पाताले च गवाङ्गणे  
पुरग्राम महातीर्थे - सागरे सिन्धुसङ्गमे ॥ ४१
- विष्णुवालये महोद्याने - स्वगृहे विजनेऽपि च  
सिद्ध साध्य सुसिद्धारीन् - संशोध विधिवत्पुनः ॥ ४२
- कूमं चक्रानुसारेण - गुहायां विजनस्थले  
शुद्धे स्वाभिमते रम्ये - निर्बाधे निरुपद्रवे ॥ ४३
- स्थित्वाथ दोषरहिते - शुक्ल पक्षे शुभे दिने  
चन्द्रताराबलोपेते - विध्युक्तं स्नानमाचरेत् ॥ ४४
- भौमं वारुण माग्नेयं - वायव्यं दिव्यमेव च  
कापिलं मात्र माकाशं - नवनीतं च मानसं  
एते दशविधा स्नानाः - तेषु मानसं मुत्तमम् ॥ ४५
- तत्तत्कालोक्त विधिना - तदुक्त स्नानमाचरेत्  
नद्यादि सलिलस्नानं - अभ्यङ्गं तैरलंकृतः ॥ ४६
- मन्त्रोदकेन संप्रोक्ष्य - स्थलशुद्धिं विधाय च  
माङ्गल्यबसनोपेत - सुदर्शनं मथोपरि ॥ ४७
- ध्यात्वाथस्वगुरुं क्षेत्र - पालकं चैव संस्मरन्  
ताभ्या माज्ञापितस्तत्र - संप्राथ्म्येवाथ मेदिनीम् ॥ ४८

|   |    |
|---|----|
| भूतापसर्पणं कुर्या - तारा शक्त्यनलाक्षरैः         |    |
| एवं कृत्वातु विधिव - त्सम्य गासनपूर्वकम् ॥        | ४९ |
| तत्तदुक्तानुसारेण - फलं त्वे वासनादयः             |    |
| अनुक्तासन मासीनः - प्रजपे न्मंत्रविन्मनुम् ॥      | ५० |
| तस्यायुः क्षीयते पत्नी - हानिं विघ्नं च विंदति    |    |
| तस्मादुक्तासने ष्वेव - जपन्ते मन्त्रसाधकाः ॥      | ५१ |
| अतोह्यासन भेदानि - प्रपद्ये त्वं श्रुणु प्रिये ॥  | ५२ |
| चतुरश्रं दृढतरं - समीचीनकृतं मृदु                 |    |
| हस्तमात्रमपि स्वच्छं - तं देवास्तरणं विदुः ॥      | ५३ |
| तादृ गासन मासीनो - जपेन्मंत्र मनन्यधीः            |    |
| स्तंभनोच्चाटने प्रोक्तं - गोचर्मण्युष्ट्रचर्मणि ॥ | ५४ |
| अश्वचर्मणि विद्वेषं - मारणं महिषाजिने             |    |
| सौभाग्य सैणवं चर्म - मोक्षश्री व्याघ्र चर्मणि ॥   | ५५ |
| ज्ञानं कुशासने सौम्ये - मोक्षदं वसनासने           |    |
| निष्फलंचासने दारोः - यशोहानि स्तृणासने ॥          | ५६ |
| दुःखं क्षित्यासने प्रोक्तं - रोगस्यादूषदासने      |    |
| अज चर्मासने वश्यं - आकर्षं कम्बलासने ॥            | ५७ |
| लभन्ति सिद्धय स्सर्वाः - चित्रकम्बलविष्टरे ॥      | ५८ |
| गज वानर भल्लूक - बिडाल शिवकृत्तिषु                |    |
| मोक्ष वारण विद्वेष - व्याधि विद्रावणादिकान् ॥     | ५९ |
| कुर्वन्ति श्वान मनुज - खर कृत्तिषु मारणम्         |    |
| विद्वेषे मारणे चोक्तं - शकेशकृतासने ॥             | ६० |
| वस्त्रं कृष्णाजिनं चैव - कुशासन मनुत्तमम्         |    |
| बस्ताजिनं कम्बलं च - व्याघ्रचर्म शुभावहम् ॥       | ६१ |
| ब्राह्मणोचित मित्याहुः - कृष्णाजिन कुशासने        |    |
| उक्तासने समासीनः - प्रजपे न्मंत्रविन्मनुम्        |    |
| वर्जये दासनं मन्त्री - दारिद्र्यं व्याधिदुःखदम् ॥ | ६२ |

|   |    |
|---|----|
| वीरासने स्तंभने स्या - दुत्तानं मारणे विदुः<br>मारण स्तम्भ नोच्चाटा - द्युग्रकर्मसु सर्वतः<br>मांत्रिकैश्च प्रयोगज्ञैः - कापालासन मुच्यते ॥ | ६३ |
| आसनानां फलं ज्ञात्वा - सम्य गासन संस्थितः<br>विकलीकृत चित्तस्थः - श्वसन् क्षुभित सङ्गतः   | ६४ |
| अशुचिर्जनसंयुक्तः - प्रलपन् भक्तिवर्जितः<br>कदापि न जपे न्मन्त्रं - जपेद्यदि विनिष्फलम् ॥   | ६५ |
| एवं विज्ञाय शास्त्रोक्त - विधिनाच्छादितो व्रत<br>आच्छादनांबर चाङ्ग - लेपनं जपमालिका ॥   | ६६ |
| तिलकं चासनं चैव - हवनद्रव्य मेवच<br>तत्तत्फलानि दीयन्ते - रक्तपीत सिताऽसितैः ॥  | ६७ |
| रक्तमाकर्षणं प्रोक्तं - शांति मोक्षप्रदं सितम् ॥  | ६८ |
| प्राङ्मुखोदङ्मुखोभूत्वा - मोक्षार्थी जपमाचरेत्<br>प्राङ्मुखो वश्य मित्याहुः - मारणं यमदिङ्मुखे ॥  | ६९ |
| व्याघ्रासने समासीनः - प्राङ्मुखोदङ्मुखोऽपि वा<br>भस्मस्नानं ततःकृत्वा - योगशास्त्रानुसारतः ॥  | ७० |
| भूशुद्धिं भूतशुद्धिं च - गुरुवन्दन मेव च<br>हनुमन्मनुना कुर्यात् - दशदिग्बन्धनं क्रमात् ॥   | ७१ |
| पापपुरुषस्य दहन - माप्लावन मतःपरम्<br>कृतवैकपिण्डीकरण - मुक्तिमार्गाद्विचक्षणः ॥  | ७२ |
| प्राणप्रतिष्ठां कृत्वाथ - योगन्यास विधानतः<br>ऋषिच्छन्द करो मन्त्रो - मन्त्राद्यक्षर मंगुलिः  |    |
| हृत्सर्वाङ्ग व्यापकानि - नवन्यासाः प्रकीर्तिताः ॥   | ७३ |
| अन्तर्न्यास बहिर्न्यासौ - हनुमन्न्यासपूर्वकम्<br>बन्धन्यासं च षट्त्रिंशत् - कलान्यास पुरस्सरम् ॥  | ७४ |
| उत्पत्ति स्थिति र्साधार - न्यासं कृत्वा समाहितः<br>सोऽहंभावनया तिष्ठेत् - युक्तां गोपलव स्मुधीः ॥   | ७५ |



- ध्याननिष्ठा परः पूर्वं - मन्त्रोक्त न्यासपूर्वकम्  
सम्यगेवं विधानेन सम्यङ्मन्त्रं विशोधयेत् ॥ ७
- मृत सुप्तश्च मूकश्च नग्न शून्यो वृधाक्षरः  
भुजङ्गो वीर्यहीनश्च - कीलितश्चे त्यमीनव  
मन्त्रस्य दोषाः कथिताःतेभिन्नाभीष्टसिद्धिदाः ॥ ७
- शिरोहीनो मृतप्रोक्तो - सुप्तस्या दासनं विना  
विना न्यासेन मूकश्च - नग्नः पल्लववर्जितः ॥ ७।
- शून्यश्च जपकाले तु - शृणो त्यन्यस्य उच्यते  
उपदेशेन रहितो - ह्युच्यते स वृधाक्षरः ॥ ७१
- त्यक्तछन्दऋषि मन्त्रो - भुजङ्गः परिकीर्तितः  
न्यूनाधिकाक्षरै र्युक्तो - वीर्यहीन एस उच्यते ॥ ८०
- कीलित इचोद्यते मन्त्रं - अक्षरावाक्षरै र्युतः  
इत्येवं सर्वं मालोच्य - ज्ञात्वा सम्यक्सुविस्तरम्  
सर्वलक्षण संयुक्तं - गुरोर्मन्त्रं समाचरेत् ॥ ८१
- नमोन्तः प्रणवान्तश्च - शान्तिः पुष्टि विवर्धनम्  
स्वाहान्तस्सिद्धिदोऽभीष्टं - वश्याकर्षणमोहने ॥ ८२
- पुष्ट्यादि सन्धको वौषट् - पल्लवेन युतोमनुः  
हुंकार पल्लवोपेतः - विद्वेषे मारणेऽपि च । ८३
- फडुच्चाटे वषड्वश्ये - खे खे मारण कर्मणि  
स्वाहावाकर्षणे द्वेषे - हुं नमश्शागितरीरितः ॥ ८४
- स्तम्भने ठठ इत्युक्तः मन्यौ सम्मोहनेऽपि च  
इत्यादि पल्लवोपेतो - मन्त्रोजापक सिद्धिदः ॥ ८५
- 'खेखे' पल्लव संयुक्तो - मन्त्रोऽसौ मारणे विदुः  
भय विद्रावणे घोरे - यन्त्र तन्त्र विदारणं  
वषडंतो नमः प्रोक्तः - ग्रहबाधा निवारकः ॥ ८६
- फडं तूच्चाटने चैव - म त्राषट्पल्लवान्विताः  
पल्लवोस्त्यागमे मन्त्रे - पल्लवो नास्तिवैदिके ॥ ८७

|   |     |
|---|-----|
| पल्लवेन विना मंत्रो - जप्ये वेद समुद्भवः<br>नाप्युक्तो ब्रह्मणा पूर्वं - वेदमन्त्रस्य पल्लवः ॥        | ५८  |
| पल्लवस्सर्वमन्त्राणां - उत्तमाङ्गं तदंशकम्<br>सपल्लव मनुस्सर्व - कामदः परिकीर्तितः ॥                  | ५९  |
| सम्यगेवं हि विज्ञेयं - मन्त्रकाले मनुं जपेत्<br>गणेशार्कोदयात्पूर्वं - पूर्वार्द्धे सौरवैष्णवाः ॥     | ९०  |
| निशीधे शाक्तिकेया स्स्युः - दिनान्ते शैव भैरवाः<br>सारस्वत्याः प्रभाते स्युः - सदा हनुमदादयः ॥        | ९१  |
| ततोक्तकालं विज्ञाय - प्रजपे द्युक्तमालया<br>विशत्यष्टोत्तर शतं - तदर्थं वा तदर्थकम् ॥                 | ९२  |
| उत्तमं जापकै र्युक्तं - जपकालोक्त कर्मणि<br>अङ्गुष्ठाग्रेण यो मन्त्रं - जपेदङ्गुलि पर्वसु ॥           | ९३  |
| मन्त्राङ्गमहद स्योक्तं - मोक्षं लोकवशंकरम्<br>अङ्गुष्ठानामिका योगे - प्रजपे च्छांतिकर्मणि             |     |
| मध्यमाङ्गुष्ठ योगेन - जपे दाकर्षसिद्धये ॥   | ९४  |
| अङ्गुष्ठ तर्जनीयोगे - विद्वेषोच्चाटने जपेत्<br>कनिष्ठाङ्गुष्ठयोगेन - जपे न्मारण कर्मणि ॥              | ९५  |
| शतसाहस्रगुणितं - जपे दक्षरमालया<br>मन्त्रज्ञस्सम्यग्ग्राह्यः - विद्वन्तां कर्णमालिकाम् ॥              | ९६  |
| अवरोहेच्छतां भूयो - विसर्गान्तं यथाक्रमः ॥  | ९७  |
| अन्तर्विद्रुम भासमान भुजगी-सूत्रोक्त वर्णाज्वला<br>मारोहादवरोहतश्च समयीं - वर्णाष्टकाष्टोत्तराम्      | ९८  |
| हंसब्रह्मविधेय मेरुशिखरीं - श्रीमातृकाक्षावलीम्<br>विद्यां नौमि विचित्रमंक्रजमनी-बोधैक दीपाङ्कुराम् ॥ | ९९  |
| अष्टोत्तरशतं चाष्ट - सिद्धि स्स्याज्जपमालया<br>अष्टविंशति रुच्चाट-सप्तविंशति शान्तिदः ॥               | १०० |

- द्वात्रिंशद्धनराशि सस्या न्मोक्षार्थी पञ्चविंशतिः  
विद्वेषणे पञ्चदश - स्तम्भने षोडशोच्यते ॥ १०१
- पञ्चाशन्मारणे प्रोक्तो - वश्ये चाष्टौ प्रकीर्तिताः  
आकर्षणे चतुष्पष्टिः - इत्युक्ता जपमालिकाः ॥ १०२
- अनामिकाद्वयं पर्व - कनिष्ठादि क्रमेण तु  
तर्जनीमूल पर्यन्तं - करमाला प्रकीर्तिताः ॥ १०३
- तर्जन्यग्रे तथा मध्ये - योजयेत्सिद्धिमानसः  
चत्वारस्तस्य नश्यन्ति - आयुर्वित्तं यशो बलम् ॥ १०४
- आरभ्यानामिकायास्तु - मध्यमे पर्वणि क्रमात्  
तर्जनीमूलपर्यन्तं - जपेद्दशसु पर्वसु ॥ १०५
- मध्यमाङ्गुलि मूले तु - यत्सर्वद्वित्रयं भवेत्  
तद्वै मेघ विजानीया ज्जपेत्तं नाडिलङ्घयेत् ॥ १०६
- अङ्गुलीजप मेकैक - फलदं शतवृद्धिकृत्  
आरभ्यानामिकायास्तु - जपाद्दशगुणं भवेत् ॥ १०७
- पर्वेषु जपमाभीष्ट - सिद्धये न्यस्य पाठतः ॥ १०८
- राज्ञश्शतगुणं प्रोक्तं - जपेत्स्फटिकमालया  
तद्वत्प्रतिष्ठासिध्यर्थ - जपे न्मौक्तिकमालया ॥ १०९
- चतुर्विथार्थं सिध्यर्थ - जपे त्पद्माक्षमालया  
पद्मरागादि मणिभिः - मालया लोकवश्यकृत् ॥ ११०
- समस्त फलदा प्रोक्ता - पुत्रजीव्यक्षमालया  
नियमे नैव मोक्षार्थी - तुलसीमालया जपेत् ॥ १११
- वारिजैस्सिर निष्ट्यूत - लाक्ष शंखोक्षमालया  
निधान मक्षिणीसिद्धिः - सद्यो भवति निश्चितम् ॥ ११२
- स्तम्भ नाकर्षणार्थाय - हरिद्रामालया जपेत्  
स्त्री राज नर वश्यार्थी - कुन्दकुट्मलमालया ॥ ११३

- हरिद्रावस्त्र सम्पन्नो - जपे - दष्टोत्तरं शतम्  
सद्योवश्यकरं प्रोक्तं - माधवीमालया जपेत्  
निधिं पश्यत सुश्वेत गुञ्जा बीजाप्तमालया ॥ ११४
- विष भूत निवृत्त्यर्थ - नीलवस्त्रेण संयुतः  
विषतिंदुकबीजाप्त - मालया साधको जपेत् ॥ ११५
- पश्चाच्चनिंब बीजाप्त - मालया साधको जपेत्  
मोक्षार्थी लोक वश्यार्थी - ग्रथित रक्त तंतुना ॥ ११६
- दूरश्रवणदृष्ट्यर्था - जपे दक्षरमालया  
पोतया रक्तसूत्रेण - पद्मसूत्रेण वाथवा ॥ ११७
- अश्वदन्तेभदंतैश्च - सुसौम्य जपमालया  
शत्रुमुच्चाटये च्छीघ्रं - अथवा मारणं जपेत् ॥ ११८
- खर माहिष शूराणां - दशनैःकृत मालया  
शीघ्र मुच्चाटये च्छीघ्रं - शत्रुमारण कर्मणि ॥ ११९
- करांत्रसूत्र ग्रथितं - नृकरात्युग्र मालया  
श्मशाने जपतस्तस्य - सद्यस्स्या न्मारणं रिपोः ॥ १२०
- साध्यकेशेन संस्यूत - प्रदतंतोप्तमालया  
त्रिवार जपमात्रेण - सद्यो विद्वेषणं भवेत्  
अथवा व्याधिनाग्रस्त प्रत्यर्थी मृत माप्नुयात् ॥ १२१
- मृतिं प्राप्नोत्यरि स्सद्यो - जपे दङ्गार मालया  
यद्यत्कार्यसमृद्धि स्या - न्मांत्रिकाः प्रजपेन्निशि ॥ १२२
- जपमाला विशेषेण - तत्तत्फल मवाप्नुयात्  
एवं सर्वं विशेषज्ञः - निश्चला नन्यधी स्सुधीः ॥ १२३
- सम्यङ्माला गृही त्वाथ - द्व्यष्टलक्षजपं जपेत्  
संकल्पः प्रत्यहं पौर - श्चर्या दशसहस्रकम् ॥ १२४
- कुर्व न्विध्युक्तमार्गेण . नियमेनैव मांत्रिकः  
पुरश्चर्या दिनारभ्य तत्परंतु परित्यजेत् ॥ १२५

|   |     |
|---|-----|
| लशुनं लवणं तैलं - तिकतं क्षौद्रं रसायनम्<br>कार्लिंगः कतकं बिल्वं - आरनाल मुद्गम्बरम् ॥           | १२६ |
| माष मुद्गश्च सूपादि - चणका कोद्रवाशनः<br>असद्भाषण मन्योन्यं - क्रोधं दान परिग्रहम् ॥              | १२७ |
| असत्यभाषणं गीतं - ताम्बूलं गंधधारणम्<br>कौटिल्य कांस्य मभ्यंगं - अनिवेदित भोजनम्                  | १२८ |
| पराधीनत्व मशुचिः - देवतांतर पूजनम्<br>इतीदमुक्तं कर्तव्यं - यदिच्छेत्सिद्धि मात्मनः ॥             | १२९ |
| स्वाभीष्टसिद्धि माप्नोति - ह्युक्त मार्गानुवर्तकः<br>अगव्यं क्षीरदध्याज्य - तक्रं च परिवर्जयेत् ॥ | १३० |
| भिक्षाशी पायसाशी वा - फलपिष्टाशनोऽपि वा<br>पञ्चगव्यं हविष्यं वा - प्रिगगोदन मेववा ॥               | १३१ |
| अदुष्टमपि यल्लभ्यं - तद्भोक्तव्यं वरानने ॥  | १३२ |
| उदयाद्यस्तमानांतं - जपस्तिष्ठे दतद्रितः<br>विंशत्यष्टोत्तर शतं - सहस्रं वा तदर्थकम्               | १३३ |
| जपस्य दशमोभागः - होमस्तस्य दशांशकः<br>तर्पणात्तद्दशांशं तु - ब्राह्मणानांतु भोजनम् ॥              | १३४ |
| दवानल शिखामध्ये - यथानीहार बिदुवत्<br>तथैवं निष्फलं कर्म-होमं विप्रार्चनं विना ॥                  | १३५ |
| सत्यमेव मया चोक्तं - देवि! नात्रविचारगा ॥   | १३६ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे

पञ्चमुख हनुमन्मन्त्र पुरश्चरण विवरण नाम

षड्विंशतितमः पटलः

\* \* \*

# श्री पराशर संहिता

## सप्तविंशतितमः पटलः

-: पम्पा सरो वर्णनम् :-

श्री मैत्रेयः :-

- श्लो॥ स्वामि नन्त्र कृतार्थोऽहं पराशर जगद्गुरो  
 तवसन्दर्शना नूनं - जगत्कालत्रयोऽपि वा ॥ १
- सांसारिककथा ग्रीष्म - सन्तप्तं बहिरन्तरम्  
 मा मसिचद्भवा न्यस्मात् - आज्जनेय कथामृतैः ॥ २
- न केवल महं तीर्णो - दुस्तरं भवसागरम्  
 भवत्कृपाप्लवे नेदं - त्रितय जगता मपि ॥ ३
- यस्तु सदाहतो मूढः - त्यक्त्वा नाम मनूत्तमम्  
 सोऽयं भ्रमति ससार - सागरे भ्रम संकुले ॥ ४
- किं तु पम्पासरस्तीरे - हनुमान्मास्तात्मजः  
 कथ चिक्रीड सामात्यः - बालक्रीडाभि रद्भुतम् ॥ ५
- कानि दुष्टानि सत्त्वानि - शिक्षितानि महात्मना  
 कानि सत्त्वानि शिष्टानि - रक्षितानि महात्मना ॥ ६
- यत श्चान्यश्च कृत्स्नं मे - ब्रूहि पाराशर प्रभो  
 अज्ञातं त्रिषुलोकेषु - त्रिषुकालेषु वा त्वया ॥ ७
- न किञ्चि द्विद्यते ब्रह्मन् - हनूमत्कृपया मुने  
 अहीन दृश्यते तृप्तिः - आज्जनेय कथाश्रुतौ ॥ ८
- हनूमतः प्रसादो वा - पुण्यश्रीर्वा ममोत्तमा  
 सत्सङ्गस्य प्रभावो वा - कारणं किन्नबुध्यते ॥ ९
- शिष्ये मयि कृपां कृत्वा - भवत्पादनते भृणाम्  
 आख्याहि हनुमद्वार्ता - सर्वलोक शुभाबहाम् ॥ १०
- इति तद्वचनं श्रुत्वा - व्यासस्य जनको मुनिः  
 हृष्टरोम भव स्सद्यः - हनुमद्भक्त शेखरः ॥ ११

- उवाच वचनं धीमान् - मैत्रेयं मुनिसत्तमम् ॥ १२
- श्री पराशरः :
- कृतार्थोऽसि महाभाग - मां कृतार्थं करोषि च  
यद्विहाय तथा मह्यं - मनो वाक्काय कर्मभिः  
हनुमत्कथयाकालो - नीयतेऽर्हनिशात्मकः ॥ १३
- लोकयात्रानुसन्धान - व्यग्रभावमनो मृगः  
आञ्जनेयकथाप्रश्न - वा गुरासंयतो मम ॥ १४
- हनूमतः कथाप्रश्न - पुनाति चतुरो जनान्  
वक्तारं पृच्छकं श्रोतृन् - अनुमन्तार मेव च । १५
- धर्मार्थं काममोक्षाणां - चतुर्णां प्रतिभू रयम्  
अतोऽहं मविलंबेन - यधामति यथाक्रमम्  
हनूमतः कथा पुण्यं - वर्णयामि महामुने ॥ १६
- अस्ति पम्पासरो नाम - महापुण्य जलाशयः  
हेमाम्भोरुह राजौभिः - विकचाभिर्निरन्तरम् ॥ १७
- कूलद्वय समाकीर्ण - मुनिमण्डल मण्डितम्  
तीर्थैरमित संख्याकैः - निष्पन्नैर्वालुकांकितैः ॥ १८
- हंस सारस चक्राङ्ग - जल कुक्कुट शोभितम् ।  
विकसत्पद्मवृन्देषु - भ्रमद्भ्रमर संकुलम् ॥ १९
- हेम रम्भावन च्छन्न - प्रान्तदेशं मनोरमम्  
शैवालमञ्जरी लीन - महाफणि फणाद्भुतम् ॥ २०
- तत्रासने मृग त्राता - विहाय कलहंसज -  
विरोधिनोऽपि पतगाः - सखाय स्सहजा यथा ॥ २१
- तरवोऽपि सुपुष्पाढ्या - सर्वतुं फलसम्पदः  
विसप्रसून सञ्चारः - तत्र हसारिरसवः ॥ २२
- आह्वयन्तीव कन्दर्प - निनदः कलकलारवैः  
सकृत्परभृतालापैः - कामबाधाश्चकासते ॥ २३

- मत्तषट्पद सञ्चारा - कन्दर्पजयशब्दवत्  
श्रूयन्ते विततास्तत्र - मलयानिलशेखराः ॥ २४
- यूनां प्रणय संरंभाः - तत्र पुण्यसरोवरे  
क्षणात्शिथिलतां यान्ति - नीहाराइव भास्करे ॥ २५
- मुग्धा युवतयः पुण्यं - पीत्वा तज्जलमुत्तमम्  
कुल्येयमिति मन्यन्ते - स्वर्गा दमृत वाहिनी ॥ २६
- रअन्ते देवगन्धर्वाः - किन्नरा रसाप्सरोगणाः  
तत्र केचि न्महात्मानो - मन्त्रसिद्धास्तु वर्णिनः ॥ २७
- स्वरूपध्यान मास्ताय - ब्रह्मानन्दानुभूतयः ॥ २८
- गृहिणस्तु सदाचाराः - अग्निहोत्र परायणा  
स्वाध्याय निरताश्चासन् - आचरन्तोऽतिथिक्रियाः ॥ २९
- वानप्रस्थास्तु मुनयः - चतुष्पावक मध्यगाः  
ललाटान्तर मार्ताण्डाः - तप्यन्ते दुश्चरं तपः ॥ ३०
- यतयौऽपि महात्मानो - निरस्त द्वैतभावनाः  
विहित प्रणवाचाराः - मन्यन्ते स्वपरं सदा ॥ ३१
- एवं सर्वं समृद्धेऽस्मिन् - पम्पासरसि पावने  
हनूमांस्परिवारः - विहर्तुं चक्रु मे मुदा ॥ ३२
- गन्धमादन शैलाग्र - स्वर्णं रम्भावनाश्रयात्  
उष्ट्रमारुह्य हनुमा - न्हेमास्तरण भूषितम् ॥ ३३
- नवरत्नांचित स्वर्णं - किंकिणीजाल शोभितम्  
मञ्जीर कल्पनादेव - समाहूत सरच्छदम् ॥ ३४
- प्रलंबि चञ्चलोष्ट्राग्रं - तीक्ष्णकण्टक खादिनम्  
दीर्घग्रीवं महाकायं - ऊर्ध्वपृष्ठ सुवालधिम् ॥ ३५
- क्वणित स्वर्णं रत्नाढ्यं - हेमाचल समुन्नतम्  
अरोग मजरं पूतं - द्वादशाब्दं मनोजवम् ॥ ३६



|   |    |
|---|----|
| शिरीष षुष्प मृदुल - सर्वावयव शोभितम्<br>गंधमादनशैलस्य - धुनेरत्यद्भुतोद्भवम् ॥            | ३९ |
| शेषाहि फणि माणिक्यं - तेजःपुंज मिव स्थितम्<br>आजगाम कपिश्रेष्ठः - पंपातीरं मनोरमम् ॥      | ३८ |
| छत्रंधर्तो सुषेणो वै - मैद नीलौतु चामरौ<br>मागधो मागधाचारः - पुरोग र्गंधमादनः ॥           | ३९ |
| विविधा द्विविदो वाची - श्रावयत्वेन मंजसा<br>पवनः पादुके गृह्णन् - पदाभ्यासं निरीक्ष्यते ॥ | ४० |
| हित माचरते वृद्धो - जांबवान् नीति माचरन्<br>विनतो विनयग्राही - भुजालंबं ददौ तथा ॥         | ४१ |
| अन्ये वानरमुख्याश्च - गवाक्षप्रमुखा अपि<br>अनुजग्मुः कपित्रेष्ठं - अति संकटगामिनः ॥       | ४२ |
| कीर्तितान्यपदानानीः - गंधमादन वंदिना<br>सुखं सुश्राव हनुमान् - मधुवाणी पुनःपुनः ॥         | ४३ |
| एवं कृत सुखालापः - शृण्व न्मध्येपदं हरिः<br>अपि गम्य बिलंबेन - क्षणा त्प्राप सरोवरम् ॥    | ४४ |
| आसाद्य हनुमा न्पंपां - दद शैकाग्रमानसः<br>विस्मयं परमं लेभे - सरोवर निरीक्षणात् ॥         | ४५ |
| सरोदर्शन फुल्लास्यं - हनूमंतं कपीश्वरम्<br>उवाच वचनं धीमान् जांबवान् सुविचक्षणः ॥         | ४६ |
| सुवर्चलापते! पश्य! - पंपायाः रमणीयता<br>कादंबनिकुरुंबाब्जं - व्योमेव विततं सरः ॥          | ४७ |
| श्वेतगुंजा विराजं ते - तारा इव सुनिर्मलाः<br>शैवालपटला भांति - श्यामला इव नीरदाः ॥        | ४८ |
| सप्तवर्णच्छदा यस्मिन् - सपुष्पाः प्रतिबिंबिताः<br>सप्तर्षय इवाभांति - स्तोत्रानतयः पुरा ॥ | ४९ |

|  |    |
|--|----|
| ज्वल त्पावकसङ्काशो - रक्तोत्पल समुच्चयः<br>अङ्गारक इवाभाति - शुभस्थानगतो महान् ॥         | ५० |
| उदेत पुण्डरीकालिः - अदभ्र विशदप्रभा<br>प्रभातसमयो व्योम्नि - गुरोरेव महाद्युतिः ॥        | ५१ |
| हेमांबुजवनं पूर्वं - उद्बुद्धहृदयं पुरा<br>उदैति मण्डल भानोः - तथाऽरुण पुरस्सरम् ॥       | ५२ |
| पर्यंत विसर ध्वांत - विध्वंसन विचक्षणः<br>शुक्रोदय इवाभाति - कुमुदानां महोदयः ॥          | ५३ |
| शनैश्चरति पद्मेषु - मधुलोभान्मधुव्रतः<br>शनैश्चर इवाश्चर्या - च्छुभराशिगतास्पदः ॥        | ५४ |
| मुक्तामणिमय स्सूक्ष्मः - सर्पमौलि प्रतिष्ठितः<br>चन्द्रपुत्र इवाभाति - गगनाङ्गण राजितः ॥ | ५५ |
| इदं मृणाल माभाति - लूनपुष्पमुखा द्विजैः<br>अदृश्यमान पूर्वाङ्ग - केतुच्छायाग्रहो यथा ॥   | ५६ |
| ग्रासमानः फणीशं ख - शुभ्रमूषक संभ्रमात्<br>राहुग्रस्त यथा चन्द्र - माभाति विवृताननः ॥    | ५७ |
| चक्रश्चन्द्रभ मेने मे - शङ्खदशनं विह्वलः<br>फणितद्गृहवैलायां - भजन्ती प्रीतिमुत्तमाम् ॥  | ५८ |
| विष्टब्धनाल हेमाब्जं - समारोहति हंसकः<br>भक्तनायक पाथेस्य - वैजयन्त्यां भवन्त्यथा ॥      | ५९ |
| नीलोत्पलगुणोभाति - रक्तोत्पलगुणास्पदः<br>आरूढ गरुढारूढ - श्रियःपति रिक्व प्रभुः ॥        | ६० |
| नलिनीनयनाकारैः - नलिन्यै लीनिकांतिभिः<br>सुवर्चलेच कल्याणि - भवंतं प्रेक्षते मुहुः ॥     | ६१ |
| पम्पेयं वीचिबाहुभ्यां - कस्यैव पितरं स्वकं<br>चिरा त्समागतुं बन्धुं - भवन्त मुपगूहति ॥   | ६२ |

|  |    |
|--|----|
| पूर्वमे वेय मत्यर्थ - दर्शनीय गुणान्विता     |    |
| अधुनातु विशेषेण - भवदागमनात्प्रभो ॥          | ६  |
| नीरन्ध्रविटपच्छायाः - तरवो बहुपल्लवाः        |    |
| युगपन्मधुरास्वादैः - फलैः पुष्पैश्च संवृता ॥ | ६  |
| उपधायै तथा गुह्य - तरूनी तोवृतो मधुः         |    |
| संगुह्य फलपुष्पाणि - शाखाग्नौ रवरोहति ॥      | ६  |
| विरोधिनोऽपि सम्भूय - कन्दर्पाधिकृता इव       |    |
| तरवस्तन्वते रम्यां - पम्पाभुववनं तथा ॥       | ६  |
| अन्तराय बहुत्वेन - क्लिश्यमान स्थलान्तरे     |    |
| गणोऽपि योगिना मत्र - मन्त्रसिद्धि तु विदति ॥ | ६  |
| पीनापीन भरा गावो - दुह्यन्ते क्षीरसम्पदः     |    |
| शालयस्तु शिखाग्रेण - भवंतं प्रणता इव ॥       | ६  |
| चिरंत्यजाति बन्ध्यत्वं - तरवः पशवोऽपि वा     |    |
| प्रसूनैः प्रभवै र्वापि - भवदागम वैभवात् ॥    | ६  |
| इति निवेदित मुत्तम संपदं                     |    |
| सपदि जांबवतो हृदिभावयन्                      |    |
| अनुमुमोद गुणग्रहशेखरः                        |    |
| त मुपपुञ्जितवान् कपिशेखरः ॥                  | ७० |
| तदनु जाम्बवती पितर वचः                       |    |
| पवनसूतुरवोचत मंत्रिणम्                       |    |
| कति दिनानि वसाम सखे! वयम्                    |    |
| सरसि सर्वसमृद्धि मनोहरे ॥                    | ७१ |
| अनुवदन्ति परिश्रम माहितम्                    |    |
| कमिकुलानि फलांबुनिषेवणैः                     |    |
| परिहृता व्यभयंतु मदाज्ञया                    |    |
| वद सखे विहरन्तु निजेच्छया ॥                  | ७२ |

यथा न वार्येति मुनींद्रमण्डलम्  
चिरं कृतावास मिहाश्रमोत्तमे  
तथा चरेयुः दृढ सत्त्व विक्रमाः  
विमृश्य शाखामृगयूथपा रसखे ॥

७३

इति निदेश ममुष्य द्वितीयं वै  
करभ डिम्भतला दवतार्यं सः  
भुव मगा त्पनसाङ्गद लंबितो  
द्विबिददशित गम्यपथः पुरः ॥

७४

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
पम्पासरोवर्णनं नाम सप्तविंशतितमः पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

अष्टाविंशतितमः पटलः

:- श्री नारद हनुमत्संवादः :-

श्री मैत्रेयः :-

श्लो॥ ब्रह्मन्! पम्पां समासाद्य - कपिनाशानुयायिनः  
भर्तृराजावच श्रुत्वा - किमकुर्वन्ति तद्वद ॥

१

श्री पराशरः :

मैत्रेय श्रुणु वक्ष्यामि - क्रोडांतानि वनौकसाम्  
सर्वं भूतांतरावासो - हनुमान् प्रीतिमापयैः ॥  
गवाक्षश्शरभो नीलो - गवयो गन्धमादनः  
नलो गजः प्रहस्तश्च - दर्दुरो वेगवानपि ॥

२

३

- एते दश महावीराः - नीत्वा कोटीवनौकसाम्  
चेरुः पम्पापुरोदेशं - समृद्ध फलपादपम् ॥ ४
- ऋषभस्सुमुखश्चैव - पृथुदंधिमुखस्तथा  
ज्योति मुंखोऽपि सम्पातिः - रुध्रग्रीवस्तु केसरिः ॥ ५
- अष्टावेते महासत्त्वाः - नीत्वा लक्षानि पञ्च च  
पम्पाया दक्षिणे तीरे - विचेरु मंधु संभृतम् ॥ ६
- मरीचिः केसरी रम्भः - तरुणो गोमुखो महान्  
एते पञ्च हरि श्रेष्ठाः - सहस्राणि चतुर्दश  
गृहीत्वा वानर श्रेष्ठान् - विचेरुः पश्चिमे तटे ॥ ७
- सुवेषो हरिलोमश्च - द्विद्युद्दंष्ट्रो जितश्रमः  
अन्य इशतवलिश्चैव - चत्वारोऽमित विक्रमाः  
नीत्वा नवसहस्राणि - चेरु रुत्तरतरुस्तटे । ८
- जांबवत्प्रमुखा इचान्ये - परिवार्याजनासुतम्  
चेरुस्तत्र तदभ्यासे - फलपुष्पवनांतरे ॥ ९
- पम्पां फलफलान्म्र - पादपोद्यान शोभिनीम्  
शुद्धसत्त्व बनाकीर्णं - बह्व मन्यत मारुतिः ॥ १०
- केतुर्विजेतुं पुष्पाणि - दूरालक्ष्या च चम्पके  
प्रभो स्समक्षं संसृत्य - संघर्षा द्दुध्रुवुर्मिधः ॥ ११
- अन्ये ताभ्येव पुष्पाणि - गृहीत्वा तत्क्षणांतरे  
प्रतिज्ञां विदधीचक्रुः - अहं यूनां युवानिति ॥ १२
- समुद्धूय परेतानि - करस्थानि हृठोत्तरैः  
उद्धतानि गृहीत्वासु - तैरानर्चुः कपिप्रभुम् ॥ १३
- दृष्ट्वा कपिबर इश्रीमान् - त्रयाणां व्यावृत्ति तथा  
ननन्द परमोदारः - सर्वभूत दयापरः ॥ १४
- केचित्पक्वानि जम्बूनि - मधुराणि पृथून्यपि  
तस्मै निवेदयां चक्रुः - मनो वाक्काय कर्मभिः ॥ १५

- हनुमानपि विश्वात्मा - तद्रसं सूर्यवर्चसम्  
स्वगोचराच्च भक्ताना - मिव भक्तिममन्यत ॥ १६
- अन्ये समर्चयामासुः - अरुणैर्बंदरीफलैः  
संक्षिप्त निकटध्वांत - पद्मरागैरिव प्रभुम् ॥ १७
- फलानि भुक्तशिष्टानि - स्वय मर्चितवा न्प्रभुः  
प्रसादमिव भक्तेभ्यो - यथोचित मरिदमः ॥ १८
- अन्ये समर्पयामासुः - कदलीफलमञ्जरिः  
सुवर्णकेतकी पुष्प - मञ्जरीरिव भूयसीः ॥ १९
- मधूनि मधुरास्वादि - संभृतानि बहूभ्यपि  
अन्ये निवेदयां चक्रुः - गृहीत्वा तत्कृपारसम् ॥ २०
- अमृतास्वाद पूर्णानि - द्राक्षा चूतफलानि च  
खजूर पनसा न्यस्य - समानेषु बलीमुखाः ॥ २१
- मधूनि फलपुष्पाणि - घल्लवानि मृदून्यपि  
भक्तेभ्योऽपि ददौ श्रीमान् - फलानीव स्वकर्मणाम् ॥ २२
- स्वेक्षणायैव चूतेन - दर्शितां फलमञ्जरीम्  
अश्यादरेण जग्राह - स्वहस्ते नैव मारुतिः ॥ २३
- तत स्सन्निहिता स्सर्वे - जांबवत्प्रमुखा अपि  
परिवब्रुर्महात्मानां - मञ्जरी दर्शनेच्छया ॥ २४
- जाम्बवंत मुवा चेदं - हनुमान् भक्तवत्सलः  
रमणीय तथा तस्याः - विस्मयाविष्टमामसः ॥ २५
- अहोरूप मिदं पश्य - सौरभं वा निरन्तरम्  
माधुर्यं मधिकं चास्याः - सुखस्पर्शं सुख श्रुतिः ॥ २६
- पञ्चेन्द्रियाणि युगप - मञ्जरी सन्निधानतः  
एकत्र विषयादानात् - भजंते प्रीति मुत्तमाम् ॥ २७
- रमणीयतया चक्षू - मृदुत्वेन त्वगिन्द्रियम्  
रसनां मधुरत्वेन - सुगन्धे नैवनासिकाम् ॥ २८

श्रोत्रं सौरभभाकृष्ण - भृङ्ग झंकार सन्निभैः  
 इमां पुष्पां महारम्यां - को वा स प्रीति माप्नुयात् ॥ २९  
 सकृद्दर्शनमात्रेण - य दस्मान्प्रीणय त्यसौ  
 अनया सहकारोऽयं - जन्म साफल्य मश्नुते  
 स्वकीय मञ्जरी दान - तोषितावय मीदृशाः ॥ ३०

नारदागमनम् :

इति वदति सविस्मयं कपीन्द्रे  
 निजपरिवार पुरस्सरे पुरस्तात् ।  
 भुवनहित विविष्ट सौम्यभावः  
 समवततार न नारदोऽन्तरिक्षात् ॥ ३१

सित मणिवलयं मुमुक्षुधार्यम्  
 श्रवणतले स हि दक्षिणे दधानः  
 पवनदशचल द्गुणाभियोगाम्  
 निजमहतीं अनुसन्दधान चेता ॥ ३२

सूर्यैर्विब मधः किन्नु - ज्योतिषां मण्डलं किमु  
 अथोवा प्रजलज्वालं - तेजोवह्निर् महात्मनः ॥ ३३

उद्यत्तीव्रांशु बिंबक - वा निर्गच्छत्प्राग्बिहायसः  
 इति संशय मापन्नः - कपिवृन्दे तदुन्मुखे  
 केसरी नन्दनाभ्यासे - क्षणा दाविरभू न्मुनिः ॥ ३४

अवतीर्णं मुनिं दृष्ट्वा - सर्वे विस्मय मागताः  
 प्रत्यासन्नं तलस्तुत्य - मनुसन्धाय नारदम् ॥ ३५

हनुमान् सहस्रोत्तथौ - सन्त्यक्त्वान्य प्रयोजनम्  
 समश्चक्रे कपिश्रेष्ठः - नारदाय महात्मनः ॥ ३६

सामात्य स्सान्तरङ्गश्च - प्रदक्षिण पुरस्सरम्  
 लपवेश्य मुनिं श्रीमान् - घुप्पपरुलव संस्तरे ॥ ३७

- उपचारैर्बहुविधैः - प्रीणयामास मारुतिः  
यथाविधि यथा न्यायं शिष्टाचारन्तु पालयन् ॥ ३८
- मुनिं समर्चयामासुः - ब्रह्माण मिव वासवः  
ततोऽब्रवीन्मुनिश्रेष्ठं - उपबिष्टं सुबिष्टरे ॥ ३९
- कृताञ्जलि पुटो भूत्वा - मारुतिर्वदतां वरः ॥ ४०
- ब्रह्मन् सुदिन मद्यासी - दर्शनाद्भ्रूवतो मुने!  
स एव पुरुषप्राज्यो - यस्यस्यात्तवदर्शनम्  
कस्य वा श्रेयसे नस्यात् - अमोघ दर्शनं तव ॥ ४१
- शुभोदकं तु जन्तूनां पूर्वपुण्योत्कटाजितम्  
अधुना वर्षति श्रेयो - यथात्मानन्द भागभूत् ॥ ४२
- तपः प्रभाव सिद्ध्यर्थ - निस्तरङ्गान्त रङ्गिणाम्  
भवादृशां मदायत्तः - कश्चिदर्थो न क्षिद्यते ॥ ४३
- अतः प्रयोजन प्रश्ना - निरालम्ब स्त्वदागतिः ॥  
तथापि जगतां मन्ये - योगक्षेमानुसन्धये  
वृत्ति भवादृशां नूनं - परार्थो हि सतां गतिः ॥ ४४
- सर्वत्र कुशल किन्तु - शक्रादीनां सुपर्वणाम्  
रक्षोभिः कुटिल प्रज्ञैः - तपोभिल्लिब्धपौरुषैः ॥  
अत्युत्कटबलैः कश्चि - त्स्वाराज्यं न विहभ्यति ॥ ४५
- पृथिवी शासते कञ्चि - द्भूपा नीति पुरस्सराः  
अधर्मसक्रमः कश्चि - न्नादत्ते हि पदं क्वचित् ॥ ४६
- दत्तानि विधिवत्काले - हवीं ष्वादाय यज्विभिः  
देवमातृकदेशेषु - कश्चि द्रुषंति वासवः ॥ ४७
- सद्यश्चाप्रतिबन्धेन - प्रवहंत्यपि सागरम्  
ऋषयोऽपि महात्मानः - रक्षोभि निरुपद्रवाः ॥ ४८
- अथवा त्वद्विशेषेण - वक्तव्यमपि किञ्चन  
आदिश्यता मिदानीं नः - त्वदधीना वयं मुने! ॥ ४९



- प्रत्यग्दृष्टि प्रभावेन - ब्रह्मन् त्वव मनीषिणः  
 ब्रह्माण्ड मखिलं साक्षात् - पाणा वामलकं यथा ॥ ५०
- इत्युक्तवन्त मीशानं - जगता मञ्जनासुतम्  
 तुष्टा वोपनिषद्वाक्यैः नारदो मुनिसत्तमः ॥ ५१
- नारदस्तुतिः :
- आञ्जनेय नमस्तुभ्यं - संसारार्णव तारक!  
 प्रसीद जगतांनाथ - देवदेव नमोस्तु ते ॥ ५२
- त्वामामनन्ति श्रुतयः - पुरुषं प्रकृतेः परम्  
 महदादि विकारेभ्यो - विविक्तमपि मारुति ॥ ५३
- अकर्तारं मभोक्तारं - असङ्गं परमेश्वरम्  
 सत्यसन्धं महा सत्त्वं - भक्ताधीनं दयानिधिम् ॥ ५४
- ज्ञप्तिमात्र मुदासीनं - अद्वयानन्दरूपिणम्  
 भोक्तारमपि यज्ञानां - फलदातार मद्वयम् ॥ ५५
- त्रातारं सर्वलोकामां - संहर्तारं मपि प्रभो!  
 नमस्ते विश्वरूपाय - ज्योतिषां पतये नमः ॥ ५६
- अबाधित स्वरूपाय - पूर्णाय परमात्मने ॥  
 सूत्रात्मने नमस्तुभ्यं - सूक्ष्मरूपाय विष्णवे  
 शङ्करायादिदेवाय - योगिनां पतये नमः ॥ ५७
- ज्योतिरूपाय रूपाय - विरूपाय सुरूपिणे  
 भुवोर्भारारुताराय - दिव्यमङ्गल रूपिणे ॥ ५८
- सुवर्चलासमेताय - पार्वतीनन्दनाय च  
 नमो वेदान्तवेद्याय - शरण्याय नमोनमः ॥ ६०
- अहोचित्र महोभाग्यं - पम्पातट निवासिनाम्  
 तृणानां तरुगुल्मानां - मुनीनां मृगपक्षिणाम् ॥ ६१
- ध्वज वज्र सरोजाङ्क - भवत्पादाभिस्पर्शनात्  
 चिराय धन्यतां लेभे - तृणानि स्थावराण्यपि ॥ ६२

यत्ते पादतलस्पर्श - प्रायश्चित्त कृतार्थताम् ॥

संप्रार्थितापि बहुधा - ब्रह्माद्यैरपि दुर्लभा ॥

तरु गुल्म लता इचापि - फुल्ल पुष्प निवेदनैः

मुनयो दर्शनाद्योग - विधिनापि सुदुर्लभात् ॥

पदस्पृष्ट तृण ग्रासा प्रबला लालसा अपि ॥

सहवासतया चात्र - मृगा भेजुः कृतार्थताम्

पक्षिणः कलहंसाद्याः - श्राव्यैः कलकलारवैः

मनोविनोदकरणात् - कृतवन्तः कृतार्थताम् ॥

बंध्याः प्रसूताः पशवो मृगाद्याः

प्रसन्ननीरा मरुभूमयश्च

वृक्षाश्च सम्यक्फल पुष्परामाः

पम्पा प्रविष्टे पवमाननन्दते ॥

अहो पम्पा महापुण्या - मुद्रणानि पदाब्जयोः

दत्त स्पर्शानि नीरेषु - सैकतेषु विशेषतः ॥

इतिस्तवे नाभिमुखं स मारुति

शिवात्मकं पावक नन्दनं प्रभुम्

जगाद वाक्यं जगतां सुखावहं

दुरात्मभूभार लघूकृति मुनिः ॥

अवेहि सवत्र सुखं जनानां

कुतो विपत्ति शरणे त्वयि प्रभो !

कथं भवे दावरक त मीदृशां

देदीप्यमाने दिवि सूर्यमण्डिते ॥

अनन्तरूपाणि विभर्षि लीलया

विना परप्रेरणया हनूमान् !

सतां हि रक्षो विषये मनीषिणाम्

भवानि योगः पुनरुक्त एव ॥

- तथापि वाचालतया निवेद्यते  
मयास्य किञ्चि ज्जगतीपते तत्र  
अनन्यसाध्यं यदुदोहनं परैः  
अशक्यसंश्रान्वय मसंसृतं पुरा ॥ ७१
- आसी दसिर्नामदनो स्सुतो बली  
तपोभि राराधित पार्वतीपतिः  
तस्यां य मास्मे सुत औरसः खरः  
त्रिशूलरोमायित दन्ति विक्रमः ॥ ७२
- समा स्सहस्रं स चचार दुस्सहम्  
तपो गिरीशं प्रति गौतमी तटे  
ततश्च भूते ष्वदया मुपाददौ  
स्वयं बलोत्सेक तृणीकृतेतरः । ७३
- एष राक्षस शार्दूलः - पम्पाया मविदूरतः  
विषमाद्रौ कृतावासौ - भेदतेऽहर्निशं मुनीन् ॥ ७४
- अजय्यो देवगन्धर्वैः - वासवै रसुरै रपि  
अन्यैरपि सुदुर्धर्षः - सन्तापयति देवताः ॥ ७५
- बलाद्गृह्णाति रम्भाद्या - देवतास्त्री बलौद्धतम्  
अव जानाति देवर्षी - न्कश्यपादीन् महौजसः ॥ ७६
- दिवपाला द्राबिता तेन - त्याजित स्वाधिकारिणः  
निरीक्षे तन्मुखाब्जानां - स्व स्त्रीणां बिभ्यति स्वयम् ॥ ७७
- बहुनात्र कि मुक्तेन - सर्वतो निर्भयो प्यहम्  
तस्माद्भिभौमि दुश्शीलात् - तपोविच्छित्ति कातरः ॥ ७८
- तदत्र दीयतां दृष्टिऽहनूमन्! करुणानिधे!  
रक्षणे जगतां सद्यः - त्राता नास्ति त्वया विना ॥ ७९
- जहि त्रिशूलरोमाणं - लोकविद्वेषिण खरम्  
तदर्थो ह्यवतारस्ते - कञ्चि ज्ञानाम्यहं प्रभो! ८०

|   |    |
|---|----|
| पुरा बदरिकारण्ये - नरनारायणाकृतिः<br>भवान्बभूव भूतात्मा - स्वरूप ध्यानतत्परः ॥  | ८१ |
| तदा ब्रह्मादयो देवा - राक्षसेन समुद्धृताः<br>अनन्यशरणा स्सर्वे भवन्तं शरणं ययुः ॥   | ८२ |
| त्वामूचुस्ते महात्मानं - नरनारायणाकृतिम<br>बाधन्ते राक्षसाह्यस्मान् - निर्दयो घोररूपिणः ॥   | ८३ |
| अजेयः क्रूरकर्माणः - सुप्रसन्नः कथंचन<br>अस्मानुपद्रुहन् स्वामिन् - त्वमेव त्रातुमर्हसि ॥   | ८४ |
| इति सप्रार्थितो देवैः - अब्रवीत्तान्भवानपि<br>श्रुणुध्व देवतास्सर्बान् - वक्ष्यामि हित मुत्तमम् ॥   | ८५ |
| जातोऽह मीश्वरां गौर्या - हनुमान्नाम नामतः<br>अनिवार्यं बलश्रीमान् - वधिष्ये सर्वराक्षसान् ॥   | ८६ |
| इतःपरं भयं त्याज्य - सुखेन स्थातु मर्हथ<br>इति सलालितो देवाः - नरनारायणात्मना ॥   | ८७ |
| यथागत तथा जग्मुः - ध्यायन्तस्त्वां मनोऽब्रुजे<br>इति प्रति नुतं विद्वन् - पूर्वमेव दिवौकसान्<br>पालयस्व महाभाग - सत्यसन्ध नमोऽस्तुते ॥              | ८८ |
| इति हित मुपदिश्य विष्टपानां<br>रवि तनयापति मेत्य लोकनाथं<br>गतिमति मकृतान्यचैव ... ..   |    |
| मुनि रपि पङ्कजजन्मनः कुमारः ॥   | ८९ |
| सपश्यतां दिवि तथा वसुधामरेन्द्रः<br>निर्यापितोत्तम पराक्रम संक्रमाणाम्<br>उत्फुल्ल वक्त्र विनिवेदित कार्यसिद्धिः<br>आराध्य वायुतनयं त्रिदिवं जगाम ॥ | ९० |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेय संवादे  
श्री नारद हनुमत्संवादोनाम अष्टाविंशतितमः पटलः

# श्री पराशर संहिता

एकोनविंशतितमः पटलः

-: देहस्वासनम् :-

श्री मैत्रेयः :-

श्लो॥ पराशर नमस्तुभ्यं - जगदानन्द हेतवे  
सेतवे सर्वधर्माणां - सिधवे करुणांबुनाम् ॥  
पौरन्दरीं पुरिं प्राप्य - नारदो मुनिसत्तमः  
अकृतानन्तर किं वा - ब्रूहि मह्यं दयानिधे ॥

श्री पराशरः

रक्षः पीडित देवानां - रक्षणाय महामुनिः  
जवा दुपगतो रम्यां - सुधर्मा धर्मवत्सलः ॥  
कस्त्राता नोऽद्य भीतानां - उद्धरेदापदम्बुवेः  
अधिकुर्यात्परिष्वस्मान् - न्यधास्वः कः पुमानिह ॥  
पुरा संश्रुत्य भगवन् रक्षामिति दिवोकसः  
अस्मद्दौर्भाग्य सम्पत्त्या - सविस्मारः श्रियःपतिः  
अयथा कथ मश्माकं - दुरन्तास्यु विपत्तयः  
इति संचित्य मानानां - देवानां दुःखचेतसाम् ॥  
कथा कथयतां धीमान् - शनै रिव दिवोकसाम्  
त्रिशूलरोम्णः वीर्याणि - लोकदुःख करणि च  
स्मारं स्मारं अथा न्योन्यं - ज्ञाडिति त्रस्यतांसताम्  
पश्यतिस्म सदा शक्रं - प्रहसन्निव नारदः ॥  
इन्द्रोऽपि सहसोत्थाय - नारदागम विस्मितः  
चकार विधिवन्पूजां - आसनापण पूषकम् ॥  
इन्द्रः कृतांजलि भूत्वा - श्वेतवर्णमुखाम्बुजः  
सम्प्रगीवस्थल द्वाचा - नारद स्याग्रतो मुने ॥

- तस्थौ बाष्पैः प्रयुक्तस्सन् - दैत्यं पुत्र पराभवात् ॥ १०
- अजानं न्निव योगीन्द्रो - वैक्रुतं तु शचीपतेः
- प्रभुतां त्रिदिवेशाना - मिदं माह बृहस्पतिम् ॥ ११
- बृहस्पते! सुराचार्य! कथं मास्ते सुरेश्वरः
- पराजित इवाभाति - केन वापकृतं स्वयम् ॥ १२
- किं न्निमित्तं मिदं सर्वं - पृच्छतो ब्रूहि मे यथा
- इति वादिनि देवर्षौ - बभाषे गीष्पपि वैचः ॥ १३
- त्वया प्रत्यग्दृशा ब्रह्मन् - त्रिविधं तु शुभाशुभम्
- साक्षात्संदृश्यते नून - जगतां हितं काम्यया ॥ १४
- अद्यापि विकृतं घोरं - ज्ञातं मेव त्वया मुने
- तथापि सूच्यते किञ्चित् - ज्ञानतो मुनिसत्तम! ॥ १५
- अस्ति त्रिशूलरोमाख्यः - राक्षसो दृढविक्रमः
- शम्भोर्लब्धवरो भूत्वा - दुर्धर्षो देवदानवैः ॥ १६
- स वाधतेऽखिलान् लोकान् - इन्द्रं मेनुं विशेषतः
- अतस्त्रिविष्टपाधीशः - लज्जयावनताननः
- त्वया संभाषितुं नालं - स्तोतुं च भवतो गुणान् ॥ १७
- इतरे वरुणाद्यस्तु - कांदिशीका यथायथं
- न गृह्णन्ति हविर्देवा - असिपुत्रभयान्मुने!
- नित्यकर्माणि नष्टानि - तथा नैमित्तिका न्यपि
- श्रौतस्मार्ता न्यपि तथा - दूषितानि दुरात्मना ॥ १९
- तन्महोपद्रव प्राप्या - केन शाम्येन बुध्यते
- भव दागति मेवात्र - कांक्षते विबुधा अमी ॥ २०
- करुणार्द्रं मनस्कानां - परार्थं हि सतां गतिः
- भव दागमना देव - लब्धसंज्ञा पुरस्सराः
- प्राणंति ग्रीष्मसंतप्तौ - शीतवाताबुभिर्यथा ॥ २१
- भव - दागमं विस्त्रंभ - वशतः पुनरागताः
- एषां स्थैर्याय संयोगिः - भगवन्नुपदिश्यताम् ॥ २२

भवादृशाहि सर्वत्र - स्पष्ट एव मनीषिणः  
 निवर्तयन्ति दुःखानि - योजयन्ति सुखान्यपि ॥  
 त्रिशूलरोम दुष्टात्मा - केनोपायेन वध्यते  
 तमाचक्ष्व मुनिश्रेष्ठं - दुर्लभं जीवनं ततः ॥  
 आहूय प्रतिजानीहि - सर्वान्देवा न्भयाञ्चितान्  
 आपन्न रक्षणायैव - संभृतो वलयन्त्विति ॥  
 इत्याकर्ष्य गुरोर्वाक्यं - नारदो मुनिसत्तमः  
 नेत्राभ्या मश्रुपूर्णाभ्यां - नाल द्रष्टुंश्चीपतिम् ॥  
 ततस्तु धैर्यमास्ताय - नारदो विजितेंद्रियः  
 बाष्पं जलावसे केन - मार्जयामास पाणिना ॥  
 ततो नारायणं देवं - ध्यात्वा हरिपरायणः  
 देवान्भयदानेन - जीवयामास नारदः ॥  
 पुरा बृहस्पते! साक्षात् - लक्ष्मींशं शरणं गताः  
 तत्र तेन प्रतिज्ञातं - हनिष्ये सर्वराक्षसाम् ॥  
 आञ्जनेयावतारेण - संभवामि भुवस्थले  
 तदा भवंत स्सुखिनः - सर्वतो गिरुपद्रवाः ॥  
 इत्यादिश्य हरिश्श्रीमान् - देवो नारायण स्तथा  
 आञ्जनेयावतारेण - जातः संरक्षितु जगत्  
 स इदानीं कपिश्रेष्ठः - पम्पाया कानने शुभे  
 बालक्रीडाप्रदेशे तु - निगृह्णाति दुरात्मम् ॥  
 इम मेव दुरात्मानं - असिपुत्रं दुरासद  
 संहारयितु कामेन - हनूमन्त गतो स्म्यहम् ॥  
 रक्षोवधं समुद्दिश्य - बहुधा प्रार्थिता मया  
 मा मन्त्रवीत्कपिश्रेष्ठो - भक्त पालन तत्परः ॥  
 किमर्थं प्रार्थ्यते ब्रह्मान् - असिपुत्र वधस्त्वया  
 ममावतार स्सर्वोऽपिदुष्टानां निग्रहाय हि ॥

- शिष्टानां रक्षणार्थाय - विद्धि त्वमपि नारद!  
विशेषेणावतारोऽयं - हनुमान्लोकविश्रुतः ॥ ३६
- हन्तुं त्रिशूलरोमाणं - सर्वलोक भयावहम्  
देवतानां हितार्थाय - मद्भक्तानां विशेषतः ॥ ३७
- अञ्जनायाः फलं दातुं - तासां गर्भसम्भवात्  
इत्येव मवतारस्य - मुख्यं मेतत्प्रयोजनम् ॥ ३८
- त दत्र प्रार्थना ब्रह्मन् - पिष्टपेषणं सन्निभा  
अचिरादेव तं हन्ये - न भेत्तव्यं कदाचन ॥ ३९
- त्वमप्युज्जीवय ब्रह्मन् - हितवाक्यं सुधारसैः  
दुष्टदानवदावाग्नि - संतप्तां त्रिदिवीकसः ॥ ४०
- इत्यादिष्टोऽहमे वाद्य - आज्जनेयेन धीमता  
आगतोऽस्मि महाभाग! - दिवि देवसभां प्रति ॥ ४१
- अतो वै त्यज्यतां त्रासो - रक्षसो वरगवितात्  
आञ्जनेये सति प्राज्ञे - क्व भयं क्व पराभवः ॥ ४२
- इदानीं मेव दुर्बुद्धे - रसिपुत्रस्य रक्षसः  
श्रुणुध्वं वीर मत्पर्य - यूयं सगुरवस्सुराः ॥ ४३
- इत्युक्तं नारदश्श्रीमान् - तेषां प्रत्ययकारणात्  
जहार संशयं तेषां - हस्तविन्यस्तमस्तके ॥ ४४
- इति वादिनि योगीन्द्रे - प्रीतोऽभूत्पाकशासनः  
उद्ग्रीवत्फुल्लवदनः - त्यक्तगद्गदविस्वरः ॥ ४५
- तुष्टाव परमस्तोत्रे - नारदं मुनि सत्तमम्  
नारदस्य तु तद्वाक्यं - श्रुत्वा देवाश्च सूनृतम्  
जहर्षु विस्मिताश्चैव - तुष्टुवुश्च मुनीश्वरम् ॥ ४६



आश्वास्यचैव तु सुरान्विधिनन्दनोऽपि  
 विज्ञाप्य वायुतनयस्य महाप्रसादम्  
 अपृच्छ दैवतगुरुं प्रथमानुशिष्टं  
 लोकेश विष्टप मगाद्भुवनावनोत्कः ॥

४७

इति श्री पराशर संहितायां श्री पञ्चमुख हनुन्मन्त्र विवरणे  
 देवाश्वासनं नाम एकोन त्रिंशतितमः पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

त्रिंशतितमः पटलः

-: त्रिशूलबध प्रतीक्षणम् :-

श्री मैत्रेयः :-

श्लो॥ प्रयाते ब्रह्मतनये - नारदे मुनिसत्तम!

पम्पातीरे कपीन्द्रेण - किं कृतं वद सुब्रत!

१

श्री पराशरः

ततस्सु सपरीवारो - हनूमान्भूत भावनः

पम्पायाः कानने रम्ये - क्रीडमानो मुदं ययौ ॥

२

विचित्र फलपुष्पाणि - विचित्राणि सरांसि च

उत्फुल्ल पद्मकोशानि - पश्यन् रम्ये महाकपिः ॥

३

इतस्तत्र स्सहेलानि - वल्गितानि पृथक् पृथक्

चचार सुचिराकारः - सनीलो वायुनन्दनः ॥

४

मृगयायाः विहारेण - कलातदेहाः पिपासकाः

पम्पासरोजलक्रीडा - ममन्यत कपीश्वरः ॥

५

- केचि त्पिपास मत्यर्थं - उत्प्लुत्या च्छर्थं योजनम्  
 पेतुः पम्पासरोमध्ये - भृगुवतुंल मार्तयः ॥ ६
- केचि दुच्चतरं साल - मारुह्याति जवान्विताः  
 विवृत्य वदनाग्राणि - पेतु जंलजिघृक्षया ॥ ७
- अन्तर्जलं निमज्ज्यान्ये - पिबन्तश्च यथासुखम्  
 अन्तर्धृत्या मगम्याति - मुन्ममज्ज जलोदराः ॥ ८
- क्षिप्त्वा जलानि वालाग्रैः - केपु चिःकपियूधपाः  
 निमज्ज्या तर्जलेनैव - दुदुं वु भंयविह्वलाः ॥ ९
- केचि त्क्षिप्त्वा जलेनायैः - स्थिरीकृत्वा मनस्वकान्  
 पुनश्चचिक्षिवुस्तैस्तैः - कपयः समरहसः ॥ १०
- गण्डूषयान्ति के ष्वन्यैः - जलै जंलजवासितैः  
 आपदे पङ्क मुद्धृत्य - अगाधतलगामिनः  
 अन्या न्विलेपयामासुः - यथा चन्दन कर्दमैः ॥ ११
- अन्योन्याभिमुख गत्वा - जलस्यांतस्य केचन  
 आघातयन्ति पादेषु - मदोम्मतगजा यथा ॥ १२
- कक्षे कृत्वातु पीनाश्च - उदतोऽपि महास्वनः  
 अन्तर्जले चरन्तोऽन्ये - दष्टाः कक्षेषु तत्यजुः ॥ १३
- हठा दारूढवन्तोऽन्ये - स्कन्धेषु पृथुलोमसु  
 बाधा सप्राप्त कोपाश्च - तेऽपि तैर्मज्जिता जले ॥ १४
- इति क्रीडाविनोदेन - किञ्चित्कालं निनाय च  
 जलक्रीडा सुखास्वाद - निवृत्त मृगयाश्रमाः  
 उत्तस्थुः कपय स्सर्वे - पम्पायाः पश्चिमं तटम् ॥ १५
- सुवर्चलापति इश्रीमान् - - पम्पाया अपि दूरतः  
 सुश्राव सामगानानि - मुनीनां सत्रयागतः ॥ १६

यज्ञभु ग्यज्ञफलदः - हनुमान्साम गायिनः  
 आमन्त्रितो मन्त्रविधि - संप्राप्तो यज्ञवाटिकाम् ॥  
 आदिदेश स्वकान भृत्यान् - सर्वभूतदयापरः  
 संवादोत्र न कर्तव्यं - आश्रमे मुनिसेविते ॥  
 इत्यादिष्टाः क्रीन्द्रेग - कनित्रर्षाः परस्परम्  
 बृक्षशाखान् समालंब्य - तस्थु शिचत्रापिता इव ॥  
 सर्वभूतान्तरस्थोऽसि - निजभक्त परायणः  
 हनुमानपि शाखाग्रे - समलीयत सर्वदृक् ॥  
 अथांतरे महाकायः - क्रूर कर्मासि पुत्रकः  
 त्रिशूलरोमः निर्यातो - दैवाद्गहन गह्वरात् ॥  
 श्रुत्वा तु सामगानानि - राक्षसो लोककर्शनः  
 परुषं भीषणाकारो - भीषय स्व्यसदन् मुनीन् ॥  
 तेन नादेन संत्रस्ता - स्तप्त यज्ञाङ्ग साधनाः  
 बभूवु इशोकनिविष्णाः - असमाप्त क्रतूद्यमाः ॥  
 समागतो यथापूर्वं - विघ्नकर्तासिपुत्रकः  
 क्व गन्तव्य मिदानीं नः - विहाय क्रतु मुत्तमम् ॥  
 असमाप्तौ क्रतौ नूनं - सद्यः कर्ता विनश्यति  
 अथवा स्थीयते ह्यत्र - रक्षो नूनं वधिष्यति ॥  
 कस्त्रतानोऽद्य भीतानां - शरण्य इशरणार्थिनाम्  
 इति व्याकुलचित्तेषु - ब्राह्मणेषु क्रतूत्तमे ॥  
 सद्यः पपात स्रुग्भांडं - दैत्यः परमकोपनः  
 हाहेति प्रोचुसद्वेगात् - कश्यपाद्या महर्षयः ॥  
 अथासुरो मुनांप्राह - कोप संरक्त लोचनः  
 किमेत त्रिक्रयते कर्म - भवद्भिर्भीति वर्जितैः ॥  
 उपेक्ष्य मां क मुद्दिश्य - क्रियते मन्दबुद्धिभिः  
 मद्धिना वरदोऽन्यश्च - कोवाऽऽस्ते जगतांत्रये ॥

|   |    |
|---|----|
| ह्यते किमिदं वह्नौ - इन्द्राये त्यनलायच<br>वायवे वरुणायेति - स्वाहेति च मुहुर्मुहुः ॥   | ३० |
| एते त्रिशूल रोमाणं - जगदीशं न बुध्यते<br>खिलीकृताहि बह्वः - ऋतवो मर्दिना कृताः ॥  | ३१ |
| जानन्त्येष भवंतोऽपि - ह्यनुभूत मिदं पुरा<br>त्रिशूलरोम नामाऽयं - सद्योत्कर्षेण वर्तते ॥   | ३२ |
| ब्रह्मादय स्सुरेन्द्राश्च - मत्तो भीताः पलायिताः<br>उपद्रुता मया दैत्याः - इतरेषांतु का गतिः ॥  | ३३ |
| अद्य प्रभृति वो कार्यं - मकार्यं ध्रुव मीदृशम्<br>इति दंष्टादरोष्ठेन - दन्तान्कटकटाप्य च<br>तर्जिता मुनयस्सर्वे - तेन हुंकार पूर्वकम् ॥ | ३४ |
| इद माज्य मिदं पिष्ठं - कपालेषु च संस्कृतं<br>पुरोडाश पशूनां च - मह्यमेव प्रदीयताम् ॥  | ३५ |
| श्रुणुध्वं मुनयस्सर्वे - ममवावयं हितावहम्<br>मयि तुष्टे जगन्नाथे - यूय सुलभजीवनाः ॥   | ३६ |
| इत्युक्त्वा राक्षस श्रेष्ठः - श्रुण्वतां तु तपस्विनाम्<br>हविर्गृहीतकामोऽभूत् - पिशुनः पिशिताशनः ॥                                      | ३७ |
| हविर्बुभुक्षा मवगम्य रक्षसः<br>सर्वांतरस्थो भगवान्कपीश्वरः<br>इयेषु विघ्नं परिहर्तुं मासुरम्<br>पदेनवार्यं मुनियाग कर्मणः ॥             | ३८ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेय संवादे

त्रिशूलवध प्रतीक्षणनाम त्रिशतितमः पटलः

# श्री पराशर संहिता

## एकत्रिंशतितमः पटलः

∴ त्रिशूलरोम वध ∴-

श्री मैत्रेयः :-

श्ल॥ विघ्नशांति मभिप्रीत्या - मारुति लोकरक्षणः

अकरोत्कि वद स्वामिन् - यद्यस्ति मयि ते दया ॥

१

श्री पराशरः :

प्रसारयति हस्ताग्रं - हविभगिच्छया सुरः

निपतन्मूर्ध्नि वृक्षाग्रात् - कपीन्द्रो तस्य रक्षसः ॥

२

पतना द्वजसंकाशात् - कुक्षिस्थजगतः कपेः

दृष्ट्वा स्वरसनां दैत्यः - पपात धरणीतले ॥

३

पातयित्वा दुरात्मान - मुत्पपात पुनः कपिः

दैत्यो निवृत्तमूर्च्छसन् - दिशोदश विलोकयन् ॥

४

तं ददर्शान्तरिक्षस्थं - गतिलाघव संयुतम्

उत्पपाताथ दैत्योऽपि - तं देशं यत्र मारुतिः ॥

५

तमुत्पतंतं हनुमान् समीक्ष्य वै

जघान वालेन कठोरवक्षसि

त्रिशूलरोमाऽपि गृहीतवालधीः

निपातयामास सुवर्चलापतिम् ॥

६

अस्पृष्ट्वैव भुवं सद्यः पुनरुत्प्लुत्य मारुतिः

जगृहे कन्धरांतस्य - राहुश्चन्द्रमसं यथा ॥

७

निवृत्तनयनस्तेन - नासाभ्यां त्यक्तशोणितम्

आत्मानन्तु स नस्मार - दृढकण्ठग्रहेण सः ॥

८

तत्प्राणसंकटान्दृष्ट्वा - सर्वभूतदयापरः

स्कन्धं तस्यारुह्यथ - गलनाल विसृज्य सः ॥

९

विक्रमं कपिराजस्य - दृष्ट्वा मुनिगणा स्तदा  
 विस्मयं परमं जग्मुः ! दृष्टवन्तः परस्परम् ॥  
 इतरे कपय स्तूष्णी - मासन् हनुमदाजया  
 नचेलुर्नच सम्पेतुः - न विभ्यु नच बभ्रम ॥  
 निजस्कन्ध समारूढ - निपपातेहया कपिम्  
 कम्पयामास दुष्टात्मा - निजदेह स राक्षसः ॥  
 तथा प्यपतमानेऽस्मि - न्नथोमुख मथापतत्  
 पतमानन्तु तं दृष्ट्वा - कपिराजो महामतिः ॥  
 अपसार्य शनैः पश्चात् - जानुघातै रघातयत् ॥  
 ततः क्रुद्धो महाकायः - गृहीत्वा बालधौ कपिम्  
 भ्रामयामास संरंभ - त्सनालमिव पङ्कजम् ॥  
 ततो मुनिगणा स्सर्वे - भीत भीतयिवाभवन्  
 इंद्राद्या अपि देवा इव - संशयापन्नमानसाः  
 अतरिक्षे स्थितः प्रोचुः - भूयान्मारुतये शुभम् ॥  
 हनुमा न्विजयस्वेति - कुरु दुष्टवधं प्रभो  
 देवेभ्यः कुशलं भूयात् - ब्राह्मणेभ्यः शुभं तथा ॥  
 इत्येवं विविधास्तेषां - कपि इश्रुत्वा जयाशिषः  
 अद्यैव जगतां प्रीत्यै - वधिष्ये राक्षसं रिपुम् ॥  
 इतिमत्त्वा महाशूरो - पवने हिमवा निव  
 प्रवृद्धेतु कपिश्रेष्ठं - दुर्दमं तस्य बालधिम  
 ददश तीव्ररदनः - त्रिशूलाकृतिरोमवान् ॥  
 कपींद्रो रक्षसा दष्टः - पदाघात मघातयत्  
 ततस्तु राक्षसः क्रुद्धो - मुष्टिना समताडयत् ॥  
 दुर्दशमपि लोकानां - मनः पीडाकरं महत्  
 मल्लयुद्धं तयोस्तत्र - कृष्णचाणूरयो रिव ॥

|   |    |
|---|----|
| अयोधनसमाकारैः - मुष्टिभिश्च परस्परम्<br>प्रजहृत् रुरोदेशे - मस्तके च विशेषतः ॥  | २१ |
| अन्योन्य मुष्टिधातेन - शिधिलीभूत शल्यकौ<br>परस्परं प्रशंसन्तौ - मुष्टियुद्ध मतन्वताम् ॥   | २२ |
| हनूमा नतिस क्रुद्धो - यथा मति यथा बलम्<br>ताडयामास तं मूर्ध्नि - विदीर्णं ब्रह्मरंध्रकम् ॥  | २३ |
| दृढसंताडितो मूर्ध्नि - करुणां गिर मन्वतीत्<br>हा तात हा ममभ्रातः - हा माताहर्हिः च राक्षसाः<br>कपिना मारितो नून - मिति चितापरोऽभवत् ॥ | २४ |
| नायं शाखामृगो कश्चि - न्न देवो नच दानवः<br>अन्यथा कथ मेकस्य - प्रसरे न्मयि विक्रमः ॥  | २५ |
| देवाश्च दानवाश्चैव - पन्नगा अपि निर्जिताः<br>तिरश्चां फलजीवानां का कथा वनवासिनाम् ॥   | २६ |
| किंतु लोक हितार्थाय - कपिरूपो जगत्पतिः<br>लोक विद्वेषणो नूनं - मम प्राणहरो ह्ययम् ॥   | २७ |
| इति निश्चित्य मनसा - पलायन मथाकरोत्<br>विषमाग्निं ततःप्राप - राक्षसो भयविल्वलः ॥  | २८ |
| आञ्जनेयमयं सर्व - तस्याभू ज्जगतां त्रयम् ॥  | २९ |
| ततो दैत्यो भयावेशा - दनन्यशरण स्तथा<br>बहुमायो महाकायः - कृत्वा सूक्ष्मवपुस्तथा<br>सर्वत्र भय मां शक्य स्फाटिकं भृगु माविशत् ॥        | ३० |
| मार्गमाणोऽपि पुत्रं तं - हनूमान्लोककण्ठकम्<br>मृत्युद्दशा समाबुद्ध्या - स्फाटिकं समबुध्यत ॥   | ३१ |
| हनूमान्गान निपुणः - गानविद्याविशारदः<br>तो गुण्डक्रियागानैः अगायत महास्वनः ॥  | ३२ |

तेन गानेन पाषाणो - जलभावं जगाम सः  
ततस्सुस्त्राव सलिलं - शीतलं सर्वतोमुखम्  
समन्ता विव नीहारो - हिमवत्पर्वतोत्तमाम् ॥

३३

श्री मैत्रेयः :-

पुरा गुण्डक्रियां केन - पाषाणद्रविणीकृता  
श्रोतुकामय मह्यं त्वं - ब्रूहि पाराशर प्रभो ॥

३४

तुम्बुरुर्नारदश्चेति - द्वावेतौ गायकोत्तमौ  
सङ्गीत विद्याविषये - विवादं चक्रतुः पुरा ॥

३५

अन्योन्यविजयाशङ्कौ - हनूमन्त मुपागतौ  
ऊचतु स्तौ हनूमन्तं - नौ परीक्षस्व गायक ॥

३६

सर्वविद्याप्रवीण स्त्वं - गाने ष्वत्यन्त नैपुण  
तारतम्य परिज्ञाता - विज्ञान ब्रह्मसम्पदि ॥

३७

एवं तदुक्तो हनुमा - नब्रवीद्गायकौ उभौ  
वीणेय बृहती रम्या - कलावत्यपिनाकिनी ॥

३८

निधीयतांतु पाषाणे - कठिने पुरतस्स्थिते  
इत्मुक्त्या क्षिप्तवन्तौ तौ - वीणे द्वे तत्र गायकौ ॥

३९

ततो गुण्डक्रियां चक्रे - हनुमान्मारुतात्मजां  
विचित्रतानु सम्पन्नां सर्वभूतः मनोहराम् ॥

४०

तदा जलमयो जातः - पाषाण कठिनोऽपिसन  
निमग्ने ते उभे वीणे - पाषाणजल बुद्बुदे ॥

४१

विरराम तदा गानं - हनूमान्तौ परीक्षितुम्  
तत्क्षणादेव पाषाणः - पुनः कठिनतां ययौ ॥

४२

पुनः प्रोवाच हनुमान् - तुम्बुरु नारदं तथा  
द्रवीभूतं विधायैव - पाषाण गान सौष्टब्धैः

गृहीतव्ये उभे वीणे - भवद्भ्यां गायकोत्तमौ ॥

४३



|   |    |
|---|----|
| तारतम्यं तदा वक्ष्ये - सङ्गीत विषये हि वामु     | ४४ |
| एवं संबोधितौ तेन - पृथक् तुंबुरनारदौ            |    |
| द्रवीकर्तुं हि पाषाणं - अगायत पृथक्पृथक् ॥      | ४५ |
| यथाशक्ति यथाशास्त्रं - गीतवन्तौ स्वरैर्मुहुः    |    |
| कदाचिदुच्चैर्व्यात्ताऽस्यौ - जातुनीचै रसंवृतौ ॥ | ४६ |
| समाहार प्रकारेण - जगत गान लोलुपौ                |    |
| तथापि कठिनाकारः - पाषाणो न द्रवीकृतः ॥          | ४७ |
| ततोनिवार्यं हनुमान् - तुम्बुरुं नारदं तथा       |    |
| स्वयं गुण्डक्रियागानैः - अगायत मनोहरम् ॥        | ४८ |
| ततःकठिन पाषाणो - जलबुद्बुद सन्निभः              |    |
| तस्मादुद्धृत्य वीणे द्वे - बृहतीं च कलावतीम्    |    |
| तदा स प्रददौ ताभ्यां - युवां चोभौ समा विति ॥    | ४९ |
| परस्पर समत्वेन - विकसन्मुखपङ्कजौ                |    |
| हनूमन्तं प्रणम्याथ जग्मतु स्तौ यथागतम् ॥        | ५० |
| द्रवीभूतेतु पाषाणं - तदन्तस्थोऽसि नन्दनः        |    |
| तस्माद्दुत्थाय वेगेन - पश्यतिस्म कपीश्वरम् ॥    | ५१ |
| उद्धृत्य दक्षिणं बाहुं - चचालाभिमुखं कपेः       |    |
| एकतालो महावात - प्रेरितः पर्वतो यथा ॥           | ५२ |
| ततो पतन्तं वालेन - मध्ये बध्वा कपीश्वरः         |    |
| भ्रामय न्वहुधा क्रूरं - ताडयामास पर्वते ॥       | ५३ |
| स ताडितो महाक्रूरो - वदनोद्गीर्णं शोणितः        |    |
| ममार सहसा दैत्य - सुखेनैव सुखोचितः ॥            | ५४ |
| ततो देवा स्सगन्धर्वाः - सिद्धाश्च परमर्षयः      |    |
| तुष्टुवुश्च महाशूरं - सर्वलोकोपकारकम् ॥         | ५५ |
| अञ्जनागर्भं सम्भूतं - सर्वेपि बहुमेनिरे         |    |
| देवशत्रौ मृते तस्मिन् - पुष्पवर्षं पपात खात् ॥  | ५६ |

|  |    |
|--|----|
| देवद्वन्द्वभयो नेदुः - ननृतु इचाप्सरोगणाः<br>असुरः क्रूरकर्माऽपि - नीचजन्माऽपि मूढधीः ॥                      | ५७ |
| साक्षात्कारा त्कपीन्द्रस्य - तद्वाल स्पर्शनादपि<br>मुक्तिं जगाम देहान्ते - योगिना मपि दुर्लभाम् ॥            | ५८ |
| हत्वा त्रिशूलरोमाणं - हनूमान्वायुनन्दनः<br>यत्रान ते मुनिब्रान्ताः - तं देश मगम त्पुनः ॥                     | ५९ |
| त मागतं हरिं दृष्ट्वा - मुनयस्सत्रयाजिनः<br>अस्तुव न्परमस्तोत्रैः - स्तुत्यं स्तोत्र विशारदाः ॥              | ६० |
| सत्रयाग मुनिस्तुतिः -  |    |
| भगवन् देवदेवेश - पुराणपुरुषोत्तम !<br>आपन्नाखिललोकानां - त्वमेव परमांगतिः ॥                                  | ६१ |
| न जानीयो वयं नूनं - त्रातारं त्वां जगत्पते<br>अद्यप्रभृति लोकाश्च - सुखिनस्यु नंसशयः ॥                       | ६२ |
| अद्य प्रभृति यागाश्च - प्रवर्तते न संशयः<br>इन्द्रोऽपि हित्वा संत्रासं - रंश्यते प्रिययासह ॥                 | ६३ |
| यथा स्व मष्टदिवपालाः - प्राप्स्यन्ति स्वपदानि वै<br>तव संदर्शना न्नोऽद्य - क्रतुस्साङ्गो महानभूत् ॥          | ६४ |
| त्वमेव यज्ञफलदः - भोक्ता च प्रभुरव्ययः<br>यज्ञानां च कृतं किञ्चि- त्प्रमादादपि कामतः ॥                       |    |
| तत्सर्वं प्रीतये भूयात् - भवतो जगतांपते ॥  | ६५ |
| नमो नमः कारण कारणाय<br>निष्कारणा याद्भुत वैभवाय<br>भक्तप्रिया यामित विक्रमाय<br>वेदान्त वेद्याय नमो नमस्ते ॥ | ६६ |

|  |    |
|--|----|
| इतिस्तुत्वा कपिश्रेष्ठं - कश्यपाद्या महर्षयः<br>समापितमखास्सर्वे - प्राप्तवस्तः परामुदम् ॥   | ६७ |
| स किं पुरुषखण्डस्य - दर्शनं चकमे ततः<br>दिवृक्षु नागकन्यां स्वां - उत्पलाक्षीं कपीश्वरः ॥  | ६८ |
| इति मुनिमखविघ्नं ध्वंसयित्वा हनूमान्<br>ऋषिवरनुतवृत्तो वेदवेदान्तरूपः<br>असिमुतवधतुष्टै रात्मवर्गं स्समेतः<br>फलकुसुमपरीते कानने सन्निविष्टः ॥ | ६९ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे

त्रिशूलरोमवधो नाम एकत्रिंशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

द्वात्रिंशत्पटलः

:- नागकन्यावृत्तान्त कथनम् :-

श्री मैत्रेयः :-

श्लो॥ पराशर महाभाग - हन्मच्चरितं शुभम्  
अन्य द्वदस्व पापधनं - श्रोतुमिच्छामि सुव्रत !

श्री पराशरः :

मैत्रेय मुनिशार्दूल - हनुमान्पवनात्मजः  
किंपुरुषखण्डेन श्रीमान् - कृतवान् कार्यमद्भुतम् ॥

श्री मैत्रेयः :-

किं कार्यं कृतवान् तत्र - पराशर तपोधन  
विस्तरेण तदा चक्ष्व - कृपा मयि तवास्तिचेत् ॥

श्री पराशरः

|   |    |
|---|----|
| कश्चि तत्रास्ति पुण्यात्मा - ज्ञानी परमपावनः    |    |
| सुशील स्सत्यसंकल्पः - सर्वभूतदयापरः ॥           | ४  |
| तपस्वीसबंधमज्ञः - यशस्वी गुणवान् कृती           |    |
| हनूमच्चरणभोज - भक्तियुक्त स्सदाशुचिः ॥          | ५  |
| आर्षिषेणानुजो धीरो - जितक्रोधो जितेन्द्रियः     |    |
| सुषेणो नाम गन्धर्वो - कुटुम्बी वेदपारगः ॥       | ६  |
| परोपकारनिरत - स्सजनै रभिसन्नुतः                 |    |
| सवीतरागो गंधर्वः - पुष्पैः पत्रैः फलै र्शुभैः ॥ | ७  |
| पञ्चामृतैर्दिव्यतोयै - श्चन्दनै र्मणिभूषणैः ॥   | ८  |
| सत्कर्मभि र्श्चामित दिव्य संस्तवैः              |    |
| तपोभि राश्चर्यकरै र्स्सुदुष्करैः                |    |
| त्रिथा प्रपूजनैर्दानैर्महद्भिः ।                |    |
| हवनैर्महद्भिर्ध्यानै रसन्तैः ॥                  | ९  |
| नैवेद्यैषड्रसोपेतैः - भक्ष्य भोज्य समन्वितैः    |    |
| तस्थौ कूर्पर ताम्बूलैः - हनुमन्तं भजन् सदा ॥    | १० |
| तस्मिन्काले महापुण्या - नागकन्या पतिव्रता       |    |
| देवताराधनपरा - सुशीला मञ्जुभाषिणी ॥             | ११ |
| सत्कर्मनिरता तन्वी - सर्वभूतहिते रताः           |    |
| सवलक्षण सम्पन्नाः - सर्वाभरण भूषिता ॥           | १२ |
| सुमुखी पूणं सर्वाङ्गी - सुकेशी तनुमध्यमा        |    |
| काचिन्नाम्ना चोत्पलाक्षी - नागलोकेस्ति भामिनी ॥ | १३ |
| सा भीता रक्तरोमाख्य - रक्षसा क्रूरकर्मणा        |    |
| गधर्वनायकं देवी - सुषेणं शरणं गता ॥             | १४ |
| उवाच वचनं श्लाघ्य - सर्वलोक सुखावहम्            |    |
| त्रिकालवेद सर्वज्ञ - सुषेण सुगुणाकर ॥           | १५ |

- कृतार्थोऽस्मि महायोगिन् - त्वत्पदाम्भोज दर्शनात्  
 श्रुणु गन्धर्व! मद्वाक्यं - अभयप्रद! सुव्रत! १६  
 यक्षकिन्नर गन्धर्व - सिद्ध विद्याधरै स्सुरैः  
 राक्षसै रपि दुर्दर्ष - निरंकुश पराक्रमः ॥ १७  
 रक्तरोमाख्य दनुजो - कामरूपोऽति दारुणः  
 नागलोकं समागत्य - नागान् संपीड्य तेजसा ॥ १८  
 अनन्तबल सम्पन्नः - पञ्चबाण वशंगतः  
 ग्रहीतकामो मां दृष्ट्वा बलात्कारेण पापधीः ॥ १९  
 ज्ञात्वाऽहं भीतिसंयुक्ता - रक्तरोम्णो मनस्तथा  
 शरण्यानन्यशरणौ - त्वामस्मि शरणं गता ॥ २०  
 राक्षसस्य वधोपायो - यथा भुवनरक्षणम्  
 निर्भयत्वं मम यथा - तदाचक्ष्व ममानघ ॥ २१  
 सुशेण उवाच :  
 श्रुणुत्पलाक्षि मद्वाक्यं - सर्वभीति निवारणम्  
 सर्वश्रेयस्करं तेऽद्य - मनसः प्रीतिकारणम् ॥ २२  
 पार्वतीगर्भ सम्भूतः - केसरी प्रियनन्दनः  
 धीमा नुदारो निशंको - सर्वभूत दयापरः ॥ २३  
 सवल्लोकाधिप इश्रीमान् - कामरूपो जितेन्द्रियः  
 दैतेयगण दर्पघ्नः - मनोवेगो महाबलः ॥ २४  
 वेदवेद्यो यज्ञ भोक्ता - परदैवं परंतपः  
 दुष्टनिग्रह रक्तश्च - शिष्टरक्षा परो हरिः ॥ २५  
 वज्रदेहो महाकायो - ह्यापन्न जनरक्षकः  
 हनुमानिति विख्यातो - सर्वदेवशिखामणिः ॥ २६  
 तन्मूलमन्त्रं शुक्लाख्यं - प्रवदा मुत्पलाक्षि ते !  
 तस्मात्तवेष्ट कामार्थ - सिद्धिश्शीघ्रं भविष्यति ॥ २७

|  |    |
|--|----|
| तन्मन्त्र जपसामर्थ्यात् - सुखवानस्म्यहं चिरात् |    |
| मद्वाञ्छितानि सर्वाणि - सफलानि भवत्विवह ॥      | २८ |
| साक्षात्कारो हनूमतः - भवेन्मम मुहुर्मुहुः ॥    | २९ |
| इत्युक्त्वा नागकन्यायै - सुषेण इश्रीहनूमतः     |    |
| उत्पलाक्ष्यै मूलमन्त्रं - ददौ गन्धर्वसत्तमः ॥  | ३० |
| आदाय हनुमन्मन्त्र - सुषेणा न्नागकन्यका         |    |
| नित्यं जपपरा तस्य - समीपेन बभूवह ॥             | ३१ |
| नागकन्यका गद्य -                               |    |

ग. श्रीमन्निरंतरकरुणामृतसारवर्षिणं, पिंगलाक्षं, अमोघं, महेन्द्रायुध  
क्षतांचित महाहनुं अरुणाधरबिंबभूषित मुखचंद्रमण्डलं, आतप्तकार्तस्वर  
भास्वर कांतिच्छटाकांति कलित चूडाविराजित, अप्रतिमदिव्यमाणिक्य  
कुण्डलमण्डित गंडभागं, असमान माननीय रमाकांत करकमल कीलित  
पांचजन्यबन्धुकम्बुधरं, ऐरावत नासादन्ड सुमत्तदीर्घभुजांगल, अनन्यसाधारण  
सकल्प सम्भवास्थानपीठपरिणाहिबाह्वन्तरं, अमूल्य पीतांबरालंकृत  
कटिप्रदेश, अनवरत विनतजनमनोरथ साधनपादयुगल, उष्ट्रवाहनं, अमर  
गंगानदीपरिवेष्ठित हाटकाचलन दीर्घलांगूल गगदुस्तु ग मगलांगक,  
अजनानन्दवधनं, अमलोद्धर्षपुन्द्र, तद्रुपरि कर्पूरसम्मिश्रित शुभ्रविभूतिधारणं,  
पञ्चोपवीत तुलसीपद्माक्ष रुद्राक्षमालाभिरामः श्रीरामचन्द्रचरणारविन्द  
सन्धित हृदयारविन्द. अखिलकल्याणगुणवन्तः श्रीहनूमन्त मुपास्महे ॥ ३२

|  |    |
|--|----|
| तस्मिन्काले महाबाहो - वरदो भीमविक्रमः          |    |
| परिवारयुतो धीरो - सामात्यो भक्तवत्सलः ॥        | ३३ |
| सर्वालङ्कार संयुक्तं - उष्ट्रमारुह्य वेगवान्   |    |
| त्रिमूर्त्यात्मा महावीरः - हनुमान् समुवर्चलः ॥ | ३४ |
| भक्तसंरक्षण धिया - भगवान्वायुनन्दनः            |    |
| सम्मुखे नागकन्यायाः - प्रादुरासी न्महाकपिः ॥   | ३५ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर श्रेत्रेय संवादे  
नागकन्यावृत्तान्त कथनं नाम द्वात्रिंशत्पटलः

# श्री पराशर संहिता

## त्रयस्त्रिंशत्पटलः

-: रक्तरोमवध :-

श्री मैत्रेयः :-

श्ल॥ अथागत्याञ्जनासूनुः - नागकन्या किमुक्तवान्  
प्रतिज्ञातंच किमिति - तदाचक्ष्व कृपानिधे !

१

श्री पराशरः :

तत्सर्वं कथयिष्यामि - श्रुणु नाभ्यभना मुने !  
नागकन्या समुत्थाय - साष्टांग प्रणिपत्य सा  
तुष्टाव श्री हनूमन्तं - वचोभिर्वेद गोचरैः ॥

२

३

नागकन्यका स्तुतिः -

आञ्जनेय प्रभो! देव! - देव! वानरसत्तम!  
वेदवेद्य महायोगिन् - पुराणपुरुषोत्तम ॥

४

जगद्रूप जगन्नाथ - जगदानन्द कारण!

पञ्चानन! परंज्योति - ज्ञानानन्दमय प्रभो!

५

सर्वभूतान्तरङ्गस्थ - सर्वब्रह्माण्ड नायक!

परापरज्ञ! चिद्रूप! - कपिवीर! नमोऽस्तु ते ॥

६

एवंश्रुत्वा नागकन्या - कृतस्तोत्रं हरीश्वरः

प्रीतोऽब्रवीदुत्पलाक्षीं - दीनां नम्रमुखांबुजाम् ॥

७

श्री हनुमान् :

कस्माद्भ्रूतिः कथं दैन्यं - देशत्यागं कथं? तव  
किमभीष्ट तत्करोमि - सत्य वद वरानने!

८

नागकन्यका :

स्वामिन्नार्तं जनाधार! रक्तरोमो महासुरः

नागलोकं समासाद्य - तत्रत्या नखिलान् जनान् ।

९

- स्त्री बाल वृद्धान् संपीड्य - गर्वोत्कर्ष समन्वितः  
महदैश्वर्यं सम्पन्नां - नागलोक निवासिभिः ॥
- सदा ससेवितां पूज्यां - सिद्धचारण पन्नगैः ॥ १०
- नागलोकाधिपां दुष्टो - मां दृष्ट्वा मदनातुरः  
नीचवृत्या दुराचारः - पापबुद्धि तदाप सः ॥ ११
- अतः पलायमानाऽहं - सुषेण शरणं गता  
आश्वास्य सोऽपि मां दीनां - त्वन्मत्र मुपदेष्टवान् ॥ १२
- तन्मत्र जपसामर्ध्यात् - मत्पूर्वसुकृता दपि  
त्व त्पादयुगल दृष्टं - ब्रह्मादीनां सुदुर्लभम् ॥ १३
- मम राज्यसुखावाप्तिः - नागविष्टपवासिनाम्  
यथा सुखच भवति - तथा वद दयानिधे!  
इत्युक्त्वा श्रीहनूमतः - पादयो निपपादह ॥ १४
- उत्तिष्ठ नागकन्य! त्व - भय त्यज महासुरात्  
कुर्या मभीष्टसिद्धि त्वां - देव्यागच्छ मया सह ॥ १५
- सहोत्पलाक्षया हनुमान् - प्राप्य तन्नागविष्टपम्  
रुधिरस्त्राव रोमाण - रक्तवर्णं विलोचनम् ॥ १६
- शैलनायक संकाश - शरीरं घोररूपिणम्  
दंष्ट्राकराल वदनं - सर्वायुध करद्वयम् ॥ १७
- दुष्कर्मशीलं ब्रह्मांड - व्यापीं गार्दभनिस्वनम्  
चंडप्रतापिनं यक्ष - गंधर्वासुर रक्षसाम् ॥ १८
- दुर्धर्षं नीतिरहितं ज्ञानहीनं महासुरम्  
तं दृष्ट्वा रक्तरोमाणं - आश्चर्यकरमानसः ॥ १९
- समीपस्था मुत्पलाक्षि - अब्रवी त्सवगोत्तमः  
नानाशैलेषु लोकेषु - नानारण्येषु मानिनि  
सङ्कटेषु महायुद्धे - ष्वधकष्ट परायणम् ॥ २१



|  |    |
|--|----|
| भीमाकारं भीमशौर्यं - विकृतं लोककण्ठकम्<br>गर्वोन्मत्त महाकायं - महोग्रं राक्षसाधमम् ॥                                    | २२ |
| एवं विधं यातुधानं - न पश्यामि कदाचन ॥  | २३ |
| सर्वेषामि त्यसाध्यं तं - मत्वा दैत्यं कपीश्वरः<br>हंतुकामो ययौ तस्य - समीपं दृष्ट रक्षसः ॥                               | २४ |
| आगच्छतं हनूमंतं - गतभी श्चण्डविक्रमः<br>रक्तरोमा महावीरः - प्रोवाच कठिनोक्तिभिः  | २५ |
| अहो वानर दुर्बुध्दे - कथ मागम्यते त्वया ॥<br>ब्रह्मादीना मसाध्य मां - न जानासि हरीश किं?                                 | २६ |
| इत्येवं रक्त रोमाख्य - यातुधानस्य भाषितम्<br>श्रुत्वा कठोरं हनुमान् - स्थितो रुद्र इवापरः ॥                              | २७ |
| नानाविधं चित्रयुद्धं - कुणितो रक्षसासह<br>कृत्वा बालेन सम्बध्वा - जवे नाभिजघानह ॥  | २८ |
| हनुमत्ताडितो रक्त - रोमाख्यो दनुजो रुदन्<br>भूकम्प जनयपन्भूमौ - पपातेव कुलाचलः ॥   | २९ |
| गतासुं रक्तरौमाणं - कृत्वा विजयवानभूत्<br>तस्मिन्काले पुष्पवृष्टि - मुमूचु स्सुरसत्तमाः ॥                                | ३० |
| यक्ष पन्नग गन्धर्वाः - नारदाद्या स्सुरर्षयः<br>तुष्टुवु श्श्रीहनूमन्तं - जयश्रीमन्त मव्ययम् ॥                            | ३१ |
| नागकन्ये! श्रेष्ठतमा - मद्भक्ताना मपि ध्रुवम्<br>इत्युक्त्वा हनुमान्तस्मै - सर्वाभीष्टवरान्ददौ ॥                         | ३२ |
| अगणित महिभौ हि कन्यकां ताम्<br>मुनिवर! पन्नगविष्टपेऽभिषिच्च<br>वनचरकुलशेखरो हनुमान्<br>प्रमुद मवाप शुभा मवाप्य पम्पाम् ॥ | ३३ |

|  |    |
|--|----|
| तत्र पम्पासर स्तीरे - कञ्चित्कालं विहृत्य सः<br>त्थवतुं परिचितं पम्पां - नालं स्वांतविनोदिनीम् ॥   | ३४ |
| स्वर्णरम्भा वनोद्भास - परितोपत्य कम्बलात्<br>इयेष सपरीवारः - स गन्तुं गन्धमादनम् ॥   | ३५ |
| ततः कपिकुलाग्रणीः - शिखरीशेखरकादलम्<br>स्फुरत्पल सुपालिका - सुववरभ्रधारा मृतम्<br>नदत्पिककुलावलि - श्रुतिमुख स्फुट राविणं<br>जगाम करभाजुनं - समधिरुह्य वाहोत्तमाम् ॥ | ३६ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
रक्तरोमवधोनाम त्रयस्त्रिंशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

### चतुस्त्रिंशत्पटलः

-: सुमुखचरित्र कथनम् :-

श्री मैत्रेयः :-

श्लो॥ पराशर नमस्तेऽस्तु - भगवन्करुणाकर !

सप्ताक्षरी प्रभावं मे - कथय त्वं हनूमतः ॥

१

श्री पराशरः :

मूर्तित्रयात्मकं यस्य - प्रणवं प्रथमाक्षरः

मोक्षायकल्पते भूयः - मुमुक्षूणां महात्मनाम् ॥

२

सर्वसम्पत्प्रदं नृणाम् - द्वितीयाक्षर मिष्यते

लक्ष्मीकलात्मकं वर्णं - श्रीकार मिति विश्रुतम् ॥

३

- विराट्स्वरूप संकाशं - हत्याकोटि शतानि च  
तृतीय मक्षरं हन्ति - हकार मिति गीयते ॥ ४
- तमो नुदति बाल्यांत - सूर्यमण्डल वचंसम्  
चतुर्थं मक्षरं सद्यः - मकार इति कीर्त्यते ॥ ५
- चन्द्रमण्डल विद्योतं - पञ्चमाक्षर मुत्तमम्  
ह्लादय त्सकलान् लोकान् - मकार इति गद्यते ॥ ६
- षष्ठध्वर्ण महापुण्यं - त्रेताग्नि समधिष्ठितम्  
चिनोति सकलान् धर्मान् - तेकार इति चोच्यते ॥ ७
- सप्तमाक्षर मत्यर्थं - ब्रह्मानन्दात्मकं पुनः  
आनन्दय त्यमर्त्यान् वै - नकार इति गण्यते । ८
- कालशक्तिगयं वर्णं - अष्टमं कष्टनाशनम्  
मारय त्यखिलान्शत्रून् - मकार इति लक्ष्यते ॥ ९
- सोऽयं सप्ताक्षरीमन्त्र - प्रभावोगदितो मया  
न प्रपंचय मैत्रेय ! - सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमम् ॥ १०
- उद्यद्भानु मयूखमंडल निभ इश्रीकुण्डलालंकृतो  
यः पद्मांतर कर्णिका समतनुः - पीतांबरालंकृतः  
तस्मै दिव्यविभूतये हनुमते - वेदांतवेद्यायते  
चन्द्रादित्य हुताश चक्षुष इदं - भूयोऽपि भूयो नमः ॥ ११
- लक्षमेकं पुरश्चर्या - दशांश तपण भवेत्  
तद्दशांशं होमकर्म - तद्दशांश तु भोजनम् ॥ १२
- एवं कृत्वा मुनिश्रेष्ठ - वाञ्छासिद्धि लभेध्दुवम्  
चतुर्णामपि वर्णानां - मन्त्रो जप्यो न संशयः ॥ १३
- श्रुणु मैत्रेय वक्ष्यामि - इतिहासं पुरातनम्  
यस्य श्रवणमात्रेण - नरोऽभीष्ट समश्नुते ॥ १४
- श्रीभद्र नाम नगरं - सर्वलोकेषु विश्रुतम्  
सुमुखीनाम तत्रास - द्विजो धर्मपरायणः ॥ १५

- हनूमच्चरण ध्यान - विमलीकृत मानसः  
सप्ताक्षरी जपपरः - सदा ब्राह्मण पूजकः ॥ १६
- हनूमत्प्रीतये नित्यं - विप्राणा मन्त्रदायकः  
तस्यैव द्विजवर्यस्य - कुर्वतो नियमं सदा ॥ १७
- समीपग्रामनिलयो - गोपालो बहुगोधनः  
धेनुमालीति विख्यातो - नित्यमाज्यं प्रयच्छति ॥ १८
- ऋयविक्रय सम्बन्धं - तयोरेव प्रकुर्वतः  
व्यतीताय महान् कालाः - हनुमत्करुणावशात् ॥ १९
- एकदा गोपवर्यं स्स - स्कन्धे नाज्यं निनीषितः  
मार्गमध्ये गिरिनदी - प्रावतेत दिनद्वयम् ॥ २०
- धेनुमाली नदीकूले - तस्थौ ततुं मशक्नुवन्  
दिनद्वयं च मैत्रेय - विप्रशाप भयाकुलः ॥ २१
- सुमुखोऽपि तदा तत्र विप्रा नाहूय सर्वशः  
आज्यं गृहीत्वा नायाति - धेनुमाली महाद्विजाः ॥ २२
- तत्रांतराय किं जातः - घृतानयन कर्मणि  
अद्य प्रतीक्षया तस्थौ - हनूमन्त मितोरयन् ॥ २३
- भक्तबात्सल्य निरतो - हनुमान् करुणानिधिः  
भक्तसकल्प विहर्ति - न सहे लोकनायकः ॥ २४
- तथा गोपालवेषेण - स्कन्धे नाज्यं समुद्रहन्  
दिनद्वयं च विप्राय - ददौ वानरनायकः ॥ २५
- एवं दिनद्वयेऽतीते - धेनुमाली समाकुलः  
समारुह्योडुपं कञ्चि - द्विप्रस्य निकटं गतः ॥ २६
- दिनद्वयस्य पर्याप्त - माज्यं बहु समुद्रहन्  
आगत्य विप्रमुख्यस्य - पपात चरणाब्जयोः ॥ २७
- अज्यं गृहीत्वा नायाति - गोपाल इति भूसुरः  
माकृथा मयि कोपं त्वं - मार्गकृत्यं वदामि ते ॥ २८

- मय्यायाते गिरिनदी - मार्गमध्ये द्विजोत्तम !  
 कूलङ्कषोदका जाता - समर्थो नाऽस्मि तारुतम् ॥ २'
- तस्माद्दिनद्वयं तत्र - स्थित्वा भीत समाकुलः  
 गतोऽस्मिते विप्रवर्ये! - आरुह्योडुप मंतिकम् ॥ ३०
- मयि संस्थाप्य कारुण्यं - मां च क्षन्तुं त्व मर्हसि ॥ ३१
- सुमुखोऽपि तदाश्चर्यं : श्रुत्वा गोपालभाषितम्  
 भेने ह्याज्य प्रदातारं - हनूमन्त कृपानिधिम् ॥ ३२
- एवं मत्वा लदा विप्रः - तुष्टाव जपतांवरः ॥ ३३
- नमस्ते देवदेवेश! नमस्ते राक्षसांतक !  
 नमस्ते वानराधीश! नमस्ते वायुनन्दन ! ३४
- नमस्त्रिमूर्ति वपुषे - वेदवेद्याय ते नमः  
 नमस्ते लोकनाथाय - सीताशोकापहारिणे ! ३५
- स्वामिन् त्वयाकृतं हृद्य ! यदाज्यवहनं मम  
 जातं मा मपराधाय - तत्क्षमस्व दयानिधे! ३६
- त्वयायथा नियुक्तोऽहं - तथाकुर्वेवचान्वहम्  
 साधुवा यदिवा साधु - मम दोषो नविद्यते ॥ ३७
- इति स्तुवन्तं विप्रेंद्रं - दृष्ट्वा वायुतनूभवः  
 तप्तकांचन संकाशं - मुक्ताहार विभूषितम् ॥ ३८
- दिव्य पीतांबर धरं - मणिकुंडल मडितम्  
 दर्शयामास चात्मानं - इदं प्रोवाच तं द्विजम् ॥ ३९
- भवत्प्रतिज्ञां विप्रेंद्र! - सत्यां कर्तुं मयाकृतम्  
 भक्तप्रेम्णाज्यवहनं - गोपवेष भवत्तथा ॥ ४०
- विप्रैतदेव मेकृत्यं - नश्वान्य द्विद्यते मम  
 यद्विताभीष्टकरणं - भृत्याऽनिष्ट निवारणम् ॥ ४१
- तवसंततया भक्त्या - तुष्टोऽस्मि द्विजसत्तम!  
 यद्यदिष्टतमं लोके - तव सर्वं भविष्यति ॥ ४२

|   |    |
|---|----|
| लोकेऽस्मिन् अखिलान् भोगान् - भुक्त्वा दिव्यान्<br>महाफलान्                                  |    |
| कलत्र पुत्र पौत्रैश्च - सहितो धेनुमालिना<br>दिव्यदेह समायुक्तो - ह्यस्ते मोक्ष मवाप्स्यसि ॥ | ४: |
| एवंदत्त्वा वरंविप्रं - चाभाष्यानिलनन्दनः<br>अदृश्यत्वं गतो योगी - तदा विप्रस्य वश्यतः ॥     | ४४ |
| तदारभ्य पुनर्विप्रो - नियमासक्त मामसः<br>ददौनित्यं हनूमन्तं - जप सप्तशतश्रीमनुः ॥           | ४५ |
| एवं प्रभावो मन्त्रोयं हनूम त्प्रीतिपादकः<br>कथितं त्विद्धि माश्चर्यं मयातुभ्यं शुभावहम् ॥   | ४६ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेय संवादे

सुमुख चरित्र कथननाम चतुस्त्रिंशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

पञ्चत्रिंशत्पटलः

-: मैदचरित्र कथनम् :-

श्री मंत्रेयः :-

श्लो॥ आञ्जनेय चतुर्विंश - त्यक्षरी मुनिसत्तम!  
अष्टादशाक्षरी चेति - माहात्म्य मुभयोर्वद १

श्री परशरः :

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि - श्रुणु मंत्रेय तत्त्वतः  
आदौ प्रणवमुच्चार्य - नमो भगवते ततः ॥ २

आञ्जनेयाय च महा - बलायेति ततःपरम्  
स्वाहापदं समुच्चार्य - मनु रष्टादशात्मकः ॥ ३

|  |    |
|--|----|
| मन्त्र एषः क्रमेणैतं ज्ञेयं स्ववैरुपासकैः            |    |
| श्रीयुक्तहनुमच्छब्दः - पूर्वमन्त्रेण दीरितः ॥        | ४  |
| तथैव स इचतुर्विंश - त्यक्षरी मन्त्र उच्यते           | ५  |
| अस्मिन् मन्त्रद्वयोः - पूज्यो ह्यगस्त्यो भगवान् ऋषिः |    |
| गायत्री परमा छन्दः - हनुमान् देवता भवेत् ॥           | ६  |
| प्रणवं बीजमित्युक्तं स्वाहा शक्तिरुदीरितम्           |    |
| आञ्जनेयाय च ततो - कीलकं समुदाहृतम् ॥                 | ७  |
| चिन्तितार्थप्रदं देवं - शान्ताकारं महाप्रभुम्        |    |
| सततं चिन्तये चिन्तये - हनुमन्तमनूपमम् ॥              | ८  |
| मनोजवं मारुततुल्यवेगं                                |    |
| जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं                      |    |
| वातात्मजं वानरयूथमुख्यं                              |    |
| श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥                            | ९  |
| इतिध्यात्वा जपेभ्यः - अयुतः नियुतः पुमान्            |    |
| सर्वान्कामानवाप्नोति - सर्वत्र विजयी भवेत् ॥         | १० |
| अत्रेतिहासं वक्ष्यामि - श्रुणु चित्रं मुनीश्वर!      |    |
| मैन्दो नाम द्विजवरो - ज्ञानी परमपावनः ॥              | ११ |
| वेदशास्त्रार्थं तत्त्वज्ञः - सुन्दरीनगरे स्थितः      |    |
| उक्तमन्त्रद्वयजपा - सक्तिमान् धर्मतत्परः ॥           | १२ |
| ततो मैन्दद्विजः काशी - यातुकामस्तपोधनः               |    |
| गङ्गानदीं समासाद्य - नावमारुह्य दुस्तराम् ॥          | १३ |
| गङ्गा मध्येव शिथिला - नौकांशी ज्वलपूरिता             |    |
| नावदृष्ट्वा जलोपेतां - मैन्दो भीति समाकुलः ॥         | १४ |
| वस्त्रेणाच्छाद्य वदनं - भक्तियुक्तो हनुमतः           |    |
| मंत्रमेतं जपेत्स्थौ - शुद्धात्मानन्यमानसः ॥          | १५ |
| तत्काले हनुमान् शीघ्रं - भक्तात्सल्य बुद्धिना        |    |
| नावं धृत्वा शिरस्येतां - महावातरं रूढधृतम् ॥         | १६ |

- गङ्गातीरं निनायाशु - पश्यतां तीरवासिनां  
कपिवेषधरो देवः - तत्रै वान्तरधीयत ॥ १७
- महाप्लवङ्ग मानीतं - नावं दृष्ट्वा मुनीश्वर!  
आश्चर्यं परमं प्रापुः तत्रत्यास्तीर वासिनः ॥ १८
- मैदोऽवरुह्य तां नावं तीरस्था नखिलान् जानन्  
दृष्ट्वाश्चर्यगतो भक्तो - प्रोवाच श्री हनूमतः ॥ १९
- जनाः किमर्थं माश्चर्यं - महत्तर मकारणम्  
युष्माभिर्गतं मेतस्मै - शक्ता यूयं विवक्षितुम् । २०
- केनचित्कपिना नीता - तीरं नौ शिरसा द्विज!  
तस्मात्प्राप्तं तदस्माभि - रपूर्वं महदद्भुतम् ॥ २१
- यतोदृष्टो महावीरः - युष्माभिर्हनुमान् जनः  
ततो यूयं भाग्यवन्तः - कृतार्था पुण्यशालिनः ॥ २२
- मयाकृतं हनूमन्तः - श्रीरामांघ्रि प्रपूजनम्  
स्वप्नेप्यदृष्टो हनुमान् - पापोऽहं मन्दभाग्यवान् ॥ २३
- नास्तिचेत्स्वामिन स्सर्व - कामदः दर्शनं मम  
करोम्यद्यैव गङ्गायाः - प्रवेशं लोकगहितम् ॥ २४
- तदा श्री हनुमान् धीरो - भक्तवात्सल्य बुद्धिना  
पीताम्बरधरश्श्रीमान् - स्मितवक्त्र इचतुर्भुजः  
मैदस्य पुरत शशीघ्रं - प्रादुराशी त्कृपाम्बुधिः ॥ २५
- समागतं हनूमन्तं - दृष्ट्वा मैदो महातपाः  
साष्टांगं प्रणिपत्याथ - पूजां कर्तुं मनोदथे ॥ २६
- उष्ट्रारूढ! सुबर्चलासहचर - स्सुग्रीवमित्रांजना  
सूनो वायुकुमार! केसरितनू-जाक्षादि दैत्यांतिक  
सीताशोकहरागिननन्दन! सुमि - त्रासम्भव प्राणद!  
श्रीभीमाग्रज शम्भुपुत्र! हनुम - न्पञ्चास्य तुभ्यं नमः ॥ २७



|  |    |
|--|----|
| अर्घ्यान्नमन पाद्यैश्च - गन्ध धूप प्रदीपकैः        |    |
| ननाविधफलैः पुष्पैः - पूजयामास वायुजम् ॥            | २१ |
| पूजां मैदृतां स्वामी - तुष्टः स्वीकृत्य मारुतिः    |    |
| मैदायञ्च वरानन्दत्वा - तमुवाच कपीश्वरः ॥           | २१ |
| भक्तसंरक्षणार्थाय - त्वत्समीपे वसाम्यहम्           |    |
| इहभुङ्क्त्वाखिलान् भोगान् - अन्तेप्राप्यसि मत्पदम् |    |
| इत्युक्त्वा हनुमा न्विप्रं - तत्रैवान्तरधीयत ॥     | ३० |
| इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे |    |
| मैदचरित्रकथनं नाम पञ्चत्रिंशत्पटलः                 |    |

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

षट्त्रिंशत्पटलः

-: मदनक्षोभा निवारक मन्त्र कथनम् :-

श्री पराशरः : :-

|  |   |
|--|---|
| श्लो॥ मन्त्रांतरं प्रवक्ष्यामि - मैत्रेय श्रुणु मारुते |   |
| मनोर्ब्रह्मा ऋषिश्चैव - गायत्री छन्द उच्यते ॥          | १ |
| हनुमान् देवताह्लां च - बीज ह्रीं शक्ति रुच्यते         |   |
| क्रौं कीलकं महाभाग - विनियोगपदं भवेत् ॥                | २ |
| ह्ला मित्यंगुलिन्यासः - हृदयादि स्तथैव च               |   |
| कुर्याद्विगन्धनं तत्र लोकत्रयेण बुद्धिमान् ॥           | ३ |

ध्यानम् :

|                            |   |
|----------------------------|---|
| आञ्जनेय मतिपाटलाननम्       |   |
| काञ्चनाद्रि कमनीय विग्रहम् |   |
| पारिजाततरुमूल वासिनं       |   |
| भावयामि पवमाननन्दनं ॥      | ४ |

- आदौ प्रणवमुच्चार्य - नमो भगवते पदं  
अनन्तरं हनुमते - ममशब्द स्ततःपरम् ॥ ५
- मदनक्षोभ मुच्चार्य - संहरेति द्विरुच्चरेत्  
आत्मतत्त्वं ततश्चैव - प्रकाशय द्विरुच्यते ॥ ६
- वाराहबीज मुच्चार्य - फद् स्वाहा ततःपरम्  
एक चत्वारिंशद्वर्णं - मन्त्रो विद्याप्रदोहयः ॥ ७
- पुनर्मंत्रांतरं वक्ष्ये - पिशाचादि निवृत्तये  
कस्मिन् कुक्षौ वरवर - अञ्जनावरपुत्र च  
आवेशावेशय पदं - ओं ह्रीं हनुमतस्तथा ॥ ८
- फट्स्वाहेति मन्त्रोयं - त्रिंशद्वर्णं समन्वितः  
ऋष्यादि ध्यान न्यासादीन् - पूर्वमन्त्रवदीरितः ॥ ९
- मंत्रांतरं पुन वक्ष्ये - मुने! लोकोपकारकम्  
वशिष्ठऋष रस्यैव - अनुष्टुप् छन्द उच्यते ॥ १०
- हनूमान्देवता प्रोक्तो - ह्रीं बीजं तदनन्तरम्  
क्ली शक्तिः कीलकं क्रों च - ममेति च पदं तथा ॥ ११
- हनुमत्प्रसादसिद्ध्यर्थे - विनियोग स्तथोच्चरेत्  
ओं नमो भगवते च - अंगुष्ठाभ्यां विन्यसेत् ॥ १२
- मम मदनक्षोभं तजनि ।  
सहर संहर चेति मध्यमा ।  
आत्मतत्त्वपदं चे त्यनामिका ।  
प्रकाशय पदद्वन्द्वं कनिष्ठिका ॥ १३
- (ओंफट् स्वाहेति तथा करतले विन्यसेत्  
एवं हृदयादि न्यासः)

## ध्यानम् :

|  |    |
|--|----|
| वामे जानुनि वामहस्त मपरं-ज्ञानाख्य मुद्राश्वितम्<br>हृद्देशे कलय न्गुतो मुनिगणै - रध्यात्मदक्षेक्षणः ॥ |    |
| आशीनः कदलीवने मणिमये - बालार्ककोटिप्रभः<br>ध्यायन् ब्रह्मपरं करोतु मनस - इशुद्धिं हनूमन्मम ॥           | १४ |
| आदौ प्रणवमुच्चार्य - ततो हनुमते पदं<br>ममेति पद मुच्चार्य - मदनक्षोभ मेवच ॥                            | १५ |
| संहरेति द्विसच्चार्य - वाराहं बीजमुच्चरेत्<br>फट् स्वाहेति मन्त्रोयं - सप्तत्रिंशति वर्णकः ॥           | १६ |

|  |    |
|--|----|
| व शीर्षालीक श्रवण नेत्र कपोल नासाः<br>पादसन्धि कटि नाभि पार्श्वं हृत्सुकरां<br>स्तनयुग्म मुख मूर्ध्नि च क्रमेण<br>मन्त्राक्षरान् न्यसेत् शुद्धमतिः स्वदेहे । | १७ |
| कदलीफलैश्च पनस - फलैश्च मधुमिश्रितैः<br>हनूमद्देवता प्रीत्यै - होमं कुर्याद्विचक्षणः ॥   | १८ |
| लक्ष मेकं पुरश्चर्या - दशांशं तर्पणं भवेत्<br>दशांशं हवनं कुर्यात् - दशांशं भोजनं ततः ॥  | १९ |
| अथ पूजाविधानार्थं - यन्त्रलक्षण मुच्यते<br>नवशक्तियुते पीठे - शैवेन वैष्णवे तथा ॥  | २० |
| सामान्यपीठे चावाह्य - पूजयेत्समुदाहृतं ॥   | २१ |
| आदौ वर्तुल मालिख्य - पद्ममष्टदल तथा<br>पुनर्वर्तुल मालिख्य - भूपुरद्वय लेखनम् ॥  | २२ |
| चतुर्द्वारं समालिख्य - चक्रलक्षण मुच्यते<br>कर्णिकायां लिखेत्तारं - साध्यगर्भं च तद्बहिः ॥   | २३ |
| अष्टपत्रे केसरोद्यत् - स्वरद्व द्वे मनोःक्रमात्  | २४ |

|   |    |
|---|----|
| आद्ये सप्त द्वितीये च - चतुरारणो तृतीयके<br>सप्ततुर्ये पञ्चमे च - त्रीणि त्रीण्यक्षराण्यपि ॥                              | २  |
| षट्सप्ताष्टम पत्रेषु - चतुरश्चतुराक्षरान्<br>वृत्तोल्लसत्कादिवर्णं - भूपुराधीस्थ तारकं                                    | २  |
| जतुरावरणांश्चैव - चक्रस्यास्य विलेखयेत् ॥   | २  |
| प्राणप्रतिष्ठां कुर्वीत - कार्यसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्<br>हनूमतो यन्त्रमेत - द्वाञ्छितार्थप्रदं परम् ॥                       | १  |
| इदमेव विलिख्य साधुयन्त्रं<br>नवनीते प्रतिजप्य मंत्रमेतं<br>परिभक्षयता मनङ्गपीडा<br>प्रशमं गच्छति शुद्धमेति चेतः ॥         | २९ |
| आदाय दोषणा सलिलं प्रसन्नं<br>प्रजप्य मन्त्रं प्रपिबेत्त्रिवारं<br>रागादिदोषप्रतिमाय बुद्धे<br>ज्ञानोदयाय प्रशमाय वृत्तः ॥ | ३० |

इति श्री पराशरसंहितायां श्री पराशरमैत्रेयसंवादे  
मदनक्षोभा निवारकमन्त्रकथनं नाम षट्त्रिंशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशरसंहिता

सप्तत्रिंशत्पटलः

-: मालामन्त्रप्रभावकथनम् :-

श्रीमैत्रेयः

श्लो॥ पराशरान्यं हनुम - मालामन्त्रं महाद्भुतं  
वदस्व श्रोतुमिच्छामि - सर्वाभीष्टार्थसिद्धये ॥

श्री पराशरः

अगस्त्य संहितायांतु - सुतीक्ष्णाय पुरामुने!  
उदीरित मगस्त्येन - तद्वदामि श्रुणुष्व तत् ॥ २

सुतीक्ष्णः

सर्वज्ञ! सर्वदेवार्थं - तत्त्वज्ञानं सुनिश्चल!  
सम्यक्संशिक्षितं श्राहं - बहुधापि कृपांबुधे!  
त्वया कारुण्यनिधिना - पूर्वमज्ञस्तथा जडः ॥ ३  
त्वत्प्रसादेन संजात - ज्ञानोऽस्मि गत कल्मषः ॥ ४  
रामात्मनि परे ब्रह्म - ण्यासक्तं मानसं मम  
लक्ष्मणेपि यथा रामे - किञ्चिद्भूदेऽपि नैवहि ॥ ५  
हनूमन्मन्त्र इत्युक्तः - त्वयावै मुनिपुङ्गव  
तस्यानुष्ठानं मखिलं - ज्ञातुं मिच्छास्ति मे प्रभो!  
मधिप्रपन्नः सकल - माचक्ष्वासु दयानिधे! ॥ ६

अगस्त्यः

स्मारितं स्सम्यं गेवाहं - त्वया श्रद्धावता मुने!  
आञ्जनेयमनुलोके - भुक्तिं मुक्त्यैकं साधनम्  
प्रकाशितं शङ्करेण - लोकानां हितमिच्छता ॥ ७  
भूतं प्रेतं पिशाचादि - शाकिनीं ब्रह्मराक्षसाः  
दृष्ट्वैव प्रपलायन्ते - मन्त्रानुष्ठानं तत्परम् ॥ ८  
ऋषिरीश्वर एवास्य - अनुष्टुप्छन्द इष्यते  
हनुमान् देवता प्रोक्तो - क्रों बीजं शक्तिं ह्रीं तथा ॥ ९  
कीलकं हृत्रयं प्रोक्तं - पदकं तु हसौ पुनः  
हनूमत्प्रीणनं चैव - फलमाद्यं मुदीरितम् ॥ १०  
सर्वेऽपि सतानां - दातृत्वं मस्यैवास्ति न चान्यतः  
प्रभावे नास्य बहवः - सिद्धिमाप्सुस्तपोधन ! ॥ ११

|  |    |
|--|----|
| मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि - श्रुणुष्वानभ्य मानसः<br>मायमादौ प्रविन्यस्य - ओं नमो हनुमत्पदम् ॥   | १२ |
| तत्तत्प्रकट संयुक्त - पराक्रमपदं तथा<br>तदाक्रांत पदोपेत - दिङ्मण्डल मुदीरयेत् ॥   | १३ |
| यशोवितान धवली - कृत जगत्त्रितयाय च<br>वज्रदेहेति रुद्रेति - अवतारपद तथा ॥  | १४ |
| संबुध्यंतं तथा लंका - पुरी देहन मीरयेत्<br>उदधे बंधनं चापि - दशशीर्षं पदं तथा<br>कृतांतक पदं चोक्त्वा - सीता समाश्वासन पदम् ॥            | १५ |
| अञ्जनागर्भं सम्भूत - रामलक्ष्मण पदं तथा<br>आनन्दकरं पश्चात् - कपिसैन्यपदं तथा ॥  | १६ |
| 'प्राकार' पद मुच्चार्य - सुग्रीवपद मुच्चरेत्<br>सन्धानपद मुच्चार्य - पर्वतोत्पाटनं पदम् ॥  | १७ |
| बालब्रह्मचारि त्रिति - गम्भीर शब्द पद तथा<br>सर्वग्रह नाशनेति - सर्वज्वरोच्चाटनं तथा ॥   | १८ |
| ढाकिनी विध्वंसिनि पदं - तत स्तार मुदीरयेत्<br>माया हत्रय मुच्चार्य - हसौ देहि वदेत्ततः ॥   | १९ |
| सर्वविषपदं चोक्त्वा - हरहरेति पदं तथा<br>परबलं क्षोभय द्वन्द्वं - समेति पद मुच्चरेत्<br>सर्वकार्याणिपदं चोक्त्वा - साधयेति द्विरुच्यते ॥ | २० |
| हुं फट् स्वा हेति मन्त्रोयं - मालाख्यः सर्वकामधुक्<br>भगवते चाञ्जनेयाय - अंगुष्ठाभ्यां समन्ततः ॥   | २१ |

व. रुद्रमूर्तये इत्येवं तर्जनि ।  
वायुसुतायेति मध्यमा ।  
अग्निगर्भा यानामिका ।  
रामदूताय कनिष्ठिका ।  
ब्रह्मास्त्र निवारणाय ।  
अस्त्रमन्त्र मुदीरितम् ॥

प्रणवादि नमश्शब्दं - षडङ्गानि समुच्चरेत्

एवं षडङ्गं च मुखे - कृत्वा ध्याये दनम्यधीः ॥

२३

नमः :

स्फटिकाभं स्वर्णं कांति - द्विभुजाभ्यां कृताञ्जलिं

कुण्डलद्वयं संशोभि - मुखाभोज महं भजे ॥

२४

अयुतंतु पुरश्चर्या - रामश्याग्रे शिवस्य वा

पूजांतु वैष्णवे पीठे - शैवे वा विदधीत वै ॥

२५

दशांशं तर्पणं होमं - भोजनं च प्रकीर्तितं

संस्कारेण विना वीर्यं - मन्त्र स्यास्य न जायते ॥

२६

आवृत्तिभिर्विना नित्यं - निष्फलं विजितेन्द्रियं

क्षुद्ररोग निवृत्यर्थं - अष्टोत्तरशतं मुने ॥

२७

जप्त्वा त्रिदिन मेकान्ते - तेभ्यो मुच्येत तत्क्षणात्

क्षुद्रभूत प्रशांत्यर्थं - शतमष्टोत्तरं पुनः

दिनत्रय मतो जप्त्वा - भूतानां मुच्यते भयात् ॥

२८

भूत प्रेत पिशाचादि - शान्तयेऽष्टोत्तरं शतं

जप्त्वेव तद्भया न्मुक्तो - भवत्येव न संशयः ॥

२९

महारोगादि शान्त्यर्थं - अष्टोत्तर सहस्रकं

तप्त्वा तस्मात्प्रमुच्येत - नियतो नियताशनम् ॥

३०

जयादिकांक्षिणां राज्ञा - यस्मा दन्यो स विद्यते

ध्याये द्दुष्टस्य हन्तारं - अयुतं नियताशनः ॥

३१

जपन्नयुतमांश्चैव - जये द्दुर्जय मस्य किं

सन्धानार्थं तु सुग्रीव - सन्धातारं स्मरन् हृदि

अयुतेनैव बलिना - सन्धि माप्तो त्यसंशयः ॥

३२

लङ्क्यां दाहकं ध्यायन् - जपन्नयुत मञ्जसा

शत्रुराष्ट्रं दहेद्देव - दुस्साध्य मपि चानघ।

जयार्थेश्शत्रु संघान - मस्मा दन्यो न विद्यते ॥

३३

- यस्तु गेहे हनूमंतं - सबदेवा ऋपूजयेत्  
तद्गृहे तस्य मन्त्रेण - तस्य लक्ष्मीरञ्जला ॥ ३४
- दीर्घमायुर्लभे देवं - सर्वतो विजयी भवेत्  
मार्यादि भूत सक्षोभं - तद्देशेनैव जायते ॥ ३५
- शत्रव स्सर्वदामित्र - भावेनैवासते परं  
शैवानां वैष्णवानां च - षट्कर्मा द्युक्तचेतसाम् ॥ .
- नान्यत्साधन मस्त्येव - मन्त्रा दस्माद्धनूमतः ॥ ३६
- चोर व्याघ्रादि भूतानां - अयमेव परायणं  
परापहत राज्यानां - धर्षितानां परैः पुनः  
सन्नाह भाजां युद्धेषु - योद्धानां परसैनिकैः ॥ ३७
- यात्राकाले हनूमंतं - स्मरन् यस्तुस्वकाद्गृहात्  
निर्गच्छति स वै सद्यः - स्वेष्टार्थं मधिगच्छति  
स्वापकाले पठे द्यित्य - चोरभूतानि वारयेत् ॥ ३८
- कुण्डिनं नाम नगरं - श्रीभद्र कुशतर्पण  
पम्पातीरं चन्द्रकोणं - काम्भोज गन्धमादनम् ॥ ३९
- ब्रह्मावर्तपुरं चैव - बाहंस्पत्यपुरं तथा  
माहिष्मतीपुरं चैव - जैमिशारण्य मेवच ॥ ४०
- सुन्दरीनगरं चैव - रम्यं श्रीहनुमत्पुरं  
एतानि हनुमद्भक्त - पुण्यस्थानानि नित्यशः  
यःस्मरेत्प्रात र्स्थाय - भुक्ति मुक्ति च विन्दति ॥ ४१

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर प्रेक्षेय संवादे  
श्री हनुमन्माला मन्त्रप्रभाव कथननाम सप्तत्रिंशत्पटलः





# श्री पराशर संहिता

## अष्टात्रिंशत्पटलः

-: यवनाश्व चरित्र कथनम् :-

श्री मैत्रेयः :-

श्लो॥ पराशर महायोगिन् - मारुतेः परमद्भुतं  
वद मन्त्रप्रभावं मे - त्रौतु मिच्छामि तत्त्वतः ॥

श्री पराशरः :

पुरा वाल्मीकिना प्रोक्तं - हनूमन्मन्त्र मुत्तमं  
संक्षेपतः प्रवक्ष्यामि - श्रुणु नान्यमना मुते!  
पुरा काम्भोजनगरे - यवनाश्व इति श्रुतः  
ब्राह्मणो जटिलो नित्यं - शिवपूजा परायणः ॥  
उपवासमिषे णैव - मोहयामास लौकिकान्  
शक्तिक्षेत्रं समागम्य - चोवास बहुवत्सरम् ॥  
अर्पितं कुसुमं चापि - पंचगव्य फलानि च  
केनापि नैव भोज्यानि - आन्धकूपे व्यनिक्षिपेत् ॥  
षण्मासं तत्फलाशी च - क्षी राज्य मधुसेवकः  
आपस्मारी समभव - तस्मिन् जन्मनि तद्विजः ॥  
तेनार्पितं तु यद्वस्तु - तद्विव्य वस्तु भक्षयेत्  
यस्संत्यजे त्प्रसाद त - मपस्मारी स जायते ।:  
एवं गते बहुदिने - ब्राह्मणो गाधिनंदनं  
प्रणम्य स्वस्य वृत्तांतं - स्वदेहस्थिति मेव च  
विज्ञापयामास तदा - यवनाश्वो द्विजोत्तमः ॥  
श्रुत्वाद्विजस्य वृत्तान्त - मशेषं च तपोनिधिः  
दयार्द्रं मानसोभूत्वा - विश्वामित्रो महामुनिः  
ध्यात्वा चोपदिदे शास्त्रै - सुन्दरी प्रथमं मनुम् ॥

|  |    |
|--|----|
| श्रीसुन्दरी प्रथम मन्त्रस्य - वाल्मीकि ऋषि रच्यते<br>आञ्जनेयो देवता च - मारुतात्मज बीजकम् ॥                                  | १० |
| शक्तिश्चाप्यं जनासूनु - वायुपुत्रेति कीलकं<br>मम सकल शब्दं च - पुरुषार्थं च उच्चरेत्<br>विनियोगपदं चैव - क्रमेण मनु रच्यते ॥ | ११ |

ध्यानम् :

|   |    |
|---|----|
| आञ्जनेय मतिपाटलाननं<br>काञ्चनाद्रि कमनीय विग्रहं<br>पारिजात तरुमूलवासिनं<br>भावयामि पवमान तन्दनम् ॥                             | १२ |
| इतिध्यात्वा जपेदारतो - मारुते मनुमादरात् ॥  | १३ |
| हनूमा नञ्जना सूनु - वायुपुत्रो महाबलः<br>कपीन्द्रः पिङ्गलाक्षश्च - लङ्काद्वीप भयङ्करः ॥   | १४ |
| प्रभञ्जनसुतो वीरः - सीताशोक विनाशकः<br>अक्षहन्ता रामसखः - रामकार्य धुरन्धरः ॥   | १५ |
| महौषधिगिरेर्हारी - वानरप्राणदायकः<br>हरीशतारकश्चैव - मैनाकगिरि भञ्जनः ॥   | १६ |
| निरञ्जनो जितक्रोधः - कदलीवन संभृतः<br>ऊर्ध्वरेता महासत्वः - - सर्वमन्त्र प्रवर्तकः ॥  | १७ |
| महालिङ्ग प्रतिष्ठाता - भाष्यकृज्जगतां वरः<br>शिवध्यानपरो नित्यं - शिवपूजा परायणः ॥  | १८ |
| सप्तविंशति संख्याका - न्येतानि श्री हनूमतः<br>पठन्नामानि सोविप्रो - नियमेनाप्यतद्भित्तः<br>तेन शांति रसमभव - दपस्मारस्य धीमतः ॥ | १९ |

|   |    |
|---|----|
| बहुकालं हनूमन्तं - ध्यानं कुर्वन् प्रपूजयन्<br>यवनाश्वो महाविप्रः - इलाध्ये कांभोजपट्टणे ॥  | २  |
| पुत्र मित्र कलत्राद्यैः - परिचारैश्च वन्धुभिः<br>इहभुक्त्वाखिला न्भोगान् - पूज्यान्पुण्य फलार्जितान्<br>आञ्जनेय प्रभावेन - विष्णुलोकमवाप सः ॥ | २  |
| कथा मन्यां प्रवक्ष्यामि - प्रतापं श्रीहनूमतः<br>श्रुणु भैत्रेय विप्रेन्द्र - सम्यग्भक्ति समन्वित ॥  | २: |
| रामे विरल दन्तत्वं - लक्ष्मणे पादकिङ्किणी<br>सीताया च्छिन्नरोमाणि - तस्मात्क्लेश सहिष्णुता ॥  | २३ |
| ततो रावणनीतायाः - सीतायाश्शत्रुर्कशनः<br>इयेष पद मन्वेष्टुं - चारणाचरिते पथि ॥  | २४ |
| सगुद्रमध्ये ह्युत्पन्नाः - अन्तरायाः पृथक् पृथक्<br>तानि सर्वाणि नष्टानि - दान मश्रोत्रिये यथा ॥  | २५ |

ईश्वरः :

|  |    |
|--|----|
| श्रीरामसेविनां नृणां - न कदाचि त्क्षयः प्रिये<br>श्रीरामस्मरणा देव - तरन्तिभवसागरं ॥       | २६ |
| रामांकितधरो वार्थि - तीर्णवान्विक्रमेण हि<br>प्रदोषे प्रविशल्लंकां - हनूमा न्वानरेश्वरः ॥  | २७ |
| लंकाप्रवेश समये - लंकानाम निशाचरी<br>पद्मासना ललब्धवरा - ताडयामास वानरम् ॥                 | २८ |
| नारीति मन्यमानेन - ताडिता वामबाहुना<br>विह्वला विकृताकारा - पपात समरक्षितौ ॥               | २९ |
| विह्वलां भगिनीं ज्ञात्वा - ब्रह्मलोका निशाचरी<br>विषूची लोक संहर्त्री - कर्कशा घोररूपिणी ॥ | ३० |
| आगत्य हनुम न्निकट - मुवाचेदं महास्वना<br>ब्रह्माज्ञावर्तिनी ह्येषा - लंकायां कामरूपिणी ॥   | ३१ |

- हता त्वया कथं वीर - लङ्किणी भगिनी मम  
यद्ब्रह्मवर लब्धाहि - त्रिविक्रमविशालिनी  
तस्मादहं हनिष्यामि - क्षणेन त्वां समीरज ॥ ३२
- वक्रदण्डं गृहीत्वा सा - हनुमन्तं समाययौ  
हनुमन्तं तु दण्डेन - कर्कशा ताडय त्ववयम् ॥ ३३
- तां ज्ञात्वा लोकसंहर्त्री - तद्वस्ताद्वक्रदण्डकम्  
गृहीत्वा ताडयामास - सा पपात ममार च ॥ ३४
- तस्मिन् क्षणे समायातो - ब्रह्मालोकपितामहः  
उवाच रामदूतं तं - क्रोधविस्फुरितोष्ठकम् ॥ ३५
- जानी त्वं दोषराहित्यं - आकल्प परिवर्तनं  
दत्त्वा मदन्तिके बध्वा - स्थापिता लोकघातुकी ॥ ३६
- मा मनादृत्य सा दुष्टा - विषूची लोकघातुकी ॥ ३७
- इदं लोकहिता यैव - जपतां पवनात्मज!  
अनया पीड्यमानानां - मर्त्यानां मर्तुमिच्छताम् ॥ ३८
- त्वन्नाम स्मरणेनैव - त्वन्मंत्र पठनादपि  
त्वत्पादपूजना च्चापि - ब्राह्मणानां च पूजनात् ॥ ३९
- शांतिनित्यं भवत्येव जपा दस्माच्च मारुते ॥ ४०
- श्रीराममुद्रादानं च ये श्रुत्वां त्यादरेणतु  
निजित्य शत्रून्संग्रामे - स्थिरं राज्यं प्रजंति ते ॥ ४१
- भवेत्लोक हितो धर्मः - विषूची वधकारणात्  
सप्तविंशति नामानि - लोके तव पठन्ति ये ॥ ४२
- विषूची व्याधयस्तेषां - न भवन्ति कदाचन ॥ ४३
- रामांकितधरो भूत्वा - प्रणयित्वाथ जानकीं  
सन्तुष्टमानसं रामं - कृत्वा कपिकुलोत्तम ! ॥ ४४
- श्रीरामात् परमं श्रेयो - लब्ध्वा कीर्तिं च सुस्थिरां  
नाना लोकाधिपो भूत्वा - देवदेवो भविष्यसि ॥ ४५

|  |    |
|--|----|
| इत्युक्त्वा तं समाधाय - ययौ लोकपितामहः           |    |
| चचार मारुतिर्लंकां - राक्षसानां कुलेकुले ॥       | ४६ |
| ददर्श राक्षसां स्तत्र - वेदघोष सन्निवितां        |    |
| अग्निहोत्रांश्च वेदांश्च - राक्षसानां कुलेकुले ॥ | ४७ |
| दया सत्यं च शौचं च - राक्षसानां नविद्यते         |    |
| भक्षंति मदवस्तूनि - ये जनाः तामसात्मना ॥         | ४८ |
| तेषां दया च सत्यं च - शौचं नास्ति न संशयः        | ४९ |
| पुरांधकासुरो गौर्या - दुष्टाचारो यथाहतः          |    |
| तथा हतो दशग्रीवः - सीतया च भविष्यति ॥            | ५० |
| पार्वत्यै शंकरे गैव - वृत्तांत स्समुदीरितः       | ५१ |

ईश्वर :

|  |    |
|--|----|
| ब्राह्मणानां सुरापेय - गौड्याद्याः पापकारणाः             |    |
| सुरा कल्प्यान्य भक्ष्याणि - श्रुति स्तु न सुरां पिबेत् ॥ | ५२ |
| आर्द्रकं सगुडं मद्यं - सैन्धवं बाडब तथा                  |    |
| नारिकेलान्बु कांस्ये च तथा सम्मिश्रितो गुडः ॥            | ५३ |
| सर्षपं चैव तक्रे - स्यात्ताम्रगव्यं सुरासमं              |    |
| ताम्रे गुडरसं चैव - सुराया तुलितं बुधैः ॥                | ५४ |
| न शब्द भक्षणं चापि - तर्जन्यां दन्तशोधनं                 |    |
| शूद्र प्रेषित भुक्तं च - पुष्पिणीमुखसेवनम् ॥             | ५५ |
| अकालेऽभ्यञ्जनं चापि - शिष्टतैलस्य भक्षणं                 |    |
| पलाण्डु पललाण्डुं च पीयूषं व्यञ्जनं तथा ॥                | ५६ |
| कंदं च रक्तकंदं च - रक्तशिग्रं तथैव च                    |    |
| उपोदकीं कुम्भ शाकं - स्त्रीभिर्भुक्तावशिष्टकम् ॥         | ५७ |
| न दोषा मातृकल्पासु परलोकस्य पीडकाः                       |    |
| शुक्र शापात्पुरा देवि! सुरापानं न दूष्यति                | ५८ |

- अत्रेतिहासं वक्ष्यामि - श्रुणु शैलसुते! प्रिये!  
पुरा राधंतरे कल्पे - वतमाने कलौयुगे  
कल्पांतर बधार्थाय - गते मयि शुचिस्मिते ॥ ५९
- अन्धको नाम दैत्येन्द्रो - ब्रह्मादत्त वरो बली  
ब्रह्माणं वज्रिणं जित्वा - चक्रपाणि मनस्तरम्  
गोवधनं गिरिवरं - प्राप्तवान् जयकाक्षया ॥ ६०
- शैलाधिवास मजनि जायमानेऽन्यमुल्बण  
त्रिशूल क्षतगात्रेभ्यो - ह्यन्धकस्य शिवेन वै  
तत्र तत्रोऽपि बहवो - ह्यन्धकाकार वर्चसः ॥ ६२
- समुत्पन्नास्तु तैः पूर्ण - त्रैलोक्यं स चराचरम्  
पराङ्मुखगतो नन्दी - शिवस्यांतःपुरंगतः ॥ ६३
- त्वद्गूहे शेषुपीं कृत्वा - त्वां ध्यायन् त्रिपुरेश्वरि  
त्वद्रक्षणार्थं निर्दिष्ट विष्णुमायां विशारदाम् ॥ ६४
- अभ्यर्णं मागतां ज्ञात्वा - असृजत् साहि कामिनी  
देव्या विसृष्टा देवेशि! - त्वद्रूपिण्यो वरानने ॥ ६५
- ता स्वेकां परिजग्राह मृडानी शङ्कया किल  
त्रिनिगंते विरूपास्ते विष्णुमायावशा दभूत्  
पुनरन्य च साप्येव - पुनरन्य च साप्यभूत् ॥ ६६
- एवकाले बहुगते देवि! क्रोधवशंगताः  
नवद्वारां दुराधर्षा - नित्य पुष्टा करीषिणीं  
पीयूष परिखां दिव्यां - दिव्य संस्कार संस्कृतां  
सृष्ट्वाधिष्ठाय नगरीं - सृष्टा देव्या महाबलाः ॥ ६८
- नित्याच्च नित्य किलन्नाच - चामुण्डा वह्निवासिनी  
मदद्रवापि योगिन्यो - वशिन्या द्याश्शुचिस्मिताः  
तांसर्वा न्भक्षयामासुर्देव्या नन्धकवत् स्थितान् ॥ ६९

|   |    |
|---|----|
| नित्यक्लिन्नापि सहसा जठरे राक्षसर्षभं<br>कल्पं बभार कल्पांते - जीर्णोभू द्राक्षसर्षभः   | ७० |
| तद्वहिव्या रमादेव्याः - प्रतिबिंब समुत्थिता<br>नीलासिता वेदवती - सा जाता जनकात्मजा      | ७१ |
| लोकसंकर्षणार्थाय - साधुतिष्ठति शोभने!<br>सीतादर्शन माकर्ण्य - वीतशोको भविष्यति          | ७२ |
| लक्ष्मीस्तस्य गृहे नित्यं - अनपायी भविष्यति ॥   | ७३ |
| पुत्रवृद्धि ज्ञानवृद्धि - धान्यवृद्धि तथैव च<br>गृहाराम कलत्राणां वृद्धिनित्यं भविष्यति | ७४ |
| प्रस्थानं रोचयामास - रावणस्य वधायवै<br>श्रुत्वा यः परम प्रीत्या हनूमद्विजयांकितम् ॥     | ७५ |
| आञ्जनेय प्रसादेन - विष्णुलोकं स गच्छति ॥<br>इति मारुति वाक्येन - प्रीतो रघुति भृशं ॥    | ७६ |

श्रीरामः -

|  |    |
|--|----|
| एकैक स्योपकाराय - प्राणान् दास्यामि हे कपे<br>प्रत्यहं क्रियमाणेन - शेषस्य ऋणितो वयम् ॥        | ७७ |
| अङ्गेष्वेष जरायांतु - यत्वयोपकृतं कपे<br>यन्निशीधे च हनुमान् भ्राता मे जीवितस्त्वया ॥          | ७८ |
| उपकारेण सुग्रीवो - राज्यं कांक्षन्विभीषणः<br>निष्कारणस्तु हनुमन् - त्वमेवातः प्रमोदकः ॥        | ७९ |
| सर्वस्वभूतं गृह्णीष्व - परिष्वङ्गो मया कृतं<br>वर ददामि पिङ्गाक्ष - सर्वकार्यपरोभव!            | ८० |
| त्वन्मन्त्र जापिनां नित्यं त्वन्नाम स्मृतिकारिणां<br>त्वद्रूप पूजकानां च - सर्वकार्यपरोभव ॥    | ८१ |
| मत्कथापेक्षिता यावत् - यावत्पर्वत संस्थितिः<br>यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च - तावत्त्वं मुखितो भव ॥ | ८२ |

पश्चाच्चतुर्मुखो भूत्वा - सृष्ट्वा लोकान् यथाविधि  
 मुल्लोक वसिभि स्साकं - मत्स्वरूप मुपैष्यसि  
 इति दत्वा वरं रामो - अनुजग्राह मासतिम् ॥

८३

इति श्री पराशर संहिताया श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
 यत्रनाश्व चरित्र कथन नाम अष्टात्रिंशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

### एकोनचत्वारिंशत्पटलः

-: हनुमद्विग्रह प्रतिष्ठा कथनम् :-

श्री मैत्रेयः :-

श्लो॥ हनूमद्विग्रह प्राण - प्रतिष्ठापन लक्षणं  
 तत्प्रकार समाचक्ष्व पराशर महामुने!

१

श्री पराशरः

रजतेन सुवर्णेन - ताम्ब्रेण शिलयापि वा  
 यत्किञ्चि द्रजितं स्वर्णं - भिश्रितेनाऽथ वा मुने!  
 ताम्ब्रेण विग्रहं दिव्यं - ध्यान मार्गेण कारयेत् ॥  
 श्रावणे कार्तिके माघे - मार्गशीर्षेऽथ फाल्गुणे  
 वैशाखे ज्येष्ठमासे च - शुभलग्ने शुभेदिने ॥  
 शांतेन शिल्पकारेण - विग्रहं कारयेत्सुधीः  
 सन्तुष्टमानसं कृत्वा - शिल्पकारं गुणोत्तरम्  
 यत्किञ्चि त्पादमूल्यं च - दत्त्वाविग्रहमादरात् ॥  
 हनूमद्विग्रहं देव - मादाय च शुभेदिने  
 श्रावणे कार्तिके माघे - मार्गशीर्षेऽथ फाल्गुणे ॥

२

३

४

५

६



- ज्येष्ठे वैशाखमासे च - पुष्यमासे विशेषतः  
 गुर्विदु भृगुवारेषु - मन्दवारे विशेषतः ॥ ७
- आर्द्रादि पञ्चके चैव - रोहिण्यां मृगशीर्षके  
 उत्तरा हस्त चित्ता सु पूर्वाभाद्राख्य ऋक्षके ॥ ८
- श्रावणे च धनिष्ठायां - पुष्ये शतभिषे तथा  
 एतेष्वखिलदेवानां - प्रतिष्ठा फलदा स्मृता ॥ ९
- निर्वर्त्य कर्ता पूर्वेषु - नित्य कर्म यथाविधि  
 हनुमद्विग्रह प्राण - प्रतिष्ठां सिद्धकर्मणि ॥ १०
- करिष्या मीति संकल्प्य - कृत्वा पुण्याहवाचनम्  
 शुचौ देशे महारम्ये - मण्डप चतुरश्रमम् ॥ ११
- कृत्वा संस्थापयेत्तत्र - कदली पादपान्मुखान्  
 पल्लवैः कोमलैः पुष्पैः - तानामणिगणैस्तथा  
 अलङ्कारयुतां स्तत्र - तोरणादींश्च कारयेत् ॥ १२
- विचित्र रङ्गवर्लीं च - लेखये त्सु विराजितम्  
 त्रि वारं मण्डपे वास्तो - ष्यत इत्युच्चरेत्ततः ॥ १३
- स्थापयेत् स्थूल कलशं - मण्डपे तण्डुलोपरि  
 अथाष्टदिक्षु दिक्पाल - कलशां स्थापये त्सुधीः ॥ १४
- आदौ ब्रह्मकलशं च - स्थापये त्पूर्वं भागतः  
 सर्वेषां कलशानां च - कण्ठेषु मुनिसत्तम  
 तन्तुना पञ्चथाऽऽवृत्त्या - कारये द्बन्धनं ततः ॥ १५
- जम्बूग्लक्ष पटाश्वत्थ - रसालद्रुम पल्लवाः  
 इत्येते मुनिशादूँल - वक्ष्यन्ते पञ्च पल्लवाः ॥ १६
- प्रधानकलश स्यान्तः - निक्षिपेत्पञ्च पल्लवान्  
 नदीजलं समापूय - फलपुष्पाणि निक्षिपेत् ॥ १७
- पठे च्च ब्रह्मजिज्ञासं - ब्रह्मणः कलशस्य च  
 आराधनं प्रकुर्वीत - आचार्यं कलशस्य च  
 आराधनं पूर्वं व च्च - मूलमन्त्रेण यत्नतः ॥ १८

|   |    |
|---|----|
| प्रणवादि चतुर्थ्यन्तैर्न - मोन्तैस्स्व स्वनामभिः<br>इन्द्रादि सर्वैदिवपाल - कलशा नपि पूजयेत् ॥  | १९ |
| एते ष्वष्टकलशेषु - नमो तै स्स्वस्वनामभिः<br>प्रणवादि चतुर्थ्यन्तैः - पूजयेच्च यथाक्रमम् ॥   | २० |
| जांबवाद्द्विनताद्यैश्च - कुर्यादावरणं ततः<br>जास्वा न्विनतो नीलः - पनसो गन्धमादनः ॥   | २१ |
| सुषेण मैद द्विविदान् - कलशेषु प्रपूजयेत्<br>यथाशक्ति हिरण्यं च - कलशेषु विनिक्षिपेत् ॥  | २२ |
| गन्धपुष्पै रलंकृत्य - वस्त्रालकरणं ततः<br>ब्रह्मा विष्णु महादेव - दुर्गा गणपतीं स्तथा<br>सूर्यादि सर्वैदेवांश्च - नमस्कृत्य यथाक्रमम् ॥ | २३ |
| आप्याय स्वेति मन्त्रेण - क्षीर मानीयतां ततः<br>शुक्रमस्येति मन्त्रेण - घृत मानीयतां मुने! ॥   | २४ |
| दधिक्रावुण्णो इति मन्त्रेण दधि मानीयता मथ<br>मधुवातेति मन्त्रेण - मधु मानीयतां मुने ॥   | २५ |
| शक्रेति च मन्त्रेण - गुड मानीयतां ततः<br>अयं गौरिति मन्त्रेण - गन्धद्वारेति मन्त्रतः<br>एतन्मन्त्रद्वयं चोक्त्वा - गोमयं संप्रहेततः ॥   | २६ |
| गायत्र्या च गोमूत्र - मानीतं मङ्गलप्रदं<br>हिरण्यवर्णं मन्त्रेण - जलमानीयतां ततः ॥  | २७ |
| जलेन पञ्चगव्येन - मेलनं कारयेत्सुधीः<br>प्रधानकलशे रम्ये - सर्वमेत त्प्रपूरयेत् ॥   | २८ |
| गोमूत्रं गोमयं चैव - गोक्षीरं गोघृतं तथा<br>गोदध्यानि पञ्चानि - गव्यानीति विचक्ष्यते ॥  | २९ |

- गोक्षीरं गोघृतं चैव - मधु गोदधि शर्कराः  
 पञ्चामृतानि चैतानि - कथ्यन्ते मुनिपुङ्गव! ३०
- कर्मण्यस्मिन् प्रतिष्ठाख्ये - त्व माचार्यो भवेति च  
 द्विजोत्तमं नियुज्यैकं - कर्तारु स्वयमेव वा ॥ ३१
- आपोवेति च मन्त्रेण - प्रधान कलशोदकं  
 करे निक्षिप्य विधिवत् - अभिमन्त्र्य मुनीश्वर! ३२
- परिवेष्ट्य नवं वस्त्रं - दूर्वाः पुष्पाणि चंदनं  
 तुलसीं च कुशाग्राणि - फलानि विविधानि च ॥ ३३
- यथाशक्ति हिरण्यं च - घटमध्ये विनिक्षिपेत्  
 बन्धनं कारये द्वीमान् - औदुम्बर समित्रयम् ॥ ३४
- दर्भरज्ज्वा त्रिरावृत्य - पृष्ठभागे हनूमतः  
 स्थापये त्पीठमध्ये च - हनूमद्विग्रहं ततः ॥ ३५
- कस्तूरी चन्दनाद्यैश्च - तिलकं धारये त्सुधीः  
 परिवेष्ट्य नवं वस्त्रं - मूलमन्त्रेण यत्नतः ॥ ३६
- स्नानं पञ्चामृतैर्दिव्यैः - कारये न्मूलमन्त्रतः  
 अब्लिङ्गमन्त्रैः कुर्वीत - स्नानं शुद्धोदकैस्तथा ३७
- पञ्चोपचारा न्देवाय - यथाविधि समर्पयेत्  
 गन्धं, पुष्पं च धूपं च - दीपं नैवेद्यं मेव च  
 उपचाराश्च पंचैते - मुनिभिः परिकीर्तिताः ॥ ३८
- सुगञ्जमेति मन्त्रेण - धटे देवं विनिक्षिपेत्  
 मन्त्रै रुपनिषद्भिश्च - तथा वासुण सूक्तकैः  
 अब्लिङ्गमन्त्रैश्चान्यैश्च - तथा वै दश शांतिभिः ॥ ३९
- पञ्चामृतैश्शुद्धतोयै - स्नापये द्धनुमत्प्रभुम्  
 पञ्चोपचारा न्देवाय - दिक्पालेभ्य स्समर्पयेत् ॥ ४०
- हनूमद्दक्षिणेभागे - नीलं चैव प्रपूजयेत्  
 जलाधिवासः कर्तव्यो - याममात्रं च स्वामिनः ॥ ४१

- कारये द्वाद्यघोषं च - महोत्सवकरं यथा  
 एवं जलाधिवासव्य - प्रकारः कथ्यते बुधैः ॥ ४२
- उत्तिष्ठ ब्राह्मण इति - जलस्थं देव मुद्धरेत्  
 कदलीवन मध्ये तु - रङ्गवल्लीं प्रकल्पयेत् ॥ ४३
- तत्र पीठे महारम्ये - याममात्र मनन्तरम्  
 सुगञ्चमेति चोच्चार्य - स्थापये दञ्जनासुतम् ॥ ४४
- हनुमत्तापनीयेव - देवं पञ्चामृतैश्शुभैः  
 स्नान शुद्धोदकैर्दिव्यैः - कारये च यथाविधि ॥ ४५
- कृत्वा पञ्चोपचारांश्च - गीतावाद्यांश्च कारयेत्  
 एवं च कदली वासः - प्रकारः कथ्यते बुधैः ॥ ४६
- उत्तिष्ठ ब्राह्मण इति - कदलीवन मध्यतः  
 पुनर्देवं समुद्धृत्य - याममात्रं ततःपरम् ॥ ४७
- कदली चूत खर्जूर - नारिकेल फलादिषु  
 सुगञ्चमेति मन्त्रेण - स्थापये हनुमत्प्रभुम् ॥ ४८
- हनुमद्वेदशिरसा - पुनः पञ्चामृतैश्शुभैः  
 हनुमद्विग्रहं पूज्य - मभिषिच्य महोत्सवैः ४९
- पञ्चोपचारा न्देवाय - यथाविधि समर्पयेत्  
 एवं फलादि वासश्च - प्रकारः कथ्यते बुधैः ॥ ५०
- उत्तिष्ठ ब्राह्मण इति - स्वामिनं फलवासतः  
 उद्धृत्य च पुनर्देवं - ततः पञ्चामृतेषु च  
 सुगञ्चमेति चोच्चार्य - याममात्रं विनिक्षिपेत् ॥ ५१
- पञ्चामृतैश्शुद्धतोर्यै - नमकेनाऽभिषेचयेत्  
 पञ्चोपचारा ङ्कुर्वीत - नृत्य गीत महोत्सवैः ॥ ५२
- पञ्चामृताधिवासं च हनुमत्प्रभु मुद्धरेत्  
 उद्धृत्य धान्यराशौ च - विध्युक्तं स्थापये त्सुधीः ॥ ५३

- व्रीह्यश्चम इत्येव - मन्त्र मुञ्चार्यं यत्ततः  
 नाना धान्यानि संगृह्य - एकराशिं च कारयेत् ॥ ५१
- सुगन्धमेव चोञ्चार्यं - विग्रहं तत्र निक्षिपेत्  
 पञ्चामृतैश्शुद्धतौर्यै - रभिषेकं च कारयेत् ॥ ५२
- ततः पञ्चोपचारांश्च - कपीशाय समर्पयेत् ॥ ५३
- अधश्शयन माचार्यो - ब्रह्मचर्यं तत परम्  
 जितेन्द्रियः फलाहारः - कुर्यात्सूर्योदयावधि ॥ ५४
- नृत्य गीतादि वाद्यैश्च - पुराणपठनेन च  
 वेदपारायणे नैव - कुर्याज्जागरणं ततः ॥ ५५
- एवं धान्याधिवासस्य - प्रकारः कथ्यते बुधैः  
 एवं पञ्चाधिवासेषु - क्रमेण मुनिपुंगव !  
 सुवर्णं पुष्प ताम्बूलं श्रद्धायुक्तं स्समर्पयेत् ॥ ५६
- प्रातरुत्थाय शुद्धात्मा - हनुमद्भक्ति संयुतः  
 स्नान संध्यादिकं कर्म - निर्वर्त्य नियतेन्द्रियः ॥ ६०
- उत्तिष्ठ ब्राह्मण इति - हनुमद्विग्रहं ततः  
 धान्याधिवासा दुग्धृत्य - पीठमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ ६१
- पञ्चामृतैश्च शुद्धतौर्यैः - कुशोदक फलोदकैः  
 पुष्पोदकैः पञ्चगव्यैः - पुष्प सूक्तेन वै ततः ॥ ६२
- विधिनास्नापयेद्देवं - पट्टवस्त्रं समर्पयेत्  
 पञ्चोपचारा न्देवाय - ताम्बूलं च समर्पयेत् ॥ ६६

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर भैत्रेय संवादे  
 श्री हनुमद्विग्रह प्रतिष्ठा कथननाम एकोनचत्वारिंशत्पटलः

\*

\*

\*

# श्री पराशर संहिता

## चत्वारिंशत्पटलः

∴ श्री हनुमद्विग्रह प्रतिष्ठा कथनम् ∴

श्री पराशरः ।

- श्लो॥ स्वगृह्योक्त विधानेन - षट्पात्र विधिनापि वा  
चतुष्पात्र प्रयोगेन - भूर्भुवस्सुवरोमिति ॥ १
- मन्त्रेणाग्निं प्रतिष्ठाप्य - दर्भपुष्पाक्षतै रशुभैः  
अग्निहोत्र मलंकृत्य - कुर्यात्स्थानादिकाम्मुने ॥ २
- अथाज्येनच व्याहृद्भि - जुहुया दाहुती ब्रती  
आवातवाहीति ऋचा - द्वादशाऽऽवृत्ति मात्रतः ॥ ३
- आहुती मूलमन्त्रेण - जुहुयाद्गोघृते न च  
हाम्यश्वत्थ समिद्भिश्च - चरुणा गोघृतेन च  
मधुसम्मिश्रितै व्रीहि - पिष्टयुवतै रशुभै स्तिलैः ॥ ४
- अष्टोत्तर सहस्रं वा - अष्टोत्तरशतं च वा  
आहुती मूलमन्त्रेण - जुहुयाच्छ्रद्धयान्वितः ॥ ५
- गायत्र्या जुहुयादष्ट - विशति चरुणा ततः ॥ ६
- अथोपदेष्टा तन्त्रं च - निर्वर्त्य विधिपूर्वकम्  
अनन्तरं गयस्फानो - मन्त्रेण चरुणा ततः ७
- हुनेतिश्चष्टकृतं विप्रः - यदस्येति च मन्त्रतः  
समिधाऽऽज्य तिलैश्चापि - जुहुयाद्द्वादशाहुतीः ॥ ८
- संशेषिताज्येन हनुम - द्विग्रहाङ्गानि संपृशेत्  
प्राणप्रतिष्ठा समये - विग्रहाऽऽचार्ययोर्द्वयोः  
नवीनेन च वस्त्रेण कुर्या - दाच्छादनं प्रति ॥ ९
- सूर्यमण्डलमध्यस्थं - उष्ट्रारूढं महौजसं  
सुवर्चलायुतं हेम - वर्णं पिगाक्ष मव्ययम्  
आवाहये छनूम द्वि - ग्रहे अंकुश मुद्रया ॥ १०

|  |    |
|--|----|
| देवस्य हृदयेऽङ्गुष्ठ - माचार्यस्य विनिक्षिपेत्     |    |
| जपेद्धनुमद्गायत्रीं - अष्टाविंशति संख्यया ॥        | ११ |
| सप्ताक्षरीं हनुमतः - प्रजपे त्सूर्यं संख्यया       |    |
| अनन्तरं मूलमन्त्रं - अष्टोत्तर शतं जपेत् ॥         | १२ |
| प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रं च - छन्दवि म्यासपूर्वकम्    |    |
| त्रिवार मुच्चरे ध्वीमा - नंगुष्ठं च विसर्जयेत् ॥   | १३ |
| अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा महामन्त्रस्य...विनियोगः ॥ | १४ |

म् :

रक्तांभोधिस्थपोतोत्लसदरुण सरोजाधिरूढा कराब्जैः  
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भ्रुव मणिगणमर्प्यकुशं पञ्चबाणान्  
बिभ्राणासृक्कपालं - त्रिनयनविलसत्पीन बक्षोरुहाढ्या  
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परानः ॥ १५

अस्मिन् हनुमद्विग्रहे प्राणप्रतिष्ठां हनुमतः  
जीव इहस्थितः आं ह्रीं क्रौं यं रं लं शं षं  
सं हं लं क्षं हंसं रसोहं अस्मिन् विग्रहे प्राण इह प्राणः ॥ १६  
आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं  
लं क्षं अस्मिन् श्री हनुमद्विग्रहे श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वा घ्राणाः ॥

अस्मिन् हनुमद्विग्रहे वाक्पाणि पादपायूपस्थाः  
अस्मिन् हनुमद्विग्रहे वचनादान गमन विसर्गानन्दाः  
अस्मिन् हनुमद्विग्रहे मनोबुध्यहंकार चित्ताः  
अस्मिन् हनुमद्विग्रहे प्राणापानव्यानोदानसमानाः  
सर्वे इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥  
(क्रौं ह्रीं आं ॥ इमं मन्त्रं त्रिवारं जपेत्) १७

उद्धाद्याच्छादितं वस्त्रं - देवायाऽचार्ययोरपि  
उन्मीलनं विग्रहस्य - चक्षुषा कारयेत्तथा ॥ १८

|   |    |
|---|----|
| वयस्सुपर्ण मन्त्रेण - विग्रहस्य प्रयत्नतः<br>संशेषिताऽऽज्यं कुर्वीत - वृष्टि स्वर्णशलाकया ॥   | १९ |
| आवाहना द्यष्टमुद्राः - विग्रहस्य प्रदर्शयेत् ॥  | २० |
| सूपापूपादि संयुक्त - नानाफल समन्वितम्<br>नैवेद्यं षड्भोपेतं - विग्रहस्य प्रदापयेत् ॥  | २१ |
| तांबूल मंत्रपुष्पं च - बाह्यघोषं च कारयेत्<br>तथाऽऽवरणदेवानां - नैवेद्यं च प्रदापयेत् ॥   | २२ |
| सम्यग्ध्यात्वा ततो देवं - ब्राह्मणांश्च प्रपूजयेत्<br>वस्त्रै राभरणैर्दिव्यै - गुंरुं चापि प्रपूजयेत् ॥   | २३ |
| अथाष्ट कलशानांतु - मूलमन्त्रेण भक्तितः<br>वेद विद्भ्यश्च विप्रेभ्यो - दानं कुर्याद्विचक्षणः   | २४ |
| रौप्येन वा सुवर्णेन - हनुमद्विग्रहं ततः<br>कारयित्वा सुशीलाय - ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ॥  | २५ |
| हनुमत्प्रीतये कुर्यात् - गोदानं सर्वकामदम्<br>अनन्तरं यथाशक्ति - कुर्याद्ब्राह्मण भोजनम् ॥  | २६ |
| स्वयं देवात्मकं ध्यात्वा - चिरं सुविहरेत्सुखी<br>देवो प्येवंकृते साक्षात् - विग्रहे सुस्थिरो भवेत् ॥  | २७ |
| हनुमत्पुरतो दिव्य - मुष्ट्रं संस्थापये द्विजः<br>पूजयेत्परमप्रीत्या - सप्राप्नोति मनोरथान् ॥  | २८ |
| चक्रपाण प्रतिष्ठायै - कर्मनिर्वर्त्यं पूर्ववत्<br>अंगुष्ठं चक्रमध्येतु - निक्षिप्य विधिपूर्वकम्<br>प्रजपेन्मन्त्र गायत्री - मष्टोत्तरशतं द्विजः ॥               | २९ |
| “यंत्रराजाय विद्महे वरप्रदानाय धीमहि तन्नोमंत्रः प्रचोदयात्”<br>सर्बदेवात्मकं ध्यात्वा - प्रधानं चेष्टदेवतम्<br>स्थापयेत्पीठमध्येतु - कृत्वा पूर्वं दिशामुखम् ॥ | ३० |
| सर्वानितरदेवांश्च - परिवारांश्च कारयेत्<br>कस्तूरिका चन्दनादि - सुगन्धद्रव्य चर्चितः ॥  | ३१ |



|  |    |
|--|----|
| कर्ता चोदङ्मुखो भूत्वा - संसिद्धो नियतेन्द्रियः<br>परध्यान विहीनस्सन् - पूजये दिष्टदैवतम् ॥      | ३२ |
| पूजादौ श्री हनूमन्तं - पूजांते मुनिपुङ्गव!<br>दिनेदिने यथाशक्ति - मूलमन्त्रं जपेत्सुधीः ॥        | ३३ |
| अन्यदैवं परित्यज्य - एकं यद्दैवमेव यः<br>भजेच्च तस्माद्दैवाच्च सर्वमाप्तो त्यसंशयः ॥             | ३४ |
| पूजार्थं श्री हनूमतः - मुने वक्ष्याम्यहं श्रुणु ॥<br>ताम्रेण रजते नैव - सुवर्णेन विशेषतः         | ३५ |
| कुर्यात्पात्र द्वये दिव्ये - उपचारांश्च विंशति ॥<br>पूर्णं च विनियोगं च - पात्रं द्वयं मुदाहृतम् | ३६ |
| पूर्णं पात्रस्थं मुदकं - विनियोगे विनिक्षिपेत् ॥<br>सप्तवर्णमनुं विप्र - उच्चरे च्छ्रीहनूमतः     | ३७ |
| कारयेच्च प्रतिदिनं - उपचारांश्च विंशति ॥<br>आवाह नासनं पाद्य - मर्घ्यं माचमनीयकम्                | ३८ |
| स्नानं वस्त्रोपवीतं च - गन्धं पुष्पाक्षतादयः ॥<br>धूपं दीपं च नैवेद्यं पानीयं तदनन्तरम्          | ३९ |
| ताम्बूलं मन्त्रपुष्पं च - नृत्यं गीतं तथैव च<br>प्रदक्षिणं नमस्कारौ - उपचारांश्च विंशति ॥        | ४० |
| पिपीलिका मक्षिकादि - स्पृष्टं यद्दूढबीजकम्<br>मृच्छिला केशदुष्टं च - यद्यप्यशुचिं पाचितम् ॥      | ४१ |
| अति पक्वं मपक्वं च - तद्विहाय सुपावनम्<br>नैवेद्यं दीयते तुभ्यं - हनुमान् प्रतिगृह्यतां ॥        | ४२ |
| प्रतीक्षते सुरास्सर्वे - धूपं स्यान्नसरं यतः<br>तेन तुष्टो भव श्रीम - ज्ञानेयं नमोस्तुते ॥       | ४३ |
| एला गुग्गुलु संयुक्त - गव्याज्येन सुसम्प्लुतः<br>धूपोऽयं गृह्यतां देव! आज्ञेयं नमोस्तुते ॥       | ४४ |

एवं यः पूजयेन्नित्यं - प्रतिष्ठितमतन्द्रितः  
 इह भुक्त्वाऽखिलाभोगा - नस्ते मुक्तिं स विन्दति । ४५  
 हनूमदालयं गत्वा - तत्पदासक्तमानसः  
 सप्ताक्षरीं हनुमतो - दशवारं जपेत्सुधीः ॥ ४६

इति श्री पराशरसंहितायां श्री पराशरमैत्रेयसंवादे  
 श्री हनुमद्विग्रहप्रतिष्ठाकथनं नाम चत्वारिंशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशरसंहिता एकचत्वारिंशत्पटलः

-: पर्वदिवसश्री हनुमत्पूजा कथनम् :-

श्रीमैत्रेयः :-

श्लो ॥ कीदृशे दिवसे मासे - क्षेत्रे वापीच कीदृशे  
 भान्वादिबासरे योगे - संपूज्यो हनुमत्प्रभुः ॥ १  
 पूजयित्वा पुरा केवा - सङ्गताः कीदृशं फलं ?  
 तन्ममाचक्ष्व योगीन्द्र - पराशर! कृपांबुधे! २

श्री पराशरः

मुने! चित्रं प्रवक्ष्यामि - गुह्याद्गुह्यतमं महत्  
 सर्वलोकोपकाराय - सावधानमना श्रुणु ॥ ३  
 चैत्रे पुष्याख्ये नक्षत्रे - मैत्रेयनाम द्विजोत्तमः  
 भजमानो हनूमन्तं - अभूत्पूर्णमनोरथः ॥ ४  
 आश्लेषऋक्षे वैशाखे - ध्वजदत्तो महाद्विजः  
 संपूज्य श्री हनूमन्तं - महदैश्वर्यं मासवै ॥ ५

- वैशाखेमासि कृष्णायां - दशम्यां यवनाश्रकः  
पूजयित्वा हनुमन्तं - अन्ते मुक्तिं भवाप सः ॥ ६
- ज्येष्ठेमासि मखाऋक्षे - हरिशर्मा द्विजोत्तमः  
हनुमन्तं भजन्नास्ते - निवृत्तान्यप्रयोजनः ॥ ७
- तीर्थयात्रा मटन् ज्ञातुं - परित्रांतः किलाऽध्वना  
तदा किरातवेषेण - हनुमा भूतभावनः  
ददौ फलानि पक्वानि - भक्ताय हरिशर्मेण ॥ ८
- ज्येष्ठशुद्ध द्वितीयायां - गालोनाम किरातकः  
सुवर्चलापतिं ध्यात्वा - कुण्ठव्याधिच तीर्णवान् ॥ ९
- ज्येष्ठशुद्ध दशम्यां च - सुमुखो प्यञ्जनासुतम्  
भजमानो हनुमन्तं - प्रत्यक्षं तस्य लब्धवान् ॥ १०
- आषाढमासे रोहिण्यां - इन्द्रसंपूज्य माहतिम्  
जित्वा स्वृत्रनामानं - असुरं लोककण्ठकम् ॥ ११
- श्रावण्यां पौर्णमास्यां च - कश्यपः केसरीसुतम्  
संपूज्य सकलाभीष्टं - अवाप मुनिपुंगवम् ॥ १२
- मासे भाद्रपदेऽश्विन्यां - नागकन्या सुमध्यमा  
हनुमत्पूजया शीघ्रं - नागलोकेशता मगात् ॥ १३
- मृगशीर्षख्य तारायां - आश्विनेमासि माहतिम्  
संपूज्य द्रौपदी भक्त्या - प्रसिद्धिं मतुला मगात् ॥ १४
- द्वादश्यां कार्तिकेमासि - शुबलपक्षे तु कुम्भजः  
हनुमद्भुजना देव - चुलुकेऽब्धिं चकार वै ॥ १५
- मार्गशीर्षे त्रयोदश्यां - सोमदत्तं कपीश्वरम्  
हनुमद्भुजने नैव - राज्यं पुनरवाप्तवान् ॥ १६
- उत्तरायां सुषेणाख्यो - गन्धर्वः पुष्यभासके  
आञ्जनेयं समभ्यर्च्य - गानविद्या विचक्षणः ॥ १७
- माघे चार्द्राख्यनक्षत्रे - हनुमन्तः भजं स्ततः  
विभीषणसुतो नीलः - सर्वाभीष्टा नवापसः ॥ १८

|   |    |
|---|----|
| पुनर्वस्वाख्य नक्षत्रे - फाल्गुणेमासि चाङ्गदः<br>हनुमन्तं भजन् शीघ्रं - युवराजत्व माप्तवान् ॥ | १९ |
| आदित्य हस्तानक्षत्रे - शौर्यशाली धनञ्जयः<br>हनूमन्तं भजन् कृष्णं - सारथिं कृतधाम्हरिम् ॥      | २० |
| मृगशीर्षाख्य नक्षत्रे - भानुवारे वृकोदरः<br>हनूमन्तं भजन्सद्यः - जितवा नखिलानरीन् ॥           | २१ |
| पूर्वाभाद्राख्य नक्षत्रे - पुष्करो वानरेश्वरः<br>भजन्लोके महाख्यातिं - तपस्सिद्धिं मवापसः ॥   | २२ |
| सततं मंदवारेषु - भरतः क्षत्रियोत्तमः<br>हनूमन्तं भजन् तस्थौ - निरंकुश पराक्रमः ॥              | २३ |
| प्रतिवैधृतियोगेषु - संपूज्य पवनात्मजम्<br>लेभे दृढां तपस्सिद्धिं - दूर्वासो मुनिपुङ्गवः ॥     | २४ |
| अमायुक्तेन्दुवारेच - हनुमद्भजना तिकल<br>तारया सङ्गतः श्रीमान् - सुग्रीवो विगतव्यधः ॥          | २५ |
| भौमवारे हनुमन्तं - सीता संपूज्य यत्नतः<br>गतव्यथा मनोवाञ्छा - सिद्धिं शीघ्रं मवाप सा          | २६ |
| तस्मादुक्तेषु कालेषु - मैत्रेय मुनिसत्तम!<br>भजस्व वायुपुत्र त्वं - सर्वाभीष्टं मवाप्स्यसि ॥  | २७ |
| यद्दं हनुमत्सूक्त - कीर्तयेच्छृणुयादपि<br>सोऽपि कामा नवाप्नोति - नात्र कार्याविचारणा ॥        | २८ |

श्री ह नु म त्सू क्त म्

श्रीमन्तः, सर्वलक्षणसम्बन्धः, जयप्रदः सर्वाभरणभूषित मुद्गारः, श्रेष्ठतोष्ट्रमारुहः, केसरीप्रियनन्दन, वायुतनूजः, यथेच्छपम्पातीरविहारः धमादनसञ्चारः, हेमप्राकारांचितकनककदलीवनान्तरनिवासः परमात्मा अचरशापविमोचनः, हेमवर्णानानारत्नखचितामूल्यतरां मेखलांच स्वर्णोत्पेतां, कौशेयवस्त्रंच विभ्राणः, सनातनः, परमपुरुषः, महाबलः, अप्रमेय-पशाली, रजितवर्णः शुद्धस्फटिक सङ्काशः, पञ्चवदन- पञ्चदशनेत्रः

सकलदिव्यास्त्रधारी, श्रीसुयर्वलारमण। महेन्द्राद्यष्टदिकवालक त्रयस्त्रिंशद्ग्री  
 वर्णि मुनिगणगन्धर्वयक्षकिन्नरपन्नगासुरपूजित पादपद्मयुगलः नानावर्णः  
 कामरूपः, कामचारः, योगिष्ठयेयः, श्रीहनुमान्, आञ्जनेयो, विराड्रूपी  
 विश्वा माः, विश्वरूपः, पवननन्दनः, पार्वतीपुत्रः, ईश्वरतनूजः, सकलमनोर  
 थान्नो ददातु ॥ २९

व. इदं श्री हनुमत्सूक्तं यो धीमान्येकवारं पठे स्यादि  
 सर्वेभ्यः पापेभ्यो विमुक्तो भूयात् ।

द्विवारं यदि पठेत् समस्ततीर्थस्नानः सर्ववेदाङ्गपारग  
 इव भूयात् ।

इदं त्रिवारं यः पठेत् श्री हनुमत्सायुज्यं प्राप्नुयात्  
 सर्वान्कामा नवाप्नोति ॥ ३०

एषु पर्वदिने ष्वेवं - संपूज्य कपिशेखरं

तथा द्वादशवारंतु जुहुया द्गोघृतेनच ॥

३१

यथाशक्ति ब्राह्मणांश्च - भोजये दिष्टवस्तुभिः

आञ्जनेय प्रसादेन - सर्वान्कामा नवाप्नुयात् ॥

३२

अन्यद्रहस्यं वक्ष्यामि - श्रृणुष्व मुनिपुङ्गव

वैशाखेमासि कृष्णायां - जयन्त्यां दशमीतिथौ ॥

३३

यथाशक्ति सुवर्णेन - ताम्रेण रजतेनवा

हनुमद्विग्रहं धीमान् - कारयित्वा प्रयत्नतः

३४

ब्राह्मणाय सुशीलाय - दानं कुर्यात्कुटुम्बिने

जयंतिदिवसे पूजां - कृत्वा हनुमतःप्रभोः ॥

३५

उपवासो यते प्रोक्तः - गृहीणां भोजनं मतम्

पूर्वाप्रोष्ठपदायुक्ता - जयन्ती दशमीतिथिः ॥

३६

तत्र नक्षत्रैरूप्ये - तिथिरेव प्रयोजितः

वैशाखेमासि यत्नेन - कुर्याद्धर्मं मनुत्तमम् ॥

३७

- असकृद्वा सकृद्वापि - पराङ्गति मवाप्नुयात् ॥  
 वैशाखमास माहात्म्यं - कल्पकोटिशतैरपि  
 नशक्यं वर्णितुं ब्रह्मन् - ब्रह्मणापि समन्ततः ॥ ३८
- सुवर्चलापतिः श्रीमान् - अञ्जनागर्भसम्भवः  
 हनुमान्मारुतिः श्रीमान् - अतीर्णोऽरिशिक्षकः ॥ ३९
- तदाप्रभृति मासस्य - वैशाखस्य महात्मनः  
 स्नानदानादि योग्यत्वं - हनुमज्जन्मकारणात् ॥ ४०
- इति निश्चित्य मतिमान् - स्नायाद्वाह्य जलांतरे  
 सन्तर्पये पितृं स्तत्र - दद्याद्विप्राय गां धनम् ॥ ४१
- दापये दुदकं चान्नं - हनुमत्प्रीतये तथा  
 ब्राह्मणः क्षत्रियोवापि - वैश्योवा शूद्रएववा  
 स्त्रियः पुमा न्स षण्डो वा - यथाशक्ति निवेदयेत् ॥ ४२
- ततस्तु हनुमान्प्रीतः - दद्यान्निज पदांतिकम्  
 भानुवारे श्वेतगु जी - नादा यातिप्रयत्नतः ॥ ४३
- सप्तमन्त्रात्मिकां विद्यां - उच्चरे च्छ्री हनुमतः  
 भूमौ खनित्वा मंत्रेण - भानुवारे विनिक्षिपेत् ॥ ४४
- इमं मंत्रं पठन्बीज - मूलं तोयेन सेचयेत्  
 फलितं कारये त्सम्य - गेवं गुञ्जावनीरुहम् ॥ ४५
- अनन्तरं भानुवारे - सप्तमन्त्रात्मकं मनुम्  
 शुचिर्भूत्वा पठन् श्वेत - गुञ्जामूलं च संग्रहेत् ॥ ४६
- हस्ते निक्षेप्य तन्मूलं - सप्तमन्त्रात्मकं मनुम्  
 अष्टोत्तरशतं जप्त्वा - उपचारैः प्रपूजयेत् ॥ ४७
- ततो द्वादशवारंतु - जुहुयात् गोघृतेन च  
 भूमुरान्पञ्चसंख्याका - न्यथेऽटं भोजयेद्बुधः ॥ ४८
- एवं कृतेऽपि तन्मूलं - हनुमत्समतां ब्रजेत्  
 प्रतिवर्षं तु तन्मूलं - सर्वकालेषु पूजयेत् ॥ ४९

जनन्तरं च तन्मूलं - धारयेद्यः पुमा न्युचिः  
तस्य संदर्शनादेव - सर्वलोकवशं भवेत् ॥ ५०

अपरोऽपि विशेषोऽस्ति - सर्वसंपत्प्रदायकः  
रत्नेह्यान्मंत्रेण नूतं ते - गद्यते गोप्यता मयम् ॥ ५१

धरावोदय घृतलक्षणं :-

अरुणोदयमारभ्य - तस्य वास्तमयाऽवधि  
धरावधृतपववानां - अपूपानां हनूमते ॥ ५२

निन्दितानां विप्रेभ्यः - श्रोत्रियेभ्य स्समर्पणात्  
धरावोदय नामैवं - व्रतानां उत्तमं व्रतम् ॥ ५२

मृकण्डुमुनिना चीर्णं - पूरा बदरिकाश्रमे  
मार्कण्डेयो महायोगी - चिरञ्जीवी जिथेन्द्रियः  
पुत्रो लब्धो महायोगी - सर्वलोकेषु विश्रुतः ॥ ५४

इदं व्रतं महापुण्यं - सुर्वकामफलप्रदम् ॥ ५४

यस्य कार्यस्य संसिद्धि - रिष्यते सर्वजन्तुभिः

अथाप्यते हि सा शीघ्र - मितरोपाय दुर्लभाः ॥ ५५

नाग्निकाय कृतधनाय - दाम्भिकाय दुरात्मने  
हृदात्रिदपि नो विप्र! - रहस्यं न दिशे त्सुधीः ॥ ५६

संतिगदित हनूमद्भक्त सङ्घप्रभावं

अकल भुवन रक्षाकृत्यदक्षं मुनीन्द्रम्

अपदि समभि नन्द्य स्तोत्ररूपेण भूयः

अदहनूमद्विद्या मित्यवोच त्कर्था सः ॥ ५७

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेण संवादे  
शिवसत्य श्री हनुमत्पूजा कथननाम एकचत्वारिंशत्पटलः

# श्री पराशर संहिता

## द्विचत्वारिंशत्पटलः

:- वीरहनुमन्मालामन्त्र प्रभाव कथनम् :-

मंत्रेयः ।

॥ पराशर! महाप्राज्ञ! सर्वमन्त्र विशारद!

वदस्व वीरहनुम - मालामन्त्रं विशारद ॥

१

पराशरः ।

ज्ञाने विरागे हरिभक्ति भावे

धृतिस्थिति प्राणबलेषु योगे

बुधौ च नान्यः हनुमत्समानः

पुमान्कदाचित्कश्च कश्चनैव ॥

२

शैवानां परम ईशो - वैष्णवानां प्रधानतः

इति मत्वा हनूमन्तं - मुनय स्समुपाश्रिताः ॥

३

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि - मन्त्र माहात्म्य मेव च

मंत्रेय मुनिशाङ्गं - शृणुष्वानन्य मानसः ॥

४

आदौ प्रणव मुच्चार्य - नमोभगवते पदं

वीरप्रतापविजय - हनुमत्पद मुच्यते ॥

५

स्तंभिनी मोहिनी वशी - करणी पद मुच्चरेत्

ततो विद्वेषणी चैव - मारणी पदमुच्चरेत् ॥

६

ततश्च पञ्चीकरणी - तथा नामपदं वदेत्

ततो वै बन्धनबला - मुखबन्धन चाप्यथा ॥

७

ततःपरं ग्राममुख - बन्धनेति पदं ततः

नारीमुखपदं चैव - बन्धनेति पदं ततः ॥

८

मकरचौषष्टिपदं - बन्धनेति समुच्चरेत्

सिंह व्याघ्र वराहेति - ततो वै सर्पवृश्चिकौ ॥

९



|   |    |
|---|----|
| भूतचोराग्निबाधा च - पाषाणपद मुच्चरेत्                 |    |
| निघ्नति पद मुच्चार्यं - सर्ववैरिमुखं तथा ॥            | १  |
| वन्दन्नेति ततोच्चार्यं - कुञ्जरेति पदं वदेत्          |    |
| ततो वृषभमहिष - भल्लूकमुख बन्धनम् ॥                    | १  |
| चापरं वीरशब्दश्च - हनुमत्पद मुच्चरेत्                 |    |
| अथेश्वरस्वरूपेति - तथावै वायुनन्दनः ॥                 | १० |
| अथाञ्जनामुते त्युक्त्वा - पातुपातु पदं वदेत्          |    |
| बान्धव विक्रम पदं - श्रीवर्णं च समुच्चरेत् ॥          | १३ |
| रामदूतपदं चैव - शत्रुविध्वंसनपदं                      |    |
| ततो महाभैरवेति - ततः शत्रुक्षयाय च ॥                  | १४ |
| प्रणवं च ततोच्चार्यं - ह्रां ह्रीं ह्रूं एहि एहि च    |    |
| ततोवै सर्वविषये - सर्वजन पदं ततः ॥                    | १५ |
| वशीकरणेतिपदं - पश्चात्परबलं ततः                       |    |
| वाधयेति द्वि रुच्चार्यं - पश्चात् ममपदं ततः ॥         | १६ |
| सर्वकार्याणि पदं चोक्त्वा - साधयेति द्विरुच्चरेत्     |    |
| मम शत्रुक्षयं चैव - कुरु कुविति संवदेत् ॥             | १७ |
| प्रणवं च ततोच्चार्यं - ह्रां ह्रीं ह्रूं पद मुच्चरेत् |    |
| वराहबीज मुच्चार्यं - फट् स्वाहा च पदं वदेत् ॥         | १८ |
| वर्णानां च पट्पञ्चाश - दुत्तर शतद्वयं                 |    |
| सर्वमन्त्रेष्वयं मन्त्रं - श्रेष्ठ इत्युच्यते बुधैः ॥ | १९ |
| मन्त्रस्यास्य पुरश्चर्या - होमस्तर्पण मेव च           |    |
| प्रताप हनुमन्माला - मन्त्रव द्वक्ष्यते मुने!          | २० |

तन्म :

उद्यन्मातण्डिकोटिप्रकटरुच्चिकरं चारुष्ठीरासनस्थं  
 विभ्राण हेममौजीं करधृतकमलं नागयज्ञोपवीतं  
 धीरं सपेदु माँळि वरमणिमकुटं कुण्डलाभासगण्डं  
 भीमाकारं त्रिनेत्रं ममशुभफलदं वायुपुत्रं तन्मामि ॥ २१

- ऋषिर्मनो रीश्वरश्च त्वष्टुच्छन्दः प्रकीर्तितः  
 कालाग्नि रुद्र श्रीमान् - हनुमान् देवता भवेत् ॥ २२
- प्रणवं बीज मित्युक्तं - स्वाहा शक्तिः प्रवक्ष्यते  
 हनुमान् कीलकं चैव - मम सर्वाभीष्टसिद्धये  
 जपे पदं समुच्चार्य - विनियोग स्ततः परम् ॥ २३
- क्रमशो मूलमन्त्रेण - षडङ्गन्यास माचरेत्  
 अत्रैव चोदाहरण - मितिहासं पुरातनम् ॥ २४
- यशस्स्थं स्वर्गद नृणां - अपवर्गफलप्रदम्  
 यस्य श्रवणमात्रेण - सद्यः सुख मवाप्नुयात् ॥ २५
- युधि रामो दशग्रीवं - हत्वाऽनन्त बलान्वितम्  
 जानकी सहित इश्रीमान् - सुग्रीवादि प्लवङ्गमैः ॥ २६
- विभीषणादि दनुजैः - सुर ब्रह्मर्षिभि रसह  
 पुष्पक तत्समारुह्य - नभोमार्गेण सत्वरम् ॥ २७
- अयोध्यानगरं प्राप्य - सुचिरं सुमहोदयः  
 कदाचिद्राघवो दृष्ट्वा - हनुमन्त महाबलम्  
 प्रतापशालिनं वीरं - कपिवये मुवाचह ॥ २८
- हनुमान् बुद्धि सम्पन्न - महाबलपराक्रम  
 भवदी योपकाराणां - हृदये परिधावताम् ॥ २९
- दुष्कराणां विरिञ्चाद्यैः - मादृशानां तु किं पुनः  
 कवा प्रत्युपकार ते - करिष्या म्यधुना सखे!  
 प्रथम दुग्मे रम्ये - सीता विरहकातरः  
 इति कर्तव्यता मूढः - सीता ध्यान परायणः  
 अहं ममानुज इचैव - भवता प्रापितौ धृतिम् ॥ ३१
- ततस्सुग्रीवसाचर्य - वाङ्मनस्तुल्य चेष्टितम्  
 त्वयैवावहितो - नूनं - सिन्धुमध्ये प्लवो यथा ॥ ३२

|  |    |
|--|----|
| ततस्सीतां मृगयता - भवताकारि यत्सखे!                |    |
| दुर्वचं तन्म माद्यापि - कर्तुं वा कथ मीश्वरः ॥     | ३३ |
| मत्सन्देश हरे णैव - सीता संलालिता त्वया            |    |
| सीताऽपि विगत प्राणा - पुनरुज्जीविता त्वया ॥        | ३४ |
| बहुनात्र किमुवतेन - लक्ष्मणः प्राणसन्निभः          |    |
| पुनरुज्जीवितस्तेन - तस्य कोपकृति र्वदेत् ॥         | ३५ |
| एकैक स्योपकारस्य - प्रतिकर्तुं मनीश्वराः           | ३६ |
| ससौदर्या स्सहामात्या - स्सकलत्रा स्सबान्धवाः       |    |
| अये मद्वंशजा नून - मृणिका वायुनन्दन !              | ३७ |
| तथापि प्रार्थया म्यद्य - करिष्ये भवदीप्सितम        |    |
| तन्म माचक्ष्व भद्र ते - श्रुणु मत्प्रार्थनां कपे!  | ३८ |
| इत्युक्तो रामचन्द्रेण - वायुपुत्रो महाबलः          |    |
| विनयावनतो भूत्वा - बभाषे रघुनन्दनम् ॥              | ३९ |
| भव त्पादाब्जयुग्मे स्मिन् - भक्ति रस्त्वनपायिनी    |    |
| सर्वेषां श्रेयसां मूलं - ब्रह्माद्यैरपि दुर्लभा    |    |
| यद्यस्ति ते कृपा स्वामिन् - वर मेष वरो मम ॥        | ४० |
| इत्याकर्ण्य वच स्तस्य - प्रहृम ब्रघुनन्दनः         |    |
| अप्यैवं भवतः काम - शाश्वतः पवनात्मजः               |    |
| किंतु मत्प्रार्थनां श्रुत्वा - गृहाणेम वरं पुनः ॥  | ४१ |
| भवतः पूजनार्थयि - प्रतिमा रूपधारिणः ॥              | ४२ |
| हनूमत्पुर नामानं - ग्राम माचन्द्रतारकम्            |    |
| गृहाण मदनुज्ञातः - प्रतिष्ठा सिद्धये तव ॥          | ४३ |
| तत्र ग्रामे द्विज श्रेष्ठाः - श्रोत्रिया सोमयाजिनः |    |
| सर्वशास्त्रेषु कुशलाः - नित्यकर्मपरायणाः ॥         | ४४ |
| स्वाचारनिरता नित्यं - भवन्मंत्र परायणाः            |    |
| भवन्तं पूजयिष्यंतः - त्वामेव शरणागताः              | ४५ |

- भक्त्या तत्र मभिचारिण्यः - त्वय्यावेशितचेतसः  
इति वादिनि राजेन्द्रे - कौसल्यानन्दवर्धने  
सुवर्चलापतिः प्राह - तत्कालसदृशं वचः ॥ ४६
- भगवन् देवदेवेश! - पुराणपुरुषोत्तम!  
भृत्यभावेन मे संस्था - भवद्विग्रह सन्निधौ  
अन्यथा मम न प्रीतिः - इति स्नेहा दग्धावत ॥ ४८
- हनुमान् प्रतिजग्राह - ग्रामं विप्रजनाश्रयम्  
हेमप्राकार सहितं - कलधौत गृहोज्ज्वलम् ॥ ४९
- चन्द्रमण्डल पर्यन्त - व्याप्त प्राकार शोभितम्  
नानामाणिक्यखचितं - गोपुरै रप्यलंकृतम् । ५०
- अश्वै र्भद्रगजैर्गोभिः - स्यन्दनैः परिपूरितम्  
नानागणित वीधीषु - भूसुरै रग्निहोत्रिभिः ॥ ५१
- वेदशास्त्र पुराणौघ - षोषैश्च परिशोभितम्  
हंसकारण्डवाकीर्णैः - कुमुदोत्पल पङ्कजैः ५२
- अलंकृतैस्तटाकै र्श्च - दीर्घिकाभि र्विराजितम्  
ब्रह्मा क्षत्रिय वैश्यादि - नाना वर्णैः प्रपूरितम् ॥ ५३
- खर्जूर नारिकेलादि - पूगीकदलिकादिभिः  
तिन्त्रिणी चूत पनस - जम्बीर हरिचन्दनैः ॥ ५४
- कपित्थ बिल्वामलकैः - वनै रन्यैश्च शोभितम्  
केतकी मल्लिका जाजि - पुन्नागै र्श्चपकै र्श्शुभैः ५५
- वकुलादिभि रन्यैश्च - कुसुमैस्सुमनोहरैः  
रम्य समृद्धिसयुक्तं - एव विध मनुत्तमम् ॥ ५६
- मेरोर्दक्षिण दिग्भागे - दशयोजन विस्तृतम्  
आयत च तथा चैव - घन ग्रामं तदा ततः ॥ ५७
- हनुमा नपि तं ग्रामं - नाम्ना च हनुमत्पुरम्  
कृत्वा बहुभ्यो विप्रेभ्यः - ददौ आचन्द्रतारकम् ॥ ५८

- तस्मिन्पुरे विप्रमुख्याः - परिपूर्णं मनोरथाः  
 देवालयान्हनुमत - ससहस्राणि चतुर्दश ॥ ५
- कारयित्वा महाभागं - हनूमद्भक्ति संयुतौ  
 चतुर्भुजान् दशभुजान् - वीररूपां स्तथैव च ॥ ६
- भीमाकारा न्पञ्च मुखान् - उष्ट्राखुटा न्महौजसः  
 ततो मुकुलितकरान् - शान्तरूपां स्ततःपरम् ॥ ६।
- तथा सुवर्चलोपेतान् - उग्ररूपां महात्मनः  
 एवं विधा न्विग्रहांश्च - कारयित्वा हनूमतः ॥ ६२
- ते ष्वालयेषु संस्थाप्य - नित्यं सेवापरायणाः  
 महोत्सवरताश्चैव - तस्थु स्ववर्गोऽमरा इव ॥ ६३
- कदाचि त्कालयवन - नन्दनः सुरकण्ठकः  
 पापिष्ठो दुर्मुखोनाम - महाबल पराक्रमः ॥ ६४
- चतुरङ्गबलीपेतः - मदान्धश्च भयङ्करः  
 विप्राणां धनधान्यानि - हनुमत्पुरवासिनाम्  
 हरिष्या मीति दुर्बुध्या - तत्पुर दुर्मुखो ययौ ॥ ६५
- पुरस्य निकटं प्राप्य - यवनो दुर्मुख स्तथा  
 पुरस्ता न्विप्रमुख्यांश्च - समाहूयैव मब्रवीत् ॥ ६६
- भो! भूसुरा! युष्मदीयं - चिरकालार्जित धनम्  
 सर्वं दत्त्वाद्य मे यूय - पुरंत्यक्त्वा बहूर्जितम् ॥ ६७
- सकलत्रा ससपुत्राश्च - गच्छध्वं च सबान्धवाः ॥ ६८
- इत्येवं दुर्मुखवचः - श्रुत्वा सर्वे महाद्विजाः  
 निर्भया धैर्यं सम्पन्ना - स्तमूचु दुर्मुखं प्रति ॥ ६९
- त्रेतायुगे हनुमता - वीरेण पुरमुत्तमम्  
 अस्मभ्य मूर्जितं दत्तं - स्थानत्यागं तु नोचितः ॥ ७०
- सवंथा यदि न त्याज्यो - ग्रामोऽयं चिरसंश्रितः  
 तर्हि दाता हनुमान्नो - य च्चास्म त्कुलदैवतम् ॥ ७१

किं नु निष्कामये दस्मां - स्वयमे वाश्रितान् प्रभुः  
तदा यामो वयं त्यक्त्वा - ग्राम मद्यैव दृमुंश्च ॥ ७२

इत्युक्त्वा यवनमुतं द्विजानि नङ्घा

निर्भिका हनुमदनुग्रह प्रभावात्

पादाब्जं कुलदैवतस्य मतो

हृ-पद्मं पु विभावयां बभूवुः ॥

७३

इति श्री पराशर मंहितायां श्री पराशर वैश्वेय मंत्रादे  
श्री वीरहनुमन्मालामन्त्र प्रभावकथननाम द्विच-त्वारिंशत्पटलः

\* \* \*

श्री पराशर मंहिता

द्विचत्वारिंशत्पटलः

-: हनुमद्भक्त कथनम् :-

श्री पराशरः ।

श्लो॥ इदं श्रुत्वा ब्राह्मणानां - वाक्यं यवननन्दनः  
आमर्षयुक्तो दुष्टात्मा - प्रत्युवाच सत्तांप्रति ॥ १

हनुमान्नाम को विप्रा - यस्तु मूढैः प्रगल्भते  
अहं तु राजा सर्वेषां - लोकाना मपि चेश्वरः ॥ २

मदन्यभजना स्सर्वे - हतभाग्या हनौजसः  
अन्नपान विहीनं च - गमिष्यथ यथायथम् ॥ ३

युष्मन्नवद्यताबुध्या - नहन्या म्यह मीदृशान्  
यादनागच्छथाद्यैव - ब्राह्मणा नपि पीडये ॥ ४

एव श्रुत्वा मुने! विप्रा - वचन यवनतोदितम्  
श्वो गच्छामो वयं सर्वे - इत्युक्त्वा विविद्युः पुरम् ॥ ५

प्रवेक्ष्य च तदा देवं - हनूमस्तं महाबलम्  
 तुष्टुवुः केचि दपरे - पूजां चक्रु स्समाहिताः ॥  
 केचि हृद्युः कृतात्मानो - जेषु स्तन्मन्त्र कोविदाः  
 विप्राणां ध्यायता मेवं - दण्डव न्नमतां भुवि  
 हनूमदालये भूयः - जपतां मन्त्र मुत्तमम् ॥  
 अपूपा मधुरा स्वाद्याः - फलानि विविधानि च  
 निवेदितानि देवाय - सभ्रमा द्विजपुङ्गवैः ॥  
 हनुमान् कस्य चित्स्वप्ने - जगाद श्लोकयोर्युगम् ॥  
 मान्धाता च महीपतिः कृतयुगालङ्कारभूतो गतः  
 सेतुयेन महोदधौ विरचितः क्वासी दशास्यान्तकः ॥ १  
 अन्ये चापि युधिष्ठिर प्रभृतयः ते कीर्तिशेषंगताः  
 नैकेनापि समंगता वसुमतीं नूनं त्वया यास्यति ॥ १  
 आत्मदत्तापहारी यः - इमश्चो नीचतरो हि सः  
 अन्यैस्तु छदितं भुङ्क्ते - न स्वात्म छदितं क्वचित् ॥ १  
 श्लोकद्वय भवन्तोऽद्य - यवनं श्रावयन्तु तम्  
 श्रुत्वा स गच्छेन्नोचेत्तु - प्रतिकृत्य करो म्यहम् ॥ १  
 इत्युक्त्वांतदधे वीरो - हनुमान्भक्तवत्सलः  
 तत उत्थाय विप्रेन्द्रो - ब्राह्मणेभ्यो यथातथम् ॥  
 वर्णयामास वृत्तांत - श्रुत्वा ते हृष्टमानसाः  
 गत्वा परेद्यु स्ते विप्रा - स्तस्मै श्लोकयुगं तथा ॥  
 श्रावयामासु रत्नाय - यवनाय दुरात्मने  
 श्रुत्वाैव राक्षसेन्द्रोऽपि - कोप विस्फुरिताधरः ॥  
 हुंश्रुत्य विप्राङ्गच्छध्वं - शीघ्रैर्णै वेत्यचोदयत्  
 श्रुत्वा संभर्त्सनं वाक्यं - श्वस्तु गच्छामहे वयम्  
 एवं समाधीय खलं - विविशुः पुर मुत्तमम् ॥  
 तत्र सम्भूय विप्रेन्द्र - उपायं तन्निवर्तकम्  
 चिन्तयन्तो नतग्रीवाः - जानुस्थित मुखाम्बुजाः ॥

- कस्त्राता नोऽद्य सर्वेषां - दुस्तरा दापदंबुधेः  
 अन्योन्य मिति जल्पंतः - प्रत्येकं दुःखविह्वलाः ॥ १९
- अमुंच ताश्रुवर्षाणि - धारा इव घनाधनाः  
 रुदतो ब्राह्मणश्रेष्ठान् - दृष्ट्वा सर्वे पुरोभवाः ॥ २०
- स्त्रियो वृद्धाश्च बालाश्च - दुरुदु मुक्तकठकं  
 गृहपाला स्ततो भूयः - द्वारपालाः परस्परम् ॥ २१
- गोपालोद्यानपालाश्च - विकीर्ण हृदया इशुवि  
 तत्र के चिन्महात्मानः - धैर्यं मास्थाय यत्नतः ॥ २२
- वारयांचक्रिरे दुःखात् - दुःखितं पौरमण्डलम्  
 हनुमा नेव न स्त्राता - स्मृतस्सर्वाघनाशनः ॥ २३
- इत्येवं भाषमाणास्ते - मुमृजु दुःखकर्मम् ॥ २४
- स्वयं तदा समाधाय - मानसं दुःखञ्चलम्  
 जेषु स्सर्वे तदा वीर - हनुमन्मंत्र मुत्तमम् ॥ २५
- जिताहारा जितक्रोधा - जित शीतोष्णवायवः  
 ध्यायंतो हृदयाब्जे स्वे - हनुमत्पदपंकजम् ॥ २६
- व्रते शरावोदय नामसंयुगे  
 दत्त्वा बहुभ्यो द्विजनन्दनेभ्यः  
 अपूपसारान् सघृतान् सपायसान्  
 सतर्पयामासु रथांजनासुतम् ॥ २७
- शरावोदय निष्णाताः - वाग्यत्न नियतव्रताः  
 चकृ स्समाप्तिं ते तत्र - हनूमद्व्रत मुत्तमम् ॥ २८
- इति भक्तापदं वीक्ष्य - हनुमान् करुणानिधिः  
 उवाच मधुरां वाणि - अदृश्यनिजबिग्रहः ॥ २९
- भो भो विप्रा महाभागाः - न बिभ्यत कदाचन  
 मयि त्रातरि भक्तानां - नाशुभं विद्यते क्वचित् ॥ ३०



वसुधां सर्वसस्याढ्यां - ब्राह्मणेभ्यो वित्तीर्ययः  
 गृह्णातिचे त्पुन लोभात् - स याति नरका न्वहून् ॥  
 उपेक्षेत च यो दाता - शक्तोऽपि परिपालने  
 सोऽपि मूढमति विप्रा - रौरवं नरकं व्रजेत् ॥  
 गवां द्विजन्मनां सद्यः - महत्सङ्कटगामिनाम्  
 उत्थापने समर्थोऽपि - सोऽपि दुर्गति माप्नुयात् ॥  
 सवेषा मेव जन्तूनां - प्राणः प्रियतरो भृशम्  
 ममभक्तजनाः प्राज्ञाः - प्राणप्रियतरा मम  
 इत्युक्त्वा कपिनाथोऽपि - विरराम जगाम च ॥  
 ततो विप्राः समुत्थाय - हनुमत्पुरवासिनः  
 विस्मयं परमं जिग्मुः - अशरीरवच इश्रवात् ॥  
 तदा हृष्णा द्विजश्रेष्ठाः - हनुमन्मन्त्र तत्पराः  
 परस्परं प्रशंसन्तः - हनुमद्वैभव परम् ॥  
 सर्वे ते ह्यात्मसुप्रज्ञाः - यवनाक्रान्त वृत्तिषु  
 आज्जनेय कृपापूर्ण - सेचनं मेनिरे द्विजाः ॥  
 हनुमानपि तं देशं - आगमत्त्वरयान्त्रितः  
 यत्रास्ते यवनो मूढः - सेनाकलकलान्वितः ॥  
 महाबानर रूपेण - दुर्मुखस्य चमू' तथा  
 प्रदक्षिणी चकारासौ निखिलां वलयात्मना ॥  
 एवं प्रक्राम्य पूर्वेण - गतस्तेषां प्रपश्यतां  
 तं दृष्ट्वा गूढचारस्तु - यवनाय न्यवेदयत् ॥  
 भो राजन् कश्य ना मेदं - तनु वानररूपधृत्  
 रक्ताक्षः पर्वताकार - सङ्काशोऽति विभीषणः ॥  
 दीर्घवालो महाबाहुः - सेनां प्रक्रम्य तावकीम्  
 सेना निवेश तुल्येन - पाषाणेन दृढात्मना ॥  
 छादय न्निव बेगेन - भीतिमेतां प्रभूत्तम ॥

|  |    |
|--|----|
| विलोक्याभिमुखं पूर्वा - प्रतस्थेऽचलसन्निभः       |    |
| इमां सेनां नयापत्नी - हविष्यति बलोद्धतः          |    |
| तावदेव त्वया चास्या - रक्षोपायो विचिन्त्यताम् ॥  | ४५ |
| ग्रामोऽयं विप्रमुख्येभ्यो - दत्ता हनुमता प्रभो!  |    |
| अस्य सोढु न वै भङ्गं - शक्तोऽय बलिनां बली ॥      | ४६ |
| विक्रातो विजयी मानी - संग्रामे ष्वपराजितः        |    |
| कालनेमिर्हतो येन - रावणि श्राक्षनामकः ॥          | ४७ |
| बहुशः राक्षसा स्संख्ये - हतास्तेन महात्मना       |    |
| तस्मात्त्य रक्षं सेना नः - भीतान्तर्गत चेष्टया ॥ | ४८ |
| रात्रौ जीवेम सर्वेऽद्य - वयं जीवेम शाश्वतम्      |    |
| इति चारब्ध इश्रुत्वा - यवनो भय विह्वलः ॥         | ४९ |
| तस्माद्देशादवक्रान्तो - जानन्नपि चमूं कापिः      |    |
| निजभक्ति प्रभावस्य - प्रकाशन कृतेकृती ॥          | ५० |
| तस्यां रात्रौ हनूमांस्तु - शैल मुत्पाट्य वेगतः   |    |
| पूर्वं यत्रोषितो सेना - स्वयं च वलयीकृता         | ५१ |
| यावत्सेनासन्निवेशं - पातयामास पर्वतम् ॥          | ५२ |
| दृष्ट्वा प्रभाते सा सेना - स च राक्षसनन्दनः      |    |
| विस्मयाविष्टमनसो - भयभारावपीडिताः ॥              | ५३ |
| जीवितास्म वयं दैवा - दित्यूचुस्ते परस्परम्       |    |
| अथवा तद्वदत्रापि - पाषाण विषुलायतम्              |    |
| पातयिष्यति कोपेन - किमु भक्तवशवदः ॥              | ५५ |
| इति त्रस्ता स्समालोक्य - सैनिकान् पवनात्मजः      |    |
| माभैषीति समाश्रास्य - सांत्वयामास सामवित् ॥      | ५५ |
| ततो विप्रान् समाहूय - स राजा यवनाधिपः            |    |
| अग्रण्य मग्रतःकृत्वा - वचनं चेद मग्नवीत् ॥       | ५६ |

|   |    |
|---|----|
| शृणुध्व मनयं विप्रा - दर्पादुद्धित मद्यमे<br>यादृशा त्पुरुषो मृत्युः - जातकल्पो महानभूत् ।  | ५७ |
| मदीय सेनया नून - मनन्यशरणाशया<br>भवत्संदर्शना देव - सस्तीर्नो ह्यापदबुधेः ॥   | ५८ |
| अद्यप्रभृति विप्रेन्द्रा - हनुमत्पुरवासिनः<br>यथा सुखं यथावृत्ति - वसन्तु त्यक्त साध्वसा ॥  | ५९ |
| हनूमानेव सर्वेषां - त्राता दाताच बुद्धितः<br>अत्रपूर्वाधिकं यूय - माञ्जनेयपरायणः ॥  | ६० |
| शाराबोदय मुख्यानि - कुरुध्व तद्ब्रतानि वै ॥   | ६१ |
| त दुत्सवंच तत्पूजां - तत्समाराधनं मुहुः<br>प्रतिमास प्रतिदिनं - कुरुध्वं प्रतिवत्सरम् ॥   | ६२ |
| नियुज्यैवं द्विज श्रेष्ठा - त्राजा यवननन्दनः<br>ददौ तेभ्यो महार्हाणि - रत्नानि विविधानि च ॥   | ६३ |
| ग्रामान्जनपदान् देशान् - वस्त्राण्याभरणानि च<br>धनधान्या न्यनेकानि - गाश्च बष्कयणे रपि ॥  | ६४ |
| गजा नश्वान् रथा नुष्ट्रान् - वाघे श्चापि सहस्रशः<br>एतानन्या न्महाभागः - ब्राह्मणेभ्यो न्यवेदयत् ॥                                    | ६५ |
| इति विप्रान् समाधाय - हनुमद्भक्त पुङ्गवान्<br>क्षन्तव्या न्यपराधा नी त्यभ्यवाद यदानतः ॥   | ६६ |
| परिष्वक्तो दृढं प्रेम्णा - विप्रै विगत मत्सरैः<br>सप्राधेय नृपोऽभीष्टा - नित्यवोच त्कृतांजलिः ॥                                       | ६७ |
| अज्ञातभूत परिभूत विवेकशून्ये<br>दत्त्वा कपीन्द्र पदपद्म परागभूर्ति<br>अध्वान मध्वरकृत स्सुख मात्मगेहा<br>दाशाध्व मायुरगद परमात्मवगे ॥ | ६८ |

- इति संप्रार्थिता विप्राः - भूभृता दीनवत्सलाः  
 अन्योन्य सम्मता स्सर्वे - तथास्त्वित्यब्रुवन् मुदा ॥ ६९
- हनूमन्तं महात्मानं - प्रणम्य शिरसा तथा  
 तमेव मनसा ध्यायन् - ययौ यवननन्दनः ॥ ७०
- एवं प्रभावो हनुमान् - भक्तरक्षण तत्परः  
 तस्मिन्भक्तिविधातव्या - मैत्रेयाभीष्टकामदे ॥ ७१
- ग्रामे संग्रामदुष्प्रापे - प्रसादाद्धनुमत्कपेः  
 कृतावासा धृतभ्यासा - परिपूतगृहान्तराः ॥ ७२
- अद्यापि ब्राह्मणास्तत्र - नित्यकर्मपरायणाः  
 धनधाव्यसमायुक्ताः - पुत्रपौत्रगणान्विताः ॥ ७३
- हनुमद्भक्तिं सञ्जात - पूर्णानन्दाभिनिर्भृताः  
 मोदन्ते बहुलस्वर्गे - यथा देवास्तथा भुवि ॥ ७४
- राजापि विप्रवचनात्परिपूर्णकामः  
 सुप्तप्रबुद्ध इव विस्मयसस्मितास्यः  
 ज्ञानोदयेन पदयोऽखिलभूतसंघे  
 बिप्रेषु दैवतमतिमनसा चकार ॥ ७५

इति श्रीपराशरसंहितायां श्रीपराशरमैत्रेयसंवादे

श्रीहनुमद्भक्तकथननामत्रिचत्वारिंशत्पटलः



# श्री पराशर संहिता

चतुश्चत्वारिंशत्पटलः

-: मंत्रावणमाया प्रकरणम् :-

श्री मंत्रेयः -

श्लो॥ पराशर महाबाहो! - ज्ञानविज्ञान सागर !  
हमूषत अरित्रं मे - भूयः कथय मास्ते!  
न तुष्यामि मुनिश्रेष्ठ - श्रोतु मायतसत्कथाम् ॥ १

श्री पराशरः

शृणुष्ववावहितो योगिन् - कथां हनुमतः प्रभो!  
अत्यद्भुतां सुविस्तीर्णा - मनस्सन्तोषकारिणीम् ॥ २  
पुरा दाशरथिश्श्रीमान् - विनिर्जित दशाननः  
अयोध्यां प्राप्य सहृष्टो - मुमुदे ससुहृज्जनः ॥ ३  
तत्र सिंहासनासीनं - रामं दशरथात्मजम्  
द्रष्टु मभ्याययौ योगी - ह्यगस्त्यो ब्रह्मवित्तमः ॥ ४  
त मागतं समालोक्य - प्रत्युत्थाय कृताञ्जलिः  
राघवः पूजयामास - पूजार्हं रिपुमर्दनः ॥ ५  
पूजितस्तेन विप्रेन्द्रः - प्रहृष्टे नाश्वरात्मना  
उवाच राघवं वाक्यं - विनयावनतं तथा ॥ ६  
धन्योऽसि कृतकृत्योऽसि य स्त्वयो रावणो हतः  
जानकी च महाभाग - संप्राप्ता रावणालयात् ॥ ७  
पालितं गुरुवाक्यं च - प्राप्तं राज्य मकण्ठकम्  
त ङ्क्ष्व राघव श्रीमान् - पितृपैतामह महत् ॥ ८  
इत्युक्तकन्तं वचन - मगस्त्यं मुनिसत्तमम्  
प्रत्युवाच नतो भूत्वा - वाक्यज्ञो वाक्यमुत्तमम् ॥ ९  
संप्राप्तं भगवन्नेत - त्सर्वं भगवदनुग्रहात्  
चतुर स्याञ्जमेयस्य - साहाय्यकरुणा दपि ॥ १०

न च तुल्यो हनुमता - शौर्येण च बलेन च  
 सौहार्देन च धैर्येण - स्वामिविश्वासनेन च ॥  
 यतिना प्राप्ति रस्माकं - पुनर्बन्धु समागमः  
 राज्यलाभोऽपि नस्वस्तः - हनुम न्मतिवैभवात् ॥  
 तदधीन मिद सर्व - यच्छुभं भावि भूयते  
 बहुनात्र किमुक्तेन - स एवाहं न संशयः ॥  
 एव ब्रुवन्त राजेन्द्रं - सन्धय सत्त्वं तपोधनः  
 सन्तोष्य च पुनः प्राह - हनुमद्विषयां कथाम् ॥

अगरत्यः :-

यस्य ज्ञातुं त्वया वीर - शौर्यं साहसं भूषितम्  
 तदेव स कपीन्द्रस्य - किं न्त्वज्ञातं च विद्यते ॥  
 भिद्यन्ते श्रवणाद्यंश्च - भीरुणां हृदयानि वै  
 धीराणां हृदया न्याशु - प्राप्नुवन्त्यभिधीयताम् ॥  
 रावणेन समं युद्धे - युध्यमानस्य ते कपिः  
 सानुजस्य ससैन्यस्य - बालप्राकार मातनोत् ॥  
 अन्तर्भयि ससैन्यस्त्वां - मारुति भीमविक्रमः  
 द्वारमात्रं बिलं कृत्वा - तस्थौ दौवारिको बली ॥  
 तदा ह्यजेद्य त्वा म्मत्वा - रावणः बरमातुरः  
 मैरावणं समासाद्य - वचनं चेद मब्रवीत् ॥  
 अय रामो महाबाहुः - सर्वशत्रु विमर्दनः  
 अस्यां रात्र्यां व्यतीतायां - सबलं मां हनिष्यति ॥  
 हनुमा नपि वालैन - सेनां संवेष्ट्य संस्थितः  
 तस्मात्केना प्युपायेन - वंचयित्वाथ मारुतिम् ॥  
 संगृह्य त्वरया वीर - भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ  
 पाताललङ्कां गच्छस्व - तदा सम्यग्भवे मम ॥

- त्वं हि मायावतां श्रेष्ठः - मम प्राणप्रिय स्सखा  
 त्व येदानीं हि कर्तव्यं - साहाय्य मरिमदंनं ॥ २३
- एवमुक्त स्थथा तेन - रावणेन दुरात्मना  
 मौरावणः प्रत्युवाच - मायावा नसुरोत्तमः ॥ २४
- धन्योऽस्म्यहं महाराज - यत्त्वया प्रार्थितोऽधुना  
 मम जीवनहेतोर्वा - फलं संप्राप्त मद्यवै ॥ २५
- यत्त्वया लोकनाथेन - त वात्माप्यतिधी त्वया  
 त्वदीप्सित मकार्यं वा - कार्यं वा कर्तुं मुत्सहे ॥ २६
- भवंत मर्थिनं प्राप्य - प्राणैः पञ्चभि रप्यहम्  
 पूजयिष्ये महाबाहो! - प्राणा जन्मनि जन्मनि ॥ २७
- यदि जीव न्करिष्यामि - सर्वंधा त्वदभीप्सितम्  
 कीर्तिकामस्य मे नूनं - प्राणलाभो परोमतः ॥ २८
- इदं कार्यं न कुर्यां चेत् - मया किं स्यात्तव प्रभो!  
 अयशो मम भूय स्यात् - तव कार्यं न हन्यते ॥ २९
- तद्गच्छ दशकण्ठ त्वं - स्वस्थो भव महामते!  
 तस्य तद्वचनं श्रुत्वा - रावणो राक्षसाधिपः  
 मौरावणं परिष्वज्य - भुमोचानन्दजं जलम् ॥ ३१
- ततस्वस्थो महाराजः - राघवं समचिन्तयन्  
 रथेन जवनाश्वेन - तूर्णं मन्तःपुरं ययौ ॥ ३२
- एवं समाधाय दशाननं तथा  
 प्रसक्तयुद्धं रघुवंशकेतुना  
 मौरावणः प्राविश दात्मनो गृहम्  
 निशाचराधिष्ठित मप्रमेयम् ॥ ३३
- तत्र सूचीमुखं नाम - राक्षसं भीमदर्शनम्  
 दूष्ट्वा वाक्य मुवा चेदं - बहुमान पुरस्सरम् ॥ ३४

रावणः :-

|  |    |
|--|----|
| सूचीमुख महाबाहो! - देवदानव दुर्जय                  |    |
| कर्तव्य मद्य कार्यं नः - दुष्करं देवदानवैः ॥       | ३४ |
| हितैषिणा त्वया नूनं - सुकरं लोकविश्रुतम्           |    |
| सेना बानरवीराणां - लङ्कायां समुपस्थिताम्           |    |
| मार्हति स्तां स वालेन - वेष्टयित्वा व्यवस्थितः ॥   | ३५ |
| ततः प्रवेशः प्राकारे - वायो रपि सुदुर्लभः          |    |
| अन्येषां किमुष्वक्तव्यं - नर किन्नर रक्षसाम् ॥     | ३६ |
| त्वन्तु सूचीमुख इशूर - उपायकुशल स्तथा              | ३७ |
| सूचीमुखे न भूमि त्वं - खनित्वा खनकोत्तम!           |    |
| सेना निवेशं प्रजहि - प्राकारान्तर वर्त्मना ॥       | ३८ |
| विचिंत्य सत्वर तत्र - शयानौ रामलक्ष्मणौ            |    |
| पेटिकायां प्रतिष्ठाप्य - संगृह्यागच्छ यत्नतः ॥     | ३९ |
| कृतकृत्यं तदा यातं - दृष्ट्वा त्वां हृष्टमानसः     |    |
| तव सर्वणिष्यभीष्टानि - ददामि धृताविक्रम ॥          | ४० |
| इति भैरावण प्रोक्तो - मुहुः सूचीमुखोऽसुरः          |    |
| तन्नत्वा प्रययौ सेनां - रामलक्ष्मणपालिताम् ॥       | ४१ |
| स खनित्वा मुखेनैव - सेनामुख वसुन्धरां              |    |
| कपीन्द्रवाल प्राकार - स्पर्शाद्भग्न मुखोऽभवत्      | ४२ |
| सूचीमुखो लज्जितस्सन् - प्राप भैरावणान्तिकम्        |    |
| विनम्रवदनं दीनं - मुखभङ्गाद्विषद्भवे               |    |
| सूचीमुख समालोक्य - प्राह भैरावणो वचः ॥             | ४३ |
| सूचीमुख विकारोऽयं - कथं जातं स्तवानने              |    |
| सत्यं मेतं हि वृत्तांतं - सर्वं मे वक्तुं मर्हसि ॥ | ४४ |
| भैरावण महा प्राज्ञ - तन्नाज्ञां शिरसा वहन्         |    |
| गतोऽस्मि रामसेनां त - द्वाल प्राकार वेष्टिताम् ॥   | ४५ |



सूचीमुख प्रवृत्तोऽस्मि - दृष्ट्वा प्राकार भित्तिकां  
 खनितु मुख तुण्डेन - बज्राशनि सम त्विषा ॥  
 षाकारीकृत बालाग्र - रोमस्पर्शा द्वनूमतः  
 मुखभङ्गोऽभवत्सद्यः - पाहि मां करुणानिधे!  
 एवं सूचीमुखः प्रोक्त्वा - बाष्प गद्गद कन्धरः  
 पपात पादयोस्तस्य - वश्यतां सवरक्षसाम् ॥  
 पतितं तु समुत्थाप्य - स्वबाहुभ्यां बहुप्रदः  
 तस्य दुःखं ममाज्याशु - सममश्रुजलेन सः ॥  
 मैरावणो महामाया - क्रोधाविष्टतनु स्तथा  
 अब्रवीत् मूषिकमुखं - अतिमाया विशारदम् ॥  
 रामलक्ष्मणयो स्सेनां - गच्छ शीघ्रं दुरासदां ॥  
 येनकेना प्युपायेन - गृहीत्वा रामलक्ष्मणौ  
 आगच्छ म त्समीपं त्वं - अर्थराज्यं ददामि ते ॥  
 मैरावणस्य वचनं - श्रुत्वा तन्मूषिकाननः  
 आपाताल खनित्वाऽहं - भूमिस्थौ रामलक्ष्मणौ ॥ १  
 आनयिष्ये महाप्राज्ञ - नीत्वा काशकृत्वाश्रयौ  
 इत्युक्त्वा मूषकमुखः - प्रययौ तच्चमू' प्रति ॥ १  
 उन्नत ब्रह्मलोकाच्च - वज्रतुल्यं महौजसं  
 दृष्ट्या श्रीहनुमद्वाल - प्राकार मूषकाननः ॥ ५  
 कथं नु बाल प्राकार - प्रान्तरं प्रविशा म्यहम्  
 द्रक्ष्यामि वा कथं सुप्तौ - तत्रस्थौ रामलक्ष्मणौ ॥ ५  
 कथं नु वा पुन र्यायां - इति चिन्तापरोऽभवत्  
 तत्रापि च महावज्र - बालं दृष्ट्वाद्भुतं ययौ ॥ ५  
 अनन्तर मुखेर्नृष - दृढं बालमताडयत्  
 अत्युग्र हनुमद्वाल - स्पर्शनेन महामुने  
 मूषकानन दैत्यस्य मुखभङ्गोऽभवत्तदा ॥ ५

|   |    |
|---|----|
| तत्काले मूषक मुखः - चिन्ताक्रान्त पराङ्मुखः     |    |
| दुःखितो मूषक मुखः - प्राप मैरावणान्तिकम् ॥      | ५९ |
| मैरावणोऽपि तं दृष्ट्वा - विकृतं मूषकाननम्       |    |
| कोपाविष्ट मनस्कस्स - न्कञ्चित्कूर महासुरम् ॥    | ६० |
| त मुवाच महाघोरं - नाम्ना पाषाणभेदिनम् ॥         | ६१ |
| पाषाणभेदी मायावी - धीरोदात्त महाबलः             |    |
| सकलोपाय चतुर - स्त्वमेव रिपुमर्दनः ॥            | ६२ |
| भविष्यन्ति शिलाभङ्गाः - त्वद्देह स्पर्शमात्रतः  |    |
| अतस्त्वं हनुमद्बाल - सालं निर्भिन्न यत्नतः ॥    | ६३ |
| सेना मध्यगतौ राम - लक्ष्मणौ शीघ्रमानय           |    |
| एव मुक्त स्स पाषाण - भेदी कपि चमूं ययौ ॥        | ६४ |
| तत्र गत्वाथ हनुम - बालसाल महोन्नतम्             |    |
| शिरसा ताडयामास - कुपितो मानवाशनः ॥              | ६५ |
| पाषाणभेदी हनुम - बाल स्पर्शन मात्रतः            |    |
| तदा भङ्गशिरस्क स्सन् - प्राप मैरावणातिकम् ॥     | ६६ |
| मैरावणो भग्नदेह - दृष्ट्वा पाषाणभेदिनम्         |    |
| दोषपूरित चित्तस्सन् - मायामन्य मच्चिन्तयत् ॥    | ६७ |
| विभीषणस्यवेषेण - धृत्वा सिद्धक्रियां करे        |    |
| मैरावणो महाभायी - रामलक्ष्मणयो श्रमूम् ॥        | ६८ |
| गत्वा तत्र महाबाल - प्राकारद्वार सस्थितम्       |    |
| हनूमन्त महात्मानं - दृष्ट्वा विस्मयमानसः        |    |
| हनूम ग्निकटं प्राप - तदा माया विभीषणः ॥         | ६९ |
| अस्यां रात्र्यां महावीर - हनूमन्माहतात्मज!      |    |
| महा मायाविनो दैत्याः - मदान्धा स्सन्ति भूरिशः ॥ | ७० |
| तिष्ठ चावहितो भूत्वा - हतस्वप्नो जितश्रमः       |    |
| प्राकार द्वादशीमायां - निस्सीम बलसयुतः          | ७१ |

- भहं तु राघवौ द्रक्ष्ये - शयानौ वर्णसं स्तरे  
 अन्तरं दीयतां तात - माभू त्कालविपर्ययः ॥  
 क्षणा देव गमिष्यामि - पुनर्जागृहि मारुते  
 इति बादिनि दैत्येन्द्रे विभीषण समाकृतौ ॥  
 अब्रवी न्मारुति स्नेहा - न्मैरावणविभीषणम्  
 ऊरुद्वयान्तर पथा - सेनां प्रविश मे सखे ॥  
 मैरावणो महामायी - विभीषण इवाचरन्  
 तथेति प्राविशत्येन - कपीन्द्रोर्बन्त राघवना ॥  
 मायाविभीषणो दृष्ट्वा - शयानौ रामलक्ष्मणी  
 तयोरुपरि चिक्षेप सिद्धौषधि वनस्पतीन् ॥  
 त दोषधि प्रभावेन - मूर्च्छितौ राघवौ तदा  
 पेटोमध्ये विनिक्षिप्य - वस्त्रेणाच्छाद्य यत्नतः ॥  
 कक्षे कृत्वा महाकायः - पुनरे वाभ्यगा त्कर्पि  
 त मागतं कपीन्द्रोपि - पप्रच्छ कुशलं तयोः ॥  
 तेन पृष्ठो महामायी - सर्वत्र क्षेम मब्रवीत्  
 पुनरे वाब्रवीन्मायी - तत्काल सदृशं वचः ॥  
 आपद्बन्धो! कपिश्रेष्ठ - नाना शास्त्रादि नैपुण  
 अस्यां रात्र्यां तु घोरायां - राक्षसाः पापबुद्धयः ॥  
 रन्ध्राणि मृगयन्तेऽत्र - सर्वतो बलदर्पिताः  
 तदिमां वानरीं सेनां - रामप्रिय चिकीर्षया ॥  
 परिपालय यत्नेन - न परस्मैदिशान्तरम्  
 इति तस्मै हितं प्रोक्त्वा - क्षणात्स्वपुर मन्वगात् ॥  
 संगृह्य छद्मना वीरौ - राक्षसः पापकर्मकृत्  
 कृतकृत्यं तदात्मानं - मेने मन्दमतिर्हि सः ॥  
 तदा ददौ दरिद्रेभ्यः - वस्त्राण्याभरणानि च  
 महार्हाणि च रक्षानि - तस्मात्प्रीति विह्वलः ॥

|   |    |
|---|----|
| तत्राहूय स्वभगिनीं - दुर्दण्डी नाम नामतः        | -  |
| आह मैरावणः प्रीतो - रुद्धां केन चिदागताम् ॥     | ८५ |
| एहि कल्याणि भद्र ते - मा भू त्ते मनसो व्यथा     |    |
| उत्सवो हि महानद्यां - दुर्गाया स्संप्रवर्तते ॥  | ८६ |
| तस्याः प्रीत्यै महामार्याः - मानुषौ रामलक्ष्मणौ |    |
| करिष्यामि बलिं नूनं - स्थापयेयं नवोदकैः ॥       | ८७ |
| प्राकार बाह्यसरसि - तोय मम्बुज भूषितम्          |    |
| आहर स्वर्णपात्रेण - गच्छ दुर्दण्डि रंहसा ॥      | ८८ |
| दुर्दण्डी तद्वच इश्रुत्वा - दुःखिता भिन्नमानसा  |    |
| गृहीत्वा स्वर्णकलशं - जगाम सरसीतटम् ॥           | ८९ |
| अथ रघुवरयुग्मदर्शनोद्यत्                        |    |
| स्फुटकणारसपूरितान्तरात्मा                       |    |
| सुदृढ मभिजानती तदीया                            |    |
| सकल शरीरिषु हिंसिता हरोद ॥                      | ९० |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर प्रेयेय संवादे

मैरावण गाथा प्रकरणंताम चतुश्चत्वारिंशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

पञ्चचत्वारिंशत्पटलः

-- हनुमत्पाताल लंका प्रवेशकथनम् --

१॥ एतस्मिन्नन्तरे प्राज्ञो - द्रष्टुकामस्स राघवौ  
विभीषण इषुभाचारः - हनुमन्निकटं गतः ॥

|  |    |
|--|----|
| तमुवाचाथ पौलस्त्यो - प्राकाराकृत वालधिम्<br>राक्षसाः पापकर्माणि - माया मोहन पण्डिताः ॥               | ३  |
| वञ्चकाः परमकृद्धाः - रन्ध्रान्वेषण तत्पराः<br>सेना मुखे चरन्ती ह - दृष्ट्यगोचर विग्रहाः ॥            | ३  |
| गृध्रा इव चरन्त्यास्ये - केचिद्गार्दभ विभ्रमाः<br>किन्त्विदानीं कपिश्रेष्ठ - श्रुणुष्वैकं हितं वचः ॥ | ४  |
| एषा भगवती रात्री - सुप्रभाता स्फुटं यदि<br>तदास्यातं राजपुत्री - कृताधौ रामलक्ष्मणौ ॥                | ५  |
| दीर्घनिश्वास कल्लोलं - तरेतां दुःखसागराम्<br>वयं च कृतिनस्सर्वे - प्राणैरपि हितैषिणः ॥               | ६  |
| तत्त्वया हनुमन्वीर! - नकर्तव्या प्रमत्तता<br>त्व दधीन मिदं सर्वं - बलं सुग्रीव पालितम् ॥             | ७  |
| धैर्ये बलेव बुद्धौच - साहसे प्रियकर्माणि<br>नास्तिते सदृशश्शूरः - त्वंहिनः परमागतिः ॥                | ८  |
| मान्तरं दीयतां कस्मै - सेनांत स्सर्वतोदिशं<br>पश्येय मतुल ब्राह्मणै - राजपुत्रा घरिदमौ ॥             | ९  |
| किन्नुपेते रघुश्रेष्ठः - सीताविरहकातरः<br>सौमित्रिर्वा धनुष्पाणिः - किन्नु जागर्ति लक्ष्मणः ॥        | १० |
| अन्तर दीयताममह्यं - दिदृक्षुरहमागतः<br>इति वादिनि पौलस्त्ये - हितैषिणि विभीषणे ॥                     | ११ |
| व्रत्युवाच कपिश्रेष्ठः - संश यापन्नमानसः<br>विभीषण शुभाचार - मुहूर्ते हि गतागतः ॥                    | १२ |
| सन्देहयति भविवत्तं - वामाक्षि स्पन्दतेपुनः<br>इदानी मागतो विद्वन् - दृष्टवानपि राघवौ ॥               | १३ |
| पुनरे वागतः किन्नु - सखे मे ब्रूहि तत्त्वतः<br>इति श्रुत्वा वचो दीनं - कपिनाथेन भाषितम् ॥            | १४ |

- विभीषणो गतोत्साहः - मुहूर्तं ध्यानमास्थितः  
विभीषणः पुनः प्राह - धैर्यमास्थाय यत्नतः ॥ १५
- नागतोऽस्मि कपिश्रेष्ठ - न दृष्टौ रामलक्ष्मणौ  
किन्तु मौरादणो नाम - मातुलो रावणस्य वै ॥ १६
- बहुरुपो महामायो - वञ्चिताखिल सज्जनः  
नैच्यशीलः दुराचारो - ममवेषधर इशठः ॥ १७
- वञ्चयित्वा भवन्तं वै - प्रविष्ट इच्छनाबलम्  
किन्तु तत्राकरो न्माई - राजन्योस्तुप्रसुप्तयोः ॥ १८
- जानीयाद्यदितन्मार्थी - लक्ष्मणः वरवीरह  
तथैवमसुर सद्यः - हन्यते वा विचारयन् ॥ १९
- गम्यता तत्रवेगेन - यत्रास्ते रघुनन्दनः  
यावन्नदृश्यते रागः - न वार्ता श्रूयतेऽपिवा ॥ २०
- तावत्सन्तप्यते चेतः - बह्वि तप्तमिवायसः  
इतिसन्तप्यमाणस्सन् - कपीन्द्रेण सप्तं तदा ॥ २१
- राघवाधिष्ठितं देशं - जगाम स विभीषणः  
दृष्ट्वा शून्यन्तु तद्देशं - विवर्णहृदया मुभौ ॥ २२
- चतुरस्तत्र सेनायां - भूतावेशाविवानघौ  
धिव्यधे कापसेनापि - दृष्ट्वा कपि विभीषणौ ॥ २३
- दृष्ट्वा न विद्यमानौ तौ - सुतरां दुःखितोऽभवत्  
खिद्यमान इवांबोधौ - मन्दराद्रिरिवा भृशम् ॥ २४
- शुश्रुवेषु महाध्वानः - महाकालो महानभूत्  
चक्रुः शुमिलितास्तत्र - मुक्तकण्ठाः परस्परम् ॥ २५
- इत्याक्रोश परसैन्यं - दृष्ट्वा केसरि नन्दनः  
पपातभृश दुःखार्तः - छिन्नमूल इवद्रुमः ॥ २६
- नविवेदतदा बाह्यं - मुहूर्तं दुःखविह्वलः  
उत्थाय पुनरह्नाय - धीरोदात्तो महाकपिः ॥ २७

|  |    |
|--|----|
| जाम्बोरूपरि संस्थाप्य - शिर आनत कम्धरः<br>चिन्तयामास दुःखार्तो - रामलक्ष्मणयो रंतिम् ॥                 | २८ |
| धिङ्मां कुविक्रमं मूढं - स्वामिकार्यं विनाशकम्<br>मित्रद्रोहं वृधाप्रज्ञं - धिङ्मां कुत्सित चेष्टकम् ॥ | २९ |
| धिगिमं वालधि दीर्घ - धिग्दौषारिकता मम<br>धिङ्मति स्थूलरूपां वा - धिग्जीवनमिदं मम ॥                     | ३० |
| यदहं मर्कटो भूत्वा - राजपुत्रावनाशयः<br>सुग्रीवः किन्नुमां ब्रूया - त्रियोक्ता बलरक्षणे ॥              | ३१ |
| वैदेही चेति मन्येत - सख्यमारोप्य वायुजः<br>शत्रुपक्ष कृतस्नेहो - राममग्राह यत्स्वयम् ॥                 | ३२ |
| इति चिन्ताकुल स्वान्तः - बब्रूधे वायुनन्दनः<br>आब्रह्म भवनव्याप्त - विश्वरूप कलेबरः ॥                  | ३३ |
| प्रलयाग्नि रिवज्वाला - जज्वाल बहिरतरम्<br>मृत्योरषि भयंक्रो - भयंकर मुखः कपिः ॥                        | ३४ |
| ब्रह्मादय स्सुरास्सर्वे - कन्दिशीकास्तथा भवन्<br>इत्युग्ररूप मास्थाय - बभाषे स विभीषणम् ॥              | ३५ |
| वतनु मैरावणो दैत्यः - दर्शयत्वं तदालयम्<br>सवेष्ट्य वालरोमाग्रैः - चूर्णीं कुर्यां तमश्मनि ॥           | ३६ |
| अथवा पादघातेन - मर्दयिष्ये कृतागसम्<br>अथवा क्षुधितो नूनं - कबली कुर्यां प्रतारकम् ॥                   | ३७ |
| इति कोप समाक्रान्त - चेतसं विश्वरूपिणम्<br>हनूमन्त मुवाचेदं - सान्त्वयन् सविभीषणः ॥                    | ३८ |
| अस्तिपाताललङ्कायां मैरावणपुरं महत्<br>देवदानव दुर्धर्ष - सप्तप्राकार वेष्टितम् ॥                       | ३९ |
| दुर्गं पवनेनापि - ततोऽन्धां हि किं पुनः<br>तस्य द्वारद्वयं चा भू - द्गत्वागमन साधकम् ॥                 | ४० |

- तत्रैकं पद्मिनीनाल - विधिरन्तर पद्धतिः  
 रावणान्तःपुर द्वार - कृतवर्त्मा परं महत् ॥ ४१
- द्वितीयेन पथागन्तुं - त्वद्विधाना म्महात्मानां  
 आयासोनास्ति शुद्धात्म - न्विपुलायत पर्वणि ॥ ४२
- किन्तु तत्रान्तराय स्या - दुद्धटेर्भटसैनिकैः  
 महायुधैः कृतामर्षैः - रावण स्यान्तरङ्गिकैः ॥ ४३
- सग्रामोपि भवेदाशु - ततस्यात्कार्ये विप्लवः  
 तस्मात्तेनवथा धीमन् - गन्तव्यं हि त्वयाधुना ॥ ४४
- आद्येन नालमार्गेण - वाहि क्षेमाय नः कपे  
 पाताल लङ्काप्राकार - बाह्यपुष्करिणीतटे ॥ ४५
- मृणाल सदृशाकार - नालयन्त्रं विनिर्मितम्  
 तदीय सूक्ष्ममार्गेण - कामरूपा हि राक्षसाः ॥ ४६
- चरति सङ्कटे प्राप्ते - तदिदं गुप्तमश्मभिः  
 इमं मुद्गर पाषाणं - भृगुवतुलं मक्षतम् ॥ ४७
- तेनैवमुक्तो हनुमन् - चिक्षेपाग्रं नखेन तम्  
 तत्र दृष्टं बिलं सूक्ष्मं - तत्र नालं व्यदृश्यत ॥ ४८
- कामरूपो महाभाग - सूक्ष्मरूपो व्यजायत  
 तत्र सूक्ष्मं शरीरेण - प्रविष्टः प्लवगाधिपः ॥ ४९
- अतिसूक्ष्मतया तस्य - भाविकार्येषु सारतः  
 सङ्कटेर्चैव कर्मा भू - त्रिपुरेणं यथातथा ॥ ५०
- निगन्त्य नालमार्गेण - अयौ पुष्करिणीतटम्  
 अतिनन्दनं मालोक्य - सरसीं रामणीयकम् ॥ ५१
- सस्माराकृष्टं चित्तस्सन् - पम्पायाः कमनीयताम्  
 बहुयोजनं विस्तीर्णा - सरसीं संदिदृक्षया ॥ ५२
- अत्युन्नतं तटरुहं - आरुरोहं शमीतरुम्  
 तत्रकासारं सौन्दर्यं - मशेषं तद्विलोक्य सः ॥ ५३



अभवत्परमानन्दः - कपीन्द्रो रमतां वरः  
 अथापश्यत्पुरीं लङ्कां - सप्त प्राकार वेष्टिताम् ॥  
 पञ्चकोशावृतां विद्यां - ब्रह्माख्यामिव तापसः  
 इति पश्यन्विचित्राणि - नागराणि बहून्यपि ॥  
 मग्नस्स परमानन्द - सिन्धौ नात्मानमस्मरन्  
 दुर्दडी रुदितं घोरं - शमीतरु समीपगम् ॥  
 दीनस्वर स सुश्राव - दीनबन्धु दयानिधिः  
 किमेत दिति सचिन्त्य - दयाद्रं हृदयः कपिः ॥  
 अत्युन्नत शमीवृक्षा - तत्क्षणादव ततारसः  
 अवतीर्य शनैर्गच्छन् - दुर्दडीं लालनोन्मुखः ॥  
 शृङ्खलां भञ्जयामास - तत्पाद गतिरोधेनम्  
 ततः प्राह कपीन्द्रस्तां - शृङ्खलाबन्ध विस्मृताम् ॥  
 वेदमाना निजभ्रातृ - मायेति परिशङ्किनीम्  
 कात्वं कल्याणि भद्रं ते - केनैव भवमानता ॥  
 रोदनं किन्तु सुश्रोणि - किमर्थं विजनेस्थिता  
 सर्वं मे ब्रूहि माभैषीः - तरेस्त्वं दुःखसागरम् ॥  
 इति संलालितानेन - दुर्दडी वीत साधवसा  
 वक्तु प्रचक्रमे साध्वी - स्ववृत्तांतं यथाक्रमम् ॥  
 अत्र मैरावणो नाम - राक्षसः पापकृत्तमः  
 भातुलो रावणस्यायं - साधून्विद्वेष्टि सर्वदा  
 तस्याहं भगिनीदीना - दुर्दडी नाम नामतः  
 पिताभूत्रील मेघस्य - कालदण्ड इतिश्रुतः ॥  
 सर्वलक्षण सम्पन्नः - सन्तोषयति सज्जनान्  
 कस्य चि द्वर कालस्य - देवर्षि नरिदोऽभ्यगात् ॥  
 ददर्श नीलमेघ तं - विनयावनत शुभम्  
 सदाप्रोवाच भगवान् - नास्मि ज्ञान चक्षुषा ॥

|   |    |
|---|----|
| दृष्ट्वा स्वभाविभयं वै - शृण्वतां सर्वरक्षसाम्<br>अय पाताल लङ्कायाः - भविताधिपति स्स्वयम् ॥   | ६७ |
| विभीषण इवाभ्यस्सः - देवराजो यथाधिपः<br>चक्रांकुश पताकाब्जा - यवमत्स्या यथायथम् ॥              | ६८ |
| बिराजन्ते स्फुटा रेखाः - पदयो इशुभमूचकाः<br>अतएव महाभाग - भाविनं लोकनायकम् ॥                  | ६९ |
| रक्षन्तु सवतस्सभ्याः - भवन्तो वीत मत्सराः<br>इत्यादिश्य मुनि इश्रीमान् तत्क्षणा दन्तरात्कपे ॥ | ७० |
| ततो मैरावणः कृद्धो - नीलमेघं शुभप्रदम्<br>आसनात्तूर्णमुत्थाय - मत्सुतं पाणिनाग्रहीत् ॥        | ७१ |
| ततस्तं बहुभाराभ्यां - शृङ्खलाभ्या मयोजयत्<br>मामाहूय ततोभ्राता - सुतग्रहण दुःखिताम् ॥         | ७२ |
| अनेन निगलेनाशु - बन्धयामास निर्दयः<br>तिष्ठामिमा - दशांप्राप्तौ - मातापुत्रा वुभावपि ॥        | ७३ |
| सम्मोचयितु मद्यापि - चिरकालेन नेहते<br>तदा प्रभृति मा पुत्रो - न पश्यति कदाचन ॥               | ७४ |
| अह तातं न पश्यामि - पृथक्कारागूहेषिता<br>इदानीं मा मुपास्थाय - भ्राता मैरावणश्शठः ॥           | ७५ |
| उवाच सत्वर वावय - मायी परमवञ्चकः<br>अयि दुर्दाण्ड भद्रते - माभूत्ते मनसोव्यथा ॥               | ७६ |
| महामार्यास्तु दुर्गायाः - उत्सवस्सप्रवर्तते<br>तदिमौ मानुष श्रेष्ठौ - रामलक्ष्मण नामकौ ॥      | ७७ |
| बलिं करोमि दुर्गायै - स्नापयेमौ नवोदकैः<br>हैमं गृहाण कलशं - आनयाशु नवोदकम् ॥                 | ७८ |
| एवमाज्ञापिता नेन - गृहीत्वा हेमकुण्डिकाम्<br>निगलप्रतिरोधाच्च - चिरमागां सरस्तटम् ॥           | ७९ |

अहं तद्वनगी दृष्ट्वा - राघवौ शुभविग्रहौ  
स्मृत्वा चेमां ममावस्थां - दुःखितास्मि पुनःपुनः ॥

ममास्तु मन्दभाग्यायाः - अनाथायाश्च सर्वतः  
पूणितायाश्च दैवेन - दुःखसागर मज्जनम् ॥

कथं राघवयो रक्ष - स्वयामिन्द्र प्रभावयोः  
सप्राप्ता दुरवस्थासा - साहाय्येऽपि हनूमतः ॥

मया श्रुतो हनूमान् - तन्नारद मुखाव्युतः  
देवदानव दुर्धर्षो - महाबलपराक्रमः ॥

हनूमान् क्वक्व वायातः - क्वसुग्रीवश्च जांबवान् ॥

ध्रुवं विनिश्चित्य दुरन्त मीदृशं  
विचिन्वतीमं चरणं जगत्त्रये

प्रतीक्षमाणा हनुमत्पराक्रमं  
पाणान्विभक्ति स्फुटिता सुमर्मसु ॥

अथांग्रि पद्मद्वय लग्नमानसे  
कपीश्वरे जाग्रति भक्तशेखरे  
वशामिमां राघवयोर्विलोक्य वा  
स्वयं निराशास्मि शरीर धारणे

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर भैरवेय संवादे  
श्री हनुमत्पाताललङ्काप्रवेश कथननाम पञ्चचत्वारिंशत्पटलः

# श्री पराशर संहिता

## षट्चत्वारिंशत्पटलः

—: हनुमत्पाताललङ्काप्रवेश कथनम् (२) :—

- ॥ इति तस्मै समावेद्य - दुर्दण्डी दण्डवद्भुवि  
भाविकार्यं मजानन्ती - पपाताश्रुमुखी सती ॥ १
- तामुत्थाप्य कपिश्रेष्ठः - प्रोवाचेदं वचस्थितः  
एहि दुर्दण्डी भद्रन्ते - माभूत्ते मनसो व्यधा ॥ २
- अद्यप्रभृति माभैषीः - भविता सुखिता स्वयम्  
हनूमन्तंच मांविद्धि - रामकार्यार्थं मागतम् ॥ ३
- मा कृधा स्संशयं चात्र - मम धर्मेण ते शपे  
अधुना स्वर्णं कुम्भेन - जलमानय भामिनि ॥ ४
- मैरावण मह हृत्वा - लोककण्टक माह्वे  
राज्यार्हं नीलमेघं वै - त्वत्पुत्र मभिषेचये ॥ ५
- सहैवावां गमिष्यावः - मैरावणपुरं प्रति  
इति दत्ताभया साध्वी - हनूमन्त मुवाच सा ॥ ६
- सत्यमेव त्वयोक्त वै - शरणागत वत्सल!  
किंतु तस्य पुरं धीमन् - दुष्प्रवेश सुरासुरैः ॥ ७
- शम्भो वरप्रसादेन - तपसा तोषितस्य च  
अस्ति तस्य पुरद्वारि - तुला सूक्ष्मा विनिर्मिता ॥ ८
- त्वा मारुह्य विशेद्बाह्ये - निर्गच्छे द्वा तदन्तरः  
किंतु मैरावणीयानां - पदाति रथ वाजिनाम्  
गजानामुष्ट्र वामीनां - गतागमनयो रपि ॥ १०
- न भङ्ग मश्नुते चैषा - न कम्पं नातिविस्वनम्  
न भ्रंशो वापि गन्तूणां - महादेव प्रसादतः ॥ ११

सूक्ष्मणा मपि जञ्जूनां - मैरावण विरोधिनाम्  
 गतागमनयो स्सद्यः - तुलाभङ्गो भवेद्ध्रुवम् ॥  
 भङ्गो तुलागुणे तस्मि - न्नारूढेसति तेऽप्यथ  
 मज्जायतं महाशब्दो - भेयर्घातो रणे यथा ॥  
 मन्वा त मतुल शब्द - मैरावण भटाः कृथाः  
 अथायुधा रणोत्साहा - वेष्टयेयु स्समन्ततः ॥  
 तान्पृष्ट्वा शतशो घोरान् - तुलाभ्रष्टः परःपुमान्  
 विमिर्यदिति धीरोऽपि - त्यजेद्वा विकलबो प्यसून् ॥  
 नरमा विद पुर द्वार - मैरावणविरोधिना  
 गन्तु न शक्यते नूनं - त्वया मतिमतां वर ॥  
 जित तस्या यच्च श्रुत्वा - हनुमा नुष्ट्रवाहनः  
 विस्मय परम लेभे - परमाश्चर्यं वणनात् ॥  
 कपीः प्रोवाच दुर्दण्डी - पुरदर्शन कौतुकः  
 मां प्रापय पुरं साधिव - घटे धृत्वा प्रयत्नतः ॥  
 धर्मापन्न प्रमाणं च - करिष्ये देह मीदृशम्  
 तुलारोहण वेलायां - भङ्गस्तस्याभवे ह्यदि ॥  
 जलपूर्णमपि स्वर्ण - प्राप यांतःपुरे घटम्  
 तत्राह्वह धृतार्थस्था - तवार्थोऽपि भविष्यति ॥  
 मधुरं वचन वाक्यं - श्रुत्वा सा प्रमुमोदह ॥  
 इत्येव मुक्त्वा वचनं कपीन्द्रः  
 मामच्छ दाकारधरोहिविद्वान् ।  
 जलाप्तुत स्वर्णघटो कपालकं  
 रामाल्लिगाच्युत विक्रम क्रमः ॥  
 तथा विध सूक्ष्मशरीरधारिण  
 कपीश्वरं स्वर्णघटाश्रयान्तरम् ।  
 बभार हेमाचल दुर्भरं हि सा  
 न सोऽपि सत्वे लघु रल्प मात्रकः ॥

- तथापि सा भाविशुभानुसारतः  
 प्रयत्नतो नीरघटं सुबिभ्रती ।  
 तुलावशा द्धुर्घटं शत्रुघट्टनं  
 प्राकार माद्य प्रथमं जगामवै ॥ २४
- ततः स्तुत्याभङ्ग विशङ्किनी स्वयं  
 स्खल त्यथ न्यास विलास मन्थरा ।  
 निरन्तराय कुह कार्यसिद्धये  
 कपे रिति ध्यात निजेष्ट देवता ॥ २५
- निधायार्घिं तु दुर्दण्डी - तुला प्रथमं कर्मठे  
 परस्मिन्नपरं कर्म - चक्रे बुद्धिं सुनिश्चयाम् ॥ २६
- तद्विरोधि कपिस्पर्शात् - भज्यमाने तुलागुणे  
 सञ्जातो निष्ठुर इशब्दः - वज्राशान समध्वनिः ॥ २७
- तेनशब्देन महता - दुर्दण्डी राक्षसी भयात्  
 जलपूर्णं घटं शीघ्रं - प्राकारान्तं विनिक्षिपेत् ॥ २८
- अथास्मिन्नन्तरे क्रूरा - राक्षसा द्वारपालकाः  
 महाशूरा महेष्वासा - तुलाद्वारतले स्थिताः ॥ २९
- कांस्य लोहमयाकाराः - षष्टिकोट्यो महारथाः  
 ऊर्ध्ववक्त्रो भेरिवक्त्र - स्त्रिशिरो व्योमवीक्षणगाः ॥ ३०
- शार्दूलमुख नाम्ना च - तथा गार्दभनिस्वनः  
 शतजिह्वो दीर्घजिह्वो - श्वमुखो वक्रनाशिकः ॥ ३१
- व्याघ्रस्य इक्षुलदष्ट इव - धूमनेत्र इचतुमुखः  
 हस्ति कर्णः खड्गरोमा - रक्ताक्षो दीर्घरोमकः ॥ ३२
- सपरोमा जम्बुमाली - कालान्तः कालकिंकरः  
 अग्निवर्णो विरुपाक्षः - तथा वृश्चिक रोमकः ॥ ३३
- एवमाद्या महामाया - दशतशोऽथ सहस्रशः  
 तुलाशब्दहता स्तूर्ण - मन्त्रा इव कशा हताः ॥ ३४

|  |    |
|--|----|
| विरोधिजन सञ्चार - शङ्का व्याकुल मानसा<br>सायुधा स्सपरीवारः - तं देशं समुपागताः ॥               | ३५ |
| अथ क्षिप्तघटी रन्ध्रा - त्रिष्क्रम्य च शनै भुवि<br>वधे बानर श्रेष्ठः - प्रावृषीव घनाघनः ॥      | ३६ |
| वधेमानं महाकाय - दीप्यमानं स तेजसा<br>अभिजग्मुदितेः पुत्राः - शलभा इव पावकम् ॥                 | ३७ |
| स हत्वाऽभिहतो दैत्यै - भैरावण समीपगैः<br>प्रवृद्धः क्रोधताम्राक्ष - रञ्जयामास तान् कपिः ॥      | ३८ |
| तथा कृतेषु सर्वेषु - राक्षसेषु हनूमता<br>वायुवेग समायुक्तो - निर्ययौ मत्स्यवल्लभः ॥            | ३९ |
| युद्धा याकारयामास ताडय च्छरुमण्डल<br>हनूमन्तं म्महात्मान - तत्समो मत्स्यवल्लभः ॥               | ४० |
| स मारुत इव श्रीमान् - सकृद्ध श्रौरुघटनात्<br>तस्योरसि शिलास्पर्श - मुष्टिधातै रताडयत् ॥        | ४१ |
| तत्प्रहार विदीर्णैराः - मानय न्पवनात्मजम्<br>मूर्ध्नि सन्ताडयामास - पाणिभ्या म्मत्स्यवल्लभः ॥  | ४२ |
| स तेन तलघातेन - दंष्ट्राग्ररसनः कपिः<br>विमुञ्चवाश्रूणे नेत्राभ्यां - मुहूर्तं ध्यानमास्थितः ॥ | ४३ |
| अथ धैर्यं समास्थाय - मारुति भीम विक्रमः<br>धावतिस्मातिवेगेन - जिघृक्षु म्मत्स्यवल्लभम् ॥       | ४४ |
| सिंहसहननोपेतः - शफरीनन्दन स्तथा<br>ग्रीवां ग्रहीतु कामोऽस्य - वितेने प्लुतलाघवम् ॥             | ४५ |
| यावद्गल न जग्राह - मारुतेर्मत्स्य नन्दनः<br>गृहीत्वा पादयोस्तावत् - भ्रामयामास तं कपिः ॥       | ४६ |
| सोऽपि युद्धविशेषज्ञः - मारुत्यो मत्सरविल्लभः<br>भ्राम्यमाणो हनूमन्तं - जलूकावद्गले ग्रहीत् ॥   | ४७ |

- गृहीत कण्ठनालस्सन् - कपीन्द्रो युद्धसंभ्रमः ॥  
 बलाद्धिभौचयामास - गले ग्राहिण मातृजम् ॥ ४८
- व्यर्थीकृतोद्यमो मात्स्यः - क्रोध ताम्रविलोचनः  
 जघा नौरसि मुष्टिभ्यां - घनाभ्या मिव मासतेः ॥ ४९
- हनुमानपि पाष्णिभ्यां - घातयामास शाफरिं  
 एवसमबलौ युद्ध - चक्रतुर्भीमविक्रमौ  
 मात्स्य शाखामृगौ घोर - अव्यवस्थ जयाजयौ ॥ ५०
- अथान्तरे महाप्राज्ञो - हनुमाग्नीतिनैपुणः  
 जिन्तयामास धर्मात्मा - कोन्वय युद्धदुर्मदः ॥ ५१
- मदीय मुष्टिघातेन - पाष्णिघातद्वयेन च  
 प्राणान्धत्ते पुमान्वीरो - युद्धायाह्वय ते पुनः ॥ ५२
- अथाब्रवीद्वायुपुत्रः - गदितं मत्स्यवल्लभम्  
 को भवान्पुरुषश्रेष्ठ - मत्समान पराक्रमः ॥ ५३
- मूर्ध्नि सन्ताडितोऽपि त्व - पाष्णिभ्यां पृष्ठभागतः  
 प्राणान्पुनर्धारयसि - कस्त्वं ब्रूहि यथाथतः ॥ ५४
- श्रुत्वातु वचन न्याय्यं - मासते मत्स्यवल्लभः  
 स न्यवेदय दात्मानं - पुत्रं हनुमतः प्रभोः ॥ ५५
- पुनः प्राह कपिश्रेष्ठः - बिश्मयाविष्ट मानसः  
 को वा हनुमान् मतिमन - त्वं वा तस्य कथ सुतः ॥ ५६
- का वा ते जननी लोके - कुत्र वासः परतप!  
 इति सचोदित स्तेन - विनयावनत स्सुधीः ॥ ५७
- आत्मभूतं परं तस्मै - वक्तु समुपब्रूव मे  
 पुरा दाशरथी रामो - रघुवश समुद्भवः  
 अप्रमेयगुण श्श्रीमान् - सर्वभूत दयापरः ॥ ५८
- पितु रसत्य प्रतिज्ञस्य - प्रतिज्ञा मनुपालयन्  
 सीतया धर्मपत्न्या च - लक्ष्मणे नानुजेन च  
 विवेश दण्डकारण्यं - तापसाश्रय मुत्तमम् ॥ ५९



तस्य भार्या महाभागां - सर्वलक्षण लक्षिताम्  
 त्रिलोक सुन्दरीं सीतां - श्रुत्वा दृष्ट्वा च मैथिलं  
 राघवौ वञ्चयित्वा हि - रावणो हृतवान् शठः  
 ततो राम स्मुदुःखार्तो - मार्गमाणो वने प्रियां  
 सुग्रीवेण समायुक्त - स्तेन सख्य चकार सः ॥  
 त प्रतिज्ञाप्य राजानं - सुग्रीव प्राणसन्निभम्  
 उपलभ्य च सीताया - वृत्तास्तं वायुनन्दनात् ॥  
 ततश्च रावणपुरीं - लङ्का मन्धि परीवृताम्  
 ददर्श सपरीवारं - मध्ये कल्लोल मालिनः ॥  
 समुद्र बद्धयामास - गमन प्रतिबन्धकम्  
 कपयः पर्वताकाराः - नानाविध विचेष्टिताः ॥  
 इतस्ततो महाशीला - नानीय दृढविक्रमाः  
 समुद्रे पातयाञ्चक्रुः - स्थलीकर्तुं महाबलाः ॥  
 अस्ति कश्चिन्महाशूरो - कपि र्भतिमतां वरः  
 हनूमन्नाम दुर्धर्षः - पार्वती प्रियनन्दनः ॥  
 सुग्रीवाङ्गद मैदादि - सचिवो भीमविक्रमः  
 आनीता बहव शैलाः - तेन बद्धुं सरित्पतिम् ॥  
 तदा तस्याभवत्स्वेदः - परिश्रम समुद्भवः  
 ललाटपट्टकायां वै - मुक्तापर इवा बभौ ॥  
 तज्जलं पाणिनाकृष्य - चिक्षेपाब्धिजले कपिः  
 समुद्रान्तस्थिता कावि - दीर्घदेही च नामतः ॥  
 मत्स्याङ्गना महासत्वा - क्षुधया क्षुब्धमानसा  
 तस्वेदजल मत्युग्रं - पीत्वा च सुखिता भवत् ॥  
 सा सुतं जनयामास - हनूमत्सम विक्रमः  
 मत्स्यवल्लभ नामानं - इन्द्राद्वैरपि दुर्जयम् ॥

- सोऽहं हनूमन्तः पुत्रो - दीर्घदेही प्रसूर्मम  
गन्धर्वानिता पूर्वं - मम माता पतिव्रता ॥ ७२
- मतङ्गमुनि शापेन - मत्स्ययोनिं जगाम सा  
दत्ताशापावधिस्तेन - प्रसन्नेन महर्षिणा ॥ ७३
- स्वेदोदकं कपीन्द्रस्य - त्वन्भुजे निपतिष्यति  
तदा गर्भो भवे दाशु - भविता च भुतोदयः ॥ ७४
- मत्स्यवल्लभ नामाङ्कः - हनूमत्सम विक्रमः  
गामष्यसि तदा भूय - गान्धर्ववपु रेवतत् ॥ ७५
- जाति स्मृतिश्च ते भूया - न्मत्स्यजन्मन्यपि स्फुटं  
भूतभावी भव ह्यस्तु - ज्ञानमस्तु शुभाङ्गि ते ॥ ७६
- इत्येवं मुनिना दिष्टा - सद्यो मत्स्यशरीरिणी  
सता माज्ञा हि दुर्लभ्या - देव दानव मानुषैः ॥ ७७
- इत्येव भुपादिष्ट म्मे - मम मात्रा पुरा विदा  
तदा प्रभृत्यहं प्राज्ञ - मातु वचन गौरवात् ॥ ७८
- वसा म्यस्मि म्पुरे रम्ये - मौरावण वशानुगः  
पालयन्तदिदं द्वारं - भुजे भोगा न्यथेप्सितान् ॥ ७९
- इदानीं त्वा महं पश्यन् - प्रविष्टं द्वार सन्निधिम्  
संप्राप्तः प्राप्तरौषस्सन् - हन्तु कामो हतासुरम् ॥ ८०
- एवं निवेदितं सर्वं - पृच्छकाय हिताय ते ॥ ८१
- इत्युक्तवचनं मत्स्य वल्लभ कपिवल्लभ-  
कृपा प्रेमाद्रंचित्तस्सन् - प्रत्युवाच वचो हितम् ॥ ८२
- अहमेव हनूमान्वै - हितो तव सुविक्रम!  
रामकार्यवशा न्नूनं - आगत स्तव सन्निधिम् ॥ ८३
- रामो दाशरथि स्तीर्त्वा - सेतुं च सरितांपतिम्  
लङ्का निरोधयां चक्रुः - कपिभिः पर्वतोपमैः ॥ ८४

- ततोमैरावणः प्राप्तो - रावणेनाभि चोदितः  
वञ्चयित्वा कपीन्सर्वान् - गृहीत्वा राघवानपि  
जगाम स्वपुरीं शीघ्रं - तेनाऽहं समुपागतः ८५
- इत्युक्त वचनं तातं - कपीन्द्रं मत्स्यवल्लभः  
स्तुत्वा स्तुतिभिरर्थाभिः - साष्टाङ्गं प्रणतोऽभवत् ॥ ८६
- उत्थाप्य कपिनाथं तु समाघ्राय च मूर्धनि  
आलिलिङ्गं सुतं श्रीमान् - परमानन्द निर्भरः ॥ ८७
- ततोऽज्जम्भी त्कपिश्रेष्ठः - प्रश्रयावनतं सुतम्  
भवान्ममात्मजो नूनं - समपौष विक्रमः ॥ ८८
- देव दागव गन्धर्व - पतगोरग किन्नराः  
न स्थातु मेऽग्रतः शक्ताः - किं पुनर्युद्धकर्मणि ॥ ८९
- बिभेम्यति प्रशंसायाः - ममधर्मेण संशये  
जगत्त्रयेऽपि कश्चिन्मे - प्रतियोद्धा न विद्यते ॥ ९०
- ततो सत्पुत्रभावेन - युधि स्थित्वा ममाग्रतः  
वज्राशनिं सम प्राख्याः - मुष्टिघातास्तृणीकृताः ॥ ९१
- अतश्चिरं सुखं भुङ्क्व - दीर्घमायुर्नवं वयः  
लभ स्वाष्टसुना न्सीम्यान् - भद्रान्भद्रगुणान्वितान् ॥ ९२
- अद्यप्रभृति ते पुत्र - माभू त्क्वापि पराजयः  
स्वास्त तेऽस्तु गमिष्यामि - कार्यं ह्यस्ति ममाग्रतः ॥ ९३
- इत्युक्तवन्तं वचनं कपीश्वरं  
प्रवेशयित्वा पुरमध्य गह्वरं  
तदा सुत स्याऽनुजगाम मदिरं  
शतं पदानां स्फुट सौहृदक्रमः ॥ ९४

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
हनुमत्पाताललङ्काप्रवेश कथननाम षट्चत्वारिंशत्पटलः



# श्री पराशर संहिता

सप्तचत्वारिंशत्पटलः

—: मैरावण वधोपाख्यानम् —:

- श्लो॥ येगुणाः वर्णिताः पूर्वं - मन्मात्रा तदभिज्ञया  
ते सर्वे तत्र सन्दिष्टाः - हनूमति ततोऽधिकाः ॥ १
- इति बादि कपेः पुत्रो - विस्मयाविष्ट चेतनः ॥ २
- राज्ञा माज्ञा हि दुर्लभ्या - प्रभूणां नीति रीदृशः  
इति तं सान्त्वयन् पुत्रं - परमानन्द निर्भरम्  
अनुयात्रां निराचक्रे - भाविकार्यं मनुस्मरन् ॥ ३
- निषिद्धगमनः पुत्रः - नीतिबोधन पूर्वकम्  
पुनर्निवृत्त विक्रान्तः - ध्यायन् तत्पादपङ्कजम् ॥ ४
- पुनरागमनाकांक्षी - मारुते मत्स्यवत्सलः  
यथा स्वदेश संप्राप्तः - तूष्णीं मास्तसमूढवत् ॥ ५
- हनूमा नपि धर्मात्मा - रामकार्यं त्वरान्वितः  
ददर्शान्तःपुरे रम्ये - मैरावण मतन्द्रितम् ॥ ६
- पर्वतप्रतिभाकार - कालाग्निमिव तेजसा  
भयङ्करश्च सत्वानां - विश्वसन्त भिवोरगम् ॥ ७
- ततः क्रोधवशापन्नः - सहसा वायुनन्दनः  
त मूर्ध्नि ताडयामास - दृढबद्धेन मुष्टिना ॥ ८
- तेन मुष्टि प्रहारेण - स दैत्यः पापकर्मकृत्  
अममर्मं मुहु मूर्त्लि - पूर्वाज्ञा तादृश व्यथः ॥ ९
- दैत्येन्द्रोऽपि महामायः - क्रोध संरक्तलोचनः  
ज्ज्वालं मुष्टिघातेन - सर्पिषेव हुताशनः ॥ १०
- ववृधे वानरश्रेष्ठ - वायुपुत्रजिघांसया  
स्पष्ट भूतल पादाङ्गः - दृष्ट मेघशिरोरुहः ॥ ११

|  |    |
|--|----|
| जुष्टात्रल दरी नासा - स्पष्ट चक्र कनीनिकः ॥  | १२ |
| ग्वविधो गहाकायः - कोऽय मित्यनुचिन्तयन्<br>धावति स्मातिवेगेन - यत्रास्ते वायुनन्दनः ॥             | १३ |
| राधा तद्गतिवेगेन - पादपाः पार्श्ववर्तिनः<br>केचि दुःमूलिता स्सर्वे - भग्न शाखास्तथापरे ॥         | १४ |
| शिथिलीकृत पाषाण - सन्धिबन्धा शिशलोच्चयाः<br>तद्गम सधीरेण - चालिता अवला अपि ॥                     | १५ |
| भैरावण पदन्यासैः - चकम्पे च वसुन्धरा<br>अभिगम्य तथा दैत्यः - विस्मित कपिपुङ्गवम् ॥               | १६ |
| तलाभ्यां करयो राशु - घातयामास मूर्धनि<br>रक्षप्रवृद्ध कायस्य - दर्शना द्विस्मितः कपे ॥           | १७ |
| भैरावण कराघातं - तुषाघात ममन्यतः ॥   | १८ |
| भूय स्तृणीकृता घातं - व्यासक्तमनसःकपिम्<br>कपोले फालदेशे च - ताडयामास दानवः ॥                    | १९ |
| ततो निवृत्तव्यासङ्गः - प्रबुद्ध इव मारुतिः<br>दृढाभ्यां मुष्टिघाताभ्यां - वक्षो विव्याध रक्षसः ॥ | २० |
| तेन मुष्टिप्रहारेण - विदीर्णं हृदयोऽसुरः<br>पपात सहसा भूमौ - छिन्नमूल इव द्रुमः ॥                | २१ |
| पतितं राक्षसं दृष्ट्वा - सवभूत दयापरः<br>न प्रहारमनास्तूर्ण - मारुति नीतिकोविदः ॥                | २२ |
| अथान्वेष्टु नृपसुते - राघवौ वरवर्णिनौ<br>अक्षु व्यपि रयामास - सर्वतोऽन्तःपुरे कपिः ॥             | २३ |
| अथान्तरे महामायो - निजमाया मनुस्मरन्<br>भैरावण स्समुत्थाय - दुद्राक्ष कापनाथकम् ॥                | २४ |
| आयान्त भसुरं दृष्ट्वा - मारुतिर्भीम विक्रमः<br>गृहीत्वा पादयो राशु - भ्रामयित्वा व्यताडयत् ॥     | २५ |

|  |    |
|--|----|
| तेन संमूर्छितो दैत्यः - क्षणा दुदबुद्धचेतनः<br>प्रपातं पातयञ्चक्रे - कपीश स्योपरिवृतम् ॥ | २६ |
| आयान्तं पर्वताकारं - पर्वतस्सदृशं कपिम्<br>नखाग्नेणैव चिक्षेप - प्रहरन् मुखपङ्कजम् ॥     | २७ |
| क्रोधेन महताविष्टो - निर्दहन्निव मेदिनीम्<br>दंशतिस्म महादन्तैः - हनूमन्तं दिते स्सुतः ॥ | २८ |
| तथाविधं तु त वीक्ष्य - प्रहसन्निव मासृतिः<br>गण्डयो स्ताडयाञ्चक्रे - सापराधं गुरुर्यथा ॥ | २९ |
| कपोलताडने नास्य - भग्ना दशनपङ्क्तयः<br>रौद्रघातेन शैलस्य - दूषदां सन्धयो यथा ॥           | ३० |
| ततो निर्विण्णवदनो - दैत्यस्तदवमानतः<br>नखै श्रिच्छेद सामर्षो - यथाऽलकोविदष्ट्रकः ॥       | ३१ |
| तन्नखक्षत विद्धाङ्गः - स्रवद्रुधिर रञ्जितः<br>आमूल चूडपुष्पाढ्य - स्सबभौ किंशुको यथा ॥   | ३२ |
| विदारयन्तं नखरैः - कराग्रैर्दितिनन्दनम्<br>नखैर्विपाटयित्वा तं - दूराच्चिक्षेप मासृतिः ॥ | ३३ |
| सन्धाय पुनरेवाशु - भिन्नं निजकलेबरम्<br>दुद्राव दानवः क्रुद्धः - शिरसऽभ्यहनत्कपिम् ॥     | ३४ |
| स तदा घोर कर्माणं - राक्षसं कपिनायकः<br>वाले नावेष्ट्य दीर्घेण - चूर्णयामास पर्वते ॥     | ३५ |
| तथापि नमृतो दैत्यो - महामायोऽतिदारुणः<br>युद्धा योत्थाय सहसा - पुनरेवाग्रत स्थितः ॥      | ३६ |
| गतागत महाप्राण - त्यक्त्वा त्यक्तकलेबरं<br>हताहत निजप्राज्ञं - दृष्ट्वा कपिकुलाग्रिणः ॥  | ३७ |
| विस्मय परम लेभे - पद्भ्यामे वाहनत्पुनः<br>एवं प्रजह्ते हनुमान् - एकविंशति संख्यया ॥      | ३८ |

|   |    |
|---|----|
| तथापि नमृतो मायो - बहिःसद्घाटि तान्त्रकः ॥        | ३९ |
| एव भैरावणे नास्य - कपिनाथस्य धीमतः                |    |
| देवदानव दुधर्ष - घोरं युद्धं व्यजायत ॥            | ४० |
| अदृष्ट्वा राक्षसस्यान्तं - दृष्ट्वा राघवदुर्दशाम् |    |
| चिन्ताप्रपेदे हनुमान् - संप्राप्तं सङ्कटं महत् ॥  | ४१ |
| अथ चिन्तयमानं तं - दुर्दण्डी हितकारिणी            |    |
| भैरावण स्वसा प्राह - गतस्नेहरसाग्रजे ॥            | ४२ |
| जहि भैरावणं पाप - हनुमन् मा विचार्यताम्           |    |
| दुर्भर सर्वलोकाना - शल्यमेष न संशयः ॥             | ४३ |
| भृङ्गरूपधरा प्राणाः - सञ्चरन्ति शिलान्तरे         |    |
| यावन्न तेषां हननं - ताव न्नास्य मृतिर्ध्रुवम् ॥   | ४४ |
| अतोऽस्य चूर्णयप्राणान् - चरतो भृङ्ग रूपिणः        |    |
| तदा सुबध्यः पापात्मा - सर्वबिष्टप कण्ठकः ॥        | ४५ |
| इति मर्मविधा साध्वी - कीर्तिते मर्मणा स्वयम्      |    |
| भैरावणो जगादैनां - स्वसारं साश्रुलोचनः ॥          | ४६ |
| अयि दुर्दण्डी मर्मज्ञे - मम मर्म कथं पुनः         |    |
| आवेदयसि शत्रोस्त्व - मया किं दुष्कृतं तव ॥        | ४७ |
| अज्ञानान्बालभावा च्च - य-मयापकृत पुरा             |    |
| तत्क्षन्तव्य मिदानी मे - सुनीहानिस्सहाननु ॥       | ४८ |
| अद्यप्रभृति ते पुत्रो - नीलभघोऽरिमर्दनः           |    |
| पालयिष्यति राज्यम्मे - भूयासं साध्यकर्मणि ॥       | ४९ |
| इति प्रलपमान तं - दुर्दण्डी भ्रातर सती            |    |
| उवाच दीनां वाचं वै - साश्रुगद्गद कन्थरा ॥         | ५० |
| अधि भ्रातः पुरा किन्तु - बुद्धि नैतादृशी तव       |    |
| अहं तव स्वसा प्येष - नीलमेघोपि सत्सुतः ॥          | ५१ |
| आवां केनापराधेन - कारागृह निवेशिते                |    |
| निगलै ह्य महाभारैः - संयुते केन चागता ॥           | ५२ |

- त्वया निष्कारणं भ्रातः - पातिते दुःखसागरे  
 आवा मुद्धारयाञ्चक्रे - कपिरूपेण दैवतम् ॥ ५३
- नासहिष्णुः तवोत्सेकं - सवलोकप्रबाधकम्  
 सन्मार्गवर्तिनो नूनं - आवयोरिष्टदैवतम् ॥ ५४
- जन्मप्रभृतिमापुत्रो - मन्मुखनैव पश्यति  
 ततोत्सुकाप्यहं भ्रातः - तन्मुखनावलोकयम् ॥ ५५
- अद्य त्वां निहतं विद्धि - शूरेण कपिनाऽमुना  
 जीविताशां पुनर्ज्याय - स्त्यज लोकापकारिणीम् ॥ ५६
- दुर्दण्डि वचनं श्रुत्वा - गरुषं परुषाक्षरम्  
 मैरावणो रुरो दोच्चैः - मुक्तकण्ठोऽप्यनाथवत् ॥ ५७
- इति रुदति दितेऽस्मृते हनूमान्  
 प्रतिवचना दिति तां निवार्य तूर्णं  
 वचनमपि जगाद लोकनाथः  
 सकलहितावहमार्यं पूज्यभाक्षः ॥ ५८
- स्वयमिव हननाय राक्षसानां  
 सुखकरणाय सता ममावतारः  
 अलमिह कृपया दुरात्मभावे  
 सदपकृते रयमेव मूलहेतुः ॥ ५९
- इत्यभाष्य वच इश्रीमान् - दुर्दण्डीं मारुतात्मजः  
 इति होवाच वचनं - मैरावणमरिन्दमः ॥ ६०
- हन्त मैरावणोन्मत्तं दुर्बुद्धे बन्धुपीडनं  
 अवजानासि न स्सर्वान् - कथं रावणचोदितः ॥ ६१
- ईदृशं घ्यसनं प्राप्तं - रावणः किन्नु बुध्यति  
 किन्तु दुर्हृदयस्त्वं वै - परहस्तेन कार्यवित् ॥ ६२



- बन्धुभावेन ते मृत्यु - रन्तरे स जहर्षति  
नील मेघमुखा भृत्या - महदैश्वर्यं मीदृशं  
सन्तोष भगमं ताव - त्वात्मानं न बुध्यसि ॥ ६३
- किं न जानासि मूढात्मन् - राघवौ जगतांपती  
सीता भिव रमां देवीं - रावणो दुर्मति यथा ॥ ६४
- स्वसार मपि साक्षात्ते - दुर्दण्डीं साधुसम्मताम्  
कथ बधनास्त्रि पापात्मन् - शृङ्खलाभि स्सपुत्रकाम् ६५
- महापराधिनस्तेऽद्य - मरणं सांप्रतं भवेत्  
असाधुरपि साधुत्वं - भजते साधुसङ्गमात् ॥ ६६
- भवादृशो न दृष्टो वै - दुर्जनो जगतां त्रये  
इत्युवाच नयाभिज्ञो - अञ्जनानन्द वर्धनः ॥ ६७
- पादे नाक्रम्य वामेन - राक्षसं पर्वतोपमम्  
पादं प्रसारयामास - भृङ्गनाशाय दक्षिणम् ॥ ६८
- ते नोक्षिप्य शिलाश्शीघ्रं - भृङ्गास्संचरतोप्यथः  
युगपत्पादपद्मेन - चूर्णयामास मारुतिः ॥ ६९
- हतेषु प्राणरूपेषु - भृङ्गेषु दितिनन्दनः  
क्षणा न्ममार निस्सारः - पाकशासन कीटवत् ॥ ७०
- हते तस्मिन्पुरे नाथे - तत्राभू द्रोदनस्वनः  
तान्श्रुत्वाकरुणालापान् - दयाद्रंहृदयस्तदा  
प्रत्येकं भाजयामास - नेत्राश्रूणि कपीश्वरः ॥ ७१
- निगला न्मोचयामास - दुर्दण्डीं तत्सुतं तथा  
पाताललङ्का राज्येऽस्मिन् - नीलमेघं नियुज्य सः ॥ ७२
- दुर्दण्डी भार नीरेण - सारसेन जलेनवै  
अभिषिच्य तदा श्रीमान् - जगाद कपिमायकः ॥ ७३
- राज्यं पालय धर्मेण - यतो धर्म स्ततो जयः  
अधर्म मा कुरु श्रीमन् - स्वप्नेपि न कदाचन ॥ ७४

|                                       |    |
|---------------------------------------|----|
| अधम माचरन् दुष्टो - हतो मैरावणो रणे ॥ | ७५ |
| एवं वदन्तं कपियूधवयं                  |    |
| प्रणम्य साष्टाङ्गं मभङ्गविक्रमं       |    |
| स्तोत्रै रनेकैः श्रुतिमौलिसारैः       |    |
| तुष्टाव मात्रासह नीलमेघः ॥            | ७६ |

-: नीलमेघ स्तुति :-

|   |    |
|---|----|
| श्लो ॥ सच्चिदानन्दरूपाय सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे      |    |
| चराचर स्वरूपाय - पुराणगुरुषाय च ॥                   | ७७ |
| नमो लोकशरण्याय - दीनसंरक्षणाय च                     |    |
| भक्तपालन रूपाय - आपन्नार्ति हराय च ॥                | ७८ |
| त्वत्पाददर्शनाद्दुःख - शेषं नः प्रणश्यतु            |    |
| अनेकजन्म साहस्रैः - संभृतं पुण्यमस्ति मे ॥          | ७९ |
| नचे त्वत्त्वदीयांघ्रि - दर्शन स्या दहेतुकम्         |    |
| आगामि श्रेयसो हेतु - वर्तमानाघ शोधकम्               |    |
| पूर्वपुण्याजितं कस्य - नाशास्यं तव दर्शनम् ॥        | ८० |
| अद्य मे सफलं जन्म - भव त्पादाब्ज वन्दनात्           |    |
| कृतार्थाः पितर स्सर्वे - मम वंश समुद्भवाः ॥         | ८१ |
| फलिताः क्रतवोनूनं - विप्राः सत्याशषोऽभवन्           |    |
| यथार्थो जनवादश्च - चिराय भविता मम ॥                 | ८२ |
| आपे जन्तु महद्दुःखो - जीवन्भद्राणि पश्यति ॥         | ८३ |
| मैरावणोऽपि दुष्टात्मा - मातुलो मम निर्दयः           |    |
| सद्गतिं प्राप्नुया त्सत्य - मिति मे निश्चिता मतिः ॥ | ८४ |
| आश्लिष्ट सर्वगात्रोऽयं - साक्षात्कृत पदद्वयः        |    |
| त्वत्पादघात सम्मृष्टः - हत प्राण समीरणः ॥           | ८५ |

|   |    |
|---|----|
| एवं विधः कथस्वामिन् - नमुच्येत भवांबुधेः          |    |
| अन्यथा कथ मन्येषां - मुक्त्याशा भजता मपि ॥        | ८६ |
| अद्य प्रभृति नः स्वामिन् - भूया ह्युक्तिपदाब्जयोः |    |
| धर्मार्थं काममोक्षाणां - इयमेव प्रसूर्जम ॥        | ८७ |

-: आञ्जनेय मङ्गल श्लोकाः :-

|   |    |
|---|----|
| श्लो॥ वंशाखे मासि कृष्णाय - दशम्यां मन्दवासरे |    |
| पूर्वाभाद्र प्रभूताय - मङ्गल श्रीहनूमते ॥     | ८८ |
| कहणारस पूर्णाय - फलापूप प्रियाय च             |    |
| नानामाणिक्य हाराय - मङ्गलं श्रीहनूमते ॥       | ८९ |
| सुवर्चला कलत्राय - चतुर्भुज धराय च            |    |
| उष्ट्राहृदाय वीराय - मङ्गल श्रीहनूमते ॥       | ९० |
| दिव्यमङ्गल देहाय - पीताम्बर धराय च            |    |
| तप्तकाञ्चन वर्णाय - मङ्गल श्रीहनूमते ॥        | ९१ |
| भक्तरक्षण शीलाय - जानकी शोकहारिणे             |    |
| ज्वल त्पावकनेत्राय - मङ्गलं श्रीहनूमते ॥      | ९२ |
| पम्पातीर विहाराय - सौमित्रि प्राणदायिने       |    |
| सृष्टि कारणभूताय - मङ्गल श्री हनूमते ॥        | ९३ |
| रम्भावन विहाराय - गन्धमादन आसिने              |    |
| सर्वलोकैकनाथाय - मङ्गल श्री हनूमते ॥          | ९४ |
| पञ्चाननाय भीमाय - कालनेमि हराय च              |    |
| कौण्डिन्यगोत्र जाताय - मङ्गलं श्रीहनूमते ॥    | ९५ |
| इति स्तुत्वा हनूमन्तं - नीलमेधो गतव्यथः       |    |
| प्रदक्षिण नमस्कारान् - पञ्चवारान् चकारसः ॥    | ९६ |
| ततो हनुमदाज्ञप्तो - भुञ्जानां विषया न्वहून्   |    |
| यथोक्तविधिना राज्यं - पालयामास धर्मवित् ॥     | ९७ |

- अञ्जनातनयोऽप्याशु - मार्गमाण स्सराघवी  
ददर्शातःपुरे सुप्तौ - पेटिका मध्यवतिनौ ॥ १८
- गृहीत्वा पेटिकां सद्यः - कक्षमूलेऽन्यथा कपिः  
पुन र्ययौ महावीरः - प्रथमागमन क्रमात् ॥ १९
- निजागमन मेकाग्रं - प्रतीक्षन्तं महाबलम्  
दीधदेही सुतमार्गं - दृष्टवान्मत्स्यवल्लभम् ॥ १००
- दूरा स्त्रिरीक्ष्य पितरं - प्रत्युत्थाय कृताञ्जलिः  
प्रोवाच वचनं सांख्यं - विनयेन नयेनच ॥ १०१
- भृत्यभावो न ते स्वामिन् - मयि कुत्सित जीविते  
यत स्सत्यपिमूढेऽस्मिन् - त्वयायं धार्यते धरः ॥ १०२
- कृतेषु पितरः पुत्रान् - विविधेषु नियुञ्जते  
तथापि न नियुक्तोऽस्मिन् - क्वचि दर्थे त्वया गुरो ॥ १०३
- तदात्मान मिद मन्ये - त्वत्कृपाया अगोचरम्  
सतां न बुद्धिभेदोऽस्ति - मम दौर्भाग्य मीदृशम् ॥ १०४
- इति प्रेमरसाविष्टं - तनयं मत्स्यवल्लभम्  
परमानन्द सन्दोहा - त्वपि स्साश्रु रभूत्तथा ॥ १०५
- यदुक्तं भवता पुत्र! - तन्नत्व व्युपपद्यते  
किन्तु निर्माय सन्मूल - भक्ति र्मद्यनपायिनी ॥ १०६
- स तं गौरव माधत्से - निरादिष्ट विधीयताम्  
तथापि पुत्रभावेन - निरस्त गुरुताक्रमः  
क्वचि दर्थे नियोक्ष्यामि - तव सन्तोषकारणात् ॥ १०७
- दुर्दण्डितनयो ह्यस्ति - नीलमेघाह्वय स्मुधीः  
मद्भक्त्ये ष्वभ्रगण्यश्च - तृणीकृत पुरन्दरः ॥ १०८
- कृतराज्य पदिष्टोभू - न्मया भक्तानुर्काम्पना  
सोऽयं दुर्दण्डिकापुत्रो - रक्षणीयो मदाज्ञया ॥ १०९

|  |     |
|--|-----|
| राक्षसाः क्रूरकर्माणो - विधास्यन्ति विमाननां<br>अत स्मुखेन सन्तिष्ठ - मदाज्ञां परिपालयन्                                       | ११० |
| इत्यादिश्य सुतं श्रीमान् - हनुमान् मारुतात्मजः<br>जगाम मनसा सेनां - सुग्रीवेणाभिरक्षिताम् ॥                                    | १११ |
| वावन्नास्तगत एसोमो याव न्नोदेति भास्करः<br>तावदेवाशु संप्राप्तो - वानराणां चमूं हरिः ॥   | ११२ |
| निजबालेन संवेष्ट्य यथापूर्वं चमूं कपिः<br>द्वारदेश मनुप्राप्त - स्तस्थौ ध्याय ब्रह्मूत्तमौ ॥                                   | ११३ |
| एवं प्रभावो हि महान्कपीश्वरः<br>सुरासुराणा मपि दुष्प्रधर्षः<br>न चामुना कोऽपि समान विक्रमो<br>जगत्त्रये चेति मति र्मेम प्रभो ॥ | ११४ |
| इ त्यगस्त्यकथितं रघूत्तमो<br>वायुपुत्र चरितं निशम्य वै<br>प्राप्तवान् सपदि सानुजो मदं<br>विस्मयं च परमं ययौ मुने ॥             | ११५ |

इति श्री पराशर संहितायां पराशर मैत्रेय संवादे  
भैरावण वधोपाख्यानं नाम सप्तचत्वारिंशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

अष्टाचत्वारिंशत्पटलः

—। वैनतेय गर्वापहरण कथनम् :-

श्री पराशरः

श्लो॥ अन्यं विशेषं वक्ष्यामि श्रुण्वतां पापनाशनम्  
मैत्रेय! मित्रभावेन सावधानमना श्रुणु ॥

- हनूमा नञ्जनासूनुः - सच्चिदानन्द विग्रहः  
गन्धमादन शैलान्त - स्वर्णारम्भा वनाश्रयः ॥ २
- अवाप्त सर्वकामोऽपि - सर्वकाम्यफलप्रदः  
स एव हृदि सवीक्ष्य - लोकानुग्रह काम्यया ॥ ३
- रामपादाम्बुज द्वन्द्वा - ध्यान निर्धूत कल्मषः  
अभू श्लिजपरीवार - संवृतो ध्यान तत्परः ॥ ४
- अथान्तरे महासत्त्वो - वैततेयः खगेश्वरः  
निज सत्त्वानुसन्धानात् - गर्वितो दृढविक्रमः ॥ ५
- कोवा भवे त्रियुञ्जानो - युद्धकर्म ममाग्रतः  
देवो वा दानवो वापि - नरोवा पन्नगोपिवा  
यक्षोवा सभृत प्राण - रसम पौरुष विक्रमः ॥ ६
- यः कश्चिदपि नास्त्येव - शोधिते जगतां त्रये ॥ ७
- लब्धप्रतिष्ठाः कपयः - शैलेय बहनादपि  
सदृशास्ते कथ मे स्युः - निस्सीम बलशालिनः ॥ ८
- अहं ब्रह्मि पक्षाभ्यां - कुक्षिस्थाखिल विष्टपम्  
कृष्ण नारायणं साक्षात् - अप्रकप्य सुरासुरैः ॥ ९
- बल गर्वाब्धकारेण - मोहितश्च खगेश्वरः  
आत्मान मविजानाति - तुच्छीकृत जगत्रयी ॥ १०
- कदाचिद्द्वारकापुर्या श्रीकृष्णो यदुनन्दनः  
रत्नसिंहासनासीनः - सहितः सत्यभामया ॥ ११
- सस्मार गरुडं गर्वं - परीहार विधीप्सया  
स चागच्छ न्महावेगात् - अनुध्यातो महात्मना ॥ १२
- प्राञ्जलिः प्रणतो भूत्वा तस्था बाज्ञा मनुस्मरन्  
ततः प्रोक्षाच्च भगवान् - विनतातनयं हरिम् ॥ १३

|  |    |
|--|----|
| बैनतेय! महावेग - महाबल पराक्रम!                      |    |
| सुवर्णकदली रम्ये - गन्धमादन पर्वते                   |    |
| अनुध्यायति धर्मात्मा - हनुमान् भक्तवत्सलः ॥          | १४ |
| तेन सम्भाषणार्थं मे - तस्मिहानय मुन्नत ॥             |    |
| आज्ञप्तो हरिणा ताक्षर्यो - वेगेन जितमानसः            |    |
| जगामतत्क्षणादेव - गन्धमादन पर्वतम् ॥                 | १५ |
| तत्रापश्य त्कपिश्रेष्ठं - निश्चलस्वांत सध्रमम् ॥     | १६ |
| हनूमतः पुरस्थित्वा - सोऽवष्टभ्य पदे खगः              |    |
| उच्चै राकारयामास - स्थिरयोग भिमं मुहुः ॥             | १७ |
| आहूतोऽसि कपिश्रेष्ठ - श्रीकृष्णेन महात्मना           |    |
| योगं विघटय प्राज्ञ - मा कुरुष्व विलंबनम्             |    |
| त्वां श्विना नोत्सहे गन्तुं - दुर्लभ्यं कृष्णशासनं ॥ | १८ |
| नापश्य द्विपयं कञ्चित् - बाह्यं कपिकुलाग्रणिः        |    |
| रामचन्द्र पदद्वन्द्व - ध्यान निश्चल मानसः ॥          | १९ |
| तदा सुवर्णं कृष्णाज्ञां - संस्मर स्त्रीतिकातरः       |    |
| निचिक्षेप निजत्रोटि - तन्नास त्रिवरान्तरे ॥          | २० |
| ज्ञात्वापि वैकृतं तस्य - सर्वभूतान्तरस्थितः          |    |
| तूष्णीं मास्ते शकृद्धार - मजानन्निव माहतिः ॥         | २१ |
| तदा तन्निश्चलं वीक्ष्य - गरुडो गूढचेष्टतः            |    |
| पुन राकारयाञ्चक्रे - कर्णान्ते न्यस्त चुञ्चुकः ॥     | २२ |
| अथ योगं कपिश्रेष्ठः - उपसंहर्तुं मुद्यतः             |    |
| प्राणायामं यथोक्तं वै - कर्षं समुपचक्रमे ॥           | २३ |
| दक्षिणेन विरेच्यादौ - नासारन्ध्रेण योगवित्           |    |
| वामे नापूरय द्वायुं - निरोद्धुं नासिकान्तरे ॥        | २४ |
| तदा सङ्कटं मापेदे - भूतपूर्वं शकुन्तराट्             |    |
| त द्विरेचन वेलयां - द्वास्त्रिष्कास्य तेऽमुना ॥      | २५ |

- पुनरापूर्य वेलायां - नियते नासिकान्तरः  
कुम्भकेन यथा वायुं - निरोधयति मारुतिः  
तथा निरोधं नासान्तं - सस्मार पितरौ स्वकौ ॥ २६
- पीडा समुद्भवे देवं - प्राणात्यय विधायिनी  
प्राणायाम इच निमुक्तः - कापना पन्नगाशनः ॥ २७
- आत्मपीडा निदानाच्च - कृष्णाशा लङ्घनादपि  
चक्रोध विनतापुत्रः - कालाग्निसम दीप्तिमान्  
उत्पपाताथ वेगेन - पक्षाभ्यां ख लिखन् मुहुः ॥ २८
- कर्पिं ग्रहीतु कामेन - प्रवृद्ध तनुमण्डलः  
भेघ सहिल्लष्ट पृष्ठार्थः - वीक्षमाणः कर्पिं भुवम् ॥ २९
- तद्ग्रहान्तर लाभाय - चकार गति मण्डलीम्  
तथा विधोद्यम ताक्षर्यं - विनिश्चित्याञ्जनीसुतः ॥ ३०
- वाल मभ्र कष सद्यः - वर्थयामास तद्ग्रहे  
त तु दृष्ट्वा गरुत्मान् वै - मेधिस्तम्भामेवायतम्  
भ्रमश्रमोभना दाय विश्रान्तस्तत्र वालधौ ॥ ३१
- विरुद्ध सूयं सञ्चारं - संछन्न हनुमद्गिरिम्  
आप विश्रातित छेतु - त भैच्छ द्वयसांपतिः ॥ ३२
- बिबेध वालधितस्य - तुण्डाग्रेण गरीयसा  
हनुनी इव देवेन्द्रो - वज्रेण शतकोटिना ॥ ३३
- पांक्ष तुण्डाग्रभिदण्डः - विपक्ष वलमदंतः  
चुकोप हनुमान् ताक्षर्ये - त्रिपुरेण्विव शङ्करः ॥ ३४
- ततो बालाग्र लग्नाङ्गं - बबन्धाण्डमिवाण्डजम्  
प्रचेतः पाश सङ्काशैः - मारुतिस्तस्य लोमभिः ॥ ३५
- दूढबन्ध निरुच्छ्वासं यंत्रोपल समद्युतिम्  
द्विगुणीकृत वातेन - क्षिप्तवा निध यन्त्रतः ॥ ३६



- बालभग्न स्वसर्वाङ्गः - कालान्तक वशंगतः  
 बालक्षेपा दनिर्वार्य - श्वेतद्वीपे पपात सः ॥ ३  
 स भग्नपक्ष मूलाग्रः - भग्नः गुह्याङ्ग संहतिः  
 भग्न तुण्डाग्र दण्डांतः - भग्नः क्षीरार्णवे वयः ॥ ३  
 अथ क्षीरोद संस्पर्शात् - पुनरुद्बुद्ध पक्षतिः  
 विश्राम्यनाम तत्तीरे - जगाम द्वारकां पुरीन् ॥ ३  
 निर्विण्णवदन स्ताक्षर्यः - विसृष्ट बलदर्पकः  
 लज्जाभर समायुक्तः - श्रीकृष्णं सन्ददर्शह ॥ ३  
 लज्जावनत चूडाग्र - पुरत स्संस्थितं हरिः  
 इ युष्माच्च वच स्स्वादु - निगूढ विशद क्षितः ॥ ३  
 कथ तिष्ठे खगश्चेष्ट! - निर्विण्ण इव दृश्यसे  
 नानीतोऽपि कपिश्रेष्ठः - विलम्बः केन हेतुना ॥ ३  
 न दृष्टोऽप्यथवा स्वेन - सञ्चरन् कपि भावतः  
 त न्ममाचक्ष्व वृत्तांतं - पृच्छतस्तत्त्वतः खग ॥ ३  
 ततः प्राह हरिं ताक्षर्यो - ह्रियाऽवनत कन्धरः ॥ ३  
 देवदेव! जगन्नाथ! - पुराणपुरुषोत्तम!  
 त्वन्मायया जगत्सर्वं - मोहितं स चराचरम् ॥ ३  
 इतो गत्वाऽह मत्यर्थं - स दर्पं बलपौरुषः  
 गन्धमादन मद्राक्ष - गिरिं सौरभबृंहितम्  
 तत्रापश्यं हनूमन्तं - निश्चल योगनिष्ठया ॥ ३  
 ततस्समीप मगमं - व्यवधि व्यर्थं संभ्रमः  
 आश्रावय मथाऽहं तु - भवदाज्ञां गरीयसीम् ॥ ३  
 तथाऽपि नाश्रुणो देष - स्ता मनन्य कथा रतिः ॥ ३  
 गारुडं वचन श्रुत्वा - मुखारोपित विस्मयः  
 उवाच विस्वरं वाक्यं - हरिर्भक्त परायणः ॥ ३

|   |    |
|---|----|
| कि मिदं क्रियते जाप्यं - धिक्पाषण्डसमे क्षणम्<br>समाह्वय हनूमन्तं - अस्ति तेन प्रयोजनम् ॥             | ५० |
| इति कृष्णेन सन्दिष्टः - भीतः कपि मनुस्मरन्<br>वचनं करुण प्राह - गरुत्मा तन्न कन्धरः ॥                 | ५१ |
| अस्वभावि मया यच्च - चापलं कर्म कुर्वता<br>दुर्वचो भगवन् देव - नोक्तं हि जन्मजन्मनि ॥                  | ५२ |
| सर्वज्ञेन त्वया देव - मदगर्वं हरणाय च<br>मृत्यु रेष. कृतो नूनं - कपिहृा धरो मम ॥                      | ५३ |
| यस्या मास्ते दिशि प्राज्ञ - उदासीनोपि मासतिः<br>तस्यै नमस्त्रिसन्ध्यं वै - कुर्यां मुक्तेतर क्रियां ॥ | ५४ |
| अथ चाज्ञापय स्वामिन् - कर्तव्य मपरं मम<br>अथथाबल मारम्भः - विनाशः क्षयसम्पदः ॥                        | ५५ |
| इति श्रुत्वा वचस्तस्य - प्रहस न्यदुनन्दनः<br>जगद वचन म्याय्य - मर्मोद्घाटन तत्परम् ॥                  | ५६ |
| ब्रवीषि कि मिदं शूर! - पुरैवं नाभिभाषसे<br>नयुक्त तव पक्षोश! - प्राकृतस्यैव वैकृतम् ॥                 | ५७ |
| विक्रमस्य तव क्वापि - प्रतिघातो न विद्यते<br>सतु शाखामृगो हन्त - कोऽपि वन्यफलाशनः ॥                   | ५८ |
| अपहाय परीहासं - गम्यता मेष नीयताम्<br>आस्ति प्रयोजनं तेन - विलम्बं माकृधा वृधा ॥                      | ५९ |
| गत्वेदानीं हनूमन्त - रामनामानुवर्णया<br>कपे! भवन्त माहूते - सीतारामो महानिति ॥                        | ६० |
| एवं वदति गोविन्दे - स प्रत्याख्यान कातरः<br>तथेति प्रति जग्राह - प्राणे ष्वास्थां विहाय वै ॥          | ६१ |

|  |   |
|--|---|
| जगाम तत्र वेगेन - गन्धमादन पर्वतम्<br>यथापूर्वं ददर्शे - तत्र शाखामृगोत्तमम् ॥   | १ |
| प्राञ्जलिः प्रणतो भूत्वा - मन्दाक्षर मुवाच सः<br>कपे! भवन्त माहूते - सीतारामो महानिति ॥  | ६ |
| उद्बुद्ध नयन स्सबः - हस्ताकृष्ट इव त्वरन्<br>असमाप्त्यापि योगान्त - मुवाच कपिशेखरः ॥   | ६ |
| घन्योऽस्मि कृतकृत्योऽमि - महाभाग्योऽस्मि यत्त्वया<br>सुखं मे प्रापितं श्रोत्रं - रामनाम कथामृतात् ॥                                | ६ |
| इदमर्घ्यं मिदं पाद्यं - अयं पुष्पाञ्जलि स्तव<br>फला नीमानि गुल्लीष्व - मधुराणि खगेश्वर!  | ६ |
| यथा मे राघवः पूज्यः - जाग्रत्स्वप्न सुषुप्तिषु<br>तथाचापि समर्च्यस्त्वं - रामनाम परायणः ॥  | ६ |
| सन्दर्शय सखे! रामं - गच्छ यत्रास्ति राघवः<br>आरोह त्व ममस्कन्ध - मथवाऽह मनुव्रजः ॥   | ६ |
| एवं वदति संप्रीत्या - वायुपुत्रे महात्मनि<br>तत्स्कन्धारोहणाद्भ्रातृः - प्रयातः पुरतः खगः ॥  | ६ |
| गन्तव्य वर्त्मा प्रणया त्कपीन्द्रो<br>ह्यरत्नि मात्र तमनु प्रयातः<br>नचे त्पुरस्तात् प्रतियानकाले<br>मुहूर्तगम्य सरणिं क्षणाद्गत ॥ | ७ |
| आयांत मारा दुदयाद्रि शोभं<br>कृताञ्जलि राममनुस्मरन्त<br>पुरस्सर स्वर्णपत्रि बिंबं<br>निरीक्ष्य कृष्णो रघुराम तां ययौ ॥             | ७ |
| सत्यभामां ततोबीक्ष्य - वचनं चेद मब्रवीत्<br>रामोऽहमभवं देवि! त्वं सीता त्वं वह द्रुतम् ॥   | ७ |

- श्रीकृष्ण वचनं श्रुत्वा - चेत्थं सत्याऽकरोद्यति  
नागम ज्ञानकीरूपं - दृष्ट्वा कृष्णोऽवदद्वचः ॥ ७३
- त्वरितं कुरुसीतानु - वेष मेषः कपीश्वरः  
नोचेद्भूवेद्गर्वभङ्गाः - अस्माकमपि मानिनि ॥ ७४
- सत्यभामा विचिन्त्यात्म- न्यद्य कर्तुं मिदं कथम् ?  
श्रीकृष्णो मां परीक्षार्थं - मित्थं संकल्प्य बाधते ॥ ७५
- रुक्मिणी कथं मप्येत - त्कर्तुं नार्हति सर्वथा  
इति निश्चित्य कृष्णाय - सद्योवचनं मन्व्रवीत् ॥ ७६
- रुक्मिण्यां तत्र चेत् प्रीति - स्तया कारयितुं वरम्  
न युक्ताऽहं मिदं कर्तुं - मिदानीं यदुनन्दन ! ७७
- इत्याकर्ण्यविदं त्कृष्णः - सत्यया द्रुतमानसः  
एष आगच्छति कपिः - तवचेन्नास्ति धीरता  
रुक्मिणी मपि वा सद्यः - कर्तुं भाज्ञापया म्यहम् ॥ ७८
- इत्युक्तवन्तं श्रीकृष्ण - लज्जावनत शीर्षिका  
सत्यभामाऽवदन्नूनं - रुक्मिण्यपि चरेत्कथं ?  
मयाऽकृतां क्रियां कर्तुं - नैतस्यापियोग्यता ॥ ७९
- श्रीकृष्णः रुक्मिणीं वीक्ष्य - कर्तुं भाज्ञां प्रयच्छति  
नोचेद्भूवेद्गर्वभङ्गाः - अस्माकमपि मानिनि ! ८०
- रुक्मिण्यभूद्रुक्म मनोज्ञभूषणा  
विदेहपुत्री सहधर्मचारिणी  
पुरीपुर द्वारवती तदानी  
ह्यासी दयोध्या रघुराज्यधानी ॥ ८१
- तत्र सिंहासनासीनं - सीतया सह राघवम्  
ननाम हनुमान् भक्त्या - प्रदक्षिण पुरस्सरम् ॥ ८२
- उत्थाय प्राञ्जलि भूत्वा - परमानन्द निर्भरः  
तुष्टाव स्तोत्रभावेऽश्च - वेदांतै रूर्ध्वबृंहितैः ॥ ८३

जगौ रामकथा श्राव्या — दानन्दाश्रुकलः कपिः  
 ननर्त्त नृत्यशास्त्रज्ञः - सर्वान् विस्मारयन् सभाम् ॥ १  
 ततः कुशल मापृष्टो - रघुनाथेन धीमता  
 सर्वत्र कुशलं प्राह - विनयाऽवनतः कपिः ॥ १  
 त्वयि त्रातरि भक्तानां - नाशुभ विद्यते क्वचित्  
 अधरोहति पूर्वार्द्रि - भास्करे तिमिरः कुतः ॥ २  
 इत्यावेदित भक्तिं त - मब्रवी द्रघुनन्दनः ॥ २  
 उपपन्न भिद सर्व - त्वयि भक्त शिरोमणौ  
 त्वत्प्रमाणा वय सर्वे - नूनं दृष्टं ततस्ततः ॥ २  
 एकः प्राणश्शरीरेऽस्मिन् - सीतायां द्विस्त्रयोऽनुजे  
 चत्वारस्तु इमे प्राणाः - तस्मात्सर्वं प्रियो भवान् ॥ ३  
 इत एहि कपिश्रेष्ठा - गृहाणीमां मणिस्रजम्  
 स्कन्धे धारय मालां वै - नोपेक्ष्योहि कदाचन ॥ ९  
 श्रान्तोऽस हनुमन् नून - मायतो दूरवर्त्मना  
 गच्छ शीघ्र मितो देशात् - सुरभि गन्धमादनम् ॥ ९  
 इद माज्ञावचो मालां - शिरसा धारयत्कपिः  
 पुनः प्रदक्षिणीकृत्य - प्रणवाम रघूत्तमम् ॥ ९  
 इत्थ गिरीश तनयोऽनुमतो विदेह  
 पुत्री प्रियेण निजसोदर संयुतेन  
 कृष्णस्य राघवतयापि स विस्मयेन  
 लाक्ष्यो हि सन्नुतपद स्स्वपदं जगाम ॥ ९

इति श्री पराशर संहितायां पराशर भैत्रेय संवादे

गण्डगर्वापहरणं नाम अष्टाचत्वारिंशत्पटलः

\* \* \*

# श्री पराशर संहिता

## एकोनपञ्चाशत्पटलः

-: हनुमत्पूजा साधन प्रकाश कथनम् :-

श्री मैत्रेय. :-

श्लो॥ पराशर! महाप्राज्ञ! - सर्वांगम विशारद!  
पूजार्थं श्री हनूमन्त - पत्रपुष्प फलानि च  
यानि योग्यानि पुष्पाणि - तानि मे वक्तु महंसि ॥ १

श्री पराशरः

- कुन्द पाटल पुन्नाग - केतकी वकुलानि च  
संध्यावर्त जपा नीप - लिकुचाब्जोत्पला न्यपि ॥ २
- करवीराणि जातीश्च - मल्लिका चम्पकानि च  
मन्दार पारिजातानि - पलाश कुसुमानि च ॥ ३
- कनकाम्बर पुष्पाणि - द्रोणा न्याप तथैव च  
नीलाम्बराणि भव्यानि - कुटजानि शुभा न्यपि ॥ ४
- कुरण्ट स्थलपद्मानि - केसरासन माधवीः  
वनमल्ली कर्णिकार - कुब्जार्क चन्द्रकान्तकम् ॥ ५
- सुरपुन्नाग कौसुम्भ - ककुभाष्टापदा न्यपि  
सीमन्तिनी सुपुष्पाणि - हारिद्रान्यक्षता न्यपि ॥ ६
- तिलाक्षतान् श्वेतवर्णान् - शालीया नन्नणा तपि  
बिल्वामलक दूर्वाश्च - अरविन्दवनं तथा ॥ ७
- सिन्दुवार शमी चूत - जम्बू रुद्रजटा अपि  
तुलसी माचिपत्रं च वटपत्रं तथैव च  
गौरीजटा मपामार्गं - पूजये च्छ्री हनूमतः ॥ ८
- कदली चूत जम्बीर - पनसाऽऽम्ल फलानि च  
कपित्थ जम्बू खर्जूर - बदरी दाडिमा न्यपि ॥ ९

- सीताफलं महास्वादु मुर्वारिकफलं तथा  
 द्राक्षाफलं चक्षुखण्डं - नारिकेलं तथैव च ॥ १०
- एवमादीनि पक्वानि - फलानि मधुराणि च  
 समर्पयेत्कपीशाय- प्रत्यहं - मुनिसत्तम ॥ ११
- अन्यं विशेषं वक्ष्यामि - श्रुणु मैत्रेय! तत्त्वतः ॥ १२
- कदलीवन मध्यस्थं - पूजये ह्यः कपीश्वरम्  
 तस्य पुण्यफलं प्रोक्तं - गुणितं कोटिसंख्यया ॥ १३
- हनुम द्विषयं यन्त्रं - हृदयं कवचमेववा  
 सिध्यन्ति सर्वकार्याणि - जपतः कदलीवने ॥ १४
- आवर्तयन् त्रिवारंतु - कदलीवन मध्यगः  
 अन्यत्र शत साहस्र - कोट्यावृत्तिफलं लभेत् ॥ १५
- रम्भा वनान्तरे रम्ये - हनुमत्प्रीतये पुमान्  
 किञ्चि त्सुवर्णं रौप्यं वा - दद्याच्चे दमितफलम् ॥ १६
- एवं विध प्रकुर्वतः - मुनय स्सिद्धि मागताः ॥ १७
- सपूज्य कदलीमध्ये - ध्रुवोऽपि ध्रुवनिश्चयः  
 अञ्जनासुत मभ्यर्च्य - ध्रुवं पद मवाप सः ॥ १८
- सप्तर्षयो मुनिश्रेष्ठाः - कदल्यां कपिनायकम्  
 सपूज्य विधिवत्पुष्पैः - संप्राप्ता इशाश्वतं पदम् ॥ १९
- मार्गशीर्षे महामासे - मन्दवारे शुभावहे  
 रम्भाक्षते महारम्ये - ब्राह्मणान् भोजये ह्यदि ॥ २०
- तस्य प्रसन्नो हनुमान् - सर्वकाम फलप्रदः  
 ददाति शाश्वती भक्ति - सर्वत्र च परांगतिम् ॥ २१
- अपूपानि सुपुष्पाणि - तांबूलानि फलानि च  
 हनुमत्प्रभवे नित्यं - अर्चये त्पञ्चसंख्यया ॥ २२
- बहुनात्र किमुक्तेन - दीयते ब्राह्मणाय च  
 हनुमत्प्रीतिलाभाय - तद्द्वयं पञ्चसंख्यया ॥ २३

|  |    |
|--|----|
| अन्यं वक्ष्यामि मैत्रेय - कृपया श्रीहनूमतः<br>सालग्राम शिलामूर्ति - स्वरूपं परमाद्भुतम् ॥          | २४ |
| शिरसो दक्षिणेभागे - पृथुचक्र समन्वितः<br>त द्वामे शरघातेन - गोखुरह्लद बन्धुरः ॥                    | २५ |
| सूक्ष्मपञ्जर संयुक्तो - मालिका बाल संयुतः<br>बहु शृङ्गायुत इच्चैव - सूक्ष्म कार्मुक रेखकः ॥        | २६ |
| मुख चक्रद्वयं सूक्ष्म - पुष्करो मनुराकृतिः<br>सर्वसौभाग्यदो नृणां - हनुमान्पुरुषोत्तमः ॥           | २७ |
| सालग्रामोऽय माख्यातः - हनुमन्मूर्ति संज्ञकः<br>पुरुषोत्तम सुक्षेत्र - इतिव त्कल्प वेदिनः ॥         | २८ |
| मन्दवारे हनूमन्तं - पूजयेद्भक्तिपूर्वकम्<br>ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चा - देकभुक्त व्रतं चरेत् ॥       | २९ |
| एव यः कुरुते पूजां - हनूमद्वासरे शुभे<br>तस्य प्रसन्नो हनुमान - सर्वाभीष्ट प्रयच्छति ॥             | ३० |
| सकल किसलयदाना - दधिकफलप्रद मेकपुष्पदानम्<br>स भवति हनुमत्प्रसादमूल-बहुकुसुमादिषु निश्चलैव भक्तिः ॥ |    |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
हनुमत्पूजासाधन प्रकाशकथनं नाम एकोनपञ्चाशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

पञ्चाशत्पटलः

—) भीमसेन चरित्र कथनम् :-

श्लो॥ मैत्रेय! शृणु वक्ष्यामि - भूयोऽपि हनुमत्कथाम्  
तस्मिन्नपेक्ष्यभक्तिं ते - तोपरन्तु महं क्षमः ॥



- कोवा समर्थो मैत्रेय! समुन्मज्जतु मञ्जसा  
परीवाहाद्भुते मग्न - स्तत्कथामृतसागरे ॥ २
- कोवा भवेत् क्षमो जन्तु - कपि वाक्पतिसन्निभः  
निश्शेष मञ्जनासूनु - गुणव्याख्यान कर्मणि ॥ ३
- तथापि कसनायत्वा - ह्यथा मति विजृम्भणम्  
शरै र्दन्म ज्य कृच्छ्रेण - पिब न्वक्षये कथामृतम् ॥ ४
- आसीत्कश्चि न्महाराजो - विजिताराति मण्डलः  
धर्मराज इति ख्यातो - धर्मराशि रिवापरः ॥ ५
- चतुर्भिरनुजै र्दशूरै - र्भीमार्जुन पुरोगमैः  
रेजे परिवृतो नित्यं - चतुर्भुज इवाच्युतः ॥ ६
- हस्तिनाख्ये पुरे तिष्ठः - युगे द्वापरि नामनि  
गुणैर्मनांसि निर्घोषैः - प्रजाना मनुरञ्जयन् ॥ ७
- पिता निवेदितो पूवं - पाण्डुराजेन धीमता  
शशास सकलां पृथ्वीं - पृथायां प्रथमं सुतः ॥ ८
- स कदाचि न्महाराजो - राजसूयेन वीर्यवान्  
यष्टुं समुपचक्राम - विक्रमाक्रान्त भूमिपः ॥ ९
- तत्र सत्ये महाधर्ये - थौम्यप्रमुख कारिते  
आभुञ्ज्य ताति शुभ्राणि - शालीत्रान्नानि मानवैः ॥ १०
- मृदूनि स्वादु सूपांन - नाना शकांकिता न्यपि  
सपूर्णाणि च भक्ष्याणि भोज्यानि विविधानि च ॥ ११
- असख्यानि च चोष्याणि - लेह्यानि मधुराणि च  
सौरभा हुत भोज्यानि - गोघृतानि नवान्यपि ॥ १२
- क्षीराणि च महार्हाणि - सुधास्पर्धि रसानि च  
शारदेन्द्विश्च शुभ्राणि - सपूर्णाणि दधीन्यपि ॥ १३
- ब्राह्मणैः क्षत्रियै र्वैश्यैः - शूद्रै स्सकीर्णकै रापे  
पुरन्ध्रीभिः पुरस्थाभि - रागताभि स्ततस्ततः ॥ १४

|   |    |
|---|----|
| यथारुचि यथेष्टं च - भुक्तानि ब्राह्मणोत्तमैः<br>अगण्या तत्र भोक्तारो - ब्राह्मणा वेदपारगाः ॥  | १५ |
| इतरे किं पुनर्मर्त्या - असंख्यास्सिकता इव   | १६ |
| एवं धर्मतनूजेन - क्रियमाणे महाव्रतौ<br>दद्यौ तदनुजो भीमः - किं विधेयं मयाधुना ?   | १७ |
| रत्नगर्भापितः तस्य - न रत्नं दानं महति<br>सर्वकामदुघा धेनु - स्मुराणां भुवि दुर्लभा ॥   | १८ |
| किन्तु यद्दुर्लभं भूमौ - यच्च राज्ञो यशस्करम्<br>बलादाहृत्य तद्देय - किं यत्तदिति सांप्रतम् ॥   | १९ |
| सञ्चारा त्पुरुषमृगस्य भुक्त शाला<br>स्सम्भृष्टा स्त्रिदिव निकेतनस्य कुड्यां<br>आनीयन्त मिति विभाव्य भीमसेनो<br>निष्क्रान्त स्स धनगृहा द्ययौ सुधमाम् ॥ | २० |
| अज्ञाय स्वबलमदान्ध दुष्टिपात<br>स्त द्वेग जितमनस स्वधातुक वा<br>अज्ञात स्वगत विशेष बन्धुलोकः<br>स्वस्थानात्सपदि चचाल भीमसेनः ॥                        | २१ |
| एवं व्यवसिते तस्मिन् - सत्य भूतदयारः<br>साहाय्य मनुजे कर्तुं - हनूमा नैच्छदग्रजः ॥  | २२ |
| गच्छतस्तस्य वेगेन - भीमसनस्य वर्त्मनि<br>कपीन्द्रोऽजगराकार्य - क्षणात्प्रादु रभूत्पुरः ॥  | २३ |
| वाले नावृत्य पन्थानं - शिवलिङ्ग मयात्मना<br>दूरादि वाध्वन इश्रान्तो - निश्वसन् पवनात्मजः ॥  | २४ |
| तं तथा विध मालक्ष्य - विरुद्धसरणिं कपिम्<br>भीमो जगाद भीमात्मा - मृगानयन सत्वरः ॥   | २५ |

|   |    |
|---|----|
| जरत्कपे! समुत्तिष्ठ - वालं चालय बर्त्मनः          |    |
| गन्तव्यं तु महाक्षिप्र - मितोऽवसर सत्वरः ॥        | २६ |
| मर्कट प्रकृतिं नूनं - स्थविरोऽपि न मुञ्चति        |    |
| यद्गन्तव्यपदं कृत्स्नं - वाले नावृत्य तिष्ठसि ॥   | २७ |
| किं तवास्तिगिरौ देशे - वन्याहार विवर्जिते         |    |
| गच्छ सारस्वतं देशं - मधुर सलिलं पिब               |    |
| भक्षयाम्रफला न्यद्य - पक्वानि मधुराण्यपि ॥        | २८ |
| इति संचोद्यमानोऽपि - भीमे नावरजेन सः              |    |
| न चचाल ततो देशा - द्ब्यजय न्वृद्ध चेष्टितम् ॥     | २९ |
| अथाऽन्नवी त्प्रियं वाक्यं - तद्विपत्तिं निवर्तकम् |    |
| जिज्ञासु विक्रमं तस्य - भीमं भीमाग्रजः कपिः ॥     | ३० |
| राजन् जीर्णशरीरोऽहं वन्याहार विवर्जितः            |    |
| पिपास यातितो नित्यं - न जाने त्रिदिनं पयः ॥       | ३१ |
| भवादृशो महाधन्यो - मासात्पूर्वं मिहागतः           |    |
| मह्यं वितीर्य वन्यानि - फलानि विविधानि च ॥        | ३२ |
| अशक्तं मां समुल्लंघ्य - निर्यया वमुना पथा ॥       | ३३ |
| वृद्धस्यातंस्य बालस्य - स्त्रीणां चैव विशेषतः     |    |
| भृत्य भावस्य वै पन्था - इति शास्त्रविदो विदुः ॥   | ३४ |
| तत्त्वया राज शार्दूल - जलं देयं पिपासिते          |    |
| पाहि मा मीदृशं दीनं - गमिष्यन्त्यसवो मम ॥         | ३५ |
| पाप्रायेत्वा पयः पानं - जीवनं चाबधाय मे           |    |
| तत्कलेबर मालंघ्य - गच्छ राजन् यथासुखम् ॥          | ३६ |
| अथवा दीर्घरौमाणं - वृधा स्थूलं च वालधिम्          |    |
| अगुष्ठेन समुत्थाप्य - त्वदीये नान्यतः क्षिप ॥     | ३७ |
| यद्वा पुच्छ परिभ्राम्य - तुच्छ स्वच्छ मना व्रज ॥  |    |
| नवेधा नाह मुत्थातु - शक्तः कण्ठगतासुरः ॥          | ३८ |

- प्राणेन गत्वा ते प्राणाः - मम त्राण मपश्यतः  
किन्तु संस्थापिता स्थैर्यं - धर्मात्म भवदीक्षया ॥ ३९
- समर्थोऽसि महाराजन् - मयि दीने दयां कुरु  
दीनदुःखसहा स्सन्तो - न शक्ता हि विमत्सरः ॥ ४०
- इत्याकर्ण्यं वचस्तस्य - करुणं करुणानिधिः  
तं वृद्धम्मन्यते कतुं - मियेष सफलोदके ॥ ४१
- अस्पृष्ट्वा कपि मस्पृश्यं - दण्डे नोद्घाटय न्नधः  
स नोत्पाटयितु शेके - भग्न मुद्गर विह्वलः ॥ ४२
- सरणि प्रतिरोधेन - दीर्घं मुष्ण सनिश्वसन्  
ईप्सितार्थं विलम्बेन - कृतामर्षाभव त्कपौ ॥ ४३
- विलघ्य प्लुतगत्येसं - गच्छेयं विगतकलमः  
आनयिष्ये मृग मार्गा - दिति चक्रे मतिर्नृपः ॥ ४४
- अथ विज्ञाय सर्वज्ञः - स्थात्मलङ्घन निश्चयम्  
मारुति वंथेयां चक्रे - स्वभाल स्वकलेबरम् ॥ ४५
- ततो बालन्तु लोकानां विलङ्घयिषुरात्मवान्  
पश्चादाक्रम्य वेगेन धावति स्म नृपात्मजः ॥ ४६
- दूरा दभ्य समभ्येत्य - दृष्ट्वा स्वम्मशकोपमम्  
अभ्रांक्ष कपेरग्रे - लज्जा नम्रमुखोऽभवत् ॥ ४७
- अथ धैर्यं समालम्ब्य - निश्चयाय गतोच्छ्रयः  
इमं प्रदक्षिणीकृत्य - साधयिष्यामि साध्विति ॥ ४८
- अथ प्रदक्षिणीकर्तुं - चर न्पवनरंहसा  
न लेभे बालधेः पारं - न मूर्ध्निश्च कपे नृपः ॥ ४९
- अथ भीमो गदां त्यक्त्वा - धिक्कृत्य निजविक्रमम्  
कपये वृद्धरूपाय - साष्टाङ्गं प्रणतोऽभवत् ॥ ५०
- अन्नदीचच कपिश्रेष्ठं - लज्जा गद्गदया गिरा  
क्षन्तव्योमेऽपराधोऽयं - त्वाम वाजानिष कपिभू ॥ ५१

|  |    |
|--|----|
| नाजानीषं महात्मानं - विश्व व्यापिन मीश्वरम्<br>प्रसीद सौम्यरूपेण - येन निर्वृति माप्नुयम् ॥                                    | ५२ |
| बालभावेन मे सूढा - बुद्धि रासी दसम्मता<br>ममाग्रजो महाराजो - यजते धर्मनन्दनः<br>सत्यसंधो वृषस्कन्धो - नित्य धर्माभिसन्धिमान् ॥ | ५३ |
| तत्र नानाजनाकीर्णं - भुक्तशाला विशुद्धये<br>पुंमृगाहरणं कुर्या - स्वर्गलोकादिति प्रभा ॥  | ५४ |
| तदिदं यदि युक्त स्या - त्साचिव्यं कर्तुं मर्हसि<br>न चे न्मा मनुजानीहि - पुनर्गन्तुं गृहाङ्गणम् ॥                              | ५५ |
| अथन्ना पुंमृगादानं - प्रतिज्ञाक्ष निजेच्छया<br>नालंपुरीं पुनर्गन्तुं - व्यर्थीकृत मनोरथ ॥                                      | ५६ |
| किंतु चेतो गदां त्यक्त्वा - गदामेतां वृथाश्रमां<br>पश्यत स्तव निर्मोह - गभिष्ये ह्युत्तरा दिशम् ॥                              | ५७ |
| एवमुक्त्वा महाभागो - धर्मराजानुजो बली<br>विरराम रमानाथं - ध्यायन् हृदयपङ्कजे ॥   | ५८ |
| इति सकल जगन्मयं कपीन्द्र<br>प्रियवचनेन निजोन्मुख बिधाय<br>पुरुषमृग निरीक्षणाय भीमः<br>सपदि सगुत्सुक मानसो बभूव ॥               | ५९ |

इति श्री पराशर संहितायां पराशर मैत्रेय संवादे

भीमसेन चरित्र कथनं नाम पञ्चाशत्पटलः

# श्री पराशर संहिता

## एकपञ्चाशत्पटलः

—) पुरुषमृगाहरणोपाय कथनम् :-

श्री पराशरः

- अथाब्रवी त्कपिश्रेष्ठः - भीमं भीमपराक्रमं  
सौम्यरूपं समास्थाय - प्रहसन्मुखपंकजः ॥ १
- विद्धि मा मंजनापुत्रं - हनुमन्त मिति श्रुतम्  
वायुपुत्रतया चाहं - भ्राता ते नृपनन्दनम् ॥ २
- इदं ते साहसं ज्ञात्वा - पुंमृगादानगोचरम्  
अह मासं समासीनो - भ्रातृ स्नेहेन विकलबः ॥ ३
- जितचेतो जव शूरः - पुंमृगः पुरुषाशनः  
क्षणात्परार्थं मध्वान - मयति स्वान्तपूर्वगः ॥ ४
- को वा ममाग्रत स्तिष्ठे - न्मर्त्या वा दानवापिवा  
धृतःप्राणानिलःकालो - नस्थातुमिति तन्मतिः ॥ ५
- तादृशं मृग मानेतु - मीदृश स्त्वंकथ क्षमः  
अगृहीत्वा महाशूर - पुंमृगं पुरुषादनम्  
न रोचते पुनर्यानि - मद्भ्रात भीमसेन ते ॥ ६
- किन्तु योग त मादातु - मुपदेक्ष्यामि तेऽनुजं  
स पुंमृग श्शुभाचारः - शिवपूजा परायणः  
प्राणात्ययेऽप संप्राप्ते - न जहाति शिवार्चनम् ॥ ७
- तत्रापि पुरतः पश्ये - च्छिवलिंगं शुभालयम्  
त दसम्पूज्य पूजार्हं - पद मेकं न गच्छति ॥ ८
- मम बालाग्र रोमाणि - पथि क्षिप्र विभागशः  
तदालयं समार्चिष्ट - शिवलिंग च तत्क्षणम् ॥ ९

- अत स्तद्गति विघ्नोऽयं - शिवलिङ्गमयानि मे  
 गृहाण बालरोमाणि - समग्राण्यागृहात्तव ॥ १
- गृही त्वेमानि रोमाणि - गच्छ तस्यांतिकं दूतम्  
 तं प्रार्थय मृगन्याया - दवधारय तद्वचः ॥ १
- ततो गृहीत संकेतो - गच्छ न्वेगेन तत्पुरः  
 एकैकंतु पृथक्कृत्य - रोमाणं विनिपातय ॥ १
- एव सुधर्मा मारभ्य - भुक्त शालावधी दूतम्  
 कर्तव्य मप्रमादेन - पुरतो धावतस्त्वया ॥ १
- एकैक लोम विन्यासा - ह्यदालिङ्गोद्भवो भवेत्  
 तदातिक्रान्त वत्मानं - न त्वामभि भविष्यति ॥ १४
- एवं मदुक्तयोगेन - कर्तव्यं जय मिच्छता  
 तवालभ्यो मृगश्रेष्ठः - नस्यात्तव पराजयः ॥ १५
- इत्यादिश्य हितं तस्मै - हनूमा नुष्ट्रवाहनः  
 निज बालाग्ररोमाणि - प्रददे मुष्टिमात्रतः ॥ १६
- भीमोऽप्युपायलाभेन - परमानन्द निर्भरः  
 स्तोत्रेण महता स्तुत्वा - भ्रातरं कपिमब्रवीत् ॥ १७
- हनुमन्मूर्ति रूपाणि - स्थूल सूक्ष्म समानि ते  
 अत्यद्भुतानि लोकेषु - सन्तीति बहुधा श्रुतम् ॥ १८
- तानि दर्शय सर्वाणि - मह्यं जिज्ञासवे प्रभो  
 इति तत्प्रार्थनां श्रुत्वा - प्रत्युवाच कपीश्वरः ॥ १९
- सन्ति रूपाण्यनेकानि - स्थूलसूक्ष्म समानि मे  
 किन्तु तानि विशेषेण - दशंनीयानि चाधुना ॥ २०
- सामन्येन प्रवक्ष्यामि - तल्लिङ्गानि निबोध मे ॥ २१
- एन रूपेण मे राजन् - लालिता जनकात्मजा  
 तादृशं विद्धि रूपं त्वं - सूक्ष्मं च सदृशो मम ॥ २२

- यादृशं रूपं मालम्ब्य - लोकानुग्रहकारणात्  
 अवष्टम्भ्य पदद्वन्द्वं - मुदयास्ताद्वि मूर्धनि ॥ २३
- अधीता स्सकला वेदा - स्सांगा स्सवितृसन्निधौ  
 तादृशं मध्यमं रूपं - मामकं विद्धि पार्थिव ॥ २४
- अपरं मध्यमं चास्ति - रूपं रूपवतांवर!  
 यस्य वालमयं सेतुं - कृत्वा सप्तार्णवोपरि ॥ २५
- शताननो महादैत्यो - घातितो रामभार्यया  
 एवमादीनि रूपाणि - मध्यमानि निबोध मे ॥ २६
- यच्च विश्वमयं रूपं - विश्वतोमुखं मद्भुतं  
 जानक्यैर्दर्शनं साक्षात् - स्थूलं तद्विद्धि मामकम् ॥ २७
- तत्तत्कार्यानुरोधेन - तत्तत्कालानुसारतः  
 दशनीयानि रूपाणि - न च सर्वत्र सर्वदा ॥ २८
- इदानीं यदि रूपाणि - दशये याद्भुतानि च  
 भीतिस्ते भवत स्सद्यः - पीडा च जगतो भवेत् ॥ २९
- तथापि सूक्ष्मरूपं मे - दशायेष्यामि पाण्डव!  
 इति ब्रुवन्नय सद्यः - नीवाराग्रसमांशभवत् ॥ ३०
- दृष्ट्वा सूक्ष्मतनुं देव - भीमो विस्मयमाययौ  
 तावद्रूपाञ्जनापुत्रो - रूपान्तरं मगान्महत् ॥ ३१
- दशयांजनं विस्तीर्णं - त्रिशङ्कोजनं मायतम्  
 तेनैव रूपभेदेन - तीर्णो हि सरितां पातः ॥ ३२
- तद्रूपदशनात्सद्यो - भीमसेनो मुमूर्च्छं सः  
 तदा तं मूर्च्छितं दृष्ट्वा - हनुमान्भ्रतृवत्सलः ॥ ३३
- माभैषी रत्यथाभाष्य - पाणना समताडयत्  
 तत्पाणस्पर्शमात्रेण - सुप्तोत्थित इवाऽध्वनि ॥ ३४
- सज्ञा लेभे विसञ्जोऽपि - धर्मराजानुजस्तथा  
 तुष्टाव बहुभिः स्तोत्रैः - अप्रमेयं क्रीडस्वरम् ॥ ३५



- प्रदक्षिण नमस्कारान् - पञ्चसंख्यान् चकार सः  
 हनूमा नपि सर्वात्मा - हित मादिश्य बन्धवे  
 अन्तर्दधे दयासिन्धुः - भीमसेनस्य पश्यतः ॥ ३६
- राजापि विस्मयाविष्टो - हृदय न्यस्त तद्वचः  
 बालरोमाणि संगृह्य - प्रविष्टो देवतासभाम् ॥ ३७
- तत्रापश्य मृगश्रेष्ठ - सुधर्मा मध्यवर्तिनम्  
 ननाम दण्डव तस्य - कुशलप्रश्नपूर्वकम् ॥ ३८
- ततो विज्ञापयामास - मृगाय स्वप्रयोजनम्  
 अहं पांडुसुतो भीमः - देवराजात्मजाग्रजः ॥ ३९
- मदग्रजो महाराजो - धर्मराजो जितेन्द्रियः  
 क्रियते राजसूयेन - धर्मसूनु विधर्मवित् ॥ ४०
- तत्र पुण्ये महासत्त्रे - भुक्तशालाभिश्चुद्धये  
 त्व मागच्छ मृगश्रेष्ठ! - पवित्रीकृत विष्टपः ॥ ४१
- इत्याकर्ण्य वच स्तस्य - पुंमृगो हृष्टमानसः  
 जगाम वचनं तस्य - बुभुत्सु हृदयं बुधः ॥ ४२
- राजन् प्रीतोऽस्मि भद्र ते - यत्त्वया साधुभाषितम्  
 किन्त्वहं पुरुषाहार - परुषाक्षर भाषणः ॥ ४३
- सगच्छेयं यदा मार्गे - पुरद्वारावधि स्वयम्  
 तदा त्वां भक्षयिष्येऽहं - तत्र साक्षि महाजनः ॥ ४४
- कृत्वा मां पृष्ठतो दूरं - गच्छ क्षेमपुरस्सरम्  
 अशक्ताय तदा मह्यं - कुतः पुरुषभोजनम् ॥ ४५
- इति स्वमत मावेद्य - पुंमृग विश्वभक्तिमान्  
 पुरो गच्छेति राजान - मित्युक्त्वा चाश्वगच्छत ॥ ४६
- तथैवाग्रमना भीमो - व्यग्रचित्तं मृगोत्तमम्  
 बालरोम निपातेन - वञ्चयामास किञ्चन ॥ ४७

|  |    |
|--|----|
| तदा प्रादुरभू त्रिलिंगं - शैवं लोमनिपातनात्<br>तदद्भुतोद्भवं दृष्ट्वा - शिवभक्ताग्रणी मृगः ॥   | ४८ |
| पूजयामास पुष्पौघैः - अभिषेचन पूर्वकम्<br>तावदेव महासत्त्वो - भीमो भीमपराक्रमः ॥  | ४९ |
| दूर मध्वान मत्येर्धं - व्यति चक्राम सक्रमात्<br>तत स्समाप्य विधिवत् - शिवपूजां स पुंमृगः ॥   | ५० |
| अग्रयायिन मग्रयं - क्षणादेवान्वपद्यत<br>तावदेव पुनर्भीमः - पातयामास बालजम् ॥   | ५१ |
| शिवलिङ्गं विधानेन - चक्रे व्यवहितं मृगं<br>एवं विकीर्य रोमाणि - प्रत्येकंच पृथक्पृथक्<br>रिक्तबालज रोमस्सन् - पुरद्वारं विवेश सः ॥           | ५२ |
| बहिर्यस्यैकपादाग्र - मंतविन्यस्त दक्षिणं<br>जगृहे पुंमृगो भीमं - नमापित शिवार्चनः ॥  | ५३ |
| अथाब्रवीन्मृगं भीमः - तद्गृहात्यन्तकातरः<br>इद मन्याय्य मन्याय्यं - विद्वन्माचर साहसम् ॥   | ५४ |
| यस्त्वमुल्लंघ्य समय - मग्रहीन्मां गृहान्तरे<br>धर्मज्ञस्य कृतज्ञस्य - सत्यवाक्योजितस्य ते<br>अधर्मं यदि बुद्धि स्स्या - दितरेषां तु का कथा ॥ | ५५ |
| इत्युक्तवन्तं राजानं - जगाद मृगसत्तमः<br>त्वद्भ्रात्रा धर्मराजेन - धर्मज्ञेन यदुच्यते<br>तदेव नौ महाधर्मं - विवादो न भवेत्ततः ॥              | ५६ |
| एवं सवेद्य वृत्तान्तं - धर्मराजाय धीमते<br>श्रावयांचक्रत् स्सम्य - ड्मृगगीमौ यथाक्रमम् ॥   | ५७ |
| तच्छृत्वा सकलं वृत्तं - धर्मज्ञो धर्मेनन्दनः<br>विस्मयानन्द पूर्णान्तः - बभाषे धर्मेनन्दनः ॥   | ५८ |

|   |    |
|---|----|
| मृगोत्तम! महाप्राज्ञ - नाधर्मस्तव विद्यते<br>किन्त्वथा प्यधिको भीमो - ये नादौ द्वार साविशत् ॥   |    |
| तं विहायार्थकाय स्त्वं - शेषं भक्षय पुंमृग ॥  | ५९ |
| इत्युक्त वचनं त्यक्त्वा - पक्षपातं युधिष्ठिरम्<br>मृग स्स प्रीणयां चक्रे - निर्दुष्ट गुणवर्णनः ॥  | ६० |
| ततः प्रीतमना भूयः - नृपधर्मेण पुंमृगः<br>भुक्तशालाः पृथासूनोः - शोधयामास सञ्चरन् ॥  | ६१ |
| इत्येवं सफल गतिं विधाय भीमं<br>आपृच्छ प्रियमुहृदं हृदा स्मरन्तं<br>तत्रत्यैः पुरुष भृगोऽभिपूज्यमानः<br>स्वागत्या चकितसुरां दिवं प्रपेदे ॥ | ६२ |
| आञ्जनेय कृपयात्त पौरुषं<br>भीम मायं चरितं युधिष्ठिरः<br>तं प्रशस्य पुरतो महीभुजां<br>यज्ञ शेष मनय म्मुनीश्वर!                             | ६३ |

इति श्री पराशर संहितायां पराशर मैत्रेय संवादे  
पुरुषमृगाहरणोपाय कथनं नाम एकपञ्चाशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

द्विपञ्चाशत्पटलः

—: हनुमन्मानसिक पूजा कथनम् :-

१ मैत्रेयः :-

॥ कथ माराध्यते चित्ते - हनुमान्माहतात्मजः

कीदृशै रूपचारैर्वा - वद मे विस्तरान्मुने!

भी पराशरः

- श्लो॥ हनुमन्तम्महात्मानं - पिङ्गाक्षं हेमसन्निभम्  
मन्दस्मितं सुखासीनं - ध्याये दीप्सितसिद्धये ॥ २
- तापत्रय परिर्व्याप्तं - चित्तं कृत्वा सुनिर्मलम्  
भावये न्मनसा देवं - भवशाप विमुक्तये ॥ ३
- प्रातःकाले समुत्थाय - हनुमन्तं हृदि स्मरन्  
शुचौदेशे समासीनः - कृत प्राभातकीक्रियाः ॥ ४
- विजनं देश माश्रित्य - कदलीवन मध्यगः  
चित्तविक्षेप रहितः - पूजाविधि मुपक्रमेत् ॥ ५
- पूजा च पञ्चधाज्ञेया - कपीन्द्रस्य महात्मनः  
जले च प्रतिमायां च - शिलायां सूर्यमण्डले  
निश्चले मानसे वापि - पूजये जगतांपतिम् ॥ ६
- आहो सर्वोपचारा न्वै - जले नैव प्रकल्पयेत्  
द्वितीयेतु यथाशास्त्रं - तथा द्रव्यं निवेदयेत् ॥ ७
- तृतीये न विशेषोऽस्ति - द्वितीय इव पूजयेत्  
तुरीये निश्चलां दृष्टि - कृत्वा भास्करमण्डले ॥ ८
- पूजाद्रव्यं समानीय - चक्षुषा सन्निधापयेत्  
पञ्चमी मानसीपूजा - सवेषा मुत्तमोत्तमम् ॥ ९
- तत्तद्रव्याणि सर्वाणि - पूजाया ससाधनानि वै  
निश्चले नान्तरङ्गेण - कपीन्द्राय निवेदयेत् ॥ १०
- दलैर्द्वादशाभिर्युक्त - हैम हृदयपङ्कजम्  
भावये द्विकचं रम्यं - कणिका केसरान्वितम् ॥ ११
- तत्र सिंहासनं तत्र - हैमं भास्कर सन्निभम्  
निरस्तान्तस्तमस्तोमं - कल्पये न्मुनिपुङ्गव ! ॥ १२
- आवाहय हनुमन्तं - तत्र सिंहासने सुधीः  
अथ ध्याये त्कपि श्रेष्ठं - चतुरावरणान्वितम् ॥ १३

|   |    |
|---|----|
| वामभागस्थितां पत्नीं - सूर्यपुत्रीं सुवचलाम्<br>पश्यन्तं स्निग्धया दृष्ट्या - स्मितयुक्त मुखाम्बुजाम् ॥ | १० |
| छत्रचामर संयुक्त - विनताद्यै स्सुसेवितम्<br>युक्तहार गणोपेतं - तत्र कुण्डलभूषितम् ॥                     | ११ |
| ग्रैवेय भूषित ग्रीवं - कनकाङ्गद धारिणम्<br>नानामणि समुत्कीर्ण - किरीटोज्ज्वल शेखरम् ॥                   | १२ |
| मेखलादाम संवीतं - भणिनूपुर गोभितम्<br>रत्नकङ्कण विद्योतं - पाणि रक्ताम्बुज द्वयम् ॥                     | १३ |
| क्वधिता स्वर्णवर्णाङ्ग - मुष्ट्रध्वज समन्वितम्<br>पद्मासने सभासीनं - पीताम्बर समन्वितम् ॥               | १४ |
| चतुर्भुजधरं शान्तं - सर्वव्यापिन मीश्वरम्<br>सर्वदेव परीवारं - सर्वाभीष्ट फलप्रदम् ॥                    | १५ |

(आवाहनाद्युपचार प्रारम्भः)

|  |    |
|--|----|
| आवाह्याभि सर्वेश - सूर्यपुत्रीप्रियं प्रभुम्<br>अञ्जनातनयं देवं - मायातीतं जगदगुरुम् ॥ | २० |
| देवदेव! जगन्नाथ! - केसरिप्रियनन्दन!<br>रत्नसिंहासनं तुभ्य - दास्यामि हनुमत्प्रभो ॥     | २१ |
| आगच्छ हनुमन्! देव! - त्व सुवचलया सह<br>पूजा समाप्ति पर्यन्तं - भव सन्निहितो मुदा ॥     | २२ |
| भामाप्रज! महाप्राज्ञ! - त्व ममभिमुखो भव<br>सुवचलापते श्रीमन् - प्रसीद जगतांपते!        | २३ |
| योगिध्येया! द्रवक्षाय - जगतां पतये नमः<br>पाद्य मयागितं देव! - गृहाण पुरुषोत्तम ॥      | २४ |
| लक्ष्मणप्राण संरक्ष! - सीताशोक विनाशन!<br>गृहाणाध्वं मया दत्तं - पार्वती प्रियनन्दन ॥  | २५ |

|  |    |
|--|----|
| बालाग्र सेतुबन्धाय - शतानन वधाय च<br>तुभ्य माचमनं दत्तं - प्रतिगृह्णीष्व मासते ॥           | २६ |
| अजुंन ध्वज सवास! - दशानन मदापह!<br>मधुपर्कं प्रदक्ष्यामि - हनुमन् प्रतिगृह्यताम् ॥         | २७ |
| गन्गादि सर्वतीर्थेभ्यः - समानीतै नंबोदकैः<br>भवन्त स्नापयिष्यामि - कपिनायक गृह्यताम् ॥     | २८ |
| पीताम्बर मिद तुभ्य - तप्तहाटक सन्निभम्<br>दास्यामि वानर श्रेष्ठ - सगृहाण नमोस्तु ते ॥      | २९ |
| ब्रह्मसूत्र मिदं भव्यं - मुक्तादामोपशोभितम्<br>स्वीकुरुष्वञ्जना पुत्र - भक्तरक्षण तत्पर! ॥ | ३० |
| उत्तरीयं तु दास्यामि - संसारोत्तार कारण!<br>गृहाण परमप्रीत्या - नतोऽस्मि तव पादयोः ॥       | ३१ |
| भूषणानि महार्हाणि - किरीट प्रमुखान्यहम्<br>तुभ्य दास्यामि सर्वेश! - गृहाण कापिनायक ॥       | ३२ |
| कस्तूरी कुंकुमोन्मिश्र - कपूरगरु वासितम्<br>श्रीचन्दन तु दास्यामि - गृह्यता हनुमत्प्रभो !  | ३३ |
| सुगन्धीनि सुरूपाणि - वन्यानि विविधानि च<br>चम्पकादीनि पुष्पाणि - कमला न्युत्पलानि च ॥      | ३४ |
| तुलसीदल मादीनि - मनसा कल्पयामि ते<br>गृहाण हनुमन्देव! - प्रणतोऽस्मि पदाम्बुजे!             | ३५ |
| शालीया नक्षता त्रम्यान् - पञ्चरागसमप्रभान्<br>अखण्डा न्खण्डितध्वांत - स्वीकुरुष्व दयानिधे! | ३६ |
| कपिलाघृत संयुक्तः - कृष्णागरु समुद्भवः<br>मया समर्पितो धूपः - हनुमन् प्रतिगृह्यताम् ॥      | ३७ |
| निरस्ताज्ञान तिमिर - तेजोराशे! जगत्पते!<br>दीपं गृहाण देवेश! - गोघृतात्तं दशान्वितम् ॥     | ३८ |

|   |    |
|---|----|
| इदं दिव्यान्न मसृतं - सूपा शाक फलान्वितम्<br>साज्य सदाधि सक्षीरं - शर्करा मधु संयुतम् ॥               | ३९ |
| भक्ष्यं भोज्यं च लेह्यं च - चोष्यं चापि चतुर्विधम्<br>गृहाण हनुमन् भक्त्या - स्वर्णपात्रे निवेदितम् ॥ | ४० |
| सच्चिदानन्द रूपाय - सृष्टि स्थित्यन्त हेतवे!<br>पूर्वाफलै रसामायुक्तं - कर्पूरादि समन्वितम्           | ४१ |
| स्वर्णवर्णं दलोपेतं - तांबूल गृह्यतां हरे ॥   | ४२ |
| नीराजन मिदं दिव्यं - मगलार्थं कपिप्रभो<br>मया समपितं तात! - गृहाण वरदो भव ॥                           | ४३ |
| नृत्यं गीतं च वाद्यं च - कृतं गन्धर्वसत्तमैः<br>प्रकल्पयामि मनसा - रामदूताय ते नमः                    | ४४ |
| राजोपचारै रसात् - पुराणपठनादिभिः<br>सन्तुष्टो भव सर्वात्मन् - सर्वलिङ्गप्रयात्मक ॥                    | ४५ |
| शेरावण महाप्राज्ञ - प्राणवायु निलेशय!<br>पुनरर्घ्यं प्रदास्यामि - पवनात्मज गृह्यताम्                  | ४६ |
| मन्दार पारिजातादि - पुष्पांजलि मिसं प्रभो<br>स्वर्णपुष्प समाकीर्णं - मुष्ट्रध्वजगृहाण वै ॥            | ४७ |
| प्रदाक्षण नमस्कारान् - सास्तागा न्पवसख्यया<br>दास्यामि कापनाधाय - गृहाणाभीष्टदायक ॥                   | ४८ |
| वन्देव जगन्नाथ - पुराणबुद्धोत्तम<br>अनन पूजाविधिना - सुप्रीतो भव सर्वदा ॥                             | ४९ |
| सुवचंलासमेत स्त्वं - चतुरावरणान्वितम्<br>हस्तूलिवद्योपेते - मम हृत्पङ्कजे वस !                        | ५० |

श्री पराशर :

|  |    |
|--|----|
| इत्येवं मानसीपूजा - सर्वाभीष्ट प्रदायिनी<br>शङ्करेण पुरा गौर्या - कथिता विस्तरा न्मुने ॥ | ५१ |
|--|----|

|  |    |
|--|----|
| प्रात मध्याह्नयोश्चापि - सायंकाल निशीधयोः          |    |
| यदा कदापि पूजेयं - मानसी सर्वदोत्तमा ॥             | ५२ |
| एतस्य पूजनविधेः - पठनेनापि मानवः                   |    |
| सर्वान्कामा नवाप्नोति - श्रवणेन विशेषतः ॥          | ५३ |
| ब्रह्म क्षत्र विशां स्त्रीणां - बालानां च शुभावहम् |    |
| इदं पवित्रं पापघ्नं - भुक्तिमुक्ति फलप्रदम् ॥      | ५४ |
| इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे |    |
| हनुमन्मानासकपूजाकथनं नाम द्विपञ्चाशत्पटलः          |    |

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

### त्रिपञ्चाशत्पटलः

-: विश्वरूप दर्शनम् :-

॥ मैत्रेयः -

|   |   |
|---|---|
| श्लो॥ पराशर ! महाभाग ! - दीनबन्धो ! दयानिधो ! |   |
| भूयोऽपि कपिनाथस्य - कथाभि रपितोषय ॥           | १ |
| कथं मासीत्कपीन्द्रस्य - भविष्यद्ब्रह्मनामतः   |   |
| तदहं श्रोतुं मिच्छामि - वर्णनीयं महामुने ! ॥  | २ |

॥ पराशरः :-

|   |   |
|---|---|
| अथ जातु कपिश्रेष्ठो - द्रष्टुकामो रधूत्तमम् |   |
| कृतकृत्यं महात्मानं - कृतं राज्याभिषेचनम् ॥ | ३ |
| जानकीसहितं राम - मयोध्यां प्रसितो मुदा      |   |
| गन्धमादन शैलाग्रा - दारुढं करभोत्तमः ॥      | ४ |
| क्षणादप्राप साकेतं - तद्दर्शनं कुतूहलात् ॥  | ५ |



|  |    |
|--|----|
| साकेतोपक्षने रम्ये - करभा दवतार्थं सः            |    |
| रामपादाम्बुज द्वन्द्वं - दध्यौ ध्यानपरायणः ॥     | ६  |
| कदा द्रक्ष्ये रघुश्रेष्ठ - पदांगुष्ठ नखप्रभाम्   |    |
| यदा चक्षुश्चकोरो मे - परां प्रीतिं मवाप्नुयात् ॥ | ७  |
| कदा मुखाम्बुजं साक्षा - त्करिष्ये पद्मसुन्दरम्   |    |
| पूर्णचन्द्रोऽपि ये नास्ते - सकलङ्को जितप्रभः ॥   | ८  |
| इति संकल्पसौपान - मारूढः पवनात्मजः               |    |
| रामसिंहासनाख्यानं - प्राञ्जलिः प्रतिपद्यत ॥      | ९  |
| अथोपनिषदां सारै - रप्रमेयं रघूत्तमम् ॥           |    |
| तुष्टाव परया भक्त्या - मारुति भक्त शेखरः ॥       | १० |
| प्रदक्षिणीकृत्य रघूत्तमं प्रभुं                  |    |
| साकारभारा द्रममाणचेतस                            |    |
| आनन्द बाष्पाकुल लोचनान्तरः                       |    |
| कृत प्रणामो हनुमन्महोत्सवः ॥                     | ११ |
| स तं समुत्थाप्य करांबुजन्मना                     |    |
| विदेहपुत्रीकृत धूलिमार्जन                        |    |
| दृढ परिष्वज्य निजेन वक्षसा                       |    |
| त्रिरेष जिघ्रा बुपमूर्ध्नि चादरात् ॥             | १२ |
| विनयावनतं दृष्ट्वा - भक्तानुग्रह तत्परः          |    |
| पप्रच्छ कुशलं रामो - हनूमन्त दयार्द्रधीः ॥       | १३ |
| अथाब्रवीत्कपिश्रेष्ठो - रामं सत्यपराक्रमम्       |    |
| जाग्रति त्वयि नाधेन - पुराणपुरुषोत्तम ॥          | १४ |
| अशुभस्थ कुतो वार्ता - त्वन्नामस्मृति वैभवात्     |    |
| सद्यत्र कुशलं विद्धि - त्वत्पादासक्त चेतसाम् ॥   | १५ |
| नहिं सूर्धे तपत्यन्ध - तम स्सदृष्टि रोधनम् ॥     | १६ |

- किन्त्विदानीं भव दृक्ष - परमानन्दसागरे  
उन्मज्जितु न शक्नोमि - निमग्नोह्यह मागलम् ॥ १७
- इति वदति हनूमति प्रियाहं  
पुन रिदमपि वचोहितं वरेण्यं  
रघुपतिरपि तस्य भक्ति दार्ढ्यं  
जनकसुतां प्रति वेद यिष्यमाणः ॥ १८
- हनुमन्मुद्रिका हैमं - ममांगुलि विभूषणं  
प्रेषिता सत्यलोकाय - ब्रह्मणः प्रार्थनावशात् ॥ १९
- मद्वियोगातुराधीना - वसन्ती रावणालये  
मद्योगेनेव संप्राप्तं - प्रयात्यर्थतया सुखम् ॥ २०
- सैषा भगवती सीता - तामिमां द्रष्टु मिच्छति  
तदिमां मुद्रिकां शीघ्र - मानय ब्रह्मसन्निधेः ॥ २१
- इत्यादिष्टः कपिश्रेष्ठो - रघुनाथेन धीमता  
मनोवेग समायुक्तो - ब्रह्मलोकं जगाम सः ॥ २२
- तमागतं हनूमन्त - सनकादि महौजसः  
दृतानवेदयांचक्रे - ब्रह्मणे परमेष्ठिने ॥ २३
- तच्छ्रुत्वा वचनं तेषां - सबलोक पितामहः  
प्रत्युज्जगाम वेगेन - पूजा सादाय पाणिना ॥ २४
- अथ द्वारान्तरे द्वौ तु - कपीश कमलासनी  
परस्पर निरीक्षन्तौ - परमां मुद मापतुः ॥ २५
- परस्पर प्रशंसन्तौ - प्रणमन्तौ परस्परम्  
अन्योन्य माशिषन्तौ च - कुशलं पर्यपृच्छताम् ॥ २६
- ततः पूजां तु लोकेशो - ग्राहयित्वा कपीश्वरम्  
सरस्वती विलासाद्य - मानिन्ये योग मन्दिरे  
तत्रोपविष्ट हनुमान् - ब्रह्माणं पर्यभाषत ॥ २७

- आगतोश्मि महाभाग - राघव स्यानुशासनात्  
 रामेण प्रेषिता पूर्वं - मुद्रिका हेमनिर्मिता ॥ २८
- अतुला रत्नखचिता - कोटिसूर्य समप्रभा  
 विनोदयति वैदेही - यया तस्य प्रिया ब्वहम् ॥ २९
- वञ्चयित्वा प्रियां रामो - भवतः प्रार्थनावशात्  
 अनुमेने दद्यासिन्धुः - सत्यलोके प्रतिष्ठिताम्  
 त्वाभियं पुन रानेतुं - ब्रह्मन्नर्हसि मुद्रिकाम् ॥ ३०
- द्रष्टुं वाञ्छति वैदेही - तस्य प्राणसमा प्रिया  
 यया विरहिता साध्वी - न सुखं विन्दते क्वचित् ॥ ३१
- तदत्र भगवन्नद्य - माकृधा कालयापना  
 पञ्चप्राणाहि वैदेह्यः - मुद्रिकायां तु मुद्रिताः  
 देहमात्रं तु तत्रास्ते - तस्माद्दातृत्व महंसि ॥ ३२
- इत्युक्तवन्त प्लवगेश्वरं तथा  
 नयेन युक्तं विनयान्वित वचः  
 ब्रह्माऽपि धर्मान्वित मेन सूचिबान्  
 रघुप्रवी रांगुलिमुद्रि कादरात् ॥ ३३
- नसाम्प्रतं सम्प्रति मुद्रिकार्पणं  
 पुनर्हन्मन् रघुनायकाय ते  
 यतस्स्वमूर्तिप्रतिनिबचुम्बितां  
 अदत्त मह्यं स्वयमेव तां प्रभुः ॥ ३४
- तस्मूर्ति मेव ताम्मत्वा - तत्पूजनपरायणः  
 नयाम्यह दिना न्याशु - तद्वियोगार्ति भस्मरन् ॥ ३५
- चित्तशुद्धिप्रदां भूयः - परमानन्द कारणम्  
 नोत्सहे तां पुनर्दातुं - राघवेण प्रसादिताम् ॥ ३६
- तदर्हसि पुनर्गतु - मतिमन् मा चिरं कपे!  
 यावन्मनास शीतायाः - नकोपः परमावहेत्  
 ताव द्विज्ञापय प्राज्ञ - सीतायै दुर्लभां कृताम् ॥ ३७

|  |    |
|--|----|
| इति तद्वचनं श्रुत्वा - मारुति भीमविक्रमः<br>भृशकोपपरीतात्मा - कालाग्निसदृशोऽभवत् ॥             | ३८ |
| इदमाह चतुर्वक्त्रं - हनुमान्पार्वतीसुतः<br>लोकेशता मदेनैव - नयुक्तं ज्ञायते त्वया ॥            | ३९ |
| यतो न दीयते मुद्रा - रामनामाङ्किता विधे<br>नकदाचिद्रघूणां हि - निदेश्य प्रतिहन्यते ॥           | ४० |
| तत्रापि जगदीशस्य - रामचन्द्रस्य मत्प्रभोः<br>चराचर मिद कृत्स्नं - तदाज्ञैकवशं पदम् ॥           | ४१ |
| यत्प्रसादेन लब्धोहि - त्व मिमा मधिकारितां<br>तदाज्ञा मवजानासि - दुर्लभा हि कृतज्ञता ॥          | ४२ |
| तदिदं रघुनाथस्य - निदेशकरणोद्यमः<br>जीव न्नहं न पश्येयं - तदाज्ञोल्लंघनं क्वचित् ॥             | ४३ |
| ब्रह्मन्नदीयते मुद्रा - यदि निश्चितचेतसा<br>अचिराद्रक्ष्यसे नूनं - तस्येद कर्मणः फलम् ॥        | ४४ |
| इत्युक्त्वा वचनं सद्यो - रामनामानुचिन्तयन्<br>सेन्द्र सशेष स ब्रह्म - सगन्धर्वान् सुरासुरान् ॥ | ४५ |
| उद्धरिष्ये जगत्सर्वं - मिति निश्चित्य चेतसा<br>ववृधे भीमकर्मासौ - प्रावृषे घनाघनाः ॥           | ४६ |
| खड्गविशति सन्नद्धं भुजविशति मण्डलः<br>सिंहसहननोपेतः - समवष्टब्धि केसरः ॥                       | ४७ |
| रक्ताक्षो भीमवदनः - तीक्ष्ण दंष्ट्रो भयंकरः<br>सिंहनादं निनादोच्चैः - अट्टहासं चकार सः         | ४८ |
| तं तथाविध मालोक्य - ब्रह्मलोकः पितामहः<br>भयाकुलमना स्तूर्णं - सपरीवारमण्डलः ॥                 | ४९ |

तमद्भुताकारधरं कपीश्वरम्  
 सप्रसन्नता लोचन विश्वतोमुखम्  
 विधि विलोक्या प्रतिमान तेजसम्  
 दुरन्त चिंतां समवापसानुगः ॥  
 क्रिमेष सर्वस्य विपर्ययोऽपि वा  
 ममैव बुद्धेस्तु विपर्ययोऽथवा  
 अकाल सम्हत विधित्स्वया हरः  
 किमीदृशं रूप मगाद्बताथवा ॥

५०

५१

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
 विश्वरूपदर्शनं नाम त्रिपञ्चाशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

चतुःपञ्चाशत्पटलः

—: भविष्यद्ब्रह्मता प्रभाव कथनम् :-

श्री पराशरः :-

श्लो॥ अथावलोकयांचक्रे - सनकादीन् सभासदः  
 इतिकर्तव्यताबुद्धि - विहीनो विश्वसृष्ट तथा ॥  
 बुद्धयो विदुषां चापि - विपद्यन्ते विपत्तिषु ॥  
 सन-कुमारः प्रोवाच - ब्रह्माणं विगतव्यथः  
 धैर्यं मास्ताय तेजस्वी - तपोबल समन्वितः  
 भगवन्भारतीनाथ - दीयतां राममुद्रिका ॥  
 दानेनैव प्रतीकार्यो - नसाम्ना केवलेनवै ॥  
 सनत्कुमारवचनं - श्रुत्वा ब्रह्मसभासदः  
 अन्वमोदन्त संवादं - जगतां हितकाम्यया ॥

१

२

३

४

५

- एवं निवेदितं पथ्यं - सूनुना भावितात्मना  
ईदृश व्यसने प्राप्ते - हित मेवे त्यमन्यत ॥ ६
- अथ तुष्टाव विधिव- द्विधिः प्रीतिपुरस्सरं ॥ ७
- उष्ट्रारूढ सुवर्चलासहचरन्-सुग्रीव मित्राञ्जना  
सूनो वायुकुमार केसरितनूजाऽक्षादिदैत्यांतक  
सीताशोकहरागिननन्दन सुमित्रासम्भवप्राणद  
श्रीभीमाग्रजशंभुयुत्र हनुमान् - पञ्चास्य तुभ्यं नमः ८
- खड्गं खेटकं भिडिवाल परशुं पाश त्रिशूल द्रुमान्  
चक्रं, शंख, गदा, फलां, कुश, सुधाकुंभान्, हलं, पर्वतम्  
टंकं पवंतं कार्मुकांहि डमरू नेतानि दिव्यायुधा  
न्येवं विशतिबाहुभिश्चदधत्तं ध्याये हनूमत्प्रभुम् ॥ ९
- इत्येव मञ्जनापुत्रं - प्रसन्नीकृत्य विश्वसृष्ट  
तस्य प्रदशंयांचक्रे - सरसी मुद्रिकाश्रयान् ॥ १०
- अनन्त रामावतारेषु मुद्रिकाः  
चतुर्मुख प्रार्थनया समर्पितः  
कृतास्पदा यत्र सुधारसास्पदे  
निदर्शयामास सर स्तदात्मना ॥ ११
- तत स्सत्वर मुत्थाय - सुधासरसि मारुतिः  
निमज्जय बहूनाञ्चु - मुद्रिकाग्रहणेच्छया ॥ १२
- सदृष्ट्वा बहुशो मुद्रान् - रामनामांकितान् शुभान्  
विस्मय परभ प्राप्तः - परांप्रीतिं मवाप सः ॥ १३
- नम श्रकार वेगेन - सप्रदक्षिणपूर्वकम्  
प्रत्येकं मुद्रिकाणां वै - कृताञ्जलिपुटः कपिः ॥ १४
- उन्मज्ज सरस स्तूर्णं - ब्रह्माण मभिवाद्य च  
निवेद कुशलं तस्मै - रघुनाथ मगा त्पुनः ॥ १५

|   |    |
|---|----|
| तमागतं कपिं दृष्ट्वा - प्रहसन् रघुनन्दनः<br>अब्रवीन्मधुर वाक्यं - सादरं वदतांवरः ॥  | ५६ |
| हनुमन् दीयतां मुद्रा - सीतायै रत्नभूषिता<br>यद्विलम्ब विषादेन - प्रियं मे नाभिधित्सति ॥   | १७ |
| इति तस्य वचं श्रुत्वा - तदाजाभङ्ग शङ्कया<br>कर्णौ बिलुन्थ्य सन्त्रस्तो - ययौ पश्चाच्छनैश्शनैः ॥                                   | १८ |
| अलब्ध मुद्रिकांज्ञात्वा - चेष्टया वायुनन्दनं<br>जगाद सङ्मितं वाक्यं - कौमल्यानन्दवर्धनः ॥   | १९ |
| इत एहि कपिश्रेष्ठ - मा भैषीर्भक्तशेखर!<br>आवयो रन्तर नास्ति - बिम्बप्रतिमयो रिक्व ॥   | २० |
| तथापि ब्रह्मलोकस्य वृत्तान्तं वक्तु महंसि<br>एव मुक्तः कपिश्रेष्ठो - रामेण प्रियवादिना<br>प्रत्युवाच यथादृष्टं - वचनं वदतां वरः ॥ | २१ |
| भगवन् ब्रह्मणो लोक - पुण्य राशिरिवापरः<br>य दृष्ट्वा परमाश्चर्यं - प्राप्तोस्मि रघुनन्दन! ॥                                       | २२ |
| यत्र सन्निहिता नित्यं - भारती ब्रह्मणो वधूः<br>सर्ववर्णमयी साध्वी - यस्यां सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥                                   | २३ |
| यत्रस्थित महात्मानः - सर्ववेदान्त पारगाः<br>वेदवादरता नित्यं - जितक्रोधा जितेन्द्रियाः ॥  | २४ |
| अहोभाग्य महोभाग्य - सत्यलोक निवासिनां<br>रामनामाश्रुतो यस्मा - त्पाययन्ति पिबन्ति च ॥   | २५ |
| सर्वे च कृतकृत्याश्च - सर्वे योगपरायणाः ॥   | २६ |
| कल्लोलमालिकालोल - कनकाम्बुज पालिकं<br>सरोहरिति चेतांसि - सुधामय रसाश्रयम् ॥   | २७ |
| यन्गद्ये बहवो दृष्टा - रामनमाङ्क मुद्रिकाः<br>अन्यत्र दुर्लभाऽप्येता त्वत्प्रसाद इव प्रभो ॥                                       | २८ |

- तथापि भूयसी भक्ति - नवता मेव गाहते  
यद्विधि भक्तिलोभाभ्या - म्मुद्राज्ञादर्शय न्मम ॥ २९
- तदा कोपपरीतात्मा - विश्वरूप मदर्शयनम् ॥ ३०
- भवत्पादांबुजध्यान - वैभवाल्बधवैभवः  
उद्धृत्य सकलान् लोका - नह मागन्तु मुद्यतः ॥ ३१
- पुन स्सनत्कुमारेण - भवन्महिम वेदिना  
सौम्यतां प्रापितोऽस्म्यासु - तद्भयं हर्तु मिच्छता ॥ ३२
- दर्शिता सरसी मह्यं - तद्बोधित क्षिरिञ्चना  
तत्र दृष्टा मया बह्वचो - भवन्नामाङ्क मुद्रिकाः ॥ ३३
- कृत प्रदक्षिणस्तासां - साष्टांङ्गं प्रणतोऽस्म्यहम्  
तदा चिन्तां समगमं - दृष्ट्वा त्वन्नाममुद्रिकाः ॥ ३४
- कदा मयाहि संग्राह्य - रामाज्ञा वशवर्तिना  
सर्वाहि रामनामाङ्काः - नैकत्रास्ति विरूपता  
नग्राह्या स्सकला मुद्रा - स्तदाज्ञावचन क्रमात् ॥ ३५
- इति संशय मापन्नः - त्वदाज्ञाभङ्ग कातरः  
आगतोऽस्मि रघुश्रेष्ठ - तव पादातिकंपुनः ॥ ३६
- इत्युक्तवचन रामो - हनुमन्त मथाब्रवीत्  
प्रीतोऽस्मि तव भक्त्याऽह - मितरैर्दुरवापया ॥ ३७
- वरं वरय भद्रन्ते - माकुर्वन्वात्र संशयं  
बहवो ह्यवतारा मे - समतीताश्च भाविनः  
वर्तन्ते ह्यवतारोऽयं - तत्त त्कार्यवशानुगः ॥ ३८
- ब्रह्मणेमम भक्ताय - त्वादृशाय यतात्मने  
मम प्रतिनिधि मुद्रा - प्रतिकल्प प्रदीयते ॥ ३९
- अतुलां मुद्रिकां रम्यां - निधा यामृत सागरे  
उपचार्ये बह्विधै - ममि वाभ्यर्चयन् विधिः ॥ ४०
- नित्योत्सव करोत्येषो - ह्युत्तरोत्तर वृंहितं ॥ ४१



- एवं प्रपूजयन्ब्रह्मा निरस्तान्यप्रयोजनः  
महतीं मुदं माप्नोति - निक्षेपेणैव निर्यनः ॥ ४२
- अतः कपीन्द्र! मे मुद्रा - ब्रह्मसत्कार लोभिता  
सुधासरसि वर्तन्ते - सञ्चिताय परार्थशः ॥ ४३
- सीता मनोविनोदाय - काञ्चि देका मिहानय  
तया क्रीडतु वैदेही - बाल्ये पुत्रिकया यथा ॥ ४४
- पुत्रभावमस्ति स्तत्र - लङ्कायां मुदिता त्वया  
वृद्धिं माप्नोति निर्विघ्नं - मुद्रिकादान गौरवात् ॥ ४५
- इति तद्वचनं श्रुत्वा - प्रेमपर्याकुलाक्षरम्  
प्रणम्य रामपादाब्जं - प्रययौ वायुनन्दनः ॥ ४६
- गत्वा वेगेन महता - सत्यलोकं निरकुशः  
जग्राह मुद्रिका मेकां - सुधासरसि सस्थिताम् ॥ ४७
- तां वहन् शिरसा यत्नात् तदाज्ञामिव मारुतिः  
समीप रघुनाथस्य - क्षणादेशान्त्रपद्यत ॥ ४८
- ततः प्रादात्कपि श्रेष्ठः - सीतायै राममुद्रिकाम्  
पश्यतो रामचन्द्रस्य - सीतापर्यंकवर्तिनः ॥ ४९
- तेन दत्तां शुभां मुद्रां स्थितां भक्तिमिवात्मनि  
दृष्ट्वा जगन्तु रानन्दं - सीतारामौ परस्परम् ॥ ५०
- अथाब्रवीत्कपि रामः - प्राञ्जलिं पुरतस्थितः  
निदेशान्तर लाभाय - निरीक्ष तं पदाम्बुजम् ॥ ५१
- प्राप्नुहि त्वं कपिश्रेष्ठ - ब्रह्मलोकाधिनाथताम्  
यतो विलोक्य तं लोकं - परमां प्राप्तिं माप्तवान् ॥ ५२
- अहं च परमप्रीतः - तव भक्त्या निरन्तया  
त्वयाच दण्डकारण्ये - बहुधोपकृता वयम् ॥ ५३
- एकैक स्योपकारस्य - हनुमन्नास्ति निष्कृतिः  
अतस्सर्वहितार्थाय - ब्रह्मलोकाधिपो भव ॥ ५४

|   |    |
|---|----|
| सृजन् जगति सर्वाणि - चराणि स्थावराणि च<br>वेदोपदिष्टमार्गेण - समाज्ञा मनुपालयन्       |    |
| सुखीभव कपिश्रेष्ठ - भक्तरक्षण तत्परः ॥  | ५५ |
| इति तस्य प्रसादं वै - प्रतिगृह्य कपीश्वरः<br>तमेव मनसा ध्यायन् - गन्धमादन मन्वगात् ॥  | ५६ |
| यतो मथ्नाति गन्धौघै - मंतांसि प्रसभं गिरिः<br>ततो निगद्यते सद्भिः - गन्धमादन इत्यसौ ॥ | ५७ |
| तस्माद्गन्ध प्रभावेन - समाकृष्टमनाः कपिः<br>रेजे रम्भावने रम्ये - गन्धमादन मूर्धनि ॥  | ५८ |

पराशरः :-

|  |    |
|--|----|
| एवं हनूमता प्राप्ता - ब्रह्मलोकाधिनाधता<br>तदा प्रभृति मैत्रेय - भविष्यद्ब्रह्म नामता ॥                                | ५९ |
| एकैकांशो हनुमतः - प्रतिकल्पं महात्मनः<br>जायते ब्रह्मरूपेण - लोकानुग्रह काम्यया ॥                                      | ६० |
| य इदं पुण्य भाख्यानं - श्रुण्वन्ति च पठन्ति च<br>ते सर्वे ब्रह्मणो लोके - पूज्यन्ते सर्वसम्मताः ॥                      | ६१ |
| एवं प्रभाञ्चो हनुमान्महात्मा<br>सुरासुराणा सर्प दुष्प्रधर्षः<br>अचेतनानामपि यद्गुणोदयः<br>चिन्तोति चैतन्यभरं सुधोपमः ॥ | ६२ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
भविष्यद्ब्रह्मता प्रभाव कथनं नाम चतुःपञ्चाशत्पटलः

\* \* \*

# श्री पराशर संहिता

पञ्चपञ्चाशत्पटलः

— जपमाला लक्षणम् :—

श्री पराशरः ।

श्लो॥ वक्ष्यामि जपमालाया - लक्षणं मुनिसत्तम  
मालिकाभीज संख्याया - नियमं च विशेषतः  
नियताऽनियताचेति - द्विविधा मालिका स्मृता  
नियता मूलमन्त्राय - सदा त्वनियता भवेत् ॥  
मूलमन्त्र जपाद्यर्था - मालिकां न प्रदर्शयेत्  
जपन्नपि सदा योगी - गोमुखे नैव संजपेत् ॥  
तेन मन्त्राः प्रसीदन्ति - जपमाला निगूहनात् ॥  
सदा जपोचिता माला - दर्शनादेव दूष्यति ॥  
रुद्राक्षैः कमलाक्षैर्वा - स्फाटिकैर्वापि विद्रुमैः  
मुक्ताभिस्तुलसीकाष्ठैः - कुर्याद्वै जपमालिकाम् ॥  
स्फाटिकामोक्षमित्याहुः - मुक्ताकीर्तिकरा स्मृता  
रुद्राक्षाकमलाक्षाश्च - सर्वसिद्धि प्रदायिनः ॥  
विद्रुमै रचिता माला - ह्यायुर्वृद्धिकराभवेत्  
चित्तशुद्धि प्रदातृणां - तुलसीकाष्ठ मालिका ॥  
अष्टाविंशत्युत्तरेण - शतेन जपमालिकां  
द्वात्रिंशत्संख्यया वापि - सप्तत्रिंशति संख्यया ॥  
जपस्य तिद्धये सद्यः - कुर्याद्द्वादशसंख्यया  
सर्वत्र द्वादशी संख्या - संख्याना मुत्तमोत्तमा ॥  
पठेद्द्वादशनामानि - मालयादित्यसंख्यया  
स्वाभीष्ट सिद्धये योगी - तथा सप्ताक्षरी मपि  
षोडशाक्षरमन्त्रं वा - ह्यनुमत्प्रीतये सदा ॥

श्री मैत्रेयः -

- श्लो॥ संत्यनस्तानि नामानि - भगवन् हनुमत्प्रभोः  
मन्त्राश्च बहव स्तस्य - सर्वसिद्धिप्रदा नृणाम् ॥ ११
- कानि द्वादशनामानि - कावा स्यात् षोडशाक्षरी  
कावा सप्ताक्षरीविद्या - तन्ममाचक्ष्व तत्त्वतः ॥ १२

श्री पराशरः

- श्लो॥ हनूमा नंजनीसूनुः - वायुपुत्रो महाबलः  
रामेष्टः फल्गुणसखः - पिशाक्षोऽमितविक्रमः ॥
- उदधिक्रमणश्चैव - सीताशोक विनाशकृत्  
लक्ष्मण प्राणदाता च - दशग्रीवश्च वर्षहा  
इति द्वादशनामानि - जप्यानि जपमालया ॥ १३
- श्रीशब्दं हनुमच्छब्दो - जयशब्द स्ततः परम्  
जयद्वया दथ श्चोर्व्यं - हनुमन्नाम तत्त्वतः ॥ १४
- षोडशाक्षर मन्त्रोय - जप्तव्यो निजमालया  
साधारणजपे माऽस्तु - न्यास ध्यानाश्च मुद्रिकाः ॥ १५
- आदौ श्रीशब्द मुच्चार्यं - ततो हनुमतेः पदम्  
नभश्शब्द ततोच्चार्यं - अय सप्ताक्षरी मनुः  
एव सप्ताक्षरीं विद्धि - या जप्या जपमालया ॥ १६
- अय विशेष वक्ष्यामि - मैत्रेय! मुनिसत्तम!  
यस्य श्रवणमात्रेण - जपसिद्धि भवे नृणाम् ॥ १७
- ब्रह्म क्षत्रिय विद्विषूद्र - चातुर्वर्ण्ये मुदाहृतम्  
ब्राह्मणैजपसिद्ध्यर्थं - सर्वाधार्याऽपि मालिकाः ॥ १८
- क्षत्रियस्य विशेषेण - जप्या पद्माक्षमालिका  
अथवा मौक्तिकी माला - सर्वासिद्धिप्रदायिनी ॥ १९

|   |    |
|---|----|
| विद्रुमैर्हेमबीजैश्च - ग्रथिता जपमालिका<br>मन्त्रसिद्धिकरी सद्यः - वैश्यानां मन्त्रवेदिनाम् ॥       | २० |
| शूद्राणां नाधिकारोऽस्ति - मंत्रेवा जपकर्मणि<br>किन्तु ब्राह्मण सेवैव - निरपायगति प्रदा ॥            | २१ |
| अपरोऽय विशेषोऽस्ति - मैत्रेय श्रुणु तत्त्वतः<br>श्रद्धाहीनायसोऽवाच्यो - गोपनीय सदात्वया ॥           | २२ |
| मूलमन्त्र जषातेतु - प्रत्यहं मन्त्रवित्तमः<br>ताम्रपात्रे जल न्यस्य - विधाय करसपुटम् ॥              | २३ |
| द्वादशावृत्तिमात्र वै - मूलमन्त्र समुच्चरेत्<br>ततो जल पिबे त्सद्यः - मूलमन्त्रेण संस्कृतम् ॥       | २४ |
| ध्यायन्ने वांजनीसुतोः - पादाब्ज युगलं हृदि<br>एव यःकुर्वते योगी - मन्त्राराधन तत्परः ॥              | २५ |
| मन्त्रसिद्धिभवेत्तस्य - मन्त्रपूतं वपुर्भवेत्<br>सिध्यन्ति सर्वकार्याणि - दीर्घमायुश्च विदति ॥      | २६ |
| नास्ति दुस्वप्नलेशोऽपि - नात्र कार्या विचारणा ॥<br>उत्तमं स्वर्णरौप्याभ्यां - मध्यमं ताम्रपात्रतः   | २७ |
| अथम पणपात्रेण - नीचतु करसंपुटैः ॥<br>येनकेनापपात्रेण - मन्त्रपूतं प्रयत्नतः                         | २८ |
| पिबे द्रव्याकुल स्वान्तः - मात्रिको मन्त्र सिद्धये ॥<br>कदाचिदपि नालस्यं - कर्तव्य मन्त्रवित्तमैः ॥ | २९ |
| स्वेष्टमन्त्र जपस्याहं - भूमि संप्रोक्ष्य वारिणा<br>यथोक्तविष्ट रासीनः - यथाविधि जपेन्मनुम् ॥       | ३१ |
| जपस्थानन्तरं सद्यः - समुद्धृत्य जपासनम्<br>संप्रोक्षेत पुनर्धीमान् - जलेन जपभूमिकाम् ॥              | ३२ |
| एवं स्वाभीष्टदेवस्य - नमस्कारादि सत्क्रियाः<br>आदा वन्तेच संप्रोक्ष्य - कर्तव्या इशुद्धभूमिषु ॥     | ३३ |

- प्रमादा दथवा मोहा - दालस्याद्वा विमूढधीः  
न प्रोक्षेत जपस्थानं - तत्फलं नैव विन्दति ॥ ३४
- अनाचाराति सन्तुष्टाः - पिशाचा स्सततानुगाः  
अप्रोक्षित स्थलेस्थित्वा - बलाद्गृह्णित तत्फलम् ॥ ३५
- तस्मा त्सर्वप्रयःनेन - जापकोऽनन्य मानसः  
यथाशक्ति जपंकृत्वा - प्रोक्षेत जपभूमिकाम् ॥ ३६
- हनुमत्पूजन विधौ - सत्कर्म जपकर्मणोः  
चञ्चल हि मनो ब्रह्मन् - विषया अग्नि वञ्चकाः ॥ ३७
- इन्द्रियाण्यपि धावन्ति - दुष्टाश्चाइव वेगतः  
ततो निरुद्ध करणः - स्ववशीकृत मानसः ॥ ३८
- यथाकालं यथाशक्ति - सत्कर्मैव समाचरेत्  
श्रेयांसि बहु विघ्नानी - त्यमुं न्यायमनुस्मरन्  
सद्योऽल्पमाप कुर्वीत - धर्मं यावद् दृढाङ्गकः ॥ ३९
- पश्चात्कतव्यता बुद्धि - य. करो त्यलसो जनः  
आत्महातु स च प्रोक्तः - सतु सत्कर्मवञ्चकः ॥ ४०
- यथाद्रव्य यथाकालं - यथाशक्ति शरीरिभिः  
विहाय जडतां नित्यं - कतव्यो धर्मं सग्रहः ॥ ४१
- मैत्रेय! जपतां नित्य - मन्त्रमेकं हनूमतः  
सप्तकोटि महामन्त्राः - सिध्यन्त्येव न संशयः ॥ ४२
- आराधिते कपिश्रेष्ठे - समस्ता अपि देवताः  
भवान्त सतत तुष्टाः - सर्वदेवात्मको हि सः ॥ ४३
- येन केनाप्युपायेन - हनुमत्पूजनैर्बुधः  
दिवस सफलं कुर्यात् - स्तोत्रैर्वा वन्दनैरपि ॥ ४४
- पायस घृतसपूर्ण - मन्दवारेषु पञ्चसु  
मर्कटा यार्पय द्वीमान् - हनुमांस्तेन तुष्यति ॥ ४५

|   |    |
|---|----|
| बालमुद्रां प्रकुर्वीत - जपादी मंत्रवित्तमः        |    |
| जपांतेऽपि तथा कुर्या - दाम्नाये प्रणवं यथा ॥      | ४६ |
| वामहस्तं हृदिन्यस्य - शिरस्याधाय दक्षिणं          |    |
| पुरोलक्ष्यांगुलितलं - बालमुद्रा प्रकीर्तिता ॥     | ४७ |
| बालमुद्रा प्रभावेन - जपस्सपूर्णतां व्रजेत्        |    |
| हनुमानपि संतुष्टो - मन्त्रराजाधिदैवतः ॥           | ४८ |
| यत्कर्मविहितं नित्यं - काम्यं नैमित्तिकं तु हि    |    |
| प्रातःकाले कृतं स्याच्चे - तदुत्तमफलप्रदम् ॥      | ४९ |
| देवात्प्रमादा दालस्या - ह्यदि कर्मतिलंघनम्        |    |
| नित्यादीन्यपि कर्माणि - नयथोक्तफलानि वै ॥         | ५० |
| जन्तुर्बद्धोऽपि संसारे - सुख दुःख मये सदा         |    |
| निलिप्त इव वर्तेत - पद्मपत्र भिवांभसा ॥           | ५१ |
| स्वाभीष्ट देवतासक्त - हृदयस्सुद्ध मानसः           |    |
| कुलालकीलुव सित्य - नयेत्काल मर्तद्व्रतः ॥         | ५२ |
| इत्थ करोति यो नित्यं - तस्य मृत्यु न विद्यते ॥    | ५३ |
| प्राप्नुया न्मतिमा न्जन्तुः - कर्माधीनं जगद्यतः   |    |
| कर्माण्यपे सदाकुर्व - न्विहितानि समाचरेत् ॥       | ५४ |
| आचर न्विहिता न्जन्तुः - मनः पूतं समाचरेत्         |    |
| साकल्येन नशक्यं ते - कर्तुं कर्माणि जन्तुभिः ॥    | ५५ |
| समस्त कर्मभिरुचैकं - मनःपूत समाचरेत्              |    |
| आयास बहुल कर्म - न कदापि समाचरेत् ॥               | ५६ |
| चित्तशुद्धि विना भूतं - निष्फलं भवति सद्बवं       |    |
| भक्ति श्रद्धा विशुद्धात्मा - चिन्तये देवतां सदा ॥ | ५७ |
| नित्यं नैमित्तिकं वापि - सदा कर्म समाचरेत्        |    |
| अहंकारं च दम्भं च - विहाय फलकामनाम्               |    |
| नित्यं यत्क्रियते कर्म - हनुमां स्तेन तुष्यति ॥   | ५८ |

|   |          |
|---|----------|
| अन्नादिकं निजाभीष्ट - देवतायै समर्पितम्<br>प्रोक्षितं चाऽपि गायत्र्या - भक्षयेद्भूक्त शेखरः ॥   | ५९       |
| कदाचिदपि नैवेद्यं - नोपेक्षेताऽपि सङ्कटे<br>उच्छिष्टे स्पृष्टदोषे वा - न त्यजेदपि किञ्चन ॥  | ६०       |
| प्रमादादपि गर्वाद्वा - तृप्तेश्चारुचिभावनात्<br>निवेदितान्नरेणुं च पात्रमध्ये न शेषयेत् ॥   | ६१       |
| उल्लङ्घनात्प्रसादस्य - भक्तिपूजा ब्रूया भवेत्<br>जाज्वल्यमान जिह्वाग्रे - नीहार इव पाषके ॥  | ६२       |
| प्रसादे नियमस्साधुः - न श्रेयो नियमं विना ॥<br>योवा विभर्त्यनन्तानि - नामानि द्विविधान्यपि<br>यस्यावतारा बहवो - मत्स्य कूर्मादि रूपिणः<br>सर्वत्र समता बुध्या - जगद्रक्षति सर्वदा ॥ | ६३<br>६४ |
| चेष्टाश्च विविधा यस्य - भक्तानुग्रह हेतवः<br>तत्तद्भक्तानुकूलानि - रूपाण्यङ्गीकरोति यः<br>पुनाति सकलान्लोकान् - चरितैः परमाद्भुतैः ॥  | ६५       |
| समस्तोपनिषद्वाच्यो - यत्रसिद्धान्तमाश्रितः<br>सृजत्यखिलजन्तून् - सृष्टौ ब्रह्मस्वरूपधृत् ॥  | ६६       |
| सृष्ट्वा चाखिलजन्तून् - प्रतिष्ठापयति प्रभुः<br>विलापयत्येव जन्तून् - तत्तत्कर्मानुसारतः<br>स एव हनुमान् ज्ञेयः - सर्वभूतमयश्शुचिः ॥  | ६७       |

श्री पराशरस्तुतिः :-

तमेव जानीहि जगद्गुहं मुने !  
तमेव सर्वक्रतु भोक्तृरूपिणम्  
तमेव सर्वक्रतु सिद्धिदायकं  
तमेव सर्वक्रतु हृद्यरूपिणम् ॥



|   |    |
|---|----|
| समस्तशब्दप्रतिपाद्यमूर्तिः<br>समस्तकल्याणगुणाभिरामः<br>समस्तजीवाननिशंबिभति<br>सूत्रंयथा हारमणीन् हनूमन् ॥   | ६९ |
| स एकएवाखिल विश्वरूपधृत्<br>स्वर्णं यथा कङ्कण कुण्डलात्मधृत्<br>जनाद्यविद्यावशरूप नामनि<br>तत्रैकवस्तु न्यपि कल्पते उभे ॥  | ७० |
| द्वयं हनूमत्यपि कल्पितं मृषा<br>नामानि रूपं व्यवहार सिद्धये<br>मायावशा दात्मनि सच्चिदात्मनि<br>प्रबुध्यते यस्तु तरत्ययं जनः ॥   | ७१ |
| चराचर मिद्विश्वं - सर्वं हनुमदात्मकम्<br>एव विभावयत्येनं - ते तरन्ति न सशयः ॥   | ७२ |
| एवं भावयितु येवै - नसमर्थाः पृथग्जनाः<br>उदीर्यन्तामिति स्वच्छं - तद्विश्वं हनुमन्मयम् ॥  | ७३ |
| अत्रैवोदाहरन्तीमं - इतिहासं पुरातनम्<br>यस्य श्रवणमात्रेण - परां प्रीति मवाप्स्यसि ॥  | ७४ |
| पुरा पुरन्दर इश्रीमान् - वृत्रासुर वधोद्यतः<br>तन्मायामोहित स्वान्तो - नैवात्मासमबुध्यत ॥   | ७५ |
| पपात सहसा वज्र - स्तम्भीभूतेन्द्रपाणितः<br>ततो गुरुस्समागत्य - बृहस्पति रुधारधीः ॥  | ७६ |
| इदं हनूमतस्तोत्रं - शक्रायोपदिदेशह<br>गुरुपदिष्ट हनुमत् - स्तोत्रराजं शचीपतिः<br>उत्थाय मूच्छनाच्छक्र - स्मुप्तोत्थित इव भूतम्<br>गुरुपदिष्ट विधिना - तृष्ठाव कपिनायकम् ॥ | ७७ |

द्रुकृत स्तुतिः -

- नमामि जगतां नाथं - जगदाराध्य वैभवम्  
 सृष्टि स्थिति लयानां च - हेतु मीश्वर मव्ययम् ॥ ७८
- पार्ष्णीगर्भसम्भूतं - सच्चिदानन्द विग्रहम् ॥ ७९
- यस्य कुक्षौ समाविष्टाः - लोकावै भूर्भुवाद्यः  
 नित्यं हि सुखिता स्सन्ति - तन्नमामि जगद्गुरुम् ॥ ८०
- यस्य प्रसादा न्मर्त्यो वै - मृत्युं जयति मानवः  
 तमे वाह नमस्कुर्या - जरामरण वर्जितम् ॥ ८१
- हनुमन्मूतेये तस्मै - नरनारायणात्मने  
 अञ्जनागर्भं संभूत्यै - रक्षसां वध हेतवे  
 पम्पातीर निवासाय - मास्त्यै च नमोनमः ॥ ८२
- कपिवरेश्वर कामितार्थदं - त्रिपुरहात्मज दीनपोषकं  
 द्विपुलकक्षस विमलचेतस - कामितार्थद कमललोचनम् ॥ ८३
- पवननन्दनं पावकप्रभं - भवविदारण भाग्यकारणं  
 प्लवगनायकै भीवतोद्यमं - नवकवित्व वाङ्नायकं भजे ॥ ८४
- अञ्जलिग्रहीतात्मदैवत - मञ्जुभाषितै मनिवोत्तमं  
 राजयन्सदा रामभूपति - अञ्जनायशः पुञ्जमाश्रये ॥ ८५
- सुन्दरानन सूर्यतेजसं - नन्दिनाथव न्निदिताखिलं  
 मन्दराद्रिव द्बन्धुराकृति - वान्दतं भजे वानरोत्तमैः ॥ ८६
- कनककुण्डल घनतराङ्गकं - दनुजनाशन धर्मविग्रहं  
 जनककन्यकाचरित मञ्जुल - मनुमहाञ्जनामानितात्मजं ॥ ८७
- श्रुतिरसायनं स्तुतिपरायण - अतुलाविक्रमं आर्ततारणं  
 कृतजगद्धित केसरिप्रियं - मतिमतांवरं मानदं भजे ॥ ८८
- निबिडमुष्टिना निहतरावणं - प्रबलभावना भाविपञ्चजं  
 कर्बालक्षारुण गानलोलुप - विबुधतोषक वीरमाश्रये ॥ ८९

- परमपावनं पार्वतीमुतं - निरुपमौजसं निजितेन्द्रियं  
खरनखायुधं कामरूपिणं - सुरपतिस्तुतं सूरमाश्रये ॥ ९०
- गन्धमादनशैलाग्र - स्वर्णं रमभा वनाश्रय!  
हनुमन्नक्ष मां दीनं - सर्वभूत दयापर! ॥ ९१
- संसार कुहर ध्वान्त - नितान्तभ्रान्तचेतसम्  
हनुमन्मा मनाध त्वं - किमर्थं समुपेक्षसे ॥ ९२
- हनुमन्मधुरास्वाद - कदलीफल पाणये  
अमोघ स्वर्णटङ्काय - कर्कटीहारिणे नमः ॥ ९३
- उष्ट्राखण्ड! कपिश्रेष्ठ! - त्वत्पाद ध्यान संश्रयम्  
दुःखसंसार भग्नं मा - मुद्धरस्व जगत्पते ! ॥ ९४
- रेतो मूत्र पुरीषाऽसृक् - पूयदुर्गन्ध दूषितम्  
भग मेहन संयोगं - मूढो वै मन्यते सुखम् ॥ ९५
- त्वत्सेवा विमुखाश्रित्य - हनुमन्बत जन्तवः  
वृथा मूढाधयोजाता - शिशश्नोदर परायणाः ॥ ९६
- तृणमपि नचल त्यशेषबन्धो !  
कपिकुलनाथ! तवाज्ञया विनावै  
इति जग दखिल विधेयभूतं  
विदितवतां न कदापि दुःखलेशः ॥ ९७
- वन्दे वायुतनूभवं सुचरितं - वन्दे जगद्रूपिणम्  
वन्दे वज्रतनुं सुरारि दलनं - वन्दे दयासागरम्  
वदे पंचमुख सुकुण्डल धर - वन्दे कपीनां पतिम्  
वदे सूर्यसुता सख प्रियफलं - वदे हनुमत्प्रभुम् ॥ ९८
- धन्यावाचः कपिवरगुण - स्तोत्रपूताः कवीनाम्  
धन्यो जतुर्जगति हनुम - त्पादपूजाप्रवीणः  
धन्यावासं सततहनुम - त्पादमुद्राभिरामम्  
धन्य लोके कपिकुलमभू - दाजनेयावतारात् ॥ ९९

|  |     |
|--|-----|
| इतिस्तुत्वा हनूमतं - सहस्राक्ष इशचीपतिः<br>संप्राप्त विक्रमौदार्यः - सुप्तोत्थित इवाभवत् ॥   | १०० |
| समुदाय पुन वंज्रं - वृत्राय व्यसृज तदा<br>ततो वज्रहतो वृत्रः - पपातच ममारच ॥   | १०१ |
| पठतिये स्तोत्र मिमं पवित्रं<br>जिगीषतस्ते विजयं प्रयांति<br>अस्माक मन्तद्विषता मपेक्षया<br>हनूमत स्तोत्रबला दभूत्पुरा ॥                          | १०२ |
| भवा नपि स्वैरचरो हि नूनम्<br>भविष्यासे प्राप्त महानुभावः<br>मैत्रेय तस्माद्भवतोपादिश्यताम्<br>हनूमतस्तोत्र मिद यथार्हतः ॥                        | १०३ |
| द्वेताऽऽश्रमेषु विचरन्मुनिगीयमाना<br>न्यत्यद्भुतान हनुम च्चरितानि शृण्वन्<br>कल्पाव्बहूनपि नयामि मुहूर्तमात्र<br>मानन्दसागर निमग्न निजांतरङ्गः ॥ | १०४ |

इति श्री पराशर संहिताया श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
जपमालालक्षणम् नाम षड्पञ्चाशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

षड्पञ्चाशत्पटलः

-: स्वप्न हनुमन्मंत्र प्रभाव वर्णनम् :-

श्री पराशरः ।

श्लो॥ अन्यद्रहस्यं वक्ष्यामि - मैत्रेय श्रुणु तत्त्वतः  
लोकोपकारं गोप्यं च - श्रुण्वतां पुण्यवर्धनम् ॥

- स्वप्नाख्य हनुमन्मंत्रः - चित्तशुद्धिप्रदो नृणाम्  
न देयो भक्तिहीनानां - कदाचित्प्राणसङ्कटे ॥ २
- मंत्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि - मंत्रविन्मंत्रसिद्धिदम्  
आदौ प्रणव मुञ्चार्यं - दूरदृष्टिपद वदेत् ॥ ३
- दूरश्रवण मित्येत - दुञ्चरेत्तदनंतरम्  
समागतानागतेति - पदंतु समुदाहरेत् ॥ ४
- वतमाने त्यपि पदं - उच्चरेदवितन्द्रितः  
सर्वलोकेति शब्दंच - वृत्तांते त्यपि संवदेत् ॥ ५
- ततो विज्ञानशब्दंच यथायोगं समुच्चरेत्  
हनुमत्पदमुञ्चार्यं - मह्यं देही त्युदीरयेत् ॥ ६
- वाह्मजायां समुञ्चार्यं - क्रमा तन्मन्त्र मुद्धरेत्  
चत्वारिंश द्वाणरूपा - मन्त्रराजो महाबलः ॥ ७
- स्वप्नाख्य हनुमन्मंत्रः - सर्वाभीष्ट फलप्रदः  
अस्य स्वप्नाख्य मंत्रस्य - ऋषि ब्रह्मा प्रकीर्तितः ॥ ८
- गायत्री छंद इत्याहुः - हनुमा न्देवता भवेत्  
प्रणवं भीजमित्युक्तं - स्वाहा शक्तिः प्रकीर्तिता ॥ ९
- कीलकं दूरदृष्टि स्स्यात् - प्रसादे विनियुज्यते  
न्यासादि मूलमंत्रेण - कुर्यात्प्रियतमानसः ॥ १०

### ध्यानम् :

- समागतानागत वर्तमान  
वृत्तान्त विज्ञान भरं त्रिलोक्याः  
दूरश्रुति दूरगतस्य दर्शनं  
स्वप्ने हनुमन्मम देहि नित्यम् ॥ ११
- पुरश्चर्याविधिस्तस्य - नियतायुतसंख्या  
दशांशं तर्पणं श्रेयं - होमस्तस्य दशांशकः ॥ १२

- वेदपारग विप्राणां - तद्दशांशं तु भोजनम्  
 एवं य कुरुते विद्वान् - हनुमत्पूजनं सदा ॥ १३
- स सद्यस्सिद्धिं माप्नोति - परत्रच परांगतिः  
 पुरश्चर्याविधौ तस्मिन् - समाप्तौ कृपया हरेः ॥ १४
- मन्दवारे महाभक्त्या - प्रार्थयेत् ब्राह्मणोत्तमान्  
 त्यक्त्वाहङ्कारं दम्भादीन् - पण्डितान् पञ्चसंख्यया ॥ १५
- आञ्जनेयाचंनानागरं - नीत्वा ब्राह्मणपुङ्गवान्  
 सघृतान्पायसापूपान् - विपुलान्गुडमिश्रितान् ॥ १६
- हन्मते निवेद्यादौ - भोजयेत्प्रार्थितद्विजान्  
 द्विजभक्तावशेषं च - भुक्त्वा जपपरायणः ॥ १७
- आचम्य विधिवच्छीघ्रं - जपे दष्टोत्तरंशतम्  
 आञ्जनेय पुरोदेशे - ब्रह्मचर्या समाचरन् ॥ १८
- अथश्शयनसपन्नः - अप्रमत्तः शनैस्वपन्  
 स्वं मनोहरं मुद्देश्य - कामयेत फलं तथा ॥ १९
- ततो वानररूपेण - बालब्राह्मण वेषतः  
 अथवा स्वस्वरूपेण - हनुमान् स्वप्नगो भवेत् ॥ २०
- तस्य वाञ्छितकार्याणि - विज्ञाप्य प्रहसन् कपिः  
 दत्त्वा किञ्चिदभिज्ञानं - सहसाऽर्हितो भवेत् ॥ २१
- भक्तस्य वानर रूपं - स्वप्न लब्धं भवेद्यदि  
 तेन श्रेयो भवेच्छीघ्रं - नात्र कार्यं विचारणा ॥ २२
- अभक्तस्य भवेत्स्वप्नः - बानराकारगोचरः  
 श्रेयांसि तस्य नश्यन्ति - ततः प्रतिकृतिर्भवेत् ॥ २३
- अत्रै वोदाहरंतीमं - इतिहासं पुरातनम्  
 यस्यश्रवणमात्रेण - सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ २४
- अस्ति काशीपुरी धन्या - सर्वपुण्यफलप्रदा  
 मोक्षलक्ष्मी पताकेव - सर्वलोकेषु विश्रुता ॥ २५

|   |    |
|---|----|
| तत्रास्त्येकादशीमध्ये - केदारेश्वर वाटिका       |    |
| तस्यास्तु दक्षिणे भागे - रामवाटी विराजते ॥      | २६ |
| रामवाट्याः पुरोभागे - गङ्गा कल्लोलमालिनी        |    |
| तत्रास्ते जानकीनाथः - साकेत इव मूर्तिमान् ॥     | २७ |
| तत्पदाम्भोज वीक्षायां - लब्धतृष्णो निरन्तरम्    |    |
| हनूमा नञ्जनीसूनुः - भक्तानुग्रह तत्परः ॥        | २८ |
| ददाते भक्तलोकस्य - सर्वाभीष्टानि मारुतिः        |    |
| तत्रास्ते धार्मिकोनाम - ब्राह्मणो वेदपारगः ॥    | २९ |
| रामवाटी गुहामध्ये - कृतवासो निरन्तरम्           |    |
| तस्यपुत्रो जितामित्रो - धर्मकीर्तिस्तु नामतः ॥  | ३० |
| सदा विनयसम्पन्नो - सदाचारो जितेंद्रियः          |    |
| पितृसेवापरो नित्य - सौम्य ष्षोडशहायनः ॥         | ३१ |
| सर्वशास्त्राय तत्त्वज्ञो - नित्यं वृद्धोपसेवनः  |    |
| नकदाचिन्महाप्राज्ञो - धर्मकीर्ति रनामयः ॥       | ३२ |
| तथाच मातापितरौ - साध्वीं जायास्वकामपि           |    |
| दुर्भिक्ष पीडिता नेतान् - पर्यालोक्य पुनःपुनः ॥ | ३३ |
| दारिद्र्य हतु काम स्सः - धनसंग्रहणेच्छया        |    |
| स्वय मेकचरो विप्रः - दूरदेशांतरगतः ॥            | ३४ |
| अतीत्य दूरमध्वानं - गोकर्णक्षेत्र माविशत्       |    |
| दृष्ट्वा तत्र महात्मानं - गोकर्णेश्वर मव्ययम् ॥ | ३५ |
| तस्याऽध्वश्रमया सद्यः - गोकर्णेशप्रसादतः        |    |
| त्रिसस्मर स्वकान्बन्धून् - कदाचिद्वासनावशात् ॥  | ३६ |
| संकीर्तेय न्सस्मरयंश्च नित्यम्                  |    |
| सम्पूजयंश्चाप्यभिषेचयन्मुदा                     |    |
| चिरस्तुव स्तोत्रभरै रनेकधा                      |    |
| निनाय गोकर्णतले समाब्रहूः ॥                     | ३७ |

- इति निरवधिकं त - धर्मकीर्ते र्यतात्मनः  
तद्वृत्तांत मपि ज्ञात्वा - देशदेशांतरे ष्वपि ॥ ३८
- बांधवा स्सकलास्तस्य - मातापित्रादयस्तथा  
दुःखिताः परम काश्यां - कालेकालेच सर्वदा ॥ ३९
- अथ यात्राप्रदेशेन - नानादेश समागतान्  
ब्राह्मणा न्क्षात्रिया न्वैश्यान् - सूद्रान्सक्रीर्णवानपि ॥ ४०
- अपृच्छता कृशादीना - तद्वियोगातिकातरे  
जननी जनकश्चापि - धर्मकीर्ते महामतः ॥ ४१
- अहो धन्याः महापुण्या - पान्थाः पुत्रव्रतांवराः  
किं न दृष्टो भवाद्भू स्सः - बालो षोडशहायनः ॥ ४२
- पुत्रोऽस्माकं सदादीनः - धर्मकीर्ति श्र नामतः  
सर्वशास्त्रं तत्त्वज्ञः - सर्ववेदांत पारगः ॥ ४३
- न ब्रूते निष्टुर क्वापि - शप्तोवाऽन्यजनैरपि  
एव विधो महाप्राज्ञः - निष्क्रान्तः काशिकातलात् ॥ ४४
- कंदेश माश्रितस्साधुः - सधन्यो देश सत्तमः  
एते सर्वे वयं नून - निर्भाग्या स्तद्वियोगिनः ॥ ४५
- अतिक्रान्तो बहुकालः - बिना तन्मुखदर्शनम्  
कदाद्रक्ष्यामहे पुत्र - सर्वभूत दयापरम् ॥ ४६
- श्रावयिष्यसि वृत्तांतं - कोवा पुत्रस्य न श्शुभम्  
धर्मकीर्ति यदि प्राज्ञ - न वा द्रक्ष्यामहे वयम् ॥ ४७
- नून त्यजामहे देहान् - गङ्गायां पाबकेऽपिवा  
एव कष्टवतो बन्धून् - धर्मकीर्ते म्हात्मनः ॥ ४८
- सायत्रिका जना प्रोचुः - न दृष्टो भवतात्मजः  
इति गद्गदया वाचा - नशक्ता वक्तु मास्थिताः ॥ ४९
- अथान्तरे महाप्राज्ञः - कश्चिद्ब्राह्मण पुङ्गवः  
काश्यामेव कृतावासो - सुतपोनाम वै द्विजः ॥ ५०



|  |    |
|--|----|
| उवाच धार्मिकं विप्रं - वचनं वदतांबरः<br>अलं विद्वन्विषादेन - निषीद पुरतो मम ॥  | ५१ |
| श्रोतु मर्हसि मद्वाक्यं - माभू त्काल विपर्ययः<br>स्वप्नाख्य हनुमन्मन्त्रः - प्रसिद्धः जगतां त्रये ॥  | ५२ |
| जपन्तस्तं महामन्त्रं - बहवो नियतव्रताः<br>शुभस्वप्नापदेशेन - कायसिद्धि मवाप्नुयात् ॥   | ५३ |
| तस्मात्त्वमपि विप्रेन्द्र - धार्मिक प्रियया सह<br>इम मन्त्रं गृहाणाशु - मया ते ह्युपदिश्यते ॥  | ५४ |
| स्वप्नलब्धो हनूमान्त्सः - पुत्रवार्ता प्रबक्ष्यति<br>यदि वा द्रक्ष्यसे नूनं - त्व मपि ब्राह्मणोत्तम ॥                                      | ५५ |
| मा कुरुष्वाऽत्र सन्देहं - सुखितोऽपि भविष्यसि<br>इत्युक्त्वा वचनं विप्रं - सुतपो धार्मिकं तथा ॥   | ५६ |
| विदेश स्वाप्निक मन्त्र - सर्वेषां क्षेमदायकम्.<br>सोऽपि विप्रो जिताहारः - जितक्रोधो जितश्रमः ॥   | ५७ |
| जजाप परमं मन्त्र - मुपदिष्टं महात्मना<br>रामवाट्या कृतावासं - त्रिनेत्रं भक्तवत्सलम् ॥   | ५८ |
| गाघवाभिमुखवीरं - हनुमन्तं हृदिस्मरन्<br>पठतिस्म महामन्त्रं - पुत्र दर्शनलालसः ॥  | ५९ |
| एव जपति विप्रेन्द्रे - मन्त्रराजं च धार्मिके<br>बाल ब्राह्मण रूपेण - मार्ताण्डसम तेजसा<br>स्वप्नलब्धोऽञ्जनासूनुः - पुत्रवार्ता न्यवेदयत् ॥ | ६० |
| आनयिष्यामि पुत्रं ते - प्रेरयित्वा मतिं तथा<br>उत्तिष्ठ वत्स! भद्र ते - न खेदं प्राप्तुमर्हसि ॥  | ६१ |
| तवपुत्रो महाप्राज्ञो - धर्मकीर्ति रनामयः<br>गौकर्णनःयकस्थाने - निवसन्निर्मलाशयः ॥  | ६२ |

|   |    |
|---|----|
| शेवतेऽर्हतिशं शम्भो - श्रवणाम्बुहृद् द्वयम्<br>पुखेन वर्धते जीवन् - तस्यानुग्रह वैभवात् ॥     | ६३ |
| शचिरादेष्यति स्त्वरं - धर्मकीर्तिस्तवात्मजः<br>इति त्वत्पुत्र वृत्तान्त - माख्यातु मह मागतः ॥ | ६४ |
| ःवप्नलब्ध मिमं विद्धि - हनूमन्त मिहागतम्<br>वस्तितेऽस्तु गमिष्यामि - समागच्छति ते सुतः ॥      | ६५ |
| त्युक्त्वा कपिनाघोऽपि - क्षणा दन्तरधीयत<br>मिमिकोऽपि महातेजाः - स्वप्नादुत्थाय वेगतः ॥        | ६६ |
| शाहत इवाकस्मा - त्संभ्रान्त हृदयोऽभवत्<br>तः प्रभाते बन्धूनां - रात्रिवृत्तं निवेद्य सः ॥     | ६७ |
| र्बहुश्लाघितो विप्रः - संस्तुवन्कपिनायकम्<br>दीक्ष्य पुत्रागमनं - तस्थौ ब्राह्मणसत्तमः ॥      | ६८ |
| थान्तरे महादेवो - गोकर्णस्थल नायकः<br>मेष प्रेषितं शीघ्रं - धर्मकीर्तिं द्विजात्मजम् ॥        | ६९ |
| वत्तशुद्धि प्रभावेन - सेवयोपाधिहीनया<br>क्त्या चाव्यभिचारिण्या - धर्मकीर्तिस्तु तारितः ॥      | ७० |
| ःजनेय प्रभावेन - समृद्धा रसवंसम्पदः<br>प्य कैवल्यलक्ष्मीं च - जगाम स्वपुर जजः ॥               | ७१ |
| रः :-   |    |
| पनाख्य हनूमन्मन्त्र - प्रसादा द्दामिकोद्विजः<br>षित सुचिरं कालं - पुत्रंप्राप्य पुनस्स्वतः ॥  | ७२ |
| क्त्वा यथेप्सिता भोगान् - अन्ते मोक्षमुपागतः<br>ते तन्मन्त्र माहात्म्यं - गदितं विस्तरेण ते ॥ | ७३ |
| पनीय प्रयत्नेन - मयि श्रुण्वत तद्वशः ॥  | ७४ |

अद्यापि काशीपुर रामवाट्यां - जप प्रणामस्तुतिकृज्जगस्य  
भव्यं च भूतं च भविष्य देवं निवेदये त्स्वप्नगतो हनुमान् ॥ ७५

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
स्वप्नहनुमन्मन्त्र प्रभाव वर्णनं नाम षट्पञ्चाशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

सप्तपञ्चाशत्पटलः

—: मन्त्रसंस्कार कथनम् :—

श्री पराशरः ।

श्लो॥ अग्न्यं विशेषं वक्ष्यामि - मैत्रेय! श्रुणु यत्त्वतः  
मंत्राणां हि विभागोऽस्ति - जीवनाऽजीवभेदतः ॥ १  
संस्कृता जीवना मन्त्राः - जीवतश्चाऽपि ते स्मृताः  
दशसंस्कारहीना ये - मन्त्राः मंत्रविदां वर ॥ २  
अजीवा इति ते प्रोक्ताः - अजीवाश्चापि ते स्मृताः  
द्विविधानां तु मंत्राणां - विशेषो विद्यते महान्  
सद्यस्त्रिसध्यति जीवंत - स्तदन्येतु विलम्बिताः ॥ ३

श्री मैत्रेयः :-

व्लेशदशाऽपि संस्काराः - मन्त्राणां शुद्धहेतवः  
तन्ममाचक्ष्व योगीन्द्र! - लोकानुग्रह हेतुना ॥ ४

श्री पराशरः -

जननं जीवनं पश्चा - त्ताडनं बोधनं तथा  
अथाऽभिषेको विमली - करणाऽऽप्यायनी पुनः  
तर्पणं दीपनं गुप्तितः - दशैता मत्र संस्क्रियाः ॥ ५

- लक्षणानि क्रमेणासां - मत्तो निगदिताः शृणु  
यच्छ्रुत्वापरमां प्रीतिं - मैत्रेयाऽधिगमिष्यसि ॥ ६
- सौवर्णे रजते वाऽपि - ताम्ने वा भाजने तथा  
कदलेवापि पालाशे - पद्मपत्रद्वयेऽपि वा ॥ ७
- नूतनं धौतवस्त्रं च - यथाशक्ति प्रकल्पयेत्  
तस्योपरि महाशुभ्रान् - अव्रणान् शालितंडुलान्  
विन्यसे त्रिव्रतस्वांतः - स्मरन् स्वाभीष्टदेवतम् ॥ ८
- गुरु सम्पूज्य विधिव - न्मंत्राराधनतत्परः  
तडुलोपरि पञ्चाश - दक्षरा न्विलिखे त्सुधीः ॥ ९
- पूजयेत्प्राङ्मुखस्थानि - गन्धपुष्पाक्षतैश्शुभैः  
निवेदयेद्गुडं चैव - फलं वा क्षीरमेव वा  
प्रदक्षिण नमस्कारा - न्कुर्विताऽनन्यमानसः ॥ १०
- ततस्स्वाभीष्ट मन्त्रस्य - वर्णां न्पात्रा त्समुद्धरेत्  
यदक्षरं लिखित्वाशु - वर्णानांपूर्यते बुधः ॥ ११
- तवर्णं पूर्णपात्रस्थ - मन्त्रिकः प्रविलोमयेत्  
इति सर्वाक्षराण्येव - मन्त्रपूर्वाण्यनुक्रमात् ॥ १२
- अन्यत्र विलिखे त्पत्रे - पूर्वतो धृतिपूर्वकम्  
इदं जनन मित्याहुः - मन्त्रस्याऽऽदिम संस्क्रियां ॥ १३
- लिखितानांतु वर्णानां - सम्यक्पात्रान्तरे तथा  
प्राण प्रतिष्ठा विधिना - धावथे न्मन्त्रवर्णकान्  
इदं जीवनामित्याहुः - द्वितीया संस्क्रिया परा ॥ १४
- लिखिताक्षर मन्त्रस्य - समुच्चारण पूर्वकम्  
सुगन्धपुष्पमाल्याद्यै - पात्रेस्मिन् लिखिताक्षरे  
ताडन पाणिना वेगात् - पञ्चवारं प्रयत्नतः ॥ १५
- इदं ताडन मित्याहुः - तृतीया संस्क्रिया परा ॥ १६
- ताडितस्यैव मन्त्रस्य - पुरतो विनयान्वितः  
ताडनाद्यपराध न्वै - सद्यएव क्षमापयेत् ॥ १७

- बोधयेत्प्रियवाक्यैश्च - त्वदधीनोऽह मित्यपि  
इदं बोधन मित्याहुः - चतुर्थी संस्क्रिया परा ॥ १८
- तत्र पञ्चामृतैः पात्रे - स्नापनं विधिनाच यत्  
लिखिताक्षर मन्त्रस्य - समुच्चारण पूर्वकम्  
अभिषेक मिदं प्राहुः - पञ्चमी संस्क्रिया परा ॥ १९
- अभिषिक्तस्य मन्त्रस्य - लिखिताक्षर रूपिणः  
मलापकर्षणार्थाय - क्षालये च्छुद्धवारिणा  
विमलीकरणं प्राहुः - षष्ठसंस्कार संज्ञकः ॥ २०
- फलापूपादि संपूर्ण - शर्करा घृतपायसैः  
शाल्यन्न सूपशाकाद्यै - नैवेद्यै रमृतोपमैः ॥ २१
- सुगन्ध पुष्पमालाद्यै - शोभितै मृदुलांबरैः  
लिखितं शोभितं मन्त्रं - मुहु राप्यायये त्सुधीः  
इदं माप्यायनं प्राहु - स्स्तमी सक्रिया परा ॥ २२
- लिखिताक्षर मन्त्रस्य - समुच्चारण पूर्वकम्  
गङ्गोदकैर्गवां क्षीरै - नीरिरेकेल जलेन त्रा ॥ २३
- संतर्पये त्पञ्चवारं - वात्रस्थ वर्णमुत्तमम्  
इदं तर्पण मित्याहुः - अष्टमी संस्क्रिया परा ॥ २४
- सन्दीपये न्महामन्त्रं - सम्यङ्नीराजनादिभिः  
लिखिताक्षर मन्त्रस्य - समुच्चारण पूर्वकम्  
इददीपन मित्याहुः - नवमी संस्क्रिया परा ॥ २५
- सर्षदा गोपये न्मन्त्रं - न दद्याद्यस्य कस्य च  
स्वयं भावर्तयेन्नित्य - हनूमंत मनुस्मरन्  
इमातु गुप्तरित्याहु - दशमी संस्क्रिया परा ॥ २६
- एवं समस्त मन्त्राणां - कर्तव्या दशसंस्क्रियाः  
अजप्तो गुरुणा प्येवं - दश संस्कार संस्कृतः  
महाप्रकाशतामेति - शाणोल्लीढ मणिर्यथा ॥ २७

|   |    |
|---|----|
| मन्त्रस्याऽप्युपदेशार्हः - शिष्याय प्रियवादिने<br>शुभेदिने शुभेमासे - नक्षत्रेच शुभे तथा<br>शुभेलगने सितेपक्षे - मन्त्रंदद्या द्यथाविधि ॥ | ३८ |
| याबन्नास्तगत इशुकः - गुरुर्वा बृहतां पतिः<br>सावदेव गुरुदद्या - मन्त्रं सूर्योत्तरायणे ॥  | ३९ |
| शुभां ग्रहगतिं वीक्ष्य - द्वयोश्च गुरुशिष्ययोः<br>तदा मन्त्रः प्रदेयो वै - पूर्वाह्णे शुभलक्षणे ॥   | ३० |
| यदा अर्थोदयः पुण्यः - प्राप्यतेवा महोदयः<br>चंद्रादित्यपरागोवा - गोविन्दद्वादशी यदि ॥   | ३१ |
| विषुवंचापि प्राप्तायां - शिवरात्रौ जयातिथौ<br>अविचार्यं तदा देयः - शिष्यस्य प्रार्थना यदि ॥   | ३२ |
| पुण्यक्षेत्रे तथा तीर्थे - यदिस्यात्सङ्गतिं द्वयोः<br>सद्यएवहि दातव्या - नात्र कार्याविचारणा ॥  | ३३ |
| नगण्यते ग्रहगतिं नवा शुक्रादि मूढता<br>नक्तं दिवविभागोवा - नवा विध्यादि देशता ॥   | ३४ |
| सएव योग्यकालस्स्यात् - पात्रे मन्त्रार्पणं यदि<br>बहुताऽत्र किमुक्तेन श्रुणुमे निश्चितं वचः ॥   | ३५ |
| भाक्त्तरेवात्र मूल स्या - न्नवर्णं कुलसंपदः<br>भक्तिविदित्वा भक्तस्य - चिरप्रणयनादिभिः ॥  | ३६ |
| दंभाय वा न दातव्यः - न च मत्सरिणे तथा<br>अनसूयया दातव्यः - न बक्रगतये तथा ॥   | ३७ |
| अतिमूढाय नोदेयः - देयो विनयशालिने<br>शील विज्ञाय च्छेष्टाभिः - शुश्रूणा प्रणयादिभिः<br>प्रसन्नो यदि चेतस्स्या - दातव्य स्सद्यएवहि ॥       | ३८ |
| चद्रसूर्योपरागेषु - मन्त्रंनोपदिशेद्बुधः<br>प्रमादा दथवा दद्या - हारिद्रयं हनुमन्मनोः ॥   | ३९ |

|  |    |
|--|----|
| शाबराणांतु भंत्राणां - चन्द्रसूर्योपरागयोः<br>उपदेशः प्रशस्त स्या - न्नेतरेषां कदाचन ॥                         | ४० |
| उपदेशे महामन्त्राः - नोपदेश्याः कदाचन<br>अन्यथोपदिशेन्मोहात् - दारिद्र्यं कोटिजन्मसु ॥                         | ४१ |
| इति निगदित मार्यवृत्तं तुभ्यं<br>सकल मति स्वय माञ्जनेयवृत्तं<br>अपि निजरक्षणैष दीक्षा<br>वशागत दिव्य महाभौवः ॥ | ४२ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेय संवादे  
मंत्रसंस्कार कथनं नाम सप्तपञ्चाशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

अष्टपञ्चाशत्पटलः

—: हनुमच्चक्रध्यान प्रकार कथनम् —:

श्री मंत्रेयः -

अशेषागम सारज्ञ - पराशरमहाभुने!  
पञ्चाक्ष्य हनुमत्स्वामि - चक्र ध्यान मनुत्तमम् !  
ज्ञानांकुरं दृढीकर्तुं - वद मे करुणानिधे ॥

श्री पराशरः :-

साधु पृष्टं महाभाग - सत्कथा श्रवणोत्सुक!  
वक्ष्ये ध्यानविशेषा न्वै - पञ्चाक्ष्य हनुमत्प्रभोः  
यथाश्रुतं मया पूर्वं - गौर्यैवर्णयितः शिवात् ॥

कैलासशिखरे रम्ये - नानारत्न विभूषिते  
मणिसिंहासनासीनं - गौरी पप्रच्छ शङ्करम् ॥

३

पार्वत्युवाच :-

नित्यध्यान निरूढाय - पञ्चवक्त्र हनुमतः  
ध्यानं चक्रस्थ मस्माकं - वक्तव्य परमेश्वर !

४

ईश्वर उवाच :-

सम्यक्पृष्टं त्वया देवि ! मन्मतोरथ पूर्तिदम्  
पञ्चास्य हनुमच्चक्र - ध्यानं सागं ब्रवीमि ते ॥

५

सश्रुण्वेकचित्तेन - गुह्य मामुष्मिकं परम्  
मध्यमे चक्र राजस्य - नाभ्या ममृतसागरम् ॥

६

ध्यात्वा तन्मध्यमे श्वेत - द्वीपं सञ्चितयेत्प्रिये  
तन्मध्ये स्वर्णकदली - कान्तारं समचिन्तयेत् ॥

७

तन्मध्ये महारम्य - प्रासाद मणिरञ्जितम्  
तन्मध्ये रत्नखचित - स्वर्णं सिंहासनोत्तमे ॥

८

पद्मासने समासीनं - स्वर्णालङ्कारभूषितम्  
बालाककोटि प्रतिमं - बिद्युद्वर्णाविरावृतम् ॥

९

पञ्चवक्त्रं त्रिपञ्चाक्षं - दशबहु समन्वितम्  
खड्गांकुश त्रिशूलाक्ष - माला पर्वत भूहृत् ॥

१०

पाश सञ्जीवनी चीर - टङ्का धारण मद्भुतम्  
इन्द्रुखण्डावत सोत्त - माङ्ग मुत्तुङ्ग विग्रहम् ॥

११

गण्डमण्डल विभ्राज - द्रत्न कीलत कुण्डलम्  
दशदिग्भ्राजतोदग्र - किरीटेन विराजितम् ॥

१२

हारकङ्कण केयूर - काञ्चीवलय शोभितम्  
भर्णि स्वर्णमयाऽनेक भूषणस्फूर्ति भासुरम् ॥

१३

सर्वाङ्गमुन्दर दिव्यमूर्ति - ज्ञानामृताकरम्  
सेवकाय समासीन - भक्ताभीष्ट फलप्रदम् ॥

१४



|   |    |
|---|----|
| शरण्यं सर्वदेवानां - त्रातारं भक्तवत्सलम्<br>सर्वकामद मिन्द्रादि - सर्वदेवै रूपासितम् ॥             | १५ |
| शिवबीजाक्षरैकस्थं - पञ्चास्यं पवनात्मजम्<br>त्रिभागसंवृतैरेभि - स्त्रिमूर्तिभि रहनिशम् ॥            | १६ |
| अपराऽव्यक्त चिन्मूर्ति - भविष्यत्पञ्कजासनम्<br>योगपद्मासनासीनं - महायोगीश्वरं हरिम् ॥               | १७ |
| मृसिंह ताक्ष्यं वाराह - हृयग्रीवै स्समावृतम्<br>षड्भिस्सुदर्शनै व्यक्त - लक्षणै स्सम्यगावृतम् ॥     | १८ |
| शिवरामेन्दुमार्ताडै - दिग्दशा द्वादशालयैः<br>अवस्थितैःस्थिरैस्सम्य - कसवृत परमेश्वरम् ॥             | १९ |
| सूर्य रुद्र बसु ब्रह्मा - विश्वदेवै निरन्तरम्<br>सवृतं षोडशै र्युक्त - ससर्वाभिरशक्तिभि पृथक् ॥     | २० |
| क्षेत्रपालै विशाभि - वटुकाद्यै रलंकृतम्<br>सेवित चैव तत्त्वाभि - इच्छन्दोभिर्विविधैरपि ॥            | २१ |
| द्वात्रिंशद्भिर्नुंसिंहैश्च - सम्यक्संवेष्टितं पुनः<br>योगिनी भैरवैश्चापि - चतुष्षष्ट्यनिलात्मजैः ॥ | २२ |
| संवेष्टितचैव मेव - महाचक्रस्थ मुत्तमम्<br>सर्वावतारकं दिव्य - तेजोमूर्ति निरीश्वरम् ॥               | २३ |
| एव पञ्चाननं चायु - सूनुं ध्याये दनन्यधीः<br>ततःकृपाकर स्तस्य - सर्वापद्भ्यो विमुच्यते ॥             | २४ |
| जित्वाऽथ दारुणं मृत्यु - मृत्युग्र कालसङ्गकम्<br>ऐहिकामुष्मिकान्भोगा - न्प्राप्तोत्यव्याहता नरः ॥   | २५ |
| य इदं परमं गुह्यं - पञ्चास्य हनुमत्प्रभोः<br>ध्यानं पठ त्यनुदिनं - तदैक्यत्व मवाप्नुयात् ॥          | २६ |
| कथांतर प्रवक्ष्यामि - मैत्रेय! श्रुणु तत्त्वतः<br>हनुमत्पूजनादौ च - पूजान्ते प्रत्यह सुधीः ॥        | २७ |

|  |    |
|--|----|
| सास्टांगंच नमस्कुर्या - त्पंचवारं हनूमतः         |    |
| त्रिकाल मेककालवा - कालद्वय मथाऽपि वा ॥           | २८ |
| मूलमन्त्रं जपेन्नित्यं - गुरुपूजा परायणः         |    |
| बहुनात्र किमुक्तेन - हनूम न्मन्त्रतत्परः ॥       | २९ |
| यावज्जीवं नये त्कालं - मनो वाक्काय कर्मभिः       |    |
| एव नयति यःकालं - मन्त्रविन्मन्त्रतत्परः ॥        | ३० |
| एव हनुमान्ब्रह्म - ज्ञात्र कार्या विचारणा ॥      | ३१ |
| भूत प्रेत पिशाचाना - मुच्चाटनविधिं मुने!         |    |
| वक्ष्याम्यह प्रयत्नेन - लौकाना भुपकारकम् ॥       | ३२ |
| भूतप्रेतपिशाचाना - मात्ययो यत्रदृश्यते           |    |
| तत्राभिमुख मास्थाय - श्रीवीरहनुम न्मनुं          |    |
| पंचवार जपंकुर्या - हनूम न्मुद्रणं तथा ॥          | ३३ |
| एवं कृते मन्त्रविधौ - मन्त्रस्याऽऽवृत्तिपूर्वकम् |    |
| पलायते महाभीता - भूत भेताल राक्षसाः ॥            | ३४ |
| इयामन्त्रंति गुनयो - यथाश्रुत मुदाहृत            |    |
| मुद्राया लक्षण वक्ष्ये - शृणुष्वानन्यमानसः ॥     | ३५ |
| यस्या इश्वरवण मात्रेण - पिशाचो विभ्यति स्वयम्    |    |
| किल्किलि प्रचूरं सद्यः - बू बू कारं समुच्चरन् ॥  | ३६ |
| विधृत इश्वरवणे नेत्रे - प्रहस्य पुरतो मुखम्      |    |
| तालून्धापूर्यफूत्कारै - विष्टभ्य भुवि जानुनी ॥   | ३७ |
| मध्यमाऽनामिकांऽगुष्ठ - दृढ सयोग पूर्वकम्         |    |
| उत्क्षिप्य बाहुमध्यादौ - सम कर्णात् गामिनौ ॥     | ३८ |
| भूत प्रेतादि संस्थानं - भीकरं प्रतिलोकयेत्       |    |
| संघातु हनुमन्मुद्रा - कथिता मन्त्रवित्तमैः       |    |
| भूत प्रेत पिशाचानां महतीयं विभीषिका ॥            | ३९ |

उदग्रवाल भ्रमणानिलाहता  
 रयेणय म्यांबुधरा स्समन्ततः  
 सद्दिव्य पंचानन वायुनन्दनी  
 ममास्तु कल्याणविवृद्धये हरिः ॥

४०

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
 ह्युमन्त्रकृद्धानप्रकार कथनं नाम अष्टपञ्चाशत्पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

एकोन षष्टितमः पटलः

आञ्जनेय श्रीविद्या

--: मन्त्राणां जाताशौच मृताशौच लक्षणम् :-

श्री पराशरः :-

नम स्सुमणिकुंडलं - नयनपुष्पव न्मंडलम्  
 हृदि प्रणत वाताजलि - श्रित सुरासुरेन्द्रांजलिम् ॥ १  
 सहार मणिभूषणं - सरस भक्त संतोषणम्  
 हनूम दभिधं हर - हरिं विरिचिसेव्यं भजे ॥ २  
 सीताराघवदत्तमौक्तिकलस - द्वारावलीशोभितं  
 हस्तांभोजवराभयांकित - मनेकाकल्परत्नोज्वलम्  
 वालावेष्टितमौलिमीश्वरतनुं - भक्तानुकल्पद्रुमम्  
 राजन्मौज्यजिनोपधीतमनिश - श्रीआंजनेयं भजे ॥ ३  
 अन्यंविशेषं वक्ष्यामि - सर्वलोकोपकारकम्  
 यद्दय श्रवणमात्रेण मंत्रसिद्धि भविष्यति ॥ ४

|   |    |
|---|----|
| सर्वेषा मेव मंत्राणां - संस्कृतं सूतक द्वयम्<br>जात सूतक मायंच द्वितीयं मृतसूतकम् ॥               | ५  |
| जात सूतक मित्याहुः - मंत्रोच्चारण सम्भवम्<br>मन्त्राक्षरोपसंहारा - दाहु स्तं मृतसूतकम् ॥          | ६  |
| सूतकद्वयदुष्टानां - मन्त्राणां जपता मपि<br>सिद्धिर्नदृश्यते कापि - प्रयासोऽपि महान्भवेत् ॥        | ७  |
| जपादौ सूतकं विद्या - जजपाते मृतसूतकम्<br>उभयो स्सूतकं विद्या - तज्जपं निष्फलं भवेत् ॥             | ८  |
| अत स्समुद्धरे न्मंत्रं - सूतकद्वय कर्दमात्<br>बिंदुयुक्तं समुच्चार्य - पञ्चाश द्वर्णं मालिकाम् ॥  | ९  |
| अनुलोमक्रमेणैव - निहन्या ज्जात सूतकम्<br>भूयोपि तां समुच्चार्य - विलोमे नैव मालिकाम् ॥            | १० |
| मांत्रिको मन्त्रराजस्य - निहन्यान्मृतसूतकम्<br>नचेज्जपतोऽपि तन्मंत्रः - क्लीबस्स त्रैव सिद्धिदः ॥ | ११ |
| अनेमविधिना सम्यक् - जप्त्वाच मंत्र मुत्तमम्<br>परांसिद्धि मवाप्नोति - सुप्रीतो हनुमान् भवेत् ॥    | १२ |
| एव सदिस्थ भगवा - न्पराशरमुनि स्तदा<br>पुनःप्रोवाच मैत्रेयं - सर्वेषां हितकाम्यया ॥                | १३ |
| मैत्रेय! शृणु वृत्तांतं - सर्वलोकोपकारकम्<br>मन्त्रास्तु बहवस्सन्ति - सर्वकामफलप्रदाः ॥           | १४ |
| शाक्तेया गारुडाश्चैव - वैष्णवाश्च सदुत्तमा<br>गाणापत्यास्तु कौमाराः - कौबेरा भैरवा स्तथाः ॥       | १५ |
| तत्त त्फलप्रदा नित्यं - सौम्य! सौम्यविभागतः<br>किंतु सर्वे महामन्त्राः - नानाविध फलप्रदाः ॥       | १६ |
| अस्तिकश्च न्महामन्त्रः - सप्तमन्त्रात्मिक इशुभः<br>नायकस्तस्य हनुमान् - पञ्चवक्त्रो महाप्रभुः ॥   | १७ |

- अंगभूताहि मन्त्रास्ते - सप्तमन्त्र महामनोः  
 अंगप्रथानभावेन - जप्त्वाच मन्त्र मुत्तमम् ॥ १८
- लेभिरे परमां सिद्धि - शौनकाद्या महर्षयः  
 त्वमप्येवं महाप्राज्ञ! - मैत्रेय! मुनिसत्तम! ॥ १९
- सप्तमन्त्रात्मिकां विद्यां - पठस्व सततं शुभां  
 सुप्रीतो हनुमान् सद्यः भुक्ति मुक्ति प्रदास्यति ॥ २०
- अन्यद्रहस्य वक्ष्यामि - मैत्रेय! मुनिपुंगव!  
 गोपनीयं प्रयत्नेन - सर्वदाऽभिमता त्वया ॥ २१
- मन्त्रास्तुबहवो ब्रह्मन् - मया ये समुदाहृताः  
 तेसर्वे हनुमन्मन्त्राः - भुक्तिमुक्तिफलप्रदाः  
 किंतुमन्त्रान्वयं सम्य - स्वर्तते सर्वतोमुखम् ॥ २२
- आदौ प्रणव मुच्चार्य - श्रीबीज तदनंतरम्  
 ततो मन्मथबीजच - श्रीवर्णं तदनंतरम् ॥ २३
- ततश्शुभांगशब्दं च - चतुर्थ्यंत नमोत्तकम्  
 दशवर्णमयी मेवं - श्रीविद्या मुत्तमां शुभां  
 जपे देषा गुणवती - सर्वकाम फलप्रदा ॥ २४
- अतएनां महाविद्यां - श्रीकामो नियतं जपेत्  
 निशीधे शीघ्रफलदां - प्रदोषेषु विशेषतः ॥ २५
- आदौ प्रणव मुच्चार्य - श्रीबीजं तदनंतरम्  
 ततो मन्मथबीजं च - समुच्चार्य प्रयत्नतः ॥ २६
- श्वेतवर्ण पदं सम्य - कचतुर्थ्यंतं नमोत्तकम्  
 दशवर्णात्मकं मन्त्रं - मोक्षार्थी सततं जपेत् ॥ २७
- एषाविद्यातु विप्रैर्द्र - कैवल्यपददायिनी  
 मध्याह्नेच प्रभातेवा - जपेच्छीघ्रफलप्रदाम् ॥ २८
- श्रीविद्ययो द्वयो ब्रह्मन् - ऋषिब्रह्म प्रकीर्तितः  
 गायत्री वेदजननी - साक्षा च्छब्दो निगद्यते ॥ २९

हनुमान् देवता प्रोक्तः - प्रणवो बीज मुच्यते  
नम शक्ति रिति प्रोक्ता - कीलकं श्रीनिगद्यते ॥ ३०

ध्यानम् :-

श्रीविद्यामय मान्जनेय ममिशं - ध्यायामि चित्ते मुदा  
मुक्ताहार विराजमान विपुल - श्रीकण्ठ वक्षस्थलम्  
भक्ताना मभयप्रदान चतुरं - चित्रांबरालंकृतं  
हेमाभोज समानकांति वदनं - श्री पावंतीनन्दनम् ॥ ३१

एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं - प्रत्यहं मन्त्रसाधकः  
प्रसादा द्वायुपुत्रस्य - मन्त्रसिद्धि मवाप्नुयात् ॥ ३२

श्रीविद्ये ते उभे विद्ये - यथाश्रुत मुदाहृते  
गोपनीये प्रयत्नेन - मन्त्रसार मिदं यतः ॥ ३३

इदं मन्त्रद्वयं धीमन्! - श्रीविद्येति निगद्यते  
इमां श्रीहनुमन्मन्त्रौ - इति सगीयते बुधैः ॥ ३४

तत्तत्फलप्रदानेन - तत्तत्संज्ञाविशेषभाक्  
इत्येव कथित ब्रह्मान् - श्रीविद्यासार मुत्तमम् ॥ ३५

यच्छ्रुत्वा लभते कामान् - सद्यो मन्त्रविशारदः  
दुरितानि प्रणश्यन्ति - शलभा इव पावके ॥ ३६

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
आञ्जनेय श्रीविद्या प्रकाशननाम एकोनषष्टितमपटलः

# श्री पराशर संहिता

षष्टितमः पटलः

—) अवतार कथनम् :-

- श्लो ॥ खड्गं खट्वांगशैल द्रुम परशु गदा पुस्तकं शंख चक्रं  
पाशं पद्मं त्रिशूलं हल मुसल घटा ण्टक शक्त्यक्षमालाः  
दण्डा वा कुंत चर्मा चलित कुशवरा पट्टिसं चापबाणान्  
खेटं मुष्टि फलं वा डमरु मांभभजे बिभ्रतं वायुसूनुः ॥ १
- शक्तिं पाशं च कुन्तः परशुमपि हलं तोमरं खेटकं वा  
शंखं चक्रं त्रिशूलं मुसल मसि गदां पट्टिसं मुद्गरं च  
गांडीवं चर्म पद्म द्विनद भुजवरैः खड्ग मप्यादधानम्  
वन्देहं वायुसूनुं सुर रिपु मथनं भक्तरक्षा सुदक्षम् ॥ २

श्री मैत्रेयः -

- अवताराः कथं ब्रह्मान् - कति नामानि मारुतेः  
गुणाश्च कतिसंख्याका - भक्तदु खान्धि तारकाः ॥ ३
- केवाऽवताराः भक्तानां - उपास्याः फलदायकाः  
वृत्तिश्च कीदृशीतस्य - सर्ववद पराशर ॥ ४

श्री पराशरः :-

- गुणावतार नामानि - सुबहूनि हनूमतः  
ब्रह्मांडव दनतानि - विद्धि मैत्रेय तत्त्वतः ॥ ५
- अनन्ते षडवतारेषु नवै वोपास्ति गोचराः  
आद्यः प्रसन्नहनुमान् - द्वितीयो वीरमारुतिः ॥ ६
- तृतीयो विशतिभुजः - चतुर्थः पञ्चवक्त्रकः  
पञ्चमोऽष्टादशभुजः - ऋण्यस्सर्वदेहिनाम् ॥ ७

- सुवर्चलापति षष्ठः - सप्तमस्तु चतुर्भुजः  
 अष्टमः कथित श्रीमान् - द्वात्रिंशद्भुजमण्डलः ॥ ८
- नवमो वानराकार - इत्येवं नवरूप धृत् ॥ ९
- अत्रैवोदाहरं तीमं - इतिहासं पुरातनम्  
 यस्य श्रवणमात्रेण - जन्तु जन्मफलं लभेत् ॥ १०
- पुरा ब्रह्मा महोत्साह - श्रतुर्मुख इति श्रुतः  
 मारुतिं विंशतिभुजं - उपास्यापि प्रजापतिः ॥ ११
- कपिलस्तु महातेजाः - कपिलो वंदपारगः  
 चतुर्भुज हनूमन्त - मुपास्यापि द्विमुक्तिदः ॥ १२
- विजयस्तु महाशूरः - क्षत्रियो लोकपालकः  
 प्रसन्नहनुम ध्याना - त्ससुराब्धि मतीतरत् ॥ १३
- विभीषणमुतो नीलः - सततं साधुपूजितः  
 पञ्चवक्त्र हनूमन्त - मुपास्यासी त्समृद्धिभाक् ॥ १४
- उपास्य वानराकारं - गालोनाम वनेचरः  
 प्राप्तवान् परमा सिद्धि - आरोग्यप्रमुखा मपि ॥ १५
- ध्वजदत्तस्तु विप्रेन्द्रः - सर्वशास्त्र विशारदः  
 सुवर्चलाहनूमन्त - मुपास्य धनिकोऽभवत् ॥ १६
- मैदो वेदविदां श्रेष्ठः - ध्यात्वावा वै धीरमारुतिं  
 तीर्णो नौकां सारन्मध्ये - बहुच्छिद्रां सविष्मयम् ॥ १७
- राज्यभ्रष्टगताशङ्को - भूयो राज्य मवाप ह  
 सोमदत्तो महाराज्ञो - द्वात्रिंशद्भुज मारुतेः ॥ १८
- उपास्याऽऽटौ दशभुजं - हनूमन्त महाप्रभुम्  
 लेभे परमलोभस्वं - दूर्वासो लोकावश्रुतः ॥ १९
- एव ब्रह्मर्षयोप्यन्ये - तथा राजर्षयः परे  
 उपास्य नवरूपाणि - लेभिरे स्वात्मनोरथान् ॥ २०



|   |    |
|---|----|
| द्वयी हनुमतो भक्ति - स्समन्ता द्भूत्तरक्षणः         |    |
| शिष्टानां पालनं ह्याद्यं - द्वितीयं दुष्टमर्दनम् ॥  | २१ |
| अभ्यद्रहस्यं वक्ष्यामि - लोकानामुपकारकम्            |    |
| सर्वेषा मेव मन्त्राणां - अङ्गान्याहुश्च षोडशः ॥     | २२ |
| कीलकं शक्तिबीजं च - ध्यानं मुद्रा ऋषि स्तथा         |    |
| छन्दो दैवत सध्याश्च - तर्पणं हवनं तथा               |    |
| आस्तरण मानस न्यास - पुरश्चरण पल्लवाः ॥              | २३ |
| पुनर्विशेषं वक्ष्यामि - लोकानां जातकाम्यया          |    |
| यस्य श्रवणमात्रेण - जनस्सद्यस्सुखीभवेत् ॥           | २४ |
| शृङ्खलाबन्ध मोक्षार्थी - मन्त्रमेवं पठेद्बुधः       |    |
| सद्यो विमोक्षणं तस्य - भवत्येव न संशयः ॥            | २५ |
| त्रिथा मन्त्रं वदेत्पूर्वं - तथैवांते त्रिथा पुनः   |    |
| सकृत्साध्यं भवे न्मध्ये - तद्विद्या त्सर्वतोभृशम् ॥ | २६ |
| सर्वोपसर्गं शमनं - महामृत्यु निवारणम्               |    |
| सवसौभाग्य जननं - मृतानामप्रभृत पदम् ॥               | २७ |
| आदोचान्ते तथामन्त्रं - द्विवारं संप्रयोजयेत्        |    |
| साधवनामं सकृन्मध्ये - गर्भस्थं च तदुच्यते ॥         | २८ |
| मारणोच्चाटन वश्यं - प्रयुक्त कामये नृणाम्           |    |
| तिर्जिह्वा गर्भं बुद्धि - पादयो स्तम्भनं मतम् ॥     | २९ |
| मोऽस्तु ते वायुसुताञ्जनेय ।                         |    |
| मोऽस्तु ते श्रीहनुमन्महा प्रभो ।                    |    |
| मोऽस्तु ते वानरवीर नित्यं                           |    |
| मोऽस्तु ते राघव मुख्य भक्त ।                        |    |
| न्यं विशेषं वक्ष्यामि - श्रुणु मैत्रेय तत्त्वतः     | ३० |
| हता मेव मन्त्राणां - शेषांचिन्मत भेदतः ॥            | ३१ |

आद्य मे वाक्षरं बीजं - मध्यस्थं कीलकं भवेत्  
 अन्त्यंपदं तु शक्ति स्स्या - दिति मन्त्रविदो विदुः ॥  
 अन्येषां चैव मन्त्राणां - बहिर्भूताक्षराणि च  
 भवन्ति भूयो विज्ञेयाः - बीज कीलक शक्तयः ॥  
 आचार्यस्याऽपि शिष्यस्य - सूर्य चन्द्र परागयोः  
 मंत्रोपदेशे दारिद्र्यं - भवेत्सप्तसु जन्मसु ॥  
 सप्तकोटि महामन्त्र - विषयेऽयं निषेधभाक्  
 शाबराणां तु मन्त्राणां - ग्रहणे न निषिद्धता ॥  
 नकालनियमस्तत्र - नदेशनियमोऽपि वा  
 शाबरे ष्वेव मन्त्रेषु - इति शातातपोऽब्रवीत् ॥  
 ऋषिः छन्दांसि मन्त्राणां - एषां स्फुटतराणि न  
 ऋषि स्तेषां भवेद्ब्रह्मा - गायत्री छन्द इष्यते ॥

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
 अवतारकथननाम षष्ठितमःपटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

### एकषष्ठितमः पटलः

—: मुद्रालक्षणम् :-

श्री मैत्रेयः :-

श्लो ॥ पराशर नमस्तुभ्यं - दीनबंधो दयान्धिधे!  
 तत्तद्धर्मविशेषेषु - संशयंहर मामकम् ॥

त्वयाप्रोक्ताः पुरा ब्रह्मन् - करुणापूर्णचेतसः ।  
 हनूम न्मंत्रविषये - मुद्राश्शोडशवर्णिताः ॥ २  
 लक्षणानि कथं तासां - प्रत्येकं नियतः पृथक्  
 कृपा सर्वं मशेषेण - दयामय! तवास्तिचेत् ॥ ३

श्री पराशरः ।

वक्ष्ये षोडशमुद्राणां - लक्षणानि पृथक्पृथक्  
 यथाश्वा चेतसस्सद्यः - मुद्राकल मवाप्नुयात् ॥ ४  
 करद्वयांगुष्ठयोग - तर्जन्युभयमूलयोः  
 सर्वांगुष्ठोपरि स्थित्वा - दक्षिणांगुष्ठ पर्वणि ।  
 शेषाणां ऋजुभावेन - प्रस्तुता ख्यातु मुद्रिका ॥ ५  
 उत्तान वक्त्रांगुलिना - वामेन ग्रथिता यदि  
 दक्षिणाग्र करांगुल्य - स्त्वनुलोम विलोमतः  
 मुद्रेयं गालिनी प्रोक्ता - मुद्रा सिद्धांतवेदिभिः ॥ ६  
 उत्तानाग्रतलेवामे - किञ्चिदाकुञ्चितांगुलौ  
 अधोमुखांगुष्ठ तर्ज - न्यंतरे करभस्पृशा  
 दक्षिणेन करेणैव - मेलनं पद्ममुद्रणम् ॥ ७  
 कनिष्ठानामिका मध्यांगुलिभिर्दक्षिणांगुलौ  
 वामाधोऽंगुष्ठ मारुह्य - शेषाणां ऋजुमेलनम्  
 कथिता शङ्खमुद्रेयं - मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ ८  
 वामदक्षिणहस्तान्त - स्थूलयो विवृतात्मनोः  
 अनुलोम विलोमाभ्यां - मेलनं चक्रमुद्रणम् ॥ ९  
 कनिष्ठया दक्षिणस्य - गृहीत्वान्यकनिष्ठिकाम्  
 भुङ्क्त्वा प्रतिमुखं ते द्वे - तिर्यचोनाम मध्यमे  
 तर्जन्यः पुरतः कृत्वांगुष्ठद्वय मथोनयेत्  
 गारुडीमुद्रणाप्रोक्ता - सद्यस्सिद्धि प्रदायिनी ॥ १०  
 संयोज्य हस्तौ द्वौ सम्य - इतिधाय स्वस्य मूर्धनि  
 दर्शितं ऋजुभावेन - नतिमुद्रा प्रकीर्तिताः ॥ ११

- तर्जन्यायत्त मूला स्या - द्वक्राग्रा दक्षिणे करे  
मुकुलायितरांगुल्य - स्तदा मुद्रांकुशाभिधा ॥ १२
- मध्यमानामिकांगुष्ठ - मेलनं करयोर्द्वयोः  
एकथैव वृता सम्यङ्मृगीमुद्रा प्रकीर्त्यते ॥ १३
- कनिष्ठानामिकायोगो - वामदक्षिण हस्तयोः  
तर्जनी मध्यमा योग - स्तयो रेव तथैवतु  
धेनुमुद्रेति विख्याता - चतुर्युग समन्विता ॥ १४
- संपुटीकृत हस्तौद्वौ - किञ्चि दुच्छूनगर्भितौ  
कुम्भमुद्रेति विख्याता - पूजिता सर्वयोगिभिः ॥ १५
- करौ द्वौ प्रतिलोमेन - ह्युत्तान ग्रथितांगुलिः  
भङ्क्त्वा चाभिमुखं सम्य - गुन्ततांगुष्ठ तर्जनी ॥  
इयं संहारमुद्रा स्या - त्सद्यो योगस्य सिद्धदा ॥ १६
- स्वस्योरु कराभ्यां चे च्छनै रसन्ताडये न्मुहुः  
मुद्रामल्लच्छलीकाख्या - इति मुद्राविदो विदुः ॥ १७
- नृत्यत्पदः कलियुगे - भूयो भूयः परस्परम्  
शनैश्शनै स्ताडये च्चे - न्मुद्रास्यात्ताण्डवाभिधा ॥ १८
- वामहस्तंतु विन्यस्य - शिरस्याधाय दक्षिणम्  
अंगुल्यग्रौ पुरो दृष्टौ - बालमुद्रा प्रकीर्तिता ॥ १९
- विवृत्य श्रवणे नेत्रे - प्रसार्य पुरतोमुखम्  
अपूर्वतालुनी सम्य वफूत्कारै रन्तरालगैः ॥  
विष्टभ्य जानुनी भूमौ - सकृदेव स्वके वुभौ  
मध्यमानामिकांगुष्ठ - दृढसंयोगपूर्वकम्  
उक्षिप्य बाहुमध्ये द्वौ - समौ कर्णान्त गामिनौ  
भूत प्रेतादि संस्थानं - भीकरं प्रविलोकयेत्  
सैषा तु हनुमन्मुद्रा कथिता मन्त्रवित्तमैः ॥ २०

इत्येवं कथितं ब्रह्मान् - मुद्राणां लक्षणं मया  
 हनुमन्मन्त्रजालानां - इमे मुद्राः प्रकीर्तिताः  
 मुद्रातलक्षणज्ञाना - दनुष्ठान फलं लभेत् ॥ २१

सम्यग्जप्तोऽपि मन्त्राणां - अज्ञात्वा मुद्राणां पृथक्  
 फलानि न फलं त्यर्था - ह्यूसरक्षेत्र बीजवत् ॥ २२

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे

मुद्रालक्षणं नाम एकषष्टितमः पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

विषष्टितमः पटलः

-: हनुमद्विग्रह लक्षणम् :-

। मैत्रेयः -

॥ पराशरनमस्तुभ्यं - संशयं मे निवारय  
 हनुमद्विग्रहाणां च - जघन्य स्पर्शनं यदि  
 प्रायश्चित्तं भवेत्तस्य - किं वा तद्ध्येन शुध्यति ॥ १

पराशरः :-

प्रतिमां शोधयेत्सम्यक् : त्रिणिपीफल कर्दमैः  
 पञ्चामृतै र्पञ्चगव्यैः - मार्जये त्पञ्चपल्लवैः ॥ २  
 स्नापयेद्द्वादशावृत्या - पुरुषसूक्त विधानतः  
 हुनेश्च द्वादशावृत्या - सप्ताक्षर्या हनुमतः ॥ ३  
 ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात् - स्वस्वशक्त्यनुसारतः  
 हनुमद्विग्रहं स्पृष्ट्वा - दक्षिणेन करेणवै  
 आज्जनेयस्य गायत्रीं - जपे दष्टोत्तरं शतम् ॥ ४

- बुद्धेः प्रमादादालस्या - त्स्ववच्च स्पर्शना दपि  
अग्नितप्ता द्भवे त्शुद्धिः - गृहदाहेऽथवा मुने ॥ ५
- प्राणप्रतिष्ठा दारभ्य - संस्कुर्यात्पूर्ववत्पुनः  
स्थावराणां च मूर्तीनां - कदाचि च्छलनं यदि  
नीचस्पृष्टाय आख्यातः - प्रायश्चित्तविधि मुने ॥ ६
- तेनैव विधिना सम्य - कसंस्कुर्यात्पूज्यविग्रहानु  
संवत्सरर्तु मासेषु - पूजा संस्कार वर्जितान् ॥ ७
- माजने पुरुषे स्सूक्तैः - प्रतिमांस्तु यथाविधि  
ततःपरं यथाशक्त्या - ब्राह्मणान्भोजये न्मुने ! ८
- श्रोत्रियाणां द्विजातीनां - सर्वदा नियतात्मनां  
सन्तर्पणं विधिवत् - प्रायश्चित्तविधिस्मृतः ॥ ९
- सन्तर्पणं विना मन्त्रो - दैवतं गुरुरन्यथा  
कदाचि न्नप्रसीदति - तस्माद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ १०
- हनुमत्प्रतिमोत्कर्षं - वक्ष्यामि मुनिपुङ्गवः  
यत्प्रभावा दशेषास्तु - सिध्यन्तिच मनोरथाः ॥ ११
- श्वेतार्कमूलं संगृह्य - भानुवारे शुभेदिने  
अंगुष्ठमात्र रूपेण - तत्सर्वाकारतोऽपिवा  
तेनैव प्रतिमांकुर्या - द्धनुमद्रूप शोभिताम् ॥ १२
- प्राणप्रतिष्ठांकुर्वीत - ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः  
रक्तवस्त्रैः रक्तगन्धैः - रक्तमाल्याक्षतै रपि  
पूजयेन्मन्दवारेषु - पञ्चसु प्रतिमां हरेः ॥ १३
- ततःप्रसन्नो भवति - हनुमा न्वीरमास्तिः ॥ १४
- हनुमत्प्रतिमां दृष्ट्वा - युध्य न्नपि महाहवे  
अरैर्नह्न्यते क्वापि - शत्रुभिर्नाभिभूयते  
अस्त्रशस्त्र प्रहारोपि - पीड्यते नैव कुत्रचित् ॥ १५

- श्वेतार्कमूल प्रतिभा - पूज्यते हनुमन्मयी  
गूहीत स्याच्चिरेणैव - सुसिद्धा सर्वसम्पदः ॥ १६
- भूतप्रेत पिशाचादी - पलायन्ते भयावृताः  
व्याधयोऽपि नबाधन्ते - नाग्निधोरादि साध्वसम्  
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि - नात्र कार्या विचारणा ॥ १७
- श्वेतार्कवृक्षो यत्रास्ते - हनुमत्प्रीतिकारणः  
नित्यं सन्निहितस्तत्र - हनुमान्भक्तवत्सलः ॥ १८
- उपास्यभगवान्शम्भुः - पुरे श्वेतार्कं मारुतिम्  
इन्द्रादेऽपि रजेयानि - त्रिपुराणि जिगाय सः ॥ १९
- तस्मात्प्रमादरहितः - एवं सर्वेषु पर्वसु  
उपास्य श्वेत्पिसतावाप्त्यै - श्वेतार्कं हनुमत्प्रभुः ॥ २०
- यदा कदाचित्कालेऽपि - जन्तोवै जयकांक्षिणः  
श्वेतार्कं हनुमत्पूजा - सर्वकाम्यार्धदायिनी ॥ २१
- पद्मादीन्यासनान्याहुः - जपकाले मनीषिणः  
आसनेभ्यश्च सर्वेभ्यः - शस्तं वीरासनं स्मृतम् ॥ २२
- वीरासनं नयुक्तं स्या - देवतागुरु सन्निधौ ॥ २३
- तपतस्सुबहूम्मंत्रान् - प्राप्ते महति सङ्कटे  
छन्दर्षिदेवता ध्यान - न्यास प्राणायाम स्तथा  
दशवारं जपं कुर्यात् - मूलमन्त्रस्य यत्नतः ॥ २४
- देवाना मङ्गमंत्राणां - यथाशक्ति जपस्मृतिः  
पुनश्चरण होमेतु - न्यासध्यानादिकं क्रमात्  
पृथक्पृथक् प्रकुर्वीत - मूलमंत्राङ्गमन्त्रयोः ॥ २५
- नित्यहोमंतु मन्त्राणां - प्रधानस्य मनोर्मुने ।  
न्यासध्यानादिकंकुर्या - द्वोम मेवाङ्गमन्त्रके ॥ २६
- हनुमन्मन्त्र विद्यासु - काञ्चिद्गुह्या महामुने ।  
सप्तमन्त्रात्मका नाम - सप्तमन्त्रमयी स्मृता ॥ २७

|  |    |
|--|----|
| सप्तानामपि मन्त्राणां - जपो होमश्च तर्पणम्<br>पृथक्पृथक् प्रकुर्वीत - मालामन्त्रेष्विवानघा ॥   | २८ |
| भोजनन्तु समष्टयेव - सर्वेषा मथवांशतः<br>यथा शक्यनुसारेण - वित्तशाठ्यं नकारयेत् ॥   | २९ |
| सप्तमन्त्रात्मिकाविद्या - पञ्चानन हनूमतः<br>प्राणात्ययेपि नोदेया - यत्किञ्चिद् द्विजजन्मनि ॥   | ३० |
| सौवर्णमुत्तमं प्रोक्तं - राजित मध्यम स्मृतम्<br>अधम ताम्रमित्याहुः - निष्कलं दाहवैग्रहम् ॥   | ३१ |
| सौवर्णं रौप्यं शकल - संमिश्रा यदि ताम्रकम्<br>तदनुत्तममित्याहुः - गुणास्संसर्ग सम्भवाः ॥   | ३२ |
| इवेतार्कं विग्रहं श्लाघ्यं - कृष्णागुरुमयस्तथा<br>सर्वेषा माश्रयाणां हि - सद्यस्सिद्धिकरस्मृतः ॥                                       | ३३ |
| कदाचिदपि न श्रेयान् - गृहीणां दन्तविग्रहः ॥<br>नौकातरणवेलायां - अश्वाद्यारोहणे तथा<br>शिरसि स्थापयेद्देव - नौकाद्यां तु न निक्षिपेत् ॥ | ३४ |
| अवतीर्यत तस्माद्वा - सस्कुर्यात्प्रतिमां मुने<br>अन्यथा प्रत्यवायस्या - देवोवा प्रतिमां त्यजेत् ॥                                      | ३५ |
| रजोमलिनरूपासु - देवता प्रतिमासु च<br>क्षणाद्गच्छति सान्निध्यं - देवता याति संस्कृता ॥  | ३६ |
| नजन्तुच्छायया युञ्ज्या - सजलाद्रंतया सदा<br>नच दिग्वाससा धीमान् - देवता प्रतिमां शुभाम् ॥  | ३७ |
| पर्वसु स्नापयेन्मूर्ति - ताम्ररौप्यसुवर्णकाम्<br>यद्यपर्वणि मोहेन - सिचेद्भ्रूवति दोषभाक् ॥  | ३८ |
| तस्मान्मलिनरूपाणां - मालिन्यं विनवृत्तये<br>सूक्त्यब्भक्षणं गन्धाद्यै - स्संस्कुर्यात्तु यथाविधि ॥                                     | ३९ |
| मूलमंत्रं समुच्चार्य - पत्रपुष्पफलादिभिः<br>सर्वदा भक्तियोगेन - पूजयेत्स्वेष्टदेवताम् ॥  | ४० |



ऽपूजन फलं वक्तुं - न शक्नोति चतुर्मुखः  
 तापकस्तत्क्षणादेव - पुनश्चर्या जपादिकात्  
 ऽऽच्छितं फलमाप्नोति - दुर्लभं देवदानवैः ॥ ४२

ऽार्तिकेमासि बुद्धात्मा - धात्री पत्रफलैरपि  
 ऽपूजयेद्भनूमन्तं - तदानन्त्याय कल्प्यते ॥ ४३

ऽात्रीफलस्थ दीपेन - देवं नीराजयेद्यदि  
 ऽपश्यति तमोलोकान् - पहापातकवानपि ॥ ४४

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेय संवादे  
 हनुमद्विग्रह प्रकार कथनं नाम द्विषष्टितमः पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

त्रिषष्टितमः पटलः

—: होमप्रकरणम् :—

ऽरः -

ऽस्मिन् देवेतु यो भक्त - संपूजयति यो जनः  
 ऽद्वैवः पूजितस्तेन - भक्तिस्तस्याति निश्चला ॥ १

ऽज्ञानाद्यदि वा लोभा - तद्भुक्तो यद्युपेक्षते  
 ऽवं चापेक्षितं तेन - स एव भवति ध्रुवम् ॥ २

ऽस्मिन् देवेतु यो भक्तः - मन्त्रस्तस्मा दवाच्यते  
 ऽध्यातुद्विदो मन्त्रो नाभक्तेभ्यः कदाचन ॥ ३

ऽस्य स्वप्ने भवेत्सूर्य - चंद्रग्रहण दर्शनम्  
 ऽत्र सिद्धिस्तु तस्याभू - दिति मन्त्रविदो विदुः ॥ ४

- मन्त्रोपदेशादुपरि - शुभाशुभ निरीक्षणम्  
षण्मासे यदि जायेत - पूर्णं संवत्सरे यदि ॥ ५
- शुभदृष्ट्यातु गृह्णीया - दशुभायां परित्यजेत्  
विपर्यये त्वनिष्टस्स्यात् - गृहस्थानां सुभैषिणाम् ॥ ६
- भक्तानांतु मुमुक्षूणां - वैपरीत्यंतु दोषभाक्  
इत्यागमविशेषज्ञा - प्रवदन्ति मुनीश्वराः ॥ ७
- अन्यविशेषं वक्ष्यामि - लोकानां मुपकारकम् ॥ ८
- श्वेतार्कमूल शिखिविष्णुक्रांतम्  
गौरोजनं कुम्कुम चन्दनं च  
एतानि चूर्णानि ललाटपट्टे  
त्रैलोक्य वश्यं मदनावतारम् ॥ ९
- पुष्यार्कं श्वेतगुंजायाः - विधिना मूल मुद्धरेत्  
उलूकाक्षीणि मधुना - ख्यातं सर्वाजनं मतम् ॥ १०
- वृक्ष गुल्म लता मूलं - त्व वपत्रं पुष्प कांडलम्  
फल मूलाय मंत्रेण - हन हन द्वेष हुं फट्म् ॥ ११
- स्वाहा यदर्थं दृष्टासी - द्भूतलेन व्रतं ततः  
स्वगतं तत्र तत्सिद्धि - दृष्टां सर्व महौषधैः ॥ १२
- गच्छ गौतम शीघ्रं त - ग्रामेषु नगरेषु च  
आहारासनशय्यादी - न्प्राशना न्परिकल्पयेत् ॥ १३
- जूटाब्जं कलशं मणिं शुक मथोद्य साल वृतं सुधा  
पात्रं सांकुश पञ्चसायक धनुः पाशं च वेत्रं करैः  
सांद्रं वारि विपञ्चि रत्नकलशान् सप्तैर्वहंतीं भजे  
पाश्वर्षेभां गरुडासनां त्रिनयनां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥ १४
- गायत्री यन्त्र मंत्रौ च - प्राणस्थापन मेव च  
दिवपाल भूतबीजानि - यन्त्र स्यांगानि वै दश ॥ १५

|  |    |
|--|----|
| दशथा मो नजानाति - तस्य यत्रो निरर्थकः                  |    |
| संप्रदाय विहीनस्य - नमन्त्र सिसद्धिदायकः ॥             | १६ |
| मन्त्र स्सद्गुरुणालब्धः - सद्य स्सत्फलदायकः            | १७ |
| गायत्रीं यः परित्यज्य - जपे दन्यमनुं बुधः              |    |
| नमनु स्तस्य फलदो - नरकं चाधिगच्छति ॥                   | १८ |
| श्लोकाश्च षरश्चिष्याश्च - दत्त्वा मृत्यु मवाप्नुयात्   |    |
| अरियंदा मनोबीजं - अद्यक्षस्याद्विजसत्तम ॥              | १९ |
| लक्ष्मीबीजं तथा तारं - मायामार्घं तथा स्मृतः           |    |
| लक्ष्म्या संपत्समृद्धि स्स्यात् - तारा मोक्षप्रदायकः ॥ | २० |
| असाध्यं साधये न्माया - दिति मन्त्रविदी विदुः           |    |
| सर्वेषा मेव मन्त्राणा - मयमेव विनिश्चयः ॥              | २१ |
| प्रणव प्लुष्ट बीजानां - सिद्धारी न्नैव शोधयेत्         |    |
| गृहीणा मुत्तमं प्रोक्तं - वानप्रस्थस्य मध्यमम् ॥       | २२ |
| यतिभ्यश्चाधमं प्रोक्तं - निरर्थं ब्रह्मचारिणां         |    |
| गृहस्था देवहिं मनुं - प्रकुर्वीत गुरुत्तमात् ॥         | २३ |
| सिद्धि भवति वै शीघ्रं - इति गालव भाषितम् ॥             | २४ |
| गृहस्थेन दिशे न्मन्त्र - स्तन्मन्त्र इशीघ्रसिद्धिदः    |    |
| वानप्रस्थेन यतिना - चिरकाल फलप्रदम् ॥                  | २५ |
| भक्तानां च मुमुक्षूणां - नियमो नास्ति वै मुने ॥        | २६ |
| फलार्थीनां च शन्तूनां - गृहस्थादेव योगदः ॥             | २७ |
| विधुरेन दिशे न्मन्त्रः - दांभिकेन कदाचन                |    |
| न गृह्णीया न्न गृह्णीया - द्वर्जयेद्ब्रह्मचारिणम् ॥    | २८ |
| अज्ञाश्चाश्रद्धानश्च - संशयात्मा विनश्यति              |    |
| तस्मा त्सर्वप्रयत्नेन - विश्वासः फलदायकः ॥             | २९ |
| आवाहना षष्ट्युघ्रा - ञकारः कथ्यन्ते मया ॥              | ३० |

आवाहनाद्यष्टमुद्राः -

उच्चांजलि मथःकुर्या - दिय मावाहनं भवेत्  
इयन्तु विपरीतस्स्यात् - तथावै स्थापनी भवेत् ॥ ३१

ऊर्ध्वागुष्ठं मुष्टियुतं तथेयं सन्निधापिनी  
अंतरंगुष्ठ मुष्टिभ्यां - मुद्रा भवति प्रार्थिनी ॥ ३२

तर्जनीभ्यां परिभ्राम्य - सकलीकरणं भवेत्  
अर्जलि चार्ध्वं व त्कुर्यात् - परमाकरणं भवेत् ॥ ३३

परिवर्त्य करौ मन्त्रे - तर्जनी च कनिष्ठिके  
मध्यमानामिका युग्मे - स्थापयेत्तु परस्परम्  
अमृतीकरणं नाम - मुद्रेयं धेनुरूपिणी ॥ ३४

एता स्साधारणा मुद्राः - दर्शयित्वा जपे न्मनुम् ॥ ३५  
अर्चणक्रमम् :-

- ष ॥ आद्योऽग्नि रुद्र ग्रह नेत्र वेद  
मार्ताड दि गृतु दिग्गज षोडशेषु  
मन्वन्तरे बाण तुरग वासरा  
स्त्रयोदशा स्स्युः स्स्वर वर्णं मालिखेत् ॥ ३६  
अकारादि क्षकारांतं - विलिखेत् षोडशकोष्ठके  
सिद्धारी न्कल्पये न्मंत्रं - कुर्या च्छिद्धारिभिः पुनः ॥ ३७  
स्वनाम वर्णमारभ्य - याबन्मंत्राणं दशनम्  
गणये त्षोडशे कोष्ठे - सिद्धारींश्च विचिंतितः ॥ ३८  
सिद्धाऽसिद्ध सूक्तजपा - त्साध्यमंत्रो निरर्थकः  
सुसिद्धप्राप्ति मात्रेण - साधकं भक्षये दतः ॥ ३९  
द्विगुण स्साध्यसिद्धस्तु - साध्यासाध्ये निरर्थकः  
साध्य स्सुसिद्धार्थजपा - स्सिद्धारि श्रियं हरेत् ॥ ४०  
अरिसिद्धं सुत ह्न्या - दरिसाध्यस्तु कन्यकां  
पत्नी मथारिसिद्धस्तु आत्मानं हत्यरीवरः ॥ ४१

- उक्त द्विपादबन्धुघनं - द्विनिदार्थं गोत्रहं  
अर्थोक्त पादजातिघ्नं - पुत्र कन्यांगनात्महा ॥ ४२
- देशे ग्रामे गुरौ भूपे - मन्त्रे चौषधि दैवते  
नामवर्णां त्रिगणये - दक्षरा न्परितः क्रमात् ॥ ४३
- उत्तमं हौमजाप्यं च - पूजाजाप्यं च मध्यमं  
अथमं मालिकाजाप्यं - मिति शातातमोऽत्र वीत् ॥ ४४
- एतीनां ब्रह्मचारीणां - नारीणां च विशेषतः  
जपमात्रेण सिद्धिस्स्या - द्विगा होमं च तर्पणम् ॥ ४५
- गुरु विश्वास मात्रेण - तन्मन्त्रं स्तिष्यति ध्रुवम् ॥ ४६
- अन्यद्रहस्यं वक्ष्यामि - मैत्रेय शृणु तत्त्वतः  
लोकोपकारकं गोप्यं - शृण्वतां पुण्यवर्धनम् ॥ ४७
- पुरश्चरणं कृन्मर्त्यो - काम्यकर्माणि कारयेत्  
अग्निमथं ततः कृत्वा - यथाशास्त्रं सुनिश्चितम् ॥ ४८
- विश्वासास्तिस्य समुक्तः - पूजयित्वा विनायकः  
अपूर्वमोदकैश्चैव - फलत्रयं समन्वितैः  
विघ्नेशं पूजयेत् मन्त्री - सर्वं विघ्नोपशान्तये ॥ ४९
- दुर्गाच्चैव महाभागां - वरदां सर्वसिद्धये  
सपूज्य भक्ष्यभोज्याद्यैः - ततः कर्माणि कारयेत् ॥ ५०
- पूर्वरात्रौ बलिदत्त्वा प्रभाते होममाचरेत्  
वीहिभिर्ब्रीहिकामस्तु - पयसा पशु माप्नुयात् ॥ ५१
- आज्येन पुष्टिर्देवेशं - इक्षुखण्डैश्च वक्ष्यकम्  
कन्यार्थी लाजहोमेन पुत्रार्थी कुमुदैर्नवैः ॥ ५२
- तिलतण्डुलहोमेन - धनधान्यं प्रयच्छति  
बिल्वहोमेन राज्यश्री - रपूपैर्नवपुत्रकम् ॥ ५३
- ब्राह्मवचंस्सकामस्तु - पालाशसनिधैर्हुनेत्  
स्त्रीवश्यं लवणेचैव - वृष्टिकामस्तु वेतसै ॥ ५४

|  |    |
|--|----|
| शत्रुपक्ष विनाशेत् - विभीतक समिद्धुनेत्<br>पिचुमःदैस्तथ. कुर्या - च्छत्रुनाशाय मंत्रवित् ॥                             | ५५ |
| राजानुग्रह मन्त्रिच्छन् - मधुहोमंतु कारयेत् ॥  | ५६ |
| भुंजानः प्रथमं पिंड - यस्य नाम्नाऽभिमन्त्रितः<br>सप्तकृत्सो पयःस्निग्धं - सोऽपि वश्यो गमिष्यति ॥                       | ५७ |
| यद्यत्पदार्थं होमेन - तत् त्प्राप्तो त्यक्तंशयः ॥  | ५८ |
| रोगानश्यंति चात्यर्थ - तस्य रोगस्य भेषजम्<br>होमयेद्धविभि र्यस्य तस्यरोगो विनश्यति ॥                                   | ५९ |
| नित्य मन्नेन होतव्य - धनधान्य ममृद्धये<br>जपाच्छ्रेष्ठतरं चैव - तपणच तत.परम् ॥   | ६० |
| जपस्यांतेन देवेशि - होमंकुर्या द्विशेषतः<br>मन्त्रशुद्धिस्तु कुर्वति - तस्य शान्त्यर्थं मात्मनः ॥                      | ६१ |
| निष्कलङ्कं नय कुम्भ - गुद्धनोयेन पूणयेत्<br>अष्टोत्तरसहस्रं ण - सस्कृत बलिपूर्वकम् ॥                                   | ६२ |
| तेनाभिषेकं यः कुर्यात् - मासे मासे च बुद्धिमान्<br>गृहक्षेत्रादिक चैव - आराम देवतालयम् ॥                               | ६३ |
| प्रसाद देवदेवेशि - पिशाचादि विभूषितम्<br>कृत्यादिभिश्च दुष्टैश्च - म त्रध्यान परायणः ॥                                 | ६४ |
| यत्रयत्र महादेवि - वेशिकश्च धृतासनः<br>मृगव्याघ्रासनतलो - तिलहोमन्तु कारयेत्<br>अयुतवा सहस्रं वा - एतद्दोषस्य नाशनम् ॥ | ६५ |
| तावद्भुजेत कल्याणि - दशरात्रं ततः परम्<br>अजं हत्वा बलिं दत्त्वा - चाथं रात्र च राजसम् ॥                               | ६६ |
| तत्रैव निवसेन्मन्त्री - मौन ध्यान परायणः<br>भातृकान्यास संयुक्त. - मांत्रन्यास समन्वितः ॥                              | ६७ |

|  |    |
|--|----|
| क्षेत्रवंतं गणैस्सार्थं - सर्वदोष निकृन्तनम्<br>सान्निध्यं कुरुते तस्य - सर्वशांतिः प्रयच्छति ॥  | ६८ |
| ततः प्रातः स्समुत्थाय - स्नात्वा धौतांबर इशुचिः<br>ब्राह्मणै गुणसंपन्नैः - हनुमध्यान तत्परः<br>पुण्याहं वाचयित्वातु - प्रोक्षये त्सर्वभूतलम् ॥ | ६९ |
| राज्ञा मेवंतु कार्याच - महती दक्षिणाप्रिये<br>आपदुद्धारसिद्धिस्तु - साक्षात्रैलोक्य नायकः ॥<br>यत्रयत्र वशे स्मृतिः - तत्रतत्र समृद्धयः ॥      | ७० |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे

होमप्रकार कथननाम त्रिषष्टितमःपटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

चतुष्षष्टितमः पटलः

— राजाभिषेक कथनम् :—

श्री पराशरः -

|   |   |
|---|---|
| श्लो ॥ अथान्यदपि वक्ष्यामि - राज्ञां रक्षाकरं परम्<br>अत्र मङ्गलवारंतु - भस्मयोगंतु कारयेत् ॥ | १ |
| अतितं गोमयं ग्राह्यं - शुचि भूत्वा यथाविधि<br>अश्वथ्यौदुम्बर प्लक्ष - न्यग्रोधश्च चतुष्टयम् ॥ | २ |
| त्वचा सगूह्य मतिमा - नुशीरं कृष्णचंदनम्<br>कर्पूरं कुंकुमं देवि - बिल्वमूलं ततः परम् ॥        | ३ |
| वाराहीच कुरुवेरु - श्वेतार्कस्य मूलकम्<br>एतानि चुणयित्वातु - गोमयेनतु पेषयेत् ॥              | ४ |

|  |    |
|--|----|
| तत्पिष्टं दीपसंस्कार - संस्कृतेनच वह्निना<br>दग्ध्वा विभूतिं संगृह्य - भाजने गन्धवासिते ॥                        | ५  |
| अभिमन्त्र्याष्टसाहस्रं - मन्त्रध्यान परायणः<br>आपदुद्धार मन्त्रेण - दद्याद्भक्षां दिनेदिने ॥                     | ६  |
| तद्भूस्मं धारये देवं - शांतिलक्ष्ये छुति स्तथा<br>बल प्रज्ञावशत्वेन - आयुरारोग्य मेवच ॥                          | ७  |
| अशक्तावपि शक्तिस्स्यात् - तस्माद्यत्नेन धारयेत् ॥  | ८  |
| शय्यागृहे तथा कुर्या - दुपविष्टस्तु बुद्धिमान्<br>भूत वृश्चिक सर्पाद्या - पलायन्ते च दूरतः ॥                     | ९  |
| मन्त्रं संगृह्य सिद्धस्सन् - स्नेहा यत्नेन रक्षयेत्<br>ब्राह्मणो मन्त्रसंसिद्धेः - नित्यं कुर्यात्तु सात्विकम् ॥ | १० |
| अतःपरं प्रवक्ष्यामि - अभिषेकं सुदुर्लभम्<br>राज्ञां हितकरं पुण्यं - शांति पुष्टि विवर्धनम् ॥                     | ११ |
| महापाप प्रशमनं - महारोग भयापह<br>ब्रह्महत्यादि शमनं - अभिचार निवारणम् ॥  | १२ |
| शत्रुक्षयकरं देवि - मासेमासे समाचरेत्<br>आपदुद्धार मन्त्रज्ञं - ब्राह्मणं शांतिमानसम् ॥                          | १३ |
| प्रार्थये दभिषेकं च - दुर्लभ त्रिदशैरपि<br>सर्वशास्त्र समुद्धारं : दध्नाघृतमिवोद्गतम् ॥                          | १४ |
| प्रार्थितो मन्त्रसंसिद्धो - नित्यं जपपरायणः<br>कुर्या न्गहाभिषेकं च - शुभनक्षत्रके तथा                           |    |
| अभिषेक प्रयोगज्ञः - मन्त्रसंयुतमानसः ॥   | १५ |
| चतुस्तोरण पर्यन्ते - कल्पये स्मण्डलं तथा<br>वितानं दर्भमालाभि - रलंकृत परिच्छदम् ॥                               | १६ |
| तस्यमध्ये महादेवि! - रोम लोष्ट विवर्जितम्<br>कृत्वा तत्र विकीर्यास्थ - अष्टद्रोणैश्च शालिभिः ॥                   | १७ |



|   |    |
|---|----|
| तत्रकृत्वा महापद्मं - अष्टपत्रं सकर्णिकम्<br>शक्तित्रयं समायुक्तं - अष्टभैरव संयुतम् ॥              | १८ |
| तत्तद्बीजेन देवेशि - तस्यपीठं प्रपूजयेत्<br>तद्बाह्ये कोणपालांश्च - तत्तद्बीजेन पूजयेत् ॥           | १९ |
| तद्बाह्ये मातृकावर्णं - तत्तन्नाम्नाच पूजयेत्<br>तद्बाह्ये रुद्रयुक्तांतु - मातृकां विन्यसेद्बुधः ॥ | २० |
| एवं क्रमेण देवेशि - पञ्चावरणं मुच्यते<br>चक्रस्य सवतो बाह्ये - दक्षिणेन विनायकम् ॥                  | २१ |
| उत्तरेतु यथा दुर्गा - पूजयेद्द्वेशिकोत्तमः<br>एवं पूजाविधानेन - तत्तत् स्थानेषु देवताः ॥            | २२ |
| ततस्तु विन्यसेत्साध्यान् - सापिधानान् सकूर्चकान्<br>पुष्पाक्षतं समायुक्तान् - तिलचन्दनसंयुतान् ॥    | २३ |
| अशीतिसख्या कलशान् - तोयपुर्णा यथाविधि<br>तत्तद्देवसमायुक्तान् - अर्चयेन्मंत्रवित्तमः ॥              | २४ |
| चक्रमध्ये महाकुंभं - सौधर्णं राजतं तथा<br>मृण्मयंवा यथा पिष्टं - कुंभकुंभमलकृतम् ॥                  | २५ |
| सूत्रेण वेष्टनं कुर्यात् - शुद्धतोयेन पूरयेत्<br>नवरत्नानि तत्रैव - पुष्पानिच शुभानिच ॥             | २६ |
| अक्षतांश्चैव निक्षिप्य - क्षीरवृक्षचतुष्टयम्<br>लक्ष्मीं दुर्गासहादेवीं बिल्वकर्पूरचन्दनम् ॥        | २७ |
| उशीरं कुंकुमंचैव - तक्कोलागुरुसंयुतम्<br>चम्पकं मल्लिकाजाजि - गोमेधं ताम्रकं तथा ॥                  | २८ |
| कुम्भमध्ये चिनिक्षिप्य - सापिधानं सकूर्चकम्<br>दुकूलयुग्मसञ्छन्नं - देवस्य हृदयङ्गमम् ॥             | २९ |
| कृत्वा मंत्रविधानेन - व्याघ्रचर्मसिनस्थितः<br>कुम्भमध्ये महादेवं - आपदुद्धारणाह्वयम् ॥              | ३० |

|  |    |
|--|----|
| ज्वलद्दंष्ट्रं सुभीमं च - अग्नित्रय निभेक्षणम्<br>ऊर्ध्वकेशं महाधोरं - चन्द्ररेखा विराजितम् ॥                  | ३१ |
| महानागकृतेनैव - दन्तदक्त्रेण शोभितम्<br>चतुर्बाहु मुदारान्ग - नागयज्ञोपवीतिनम् ॥                               | ३२ |
| हारकेयूर संछन्नं - शतनाग विभूषितम्<br>नूपुरध्वनि संयुक्तं - सर्वकर्म निकृत्तनम् ॥                              | ३३ |
| तस्माद्ब्रह्माघ्र समायुक्तं - व्याघ्रे च हनुमत्प्रभुम्<br>रात्रौ राज्ञा विशेषश्च - व्याघ्र चर्माणि संश्रयेत् ॥ | ३४ |
| एवंरूपं समापोह्य - ध्यानयुक्तं जपेद्विजः<br>अयुतं लक्षणोपेतं - मातृकान्यास संयुतम् ॥                           | ३५ |
| घट स्थेशाभ्यदिग्भागे - चतुरस्रं तु कारयेत्<br>नाभियोनि समायुक्त - कुण्डे मन्त्र समाहितः ॥                      | ३६ |
| पयसा सर्पिषा चैव - तिले नागनौ स्पृशन्<br>घटम् प्रत्येकं जुहुया मन्त्रं - अष्टोत्तर सहस्रकम् ॥                  | ३७ |
| प्रत्येकं च वलिं दद्या - द्राजस राजसं त्विदम्<br>ततो मुहूर्तं ध्यात्वा च - सर्वकर्म सदाश्रयम् ॥                | ३८ |
| वाग्यतो मन्त्रसम्पन्नः - सांगुलीय पवित्रकम्<br>अभिषिञ्चे म्महात्मानं - राजानं सर्वसिद्धये ॥                    | ३९ |
| अभिषेकेन सम्पन्नः - पुरन्दरसमो भवेत्<br>तेजसादित्य सङ्काशः - सर्वशत्रु विमर्दनः ॥                              | ४० |
| सप्तद्वीपततिं भूमि - पञ्चाशत्कोटि योजनम्<br>तेन धीर्येण भुञ्जीत - शतवर्षाणि जीवति ॥                            | ४१ |
| एवमेवतु कर्तव्यं - प्रतिमासं समन्त्रिणाम्<br>षण्मासेषु तथा कुर्या - त्सार्वभौमत्व मिच्छताम् ॥                  | ४२ |
| मन्त्रिणां पूजयेद्राजा - यथाशक्ति समञ्चितः<br>गो भू हिरण्य वस्त्राद्यै - वाहनादिभि रेवच ॥                      | ४३ |

तत्प्रसादा न्महेशत्वं - तस्मात्कामं प्रपूजयेत्  
मन्त्री च नित्ययुक्तात्मा - राज्ञां सर्वं समाचरेत् ॥

४४

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेय संवादे

राजाभिषेक कथनं नाम चतुष्पष्टितमः पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

पञ्चषष्टितमः पटलः

∴ गजाश्वरक्षा प्रयोगः :-

अग्निस्तम्भन वश्य प्रयोगादि कथनम्

श्री पराशरः ।

श्लो ॥ आधान्यदपि वक्ष्यामि - गजादीनां सुरक्षितम्

अश्वानां निलयं चैव गजानांचैव सन्निधौ ॥

१

पूर्ववत्कुम्भसंस्कारं - अयुतंतु समाचरेत्

होमं कृत्वा तु तत्रैव - बलिं कृत्वा त्रिचक्षणः ॥

२

तेनैव प्रोक्षये न्मन्त्र - गजा नश्वंश्च संयुतम्

एव मेवं तु कर्तव्यं - मासेमासेन तक्षणम् ॥

३

एवं कृत्वा गजाश्वानां - वायुवेग मनोजवः

बल शिष्ट्यादिकं चैव - मद हर्षं विवर्धनम् ॥

४

आरोग्यत्वं च सर्वेषां - जात्यश्वंश्च द्व तीव्रगाः

मन्त्रिणां पूजये द्राजा - पूर्ववधृष्टमानसः ॥

५

युद्धे शत्रुजय प्रयोगः :-

अन्यं विशेषं वक्ष्यामि - राज्ञां युद्धे जयावहम्

युद्धकाले तु सम्प्राप्ते - समालूय च मन्त्रिणम् ॥

६

- आत्मनो जय मन्विच्छन् - प्रार्थये त्क्षत्रियो जयम्  
 शत्रुनाशं च सर्वेषां - गजानां वाजिनां तथा  
 कुर्वीत रक्षणं राजा - मन्त्रिणां - हृष्टमानसाम् ॥ ७
- मन्त्रीच ध्यान युक्तात्मा - सेनास्तम्भन मंत्रवित्  
 देव मभ्यर्च्य विधिव - ऋतूमन्तं समाह्वयेत् ॥ ८
- अजं हत्वापि पिशिते - राजसं बलिमाचरेत्  
 बलिप्रदान काले तु - शत्रूणां सर्वसैन्यकम्  
 चतुरङ्गात्मकं मन्त्री - बलित्वेन निवेदयेत् ॥ ९
- शत्रुनाम्ना च संब्रधय - कारयेन्मन्त्र वित्तमः  
 शत्रुपक्षस्य रुधिरं - बलित्वं च दिनेदिने ॥ १०
- भक्षयन्सगणैस्सार्थं - पारमेय समन्वितः  
 अनेनैव तु कर्तव्यं - बलिं कुर्या द्विचक्षणः ॥ ११
- अप्रकाश्य मिदं मंत्रं - त्रिदशैरपि दुर्लभम्  
 ततो देव स्स हृष्टात्मा - गणै स्सार्थं महाबलिम् ॥ १२
- पिशितां स्वकृतान्नित्यं - परसैन्यं प्रयच्छति  
 अचिरादेव तत्सैन्यं - नाश मायातिं सर्वदा ॥ १३
- ततो मंत्र स्सुहृष्टात्मा - यन्त्रं लिख्य विधानतः  
 परसैन्य पुरोगत्वा - परसैन्यं च नाशयेत् ॥ १४
- सर्वदा योहि मंत्रज्ञः - कुर्याद्विजयसिद्धये  
 पूर्वमेव तु राजान - मभिषिचेत्समाहितः ॥ १५
- बलिहोम समायुक्त - मभिषेक प्रयोगवित्  
 ब्राह्मणान्तर्पयेत् सर्वा - ऋदेवांश्चैव यथा बलिम् ॥ १६
- रहस्य मेतद्विज्ञानं - अप्रकाश्यं च मन्त्रिणः ॥ १७
- अग्निस्तंभन प्रयोगः :-  
 अग्निस्तंभन मन्विच्छं - बलिकुर्यात्तु राजसः  
 मातृकान्यास संयुक्तं - मंत्रन्यास मतःपरम् ॥ १८

- न्यस्त मंत्रस्तु शुद्धात्मा - हस्तानक्षत्र बीजकम्  
चितामणिं च संलक्ष्य - जपेन्मन्त्रं सलक्षणम् ॥ १९
- धारये द्वह्निराजं च - सस्वनं वायुजं स्मरेत्  
जलस्तम्भन मेवंतु - कुर्यान्मन्त्र विचक्षणाः ॥ २०
- दारिद्र्यहर प्रयोगः :-
- रहस्य मन्य द्वक्षयामि - दारिद्र्य भयनाशनम्  
द्विभुज वायुज ध्यात्वा - जपं कुर्याद्विचक्षणः ॥ २१
- कपालशक्तिपाणिं च व्यालकादि विभूषितम्  
सुवर्णवर्णं मनिशं - दुकूल परिवेष्टितम् ॥ २२
- मधुना संस्तव द्वाचं - प्रसन्नवदनं प्रभुम्  
काञ्चीगुणं विशालाक्षं - नागयज्ञोपवीतनम् ॥ २३
- एव विचितये द्वेवं - जप तर्पण माचरेत्  
अपूपानपृथुकांश्चैव - प्रत्येकं च सहस्रकम् ॥ २४
- जुहुया न्मन्त्रससिद्धिः - लक्ष्मीं प्राप्नोत्यसंशयः  
रात्रौ नित्यं बलिकुर्या - त्सात्त्विकं बलि मन्त्रवित् ॥ २५
- वश्य प्रयोगः :-
- वश्यमिच्छन् महादेवं - रक्तवर्णेन भावयेत्  
आत्मानं वायुजं ध्यात्वा - सर्वत्र चरते महीम् ॥ २६
- बलिप्रदान शिष्यस्य - सर्ववश्यं भवेत्सदा  
मन्त्रसिद्ध स्सलोकेऽस्मिन् - समाचारं प्रचक्षते ॥ २७
- सर्वज्ञ स्सर्वदा मन्त्री - राज्ञा रक्षान्विचितयेत्  
कर्मणा मनसा वाचा - मन्त्री राज्ञां हित स्मरेत् ॥ २८
- अहिमन्सुरक्षिते सर्वं - जगदेक श्रराचर ॥ २९
- ततो ब्राह्मण देवानां - गवां चैवतु रक्षणम्  
कुर्यान्मन्त्री महाप्राज्ञो - यथाशक्ति वरं च यत् ॥ ३०

|   |    |
|---|----|
| अथाऽन्यतश्च वीर्यस्य - महद्भ्रूवति पातकम्<br>सर्वभूतानि रक्षार्थं - तस्माद्रक्षां प्रचिंतयेत् ॥                                 | ३१ |
| सर्वभूतहितेयुक्तः - सत्यवादी दृढव्रतः<br>जपध्यानरतश्शांतो - भस्मस्नान परायणः ॥  | ३२ |
| वेद शास्त्रार्थं तत्त्वज्ञो - महादेव परायणः<br>एभिस्सर्वात्मनायुक्तो - देवालय समाश्रयः ॥  | ३३ |
| बलिप्रदान शीलस्सन् - जपेन्मंत्रं समाहितम्<br>जपेत सचिरंकालं - अरोगी श्रीनिवासकः<br>पुत्रपौत्रादिभिर्युक्तो - महावंश प्रवर्तकः ॥ | ३४ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेय संवादे  
गजाश्व संरक्षणामिन् स्तंभन वश्यप्रयोगादि कथनं नाम

पञ्चषष्टितमः पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

षड्षष्टितमः पटलः

∴ यन्त्रस्वरूप आपदुद्धारक स्तोत्र कथनम् :-

श्री पराशरः :-

|  |   |
|--|---|
| श्लो॥ यन्त्रस्वरूपं वक्ष्यामि - शृणुष्व मुनिपुङ्गव<br>दशकोणात्मकं चक्रं सर्वसिद्धि प्रदायकम् ॥ | १ |
| त्रिकोणं च चतुष्कोणं - पञ्चकोणं तथैव च<br>षट्कोणं च तथा यन्त्र - मिति मंत्र विदो विदुः ॥       | २ |
| भूपुर त्रय संयुक्तं - शूलाद्यञ्च मनोहरम्<br>प्रासाद बालानुसिंह - पञ्चायतन षडङ्गकम् ॥           | ३ |

- चक्रांतरं प्रवक्ष्यामि - सर्वलोकोपकारकम्  
श्रीमदष्टाक्षरीचक्रं - वक्ष्यामि मुनिपुङ्गव! ४
- आदौ चंद्रं समालिख्य - ह्यष्टकोणं च विन्यसेत्  
तद्बाह्ये वृत्तमालिख्य - द्वादशार मत.परम् ॥ ५
- तद्बाह्ये वृत्तमालिख्य - तद्बाह्ये भूपुरद्वयम्  
चतुर्द्वारं समायुक्तं - लेखयेच्च प्रयत्नतः ॥ ६
- नृसिंहैकाक्षरीं मध्ये - लेखयेच्च प्रयत्नतः  
श्रीमदष्टाक्षरीविद्या - मष्टकोणेषु विन्यसेत् ॥ ७
- पूर्वादि दलमारभ्य - दलैर् द्वादशभिस्तथा  
वासुदेर द्वादशार्णं - विलिखेच्च प्रदक्षिणम् ॥ ८
- पञ्चाशद्बीजवर्णानि - भूपुरेषु लिखेत्क्रमात्  
प्राणप्रतिष्ठां कुर्वीत - प्रत्यह पूजयेज्जनः ॥ ९
- ताम्रेणवा सुवर्णेन - भूर्जेन रजतेनवा  
चक्रं कृत्वा तु मतिमान् - पूजयेच्च प्रयत्नतः ॥ १०
- गुरुं संपूज्य यत्नेन - गृह्णीया चक्रं मुत्तमं  
अष्टोत्तर सहस्रं वा - अष्टोत्तर शतंतुवा  
श्रीमदष्टाक्षरी चक्रं - ग्रहणे संस्पृशन्जपेत् ॥ ११
- चक्रस्य वीर्यं लाभाय - नद्यांवा सिधुसङ्गमे  
खर्जूरं कदलीं द्राक्षां - पनसाम्रफलानिवै  
समर्प्य तस्मै चक्रेतु - कुबेर सदृशो भवेत् ॥ १२
- यस्य तन्मन्दिरे चक्रं - पूजितं तु त्रिकालतः  
तस्य गेहे महालक्ष्मी - स्थिरा भवति सर्वदा ॥ १३
- अन्यं विशेषं वक्ष्यामि - श्रुणुष्य मुनिपुंगव!  
प्रणवे वेदमन्त्रेषु - सर्वेष्वपि च सर्वशः  
नाधिकारो जघन्यानां - तेषां नोपदिशे द्बुधः ॥ १४

नामस्मरणमात्रेण - स्तोत्राणां पठने तथा  
तेषामप्यधिकारोऽस्ति - हीति शातातपोऽब्रवीत् ॥ १५

सर्वेषामेव मन्त्राणां - नियमः फलद स्मृतः  
स्तोत्राणां स्मरणादेव - स्वच्छन्दं मनुरब्रवीत् ॥ १६

सप्ताक्षर्यां हनूमत - स्तथा नामस्मृता वपि  
शैब पञ्चाक्षरी मन्त्रे - भाषामन्त्रेषु सर्वशः  
अधिकारो जघन्याना - मित्येवं मनुरब्रवीत् ॥ १७

गायत्र्यां ब्रणवेचैव - वेदाभ्यासे तथैव च  
स्त्रीणां तथा जगन्यानां - नाधिकारः कथंचन ॥ १८

ब्राह्मी मुहूर्ते सकलाश्च मन्त्राः  
शैवाः प्रदोषे गणेशाः प्रभाते  
मध्यंदिने भास्कर वैष्णवाश्च  
शाक्ता निशीथे सकलागमोक्तिः ॥ १९

अस्त्यन्य त्परमं गुह्यं - सर्वशास्त्रार्थं सम्मितम् ।  
आपदुद्धारकं स्तोत्रं - वक्ष्यामि मुनिपुङ्गव ! २०

व । अस्य श्री आपदुद्धारक स्तोत्र मन्त्रस्य  
धिभीषण ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । श्री हनुमान् देवता । २०  
मास्ततात्मज इति बीजंअञ्जनासूनु रिति शक्तिः ।

वायुपुत्र इति कीलकं  
श्री हनुमत्प्रसादसिध्यर्थे जपेनैव नियोगः ।  
(मूल मन्त्रेण न्यासं कुर्यात् ! ) २१

आपदुद्धारकस्तोत्रम् :-  
ओं नमो भगवते तुभ्यं - नमो मास्तत सूतवे  
नम इश्रीरामभक्ताय - श्यामास्याय च ते नमः ॥ २२

नमो वानरवीराय - सुग्रीव सख्यकारिणे  
लङ्का विदाहका याथ - हेला सागर तारिणे ॥ २३



|  |    |
|--|----|
| सीताशोक विनाशाय - राममुद्रा धरायच              |    |
| रावणस्य कुलच्छेद - कारिणे ते नमो नमः ॥         | २४ |
| मेघनाथ मखध्वंस - कारिणे भयहाणिणे!              |    |
| वायुपुत्राय वीराय - आकाशोदरगामिने ॥            | २५ |
| वनपाल शिरच्छेत्रे - लङ्काप्रासाद भञ्जने        |    |
| ज्वल त्कनकवर्णाय - दीर्घलांगूल धारिणे ॥        | २६ |
| सौमित्रे जीवदात्रेच - रामदूताय ते नमः          |    |
| अक्षस्य वधकर्त्रेच - ब्रह्मशक्ति निवारिणे ॥    | २७ |
| लक्ष्मणाङ्ग महाशक्ति - घात क्षत विनाशिने       |    |
| रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय - भूतघ्नायच ते नमः        | २८ |
| ऋक्ष वानर वीरैक - प्राणदायक ते नमः             |    |
| महाभय रिपुघ्नाय - भक्त त्राणैक कारिणे ॥        | २९ |
| परप्रेरित मन्त्राणां - यन्त्राणां स्तम्भकारिणे |    |
| वयः पाषाण तरण - कारणाय नमोनमः ॥                | ३० |
| बालाकं मण्डल ग्रास - कारिणे तारिणे नमः         |    |
| नखायुधाय भीमाय - दंडायुध धरायच ॥               | ३१ |
| रिपुमान विनाशाय - रामाज्ञा ल्लोकरक्षणे         |    |
| प्रतिज्ञान स्थिता याथ - रक्षोभूतवधार्थिने ॥    | ३२ |
| कराल शैल शस्त्राय - द्रुम शस्त्राय ते नमः      |    |
| बालैक ब्रह्मचर्याय - रुद्रमूर्ति धरायच ॥       | ३३ |
| विहगमाय शर्वाय - बज्रदेहाय ते नमः              |    |
| कौपीनवाससे तुभ्यं - रामभक्तिरतायच ॥            | ३४ |
| दर्शनाशा भास्कराय - शत चद्रोदयात्मने           |    |
| कृत्या शत विधघ्नाय - सर्वक्लेश हरायच ॥         | ३५ |
| अशोकवन विध्वंसकारिणे पापहारिणे                 |    |
| संयुगेच महाशक्ति ध्वांतक्षण विनाशिने ॥         | ३६ |

|  |    |
|--|----|
| परसैन्य बलघ्नाय - शस्त्रघ्नाय च ते नमः             |    |
| विषघ्नाय द्विषघ्नाय - ज्वरघ्नाय च ते नमः           | ३७ |
| स्वाभ्याज्ञा पार्थसंग्राम - संघे विजयकारिणे        |    |
| भक्तानां दिव्यवादिषु - संग्रामे जयदायिने ॥         | ३८ |
| किलकिल्या बृबुरोच्च - घोरशब्द कराय च               |    |
| सर्वोग्रव्याधि सन्तम्भ कारिणे वनचारिणे ॥           | ३९ |
| सदा पक्वफलाहार - सन्तुष्टाय विशेषतः                |    |
| महार्णव शिलाबद्ध - सेतवे ते नमो नमः                | ४० |
| वादेदिवादे संग्रामे - भये घोरे महावने              |    |
| तस्कर व्याघ्र सिंहेषु - पठेत्स्तोत्रं भयं नहि ॥    | ४१ |
| दिव्ये भूतभये व्याधी - विषे स्थावर जङ्गमे          |    |
| राज शस्त्रभये घारे - तथा ग्रहभयेषु च ॥             | ४२ |
| जले सर्पे महावृष्टौ - दुर्भिक्षे प्राणसप्लवे       |    |
| पठन्स्तोत्र प्रमुच्येत - भयेभ्यस्सर्वतो नरः ।      | ४३ |
| तस्यववापि भयं नास्ति - हनूमत्स्तव पाठतः            |    |
| त्रिकालं सर्वदा भक्त्या - पठेन्नित्य मिमं स्तवम् ॥ | ४४ |
| सर्वान्कामा नवाप्नोति - नात्र कार्या विचारणा ॥     | ४५ |
| विनताया स्वमातु श्र - दासीत्वस्य निवृत्तये         |    |
| सुधारणं यातुकामाय - महापौरुषशालिने                 |    |
| विभीषण कृतं स्तोत्रं - ताक्षर्याय समुदीरितम्       |    |
| ये पठन्ति सदा भक्त्या - सिद्धय स्तत्करे स्थिताः ॥  | ४६ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेय संवादे  
यन्त्रस्वरूप आपदुद्धारकस्तोत्र कथनं नाम षट्षष्टितमःपटलः

\* \* \*

# श्री पराशर संहिता

सप्तषष्टितमः पटलः

—: नित्यकर्म विधि कथनम् :—

: 1—

|   |    |
|---|----|
| श्रुणुष्व वक्ष्यामि - नित्यकर्म विधिक्रमः<br>प्रस्मरणमात्रेण - मन्त्रा स्सिध्यन्ति सर्वशः ॥ | १  |
| आधानं गृहध्यानं - शास्त्रोक्त विधिपूर्वकम्<br>मं देवताध्यानं - स्तोत्राणां पठनं ततः ॥       | २  |
| वकर्म तृतीयं स्यात् - चतुर्थं दन्तधावनम्<br>गवगाहनस्नानं - मन्त्र स्नानं ततःपरम् ॥          | ३  |
| यसंध्या विधिश्चैव - मन्त्र संध्या ततःपरम्<br>द्विभूतशुद्धिश्च - मातृकान्यास एव च ॥          | ४  |
| व्याश्र जपस्यादौ - जपेदङ्गमनुं ततः<br>प्रधान मंत्रं च - जपेद्यत्ना दत्तं त्रितः ॥           | ५  |
| जपसमाप्त्यन्ते - होमपूजा विधिद्वयः<br>न्ते पूजनं श्रेष्ठं - पूजान्ते होम एव वा ॥            | ६  |
| रीत्ये नोदोष - इत्युक्तं मन्त्रवेदिभिः<br>श्रेष्ठतरं विद्धि - तर्पणं मुनिसत्तम ॥            | ७  |
| आदुत्तमं विद्धि - होमं चैव विशेषतः<br>च्छ्रेष्ठतरं लोके - विद्धि ब्राह्मण भोजनम् ॥          | ८  |
| पदेशगुरव - सर्वोत्कृष्टा जगत्रये<br>लिङ्कार वस्त्रैश्च - दक्षिणा गन्ध पुष्पकैः ॥            | ९  |
| पेयाः प्रयत्नेन - तद्दानस्त्याय कल्पते<br>आमेव मन्त्राणां - अयमेव विनिर्णयः ॥               | १० |

- मन्त्राणां वीर्यसिध्यर्थं - पञ्चशुद्धिं रुदीरिता  
 पञ्चशुद्धिं विनामन्त्रो - न सिध्यति जगत्रये ॥ ११
- जपतर्पणं होमाश्च - द्विजसंतर्पणं तथा  
 गुरुणां दक्षिणाचेति - पञ्चशुद्धिं रुदाहृता ॥ १२
- स्त्रीविद्यानांच सर्वेषां - मन्तेष्वङ्गमनूजपेत्  
 पुं विद्यानांच सर्वेषां - आदिष्वङ्गमनूजपेत् ॥ १३
- आत्मजप्येषु मन्त्रेषु - स्वाभिमानास्सदो मनुः  
 प्रधान इति विख्यातः - तदभ्ये त्यङ्गसंज्ञिताः ॥ १४
- तदीयानांच चक्राणां - मपि मन्त्रक्रमेण वै  
 अङ्गप्रधान भावेन - पूजाविधि रुदाहृता ॥ १५
- मन्त्रं यन्त्रं तथा तन्त्रं - देवतानुग्रहार्थिना  
 त्रीण्यप्यवश्यं सेव्वानि - यन्त्रं तेषु प्रशिष्यते ॥ १६
- यन्त्रं मन्त्रमयं प्रोक्तं - मन्त्रात्मा देवतेरिता  
 पुरा भगवताप्युक्तं - तन्त्रे सम्मोहनाह्वये ॥ १७
- देहात्मनो र्यथा भेदो - मन्त्रदैवतयोस्तथा  
 तस्मात्पठेन्महा मन्त्रं - लिखित्वा तत्र पूजयेत् ॥ १८
- विना चक्रे चरेत्पूजा - देवता न प्रसीदति  
 तस्माद्यत्नेन कर्तव्यं - मन्त्राणां चक्रपूजनम् ॥ १९
- मन्त्रस्यैकस्य वा मनो - रनेकस्यापि वा मनोः ॥ २०
- जपानुष्ठानं कालेतु - प्रत्यहं मंत्रवित्तमः  
 भूशुद्धिं भूतशुद्धिं च - बाह्याभ्यंतरं मातृकाम् ॥
- सकृदेव प्रकुर्वीत - श्यासं चापि यथाविधि ॥ २१
- प्रतिमा चक्रं लिङ्गादि - सालग्रामादि पूजनैः  
 पूजयेत्स्वेष्टदेवस्य - त्वेकस्यावरणेन च ॥ २२
- नाभ्यावरणपूजेति - कथितं रुद्रया स्वयम् ॥ २३

- चंद्र सूर्योपरागेषु - ह्यर्थोदय महोदये  
 संक्रांतिषु व्यतीपाते - जपित्वा विधिना मनुम् ॥ २४
- पायसापूप हविषा - पुष्पैः त्रिमधुना प्लुतैः  
 तण्डुलैरित्तलमिश्रैर्वा - होमकर्म समाचरेत् । २५
- एकक्षारं जपेद्यस्तु - सकोटिगुणितं लभेत्  
 सकृद्धोमविधानेन - कोटिहेम फलं लभेत् ॥ २६
- आत्मशक्त्यनुसारेण - गुरुपूजापि दक्षिणा  
 अनन्तफलदाप्रोक्ता - इत्येवं मुनयोऽब्रुवन् ॥ २७
- अन्यद्विशेषं वक्ष्यामि - शृणुष्व मुनिपुङ्गव ! २८
- व॥ अस्यश्री आज्ञनेयानुष्टुभ महामन्त्रस्य । प्रजापति ऋषिः ।  
 गायत्रीछन्दः । श्री हनुमान्देवता । मर्कटेश इति बीजं ।  
 अच्युत इति शक्तिः । कपिराज इति कीलकं । मम श्री  
 हनुमत्प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । (मूलमन्त्रेण कर  
 शुद्धि व्यापक-यासं च कुर्यात् ॥) २९

ध्यानम् :-

- हृय कपि गरुडास्यं - क्रोड सिंहासनं च  
 दशभुज परिघाऽहि - खड्ग खट्वाङ्ग पाशम्  
 गिरिकुलिश त्रिशूलं - मौसलं चांकुशं च  
 धृत करवर मुष्टं - प्रेत संस्थान भूषम् ॥ ३०
- अरण्यवदन रूपं - रक्तमाल्याङ्ग कांतिम्  
 स्मरति रिपुजयार्थं - सर्वसम्पत्समृध्यै ॥ ३१

मनुः -

- मर्कटेश महोत्साह - सर्वशोक निवारक  
 शत्रुसंहार मां रक्ष - श्रियं दापय मे प्रभो  
 अयुतं तु पुरश्चर्या - दशांशं तर्पयेद्बुधः  
 तद्दशांशं हुनेत्पश्चात् - पायसं मधुमिश्रितम् ॥ ३२

|   |   |
|---|---|
| उपासनाकृता पूर्वं - बहुभिर्मुनिसत्तमैः ॥            | ३ |
| अनुष्टुभमिदं श्रेष्ठं - आज्जनेयमनुं मुने            |   |
| सप्तकोटि महामन्त्र - श्रेष्ठः श्रेष्ठतरं विदुः ॥    | ३ |
| सप्तमन्त्रात्मिका विद्या - पञ्चवक्त्र हनूमतः        |   |
| सप्तकोटि महामन्त्र - जाले श्रेष्ठेति नारदः ॥        | ३ |
| सप्त मन्त्रस्थ वर्णानां - षण्णवत्युत्तरेषति         |   |
| एकैक मक्षरं प्रोक्तं - एकैक मनुसंज्ञया ॥            | ३ |
| ऋषिन्यासश्च देवश्च - छन्दो ध्यान मुपासना            |   |
| एकैकाक्षर मन्त्राणा - मेते सर्वे समास्मृताः ॥       | ३ |
| सप्तमन्त्रात्मिका तुल्या - विद्यानास्ति जगत्त्रये   |   |
| हनूम त्सदृशं दैवं - नभूतो न भविष्यति ॥              | ३ |
| सप्तकोटि महामन्त्र - सारं संगृह्य शम्भुना           |   |
| सप्त मन्त्रात्मिका विद्या - कृता लोकहताय वै ॥       | ३ |
| अतो विद्या मिमां येतु - पठन्ति द्विजसत्तमाः         |   |
| सप्तकोटि महामन्त्रान् - तेपठन्ति नसंशयः ॥           | ४ |
| अन्यं विशेष वक्ष्यामि - होम कर्मणि चोदितम्          |   |
| स्वाहाकारं तु होमांते - पठेद्विद्वा नतंदितः ॥       | ४ |
| तर्पयामीति वचनं - तर्पणांते समुच्चरेत्              |   |
| होम तर्पणयो रते - जयद्वन्द्व पुनःपुनः ॥             | ४ |
| मन्त्राणा बलसिध्यर्थ - यशश्चे योपसिद्धये            |   |
| इत्यागमविधानज्ञैः - कथितं मुनिसत्तमैः ॥             | ४ |
| अन्यं विशेषं वक्ष्यामि - पल्लवार्थ मुनीश्वरः        |   |
| सर्वेषा मपि मन्त्राणां - मन्त्रांते पल्लव न्यसेत् ॥ | ४ |
| केषांचि देव मन्त्राणा - मादौ पल्लव ईरितः            |   |
| आदा वंतेच केषांचिन् - पल्लवद्वय मिष्यते ॥           | ४ |

|   |    |
|---|----|
| पल्लवद्वय संबंधात् - प्रत्यवायो न विद्यते<br>आद्यंत पल्लव स्पर्श - तंत्राणा मुत्तमोत्तमम् ॥   | ४६ |
| महाभैरव कल्पेच - संप्रोक्तं मुनिपुंगवैः<br>सर्वेषा मपि मंत्राणां - पल्लवेन त्वपि स्फुटम् ॥    | ४७ |
| होमार्थे षट्प्रयोगार्थे - योजयेत्पल्लवं पुनः<br>पुनः पल्लवसंयोगात् - प्रत्यवायो न विद्यते ॥   | ४८ |
| जपं तर्पण होमञ्च - द्विजसंतर्पणं तथा<br>चतुर्विध मिदं ब्रह्मन् - मंत्रांगाः परिकीर्तिताः ॥    | ४९ |
| अंगभञ्जो भवेद्यत्र - तसंख्याद्विगुणोजपः<br>सर्वतंत्ररहस्येभ्यं - इत्युक्तं मन्त्रवेदिभिः ॥    | ५० |
| सालग्रामे तथा लिंगे - पूजयित्वा भ्यदेवताम्<br>उभाभ्यां शाप माप्नोति - व्याधिग्रस्तो न संशयः ॥ | ५१ |
| हनूमन्मन्त्रजालाता - मित्युक्तं शम्भुना पुरा<br>जपाते खलु वक्तव्यान् - श्लोकान् शृणु महामुने! | ५२ |
| गोप्तृणामपि गोप्तात्वं - गृहाणास्मत्कृतं जपम्<br>सिद्धिं कुरुष्व मे देव - त्वा महं शरणं गतः ॥ | ५३ |
| आवाहनं नजानामि - नजानामि विसर्जनम्<br>पूजाविधिं नजानामि - क्षमस्व हनुमत्प्रभो!                | ५४ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे

नित्यकर्मविधिर्नाम सप्तषष्टितमः पटलः

\*

\*

\*

# श्री पराशर संहिता

अष्टषष्टितमः पटलः

—: चक्रलक्षण कथनम् :—

श्री पराशरः ।

|  |   |
|--|---|
| श्लो॥ मन्त्रांतरं प्रवक्ष्यामि - शृणुष्व मुनिपुङ्गवा ॥                                     | १ |
| आदौ प्रणव मुच्चार्य - रामदूताय चोच्चरेत्<br>लङ्काविध्वंसना येति - वह्निजायां समुच्चरेत् ॥  | २ |
| सर्वं सम्पत्प्रदानां - एषा पञ्चदशाक्षरी<br>ऋषिरस्य मनोर्ब्रह्मा - गायत्री छंद इष्यते ॥     | ३ |
| हनुमान्देवता प्रोक्ता - प्रणवो बीज मुच्यते<br>शक्तिश्च वह्निजायातु - रामदूताय कीलकम् ॥     | ४ |
| विनियोगपदं चोक्त्वा - देवतानुग्रह काक्षया<br>न्यासं कृत्वा प्रयत्नेन - मूलमंत्रेण चैव हि ॥ | ५ |

ध्यानम् -

|   |    |
|---|----|
| यस्तृणीकृत ब्रह्मास्त्र - सार स्सर्वसुराचितः<br>शौर्यं सर्वकष प्रज्ञ - स्तं वन्दे वायुनन्दनम् ॥ | ६  |
| अथ यन्त्रं प्रवक्ष्यामि - चक्राणा मुत्तमोत्तमम्<br>आदौ चंद्रं समालिख्य - षट्कोणां बिलिखेत्ततः ॥ | ७  |
| तद्बहिर्बृत्त मालिख्य - अष्टपत्रं लिखेत्ततः<br>पुनर्वर्तुल मालिख्य - भूपुरद्वय मालिखेत् ॥       | ८  |
| मंत्रराज मनुं तत्र - प्रागक्षरा प्यनुक्रमात्<br>प्रणवादि लिखेन्मध्ये - मंत्रवर्णं लिखेत्ततः ॥   | ९  |
| पूर्वकोणं समारभ्य - षट्कोणेषु लिखेत्सुधीः<br>विलिखेदष्टपत्रेषु - ह्याष्टवर्णान् लिखेत्ततः ॥     | १० |
| स्वरान्षोडश सगृह्य - विलिकेद्भूपुर द्वये ॥  | ११ |



- सौवर्णे रजतेवापि - ताम्बूवापि निशेषतः  
भूर्जेवा तालपत्रे वा - बिलिखे चक्रमुत्तमम् ॥ १२
- प्राण प्रतिष्ठां कृत्वा तु - सुगन्धं कुसुमाक्षतैः  
मल्लिका जाजि पुष्पैश्च - करवीरैश्च चंपकैः ॥ १३
- शैवेवा वैष्णवे पीठे - प्रत्यहं पूजये ज्जनः  
नियमेन सदा कुर्यात् - तत्र लक्ष्मी रचञ्चला ॥ १४
- शिखायां मध्यभा कण्ठे - दक्षिणेऽप्यथवा करे  
कट्यां च धारयेन्मर्त्यैः - कंदर्पं सदृशो भवेत् ॥ १५
- भूत प्रेत पिशाचाद्या - श्वेताल ब्रह्मराक्षसाः  
दूरादेव पलायन्ते - चक्रराजस्य दर्शनात् ॥ १६
- राजद्वारे सभामध्ये - व्याघ्र सिंह भयेषु च  
तस्य क्वापि भयं नास्ति - सत्यं सत्यं तपोधन ॥ १७
- ग्रहणेषु स्पृशन्विद्या - मष्टाक्षर महामनुम्  
अष्टोत्तर सहस्रं वा - अष्टोत्तर शताधिकम्  
वीर्यसिद्धिं प्रकुर्वीत - जपं कुर्वीत बुद्धिमान् ॥ १८
- मंदवारे च मध्याह्ने - पूजयेच्च प्रयत्नतः ॥  
नैवेद्यं च फलापूपान् - मधुरान् गोघृताम्बितान् ॥ १९
- कदली चूत पनसैः - खर्जूर फलसंयुतम्  
ब्राह्मणान्पञ्चसंख्याकान् - यथेष्टं भोजये ततः ॥ २०
- गुरुं संपूज्य यत्नेन - गृह्णीयाच्चक्र मुत्तमम्  
गुरुपत्नी मलंकृत्वा - वस्त्रालंकरणादिभिः ॥ २१
- अमृत्य वस्त्रकञ्चुकै - गंधपुष्पाक्षतादिभिः  
तोषयित्वा नमस्कृत्वा - श्रिय मनसि भावयेत् ॥ २२
- महदैश्वर्यं माप्नोति - कल्पायुष्य मवाप्नुयात्  
पापसङ्घान्निजित्य - हनूमत्पद माप्नुयात् ॥ २३

|   |    |
|---|----|
| सर्वस्यदक्षिणा देया - वस्त्रालङ्करणादिभिः<br>भूदानं कारये द्विद्धा - नैश्वर्यापेक्षया द्विजः ॥      | २४ |
| सुवर्णकोटि साहस्रं - शक्त्युत्थातुं नचेद्बुधः<br>कर्षमात्र सुवर्णवा - निष्कमात्र मथापिवा ॥          | २५ |
| अर्पयेद्गुरवे विद्वान् - न शक्यं वर्णितुं फलम् ॥  | २६ |
| अश्वमान्दोलिकां वापि - गुरवे यस्समर्पयेत्<br>चक्रवर्ती भवे द्राजा - सर्वद्वीपाधिप स्वयम् ॥          | २७ |
| बहुनात्र किमुक्तेन - गुरुं संपूज्य यत्नतः<br>मनसा चिंतितं कामं - प्राप्नोत्येव न संशयः ॥            | २८ |
| वञ्चये यदि सूढात्मा - गुरुं दैवतरूपिणं<br>इह चानर्थं माप्नोति - परेच नरकं व्रजेत् ॥                 | २९ |
| यत्किञ्चिदपि दातुश्चे - दशक्तः पुरुषो गुरोः<br>सेवया वा नमस्कारैः - तोषयेत्तां कृपानिधिम् ॥         | ३० |
| विश्वासरहितो यस्तु - स्वयं वर्तेत साधकः<br>स दुष्टः कीटवल्लोके - सशयो न विनश्यति ॥                  | ३१ |
| बहुनात्र किमुक्तेन - वित्तशाठ्यं विवर्जितः<br>पूजयेद्देशिकं मन्त्री - तोषयेद्वापि सेवया ॥           | ३२ |
| गुरुं प्रकाशयेद्धीमान् - मन्त्रं यत्नेन गोपयेत् ॥   |    |
| गुरुभक्तिर्मत्रगुप्ति - र्व्यं सिद्धिप्रदं नृणाम् ॥   | ३३ |
| गुरुर्मन्त्रो देवताच - त्रय मेव परं स्मृताः   |    |
| तत्रापि देशिक इश्रेष्ठः - तमे वाराधये त्सुधीः ॥   | ३४ |
| गुरौ तुष्टे जगत्तुष्टं - संतुष्टं ससर्वसिद्धिदः<br>देवे रुष्टे गुरु स्त्राता - गुरौ रुष्टे नकश्चन ॥ | ३५ |
| कृतघ्नश्च गुरुद्रोही - ननिष्कृति मवाप्नुयात् ॥  | ३६ |
| उसवेषुच सर्वत्र - व्रतेषु हनुमन्प्रभोः<br>गुरुपूजाच कर्तव्या - भक्ति विश्वास पूर्वकम् ॥             | ३७ |

- गुरुं मंत्रोपदेष्टारं - वञ्चयित्वा नराधमः  
 श्वानयोनिशसंगत्वा - पिशाचत्व मवाप्नुयात् ॥ ३८
- निर्जने विपिने घोरे - विच्छाये कटकावृते  
 क्षुत्पिपारा समाक्रांतः - कल्पाना मयुतं वसेत् ॥ ३९
- पुनश्च सदगुरोरेव - कृपया स विमुच्यते  
 मंत्रंवा कवचंवापि - स्तोत्रंवा न्यासमेववा  
 उपदेक्षति यस्सोहि - गुरुरि त्युच्यते बुधैः ॥ ४०
- तस्यावमानको मर्त्यो - नरकार्यैव जीवति  
 तस्यानुवर्तनादेव - जीवन्मुक्तो न संशयः ॥ ४१
- उपदेश विना मंत्रं - देशिकस्य जपे ह्यदि  
 अतिलोभेन मोहेन - पिशाचत्व मवाप्नुयात् ॥ ४२
- गुरौ देशांतरस्थौतु - देव माराध्य साधकः  
 निवेद्य परमान्न च - पूजयित्वा तथा मनुम्  
 गुरुपादौ नमस्कृत्य - जपेन्मंत्रं न दोषभाक् ॥ ४३
- अन्य द्रव्यस्य वक्ष्यामि - मन्त्रराजन्य मुत्तमम्  
 शृणु भैत्रेय विप्रेन्द्र - लोकाना मुपकारकम् ॥ ४४
- मंत्राक्षराणां चानुक्तौ - तारत्रय मुदीरयेत्  
 बीजाक्षराणां चानुक्तौ - नामाक्षर मुच्चरेत् ॥ ४५
- स्वाभीष्ट मन्त्र स्यैकस्य - यथाशास्त्रं जपं भवेत्  
 इतरेषांतु मन्त्राणां - यथाशक्ति जपं चरेत् ॥ ४६
- नतत्र न्यूनता दोषो - नाधिक्येनापि दोषभाक्  
 इति मन्त्रविदां रीति - रिति शातातपोब्रवीत् ॥ ४७
- साकारेच वकारेच - हाकारे होम माचरेत्  
 होतव्यं जुहुया दग्नौ - स्वाहाकारं समुच्चरेत् ॥ ४८
- उच्चा र्योपरतो भूत्वा - नहूया द्विवि रंततः  
 व्यवधाने होमविधौ - राक्षसाः प्रीति माप्नुयुः ॥ ४९

|   |    |
|---|----|
| जप्यं भ्रूमध्य दृष्ट्यावा - नासाग्रस्य दृशापिवा   |    |
| वर्णमाला दृशा वापि - जपन्सिद्धि भवाप्नुयात् ॥     | ५० |
| अंतर्लक्ष्यो बहिर्दृष्टिः - ध्यायेत्कपिवरं हृदि ॥ | ५१ |
| श्वेष्टदैवत गायत्री - मुद्रा स्तस्य यथाविधि       |    |
| सूक्तं सहस्रनामानि - चक्र मित्येव पंचकम् ॥        | ५२ |
| दैवप्रसादमूलत्वात् - मूलमन्त्रस्य सिद्धये         |    |
| मूलपंचक मेवेति - कथितं मन्त्रवित्तमैः ॥           | ५३ |
| पञ्चकं यो नजानाति - नप्रसीदति देवता               |    |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन - गृह्णीयात् मूलपञ्चकम् ॥    | ५४ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेय संवादे  
चक्रलक्षण कथनं नाम अष्टषष्टितमः पटलः

## श्री पराशर संहिता

### एकोनसप्ततितमः पटलः

—: कर्माचरण विधानम् :—

श्री पराशरः :-

|  |   |
|--|---|
| मंत्रेय जपतां नित्यं - मन्त्रमेकं हनूमतः       |   |
| सप्तकोटि महामन्त्रा - स्सिध्यत्येव नसंशयः ॥    | १ |
| आराधिते कपिश्रेष्ठे - समस्ता अपि देवताः        |   |
| भवति सततं तुष्टाः - सर्वदेवात्मकोहि सः ॥       | २ |
| एन केना प्युपायेन - हनूमत्पूजनैर्बुधः          |   |
| दिवसं सफलं कुर्यात् - स्तोत्रैर्वा बदनैरपि ॥   | ३ |
| पायसं घृतसंपूर्णं - मंदवारेषु पञ्चसु           |   |
| मर्कटा यार्पयेद्धीमान् - हनूमांस्तेन तुष्यति ॥ | ४ |

|   |    |
|---|----|
| बालमुद्रां प्रकुर्वीत - जपादौ मन्त्रवित्तमः<br>जपांतेच तथा कुर्या - दाम्नाये प्रणवं यथा ॥       | ५  |
| बालमुद्रा प्रभावेन - जपस्संपूर्णतां व्रजेत्<br>हनूमा नपि संतुष्टो - मन्त्रराजाधिदैवतम् ॥        | ६  |
| यत्कर्म विहितं नित्यं - काम्यं नैमित्तिकंतुवा<br>प्रातःकाले कृतं स्याच्चे - तदुत्तम फलप्रदम् ॥  | ७  |
| देवात्प्रमादा दालस्या - ह्यदि कर्मादि लंघनं<br>नित्यादीन्यपि कर्माणि - नयथोक्त फलानि वै ॥       | ८  |
| जंतु बद्धोऽपि संसारे - सुखदुःखमये सदा<br>निलिप्त इव वर्तेत - पद्मपत्र मिवाऽऽभसि ॥               | ९  |
| स्वाभीष्ट देवता सक्त - हृदय इशुद्धमानसः<br>कुलाल कीटव न्नित्यं - नये त्काल मत्तंद्रितः ॥        | १० |
| दुःख मित्येव नोभीति - सुखमि त्युच्छयंतु वा<br>प्राप्नुया न्मतिमान् जंतुः - कर्माधीनं जग ह्यतः ॥ | ११ |
| कर्मा ण्यपि सदा कुर्वन् - विहितानि समाचरेत्<br>विहिता न्याचरन् जंतुः - मनः पूतं समाचरेत् ॥      | १२ |
| साकल्येन नशक्वन्ते - कर्तुं कर्माणि जंतुभिः<br>गहना कर्मणो रीति - मनः पूतं समाचरेत् ॥           | १३ |
| भक्ति श्रद्धा विशुद्धात्मा - विहितं किंचिदेव वा<br>नित्यं नैमित्तिकं वापि - सदा कर्म समाचरेत् ॥ | १४ |
| अहंकारं च दंभं च - विहाय फलकामनां<br>नित्यं यत्क्रियते कर्म - हनूमां स्तेन तुष्यति ॥            | १५ |
| अन्नादिकं निजाभीष्ट - देवतायै समर्पितं<br>प्रोक्षितं चापि गायत्र्या - भक्षये द्भक्तशेखरः ॥      | १६ |
| कदाचिदपि नैवेद्यं - नोपेक्षेतापि सकटे<br>उच्छिष्टे स्पृष्टदोषेवा - नत्यजेदपि किंचन ॥            | १७ |

प्रमादा दपि गर्वाद्वा - तृप्तेश्चाऽरुचिभावनात्  
निवेदिताक्षरेणुंच - पात्रमध्ये नशेषयेत् ॥ १८

उल्लंघना त्प्रसादस्य - भक्तिः पूजा वृथा भवेत्  
जाज्वल्यमान जिह्वाग्रे - निहार इव पावके ॥ १९

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेय संवादे  
कर्माचरणविधानं नाम एकोनसप्ततितमःपटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

सप्ततितमः पटलः

—: हनुमत्तत्त्व कथनम् :-

श्री पराशरः ।

योवा विभर्त्यनन्तानि - नामानि विविधा न्यपि  
यस्यावतारा बहवो - मस्त्यःकूर्मादि रूपिणः ॥ १

सर्वत्र समता बुध्या - जग द्रक्षन्ति सर्वदा  
चेष्टाश्च विविधा यस्य - भक्तानुग्रह हेतवः ॥ २

तत्त द्भक्तानुकूलानि - रूपा ण्यंगीकरोति यः  
पुनाति सकलान्लोकान् - चरितैः परमाद्भुतैः ॥ ३

सम स्तोपनिषद्वाचो - यत्र सिद्धांत माश्रिताः  
सृज त्यखिलजंतून्यः - सृष्टौ ब्रह्मस्वरूपधृत् ॥ ४

सृष्टा नखिल जंतून्यः - प्रतिष्ठापयति प्रभुः  
विलापय त्यथो जंतून् - तत्त त्कर्मानुसारतः ॥ ५

सएव हनुमान् श्रेय - स्सर्वभूतमय इशुचिः ॥ ६

|  |    |
|--|----|
| तमेव जानीहि जगद्गुरुं मुने!                    |    |
| तमेव सर्वं क्रतुभोक्तु रूपिणम्                 |    |
| तमेव सर्वं क्रतु सिद्धिदायकम्                  |    |
| तमेव सर्वं क्रतु हव्यरूपिणम् ॥                 | ७  |
| ममस्त शब्द प्रतिपाद्यमूर्तिः                   |    |
| समस्त कल्याणगुणाभिरामः                         |    |
| समस्तजीवा ननिशं विभर्ति                        |    |
| सूत्रं यथा हारमणीन् हनूमान् ॥                  | ८  |
| सङ्कल्पवदखिल विश्वरूपधृत                       |    |
| स्वर्णं यथा कंकण कुडलात्मधृत्                  |    |
| अनाद्यविद्यावश रूप नामनि                       |    |
| तत्रैकवस्तु प्रतिकल्पिते उभे ॥                 | ९  |
| द्वयं हनूम त्यपि कल्पितं मृषा                  |    |
| नामानि रूपं व्यवहारसिद्धये                     |    |
| मायावशा दात्मनि सच्चिदात्म                     |    |
| प्रबुध्यते यस्तु तरत्ययं जनः ॥                 | १० |
| चराचर मिदविश्वं - सर्वं हनुमदात्मकम्           |    |
| विभावयन्ति ये त्वेवं - ते तरति नसंशयः ॥        | ११ |
| एवं भावयितुं येवै - नसमर्थाः पृथग्जनाः         |    |
| उदीर्यता मतिस्वच्छं - तैर्विश्वं हनुमन्मयम् ॥  | १२ |
| अत्रै बोदाहरं तीमं - इतिहासं पुरातनम्          |    |
| यस्य श्रवणमात्रेण - परां प्रीति मन्नाप्स्यसि ॥ | १३ |
| पुरा पुरंदर इश्रीमान् - वृत्रासुर वधोद्यतः     |    |
| तन्मायाभोहित स्वांतो - नैवात्मान मबुध्यत ॥     | १४ |
| पपात सहसा वज्रं - स्तंभीभू तैर्द्रवाणितः       |    |
| ततो गुह्य रसमागत्य - बृहस्पति रुदारधी ॥        | १५ |

इदं हनुमत स्तोत्रं - शक्रा योपदिदेशह  
 गुरूपदिष्ट हनुम - रस्तोत्रराज इशचीपतिः ॥ १६  
 उत्थाय मूर्च्छनाच्चक्रः - सुप्तोत्थित इव द्रुतम्  
 गुरूपदिष्ट विधिना - तुष्टाव कपिनायकम् ॥ १७

इन्द्र उवाच :-

नमामि जगतां नाथं - जगदाराध्य वैभवम्  
 सृष्टि स्थिति लयानां च - हेतु भीश्वर मव्ययम् ॥ १८  
 पार्वतीगर्भं सभूतं - सच्चिदानन्द विग्रहम्  
 यस्य कुक्षी समाविष्टा - लोकावै भूर्भुवादयः ॥ १९  
 नित्यहि सुखिता स्सन्ति - त न्नमामि जगद्गुरुम्  
 यस्य प्रसादा न्मर्त्योवै - मृत्युं जयति मानवः ॥ २०  
 तमेवाहं नमस्क्रुर्या - जरामरण वर्जितम् ॥ २१  
 हनुम न्मूलंये तस्मै - नरनारायणात्मने  
 अञ्जनागर्भं संभूत्यै - रक्षसां वध हेतवे  
 पम्पातीर निवासाय - मास्तुताय नमोनमः ॥ २२  
 कपिवरेश्वरं कामितार्थदं - त्रिपुरहात्मजं दीनपोषकम्  
 विपुलवक्षसं विमलचेतसं-उपकृतागसा मपिभयावहम् ॥२३  
 पवन नन्दनं पावकप्रभं - भव विदारणं भाग्यकारणम्  
 प्लवग नायकं भीवितोद्यमं-नवकवित्वयुग्वाङ्मयं भजे ॥ २४  
 अञ्जलिग्रहेणाऽत्म दैवतं - मञ्जुभाषितै मनिवोत्तमम्  
 रञ्जय त्सदा रामभूपति - अञ्जना यश-पुञ्ज माश्रये ॥२५  
 सुन्दराननं सूर्यतेजसं - नन्दिनाथव न्निदिताखिलं  
 मन्दराद्रिव द्बन्धुराकृतिं वन्दितं भजे वानरोत्तमम् ॥ २६  
 कनककुण्डल घनतराङ्गकं - दनुजनाशनं धर्मविग्रह  
 जनककन्यका चरितमङ्गलं - मनुमहेऽञ्जना मानितात्मकम्



- श्रुति रसायनं स्तुतिपरायणं - अतुलविक्रमं आतंतारणम्  
 कुन जगद्धितं केसरिप्रियं - मतिमतावरं खानदं भजे ॥ २८
- निविडमुष्टिना निहत रावणं-प्रबल भावना भाविपद्मजं  
 कबलितारुणं गानलोलुपं विबुधतोषकं वीरमाश्रये ॥ २९
- परमपावनं पार्वतीसुतं-निरुपमौजसं निजितेन्द्रियं  
 खरनखायुधं कामरूपिणं-सुरपतिस्तुतं शूर माश्रये ॥ ३०
- गन्धमादन शैलाग्र - हेमरम्भा वनाश्रयः  
 हनुमन् रक्षमां दीनं - सर्वभूत दयापरः ॥ ३१
- संसार कुहर ध्वान्त - नितान्त भ्रान्त चेतसम्  
 हनुमन् मामनाथं त्वं - किमर्थं समुपेक्षसे ? ३२
- हनुमन् मधुरास्वाद - कदलीफल पाणये  
 अभोध स्वर्णं टङ्काय - कर्कटी हरिणे नमः ॥ ३३
- उट्टारुढ कपिश्रेष्ठ! - त्वत्पाद ध्यान सश्रयम्  
 दुःखससार मग्नं मां - ससुद्धर जगत्पते ॥ ३४
- रेतो मूत्र पुरीषाऽसृ - क्पूय दुर्गन्ध जर्जरम्  
 भग मेहन सयोगं - मूढो वै मन्यते सुखम् ॥ ३५
- त्वत्सेवा विमुखा नित्यं - हनुमन् वत जन्तवः  
 वृथा मूढधियो जाताः - शिश्नोदर परायणाः ॥ ३६
- तृणमप्यचल न्यशेष बन्धो-कपिकुलनाथ! त्वदाज्ञया विनाशै  
 इति जगदखिलं विधेयभूतं विदितवतां नकदापि दुःखलेशः ॥
- वन्दे वायुतनूभवं सुचरितं - वन्दे जगद्रूपिणं  
 वन्दे वज्रतनुं सुरारि दलनं - वन्दे दयासागरं  
 वन्दे पञ्चमुखं सुकुण्डल धरं - वन्दे कपीनां पतिं  
 वन्दे सूर्ययुतासखं प्रियफलं - वन्दे हनूमत्प्रभुम् ॥ ३८

|  |    |
|--|----|
| धन्यावाचः कपिवर गुण - स्तोत्रपूताः कवीनां<br>धन्यो जन्तुर्जगति हनुम - त्पादपूजा प्रवीणः<br>धन्या पम्पा सतत हनुम - त्पादमुद्राभिरामा.<br>धन्य लोके कांपकुल मभू - दाञ्जनेयावतारात् ॥ | ३९ |
| इति स्तुत्वा हनूमन्तं - सहस्राक्ष इशचीपतिः<br>संप्राप्त विक्रम स्तूर्णं - सुप्तोत्थित इवाऽभवत् ॥   | ४० |
| समादाय पुनर्वज्रं - वृत्राय प्रजिघ्राय सः<br>ततो वज्रहतो वृत्रः - पपातत्र गमार च ॥   | ४१ |
| पठति ये स्तोत्रमिदं पवित्रं<br>जिगीषवस्तेऽरिजयं प्रयांति<br>अस्माक मन्तद्विषता मपेक्षया<br>हनूमत स्तोत्रबलादभूत्पुरा ॥   | ४२ |
| भवानपि स्वैरचरोहि नूनं<br>भविष्यसि प्राप्त महानुभावः<br>मैत्रेय तस्मा द्भूष तोपदिश्यतां<br>हनूमत स्स्तोत्र मिदं यथार्हतः ॥   | ४३ |
| द्वैताश्रमेषु विचर न्मुनि मेयमाना<br>न्यत्यद्भुतानि हनुम च्चरितानि शृण्वन्<br>कल्पान्बहूनपि नयामि मुहूर्तमात्र<br>मानःदसागर निमग्न निजान्तरङ्गः ॥                                  | ४४ |

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मैत्रेय संवादे  
हनुमत्तत्त्व कथनं नाम सप्ततितमः पटलः

\* ❀ ❀ ❀ \*

# श्री पराशर संहिता

## एकसप्ततितमः पटलः

—: नवखण्ड हनूमन्मन्त्र प्रभाव कथनम् :—

श्रेयः -

|  |    |
|--|----|
| पराशर नमस्तुभ्यं - सर्वमन्त्र प्रवर्तकः  | ३  |
| स्तोत्रं मन्त्रांतरं मह्यं - वक्तुं महंसि सुव्रत! ॥  | १  |
| पराशरः :-  |    |
| आदौ स्तोत्रं प्रवक्ष्यामि - षण्मुखस्य हनूमतः<br>स्मृतिर्यस्य विधानोक्ता सर्वसिद्धि प्रदायिनी ॥   | २  |
| ध्यायेत्तपनवर्णाभिं - प्राङ्मुखं वानराननम्<br>कल्पवृक्षमिमं ज्ञेयं - सर्वाभीष्टफलप्रदम् ॥        | ३  |
| दक्षिणंतु नृसिंहाख्यं - रक्तत्राणिक्य सन्निभम्<br>चिन्तामणि समंतच्च - चितितार्थप्रदायकम् ॥       | ४  |
| शुभ्रवज्रसमप्रख्यं - पश्चिमं गरुडाननम्<br>सुधाकुम्भसभाकारं - नानाविषहरं परम् ॥                   | ५  |
| इन्द्रनीलसमानाभं - बराहाननमुत्तरम्<br>तुल्यं नवविधानैश्च - सर्वसप्तप्रदायकम् ॥                   | ६  |
| ऊर्ध्वं ह्यमुखं ज्ञेयं - गार्भतभत मणिप्रभम्<br>कामधेनु समाकारं - सर्ववेद्याप्रदायकम् ॥           | ७  |
| ध्यायेत्पिङ्गलवर्णं तु - पाताले पात्रकाननम्<br>पद्मरागसमप्रख्यं - वर्धो बल यशः प्रदम् ॥          | ८  |
| इमंस्तवं पठेद्यस्तु - षण्मुखस्य हनूमतः<br>सर्वपिङ्गुवो विमुच्येत - स पुमान्विजयी भवेत् ॥         | ९  |
| अन्यं मन्त्रं प्रवक्ष्यामि - शृणुष्व मुनिपुङ्गव<br>पञ्चदेवात्मक मन्त्रं - हनूमन्मन्त्रमुत्तमम् ॥ | १० |
| आदौ प्रणव मुच्चायं - श्रीबीजं तदनन्तरम्<br>नल नील पदे चोक्त्वा - जाम्बवत्पद मुच्चरेत् ॥          | ११ |

- सुग्रीव हनुमच्छब्दे - वाराहं बीजं मुच्चरेत्  
फट् स्वाहेति शब्देन - विशद्वर्णं मनु स्मृतः ॥ १२
- नवखण्ड हनूमन्तं - वक्ष्यामि मुनिपुङ्गव ।  
सर्वलोक हितार्थाय - सर्वभूत दयापर ॥ १३
- आदौ प्रणव मुच्चार्यं - श्रीबीजं तदनंतरम्  
नमो भगवते पश्चात् - श्रीबीजं च ततः परम् ॥ १४
- हनूमते ततो ब्रूयात् - पदं वानर राजितम्  
चुक्षिह ताक्ष्यं वाराह - ह्य पावकं संज्ञितम् ॥ १५
- षण्मुखोपपदं ब्रूयात् - धरायेति पदं ततः  
सहस्रभुज शब्दं च - सहस्रायुध शब्दकम् ॥ १६
- यथाक्रमं समुच्चार्यं - धरायेति पदं ततः  
समुच्चरेत् ततो ब्रूयात् - त्कोलाहलं पदं ततः ॥ १७
- महाभैरव शब्दं च यकारं चोच्चरेत् ततः  
सकलेति पदं चोक्त्वा - शत्रुसहरणेति च ॥ १८
- यकारं मुच्चरेत् स्त्रीमान् - पदं भक्तजनेति च  
रक्षणाय पदं तत्र - सहस्राश्वपदं ततः ॥ १९
- रथं वाहनं शब्दं च - यकारं तु समुच्चरेत्  
सुदर्चला प्रियायेति - ब्रूयात् स्त्रीवर्णं पूर्वकम् ॥ २०
- अनेकयुवती शब्दं - सहितां समुदीरयेत्  
देव नदी पदं पश्चात् - द्विहाराय पदं ततः ॥ २१
- सकलेति पदं पश्चात् - दुच्चरेच्च प्रयत्नतः  
मत्तोरथा निति ब्रूयात् - न्मह्यं देहि पदं ततः ॥ २२
- पुनर्देहिपदं चोक्त्वा - वह्निजायां समुच्चरेत्  
ऋषि ब्रह्मास्य अत्रस्य - गायत्री छंद उच्यते ॥ २३
- नवखण्ड हनूमांश्च - देवता परिकीर्तितः  
प्रणवो बीजं मित्युक्तं - स्वाहा शक्तिं रुदीरिता ॥ २४

- श्री बीजं कीलकं तत्र - प्रसादे विनियोजनम्  
 न्यासं कृत्वा विधानेन - मूलमन्त्र विधानतः  
 ध्यानं कृत्वा प्रयत्नेन - सर्वकामार्थं सिद्धये ॥ २५
- नवखण्ड हनूमन्तं - हेम रंभावनाश्रयश्च  
 समस्त जगदाधारं - ध्याये द्वांछित सिद्धये ॥ २६
- पूर्वस्यां दिशि वानरास्य भनिशं - श्रीम नृसिंहाननम्  
 भूयो दक्षिणदिक्ते कपिवरं - ताक्ष्याननं पश्चिमे  
 क्रोडास्यं तदनूत्तरे दिशि यजे - दूर्ध्वं ह्यास्यं ततः  
 पातालेऽग्निमुखं च षण्मुख मिति - ध्याये ह्नूमत्प्रभुम् ॥ २७
- नवखण्ड हनूमन्तं - जपे त्सर्वार्थं सिद्धये  
 इत्यामनति मुनयः - इतिहासेषु सर्वशः ॥ २८
- अमुष्य मंत्रराजस्य - नवखण्ड हनूमतः  
 अक्षराणांतु सख्योक्ता - विश त्यष्टोत्तरं शतम् ॥ २९
- समस्त मन्त्रजालेषु - सर्वोत्कृष्टो ह्ययं मनुः  
 सर्वपाप क्षयकर - ह्सर्वोपद्रव नाशनः ॥ ३०
- भुक्ति मुक्ति प्रदो नृणां - सर्वैश्वर्यं प्रदो मनुः  
 ययं कामयते लोक - स्तत्त त्कामप्रदो मनुः ॥ ३१
- इतिहासं प्रवक्ष्यामि - शृणुष्व मुनिपुंगव!  
 यस्य श्रवणमात्रेण - सर्वैश्वर्यं मवाप्नुयात् ॥ ३२
- कार्तवीर्यार्जुनः पूर्वं - मिभं मन्त्रं सदा जपन्  
 जिगा याष्टादश द्वीप - नवखण्डात्मिकं भुवम् ॥ ३३
- इन्द्रखण्डं ताम्रखण्डं - नागखण्डं तथैव च  
 गभस्तिखण्डं सौम्यञ्च - गांधर्व खण्डमेव च ॥ ३४
- सप्तमं चाप्सर खण्डं - अष्टमं चामरं तथा  
 नवमं भारतं खण्डं - नवखण्डा न्यनुक्रमात् ॥ ३५

|  |    |
|--|----|
| तदा प्रभृति लोकेषु - मन्त्रराजं मितं मनुः<br>नवखण्डात्मिकाविद्या - मित्याहु मंत्रवेदिनः ॥  | ३६ |
| पठन्जपन्निमं मन्त्रं - मुच्यते भवबन्धनात्<br>इहलोके सदाजन्तु - मेहं दैश्वर्यमाप्नुयात् ॥   | ३७ |
| यत्र येषांतु मन्त्राणां - जपसंख्या न विद्यते<br>तत्र तेषां जपे ष्वेव - शतसंख्या नियम्यते ॥   | ३८ |
| नकालनियमो येषां - दिनसंख्या न गण्यते<br>तेषां रात्रिर्जपे कालः - दिवसा द्वादश स्मृताः ॥  | ३९ |
| यत्र मन्त्रित भस्मादि - जलस्य न तु लोच्यते<br>फलमात्रं जलं तत्र - भस्मामलक मात्रकम् ॥  | ४० |
| चूर्णं चार्थफलं ज्ञेयं मिति मन्त्रविदो विदुः ॥<br>होमसंख्या विशेषेण - न यत्र गणिता यदि<br>विधानं तत्र विज्ञेय - मष्टाविंशति संख्यया ॥              | ४१ |
| तपेणस्य न संख्योक्ता - यत्रचैव महामुने!<br>नियमस्तत्र विज्ञेयः - कथितो होमसंख्यया ॥  | ४२ |
| ब्राह्मणानां न संख्योक्ता - यत्र ब्राह्मणभोजने<br>तत्र भोजयितव्याश्च - विप्रा द्वादशसंख्यया ॥  | ४३ |
| सर्वेषामेव मन्त्राणां - मेष धर्मो विधीयते ॥<br>मन्त्राणां पल्लवो वासो - मन्त्राणां प्रणवः शिरः<br>शिरः पल्लव संयुक्तो - मन्त्रं कामप्रदं स्मृतम् ॥ | ४४ |
| एकाक्षरोपदेष्टापि गुह्यः पूज्यो मनीषिभिः<br>अज्ञानादपि-लोभाद्वा - नावमान्यः कदाचन ॥  | ४५ |
| गुरु मुसवकालेषु - पुण्यकालेषुत्रा पुनः<br>यो न जानाति मूढात्मा - रोरव नरकं व्रजेत् ॥   | ४६ |
| यः प्रतिश्रुत्य गुरवे - न प्रयच्छति किंचन<br>भ्रमेत्सोयं प्रतिगूहं - भिक्षार्थीच पिशाचवत् ॥  | ४७ |

|   |    |
|---|----|
| अतिक्रामति गुर्वाज्ञां - योगुहं प्रतिभाषते    |    |
| रात्रक्षराक्षसोऽरण्ये - शिष्यव्याजानुगो नरः ॥ | ५० |
| संपूजयेद्गुरुं भक्त्या - वित्तशाठ्य विवर्जितः |    |
| अन्यथा जन्मसाहस्रं - दरिद्रो भवति धृवध ॥      | ५१ |
| गुरुश्च गुरुपत्नी च - गुरुभ्राता गुरोस्सुतः   |    |
| चत्वार एते संपूज्याः - गुरुबुध्या विचक्षणैः ॥ | ५२ |
| गुरु प्रकाशयेद्दीमान् - मंत्र यत्नेन गोपयेत्  |    |
| तत्प्रकारोहि सर्वत्र - सभासु गुणकीर्तनः ॥     | ५३ |
| अप्रकाशोहि मंत्रस्य - सदा हृदि निवेशनम्       |    |
| तत्त्वा दनभ्यचित्तरसन् - भवेद्गुरुपरायणः ॥    | ५४ |

गुरुस्तवम् :-

|   |    |
|---|----|
| गुरवो निर्मला इशांताः - साधका मितभाषिणः           |    |
| एतैः कारुण्यतो दत्तो - मंत्रः क्षिप्रं प्रसीदति ॥ | ५५ |
| नित्याय निर्विकल्पाय - निरवध्याय योगिने           |    |
| निर्मलाय गिरीशाय - शिवाय गुरवे नमः ॥              | ५६ |
| यत्कटाक्ष सहामेरु - मह माश्रित्य नित्यशः          |    |
| सुभगोऽस्मि कृतार्थोऽस्मि - तमेव गुरु गात्रये ॥    | ५७ |
| अज्ञान तिमिरांधस्य - ज्ञानांजन शलाकया             |    |
| चक्षु र्हुन्मीलितं येन - तस्मै श्री गुरवे नमः ॥   | ५८ |
| अनवच्छिन्न सद्रूप - चिदानंदात्मन स्तव             |    |
| नमस्कार तिरस्कारे - कथं देव करो म्यहम् ॥          | ५९ |
| भावाभाव विहीनाय - स्वभुवे भोगरूपिणे               |    |
| स्वस्वरूप प्रकाशाय - शिवाय गुरवे नमः ॥            | ६० |
| गुरुश्रूपया विद्या - पुष्कलेन धनेन वा             |    |
| अथवा विद्यया विद्या - चतुर्थं नोपलभ्यते ॥         | ६१ |

- सहस्र भुजमंडले - दशशतायुधे षण्मुखे  
सहस्र हयमुग्रथे - सकललोक संरक्षणे  
सहस्र वनितायुते - विहरति स्मरेवा जले  
हनूमति मनो मम - प्रविशतां सुखप्राप्तये ॥ ६२
- वामांकन्यस्तवामः करधृत कमलाया स्तथा वामबाहुः  
व्यस्तारक्तोत्पलाया स्तन विधृत लस द्दामबाहुः प्रियायाः  
रम्या कल्पाभिरामो धृत परशुमृगासिद्रुमः कांचनाभो  
भूया त्पद्मासनस्थः तरणिशततनुः संपदे ह्याजनेयः ॥ ६३
- एव कृत्वांगषट्कं कपिकुलतिलकं रामदूतं महांतम्  
ध्याये द्रेवाजलस्थं युवतिभिरभितः क्रीडमानं महांतम्  
रोगांध्या दीप्तरूपं प्रमुदित मनसं लोल रक्तायताक्षम्  
हस्ताब्जै वरियन्तं भृगु परि विततै र्द्वयमानं पयोदान् ॥ ६४
- आञ्जनेयो महात्मा कतकमणिगणालंकृतांगस्सजायः  
आसीनो मंत्रिमध्ये रविरुचि विलसद्रत्नपीठे प्रसन्नः  
ध्याये त्स्वैर्बाहुदडै र्धृत शरनिकरै श्राप वर्मासिपाश  
प्रासाद्यै स्सर्वसिद्धयै गुरुदुरित महा चोरवृत्यैचलक्ष्यम् ॥ ६५
- दशशत हययुत रथवरनिलयं त्रैलोक्य भीषणं ध्यायेत्  
मध्याह्नार्क समानं गर्जनं तर्जयन्तं असुरगणान् ॥ ६६
- दोर्दंडमंडलै रायुधमंडल उत्क्षिपंत माशुभदम्  
मणिकुंडल युतं गंडं खंडित सर्वांरि मंडलं मन्ये ॥ ६७
- नानायुध निकर धरैः पदातिभिः वैण्डितः  
तथा रथिभि रभितो गजयूध युतैः ॥ ६८
- यथा रामेण सन्दिष्टो : हनूमान् प्रत्यगात्तदा  
लङ्कादहन वेलायां - षण्मुखोऽभूत्तदा हरिः ॥ ६९
- षण्मुखच हनूमंतं - हेमरभा वनाश्रयम्  
सहस्र बाहु मत्युग्र - हनूमंतं मुपाश्महे ॥ ७०



- कर्कटी लोकसंहर्त्री - विषूची लोकघातिनी  
 चत्वारि नामा न्येतानि - लंखिनी भगिनी स्त्रियः ॥ ७१
- कर्कटीवधवेलायां - हनूमा व्वायुनंदनः  
 धृत्वा भुजसहस्रं चै - षण्मुखानि भयंकरः ॥ ७२
- सौमिन्नि प्राणदाता कपट मुनि वपुः कालनेमि प्रहर्ता  
 दर्पोद्रेक प्रगरभः प्रकटित मकरी दंत भग्नो प्रवालः ॥ ७३
- हेला जंघाल वाला द्युत पद महिमा लंघिताब्धि प्रतापः  
 शौर्यश्री रम्यगात्रः कलुषपरिहरः पातु मां श्री हनूमान् ॥ ७४
- इमं स्तोत्रं पठन्विद्वान् - भुक्तिं मुक्तिं च विंदति  
 स एव पुरुषश्रेष्ठः - स योग्यः सर्वकर्मसु ॥ ७५
- समस्तस्तोत्र जालेषु - स्तोत्राणां मुत्तमोत्तमम्  
 एकवारं द्विवारं वा - त्रिवारं वा पठेन्नरः  
 सर्वाभिद्भूचो निवृत्तस्सन् - हनूमत्पदं भाप्नुयात् ॥ ७६

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर शैत्रेय संवादे  
 नवखंडं हनुमन्मंत्र प्रभाव कथनं नाम एकसप्ततितमः पटलः

\* \* \*

## श्री पराशर संहिता

द्विसप्ततितमः पटलः

—: स्तोत्रप्रकार कथनम् :—

श्री पराशरः ।

स्तोत्रांतरं प्रवक्ष्यामि - सर्वमंत्रमयं मुने  
 पार्वतीश्वर संवादां - स्तोत्राणां मुत्तमोत्तमम् ॥

थ्यक्षरी :-

आदौ 'ह'कार मुच्चार्य - 'नु'कारं तदन्तरम्  
'मा'कार मुच्चरे द्वीमान् - 'न'कारं चास्वरं ततः ॥ २

पञ्चाक्षरी :-

त्रिवर्णोयं मनु रिह बालाया मनुपल्लवः  
स्फे ह्रूं खूं ह्रौं समुच्चार्य - ह्येष पञ्चाक्षरो मनुः ॥ ३

षडक्षरी :-

आदौ प्रणव मुच्चार्य - शक्तिबीज मनंतरम्  
कपयेति पदं चोक्त्वा - वह्नि जायां समुच्चरेत्  
तारादि मुच्चरे तत्र - षडक्षर मुदीरितम् ॥ ४

सप्ताक्षरो :-

वेदादि वह्निजायांतं - रामदूताय चोच्चरेत्  
सप्ताक्षर मिमं मन्त्रं - मंत्राणा मुत्तमोत्तमम् ॥ ५

अष्टाक्षरी :-

आदौ तारं समुच्चार्य - हनुम द्वीज मुच्चरेत्  
आंजनेयाय शब्दं च नमश्शब्दं ततो च्चरेत्  
अय मष्टक्षरो मंत्रः - सर्वोत्कृष्टो जगत्त्रये ॥ ६

दशाक्षरी :-

आदौ श्रीबीज मुच्चार्य - माया बीज मनंतरम्  
वायुनन्दनायेति तथा - स्वाहांतं प्रजपे त्सुधीः  
दशाक्षर मिदं मंत्रं - मन्त्राणा मुत्तमोत्तमम् ॥ ७

द्वादशाक्षरी :-

आदौ प्रणव मुच्चार्य - हरिमर्कट शब्दतः  
मर्कटाय पदं पश्चात् - स्वाहांतं प्रजपे त्सुधीः  
द्वादशाक्षर मंत्रोऽयं - मुनिभिः परिकीर्तितः ॥ ८

## त्रयोदशाक्षरी ।-

|  |    |
|--|----|
| एकाक्षरं हनुमतः - प्रथमं तु समुच्चरेत्<br>हनुमते पदं तत्र - रामभक्ताय संवदेत् ॥  | ९  |
| संपत्पल्लव संयुक्तं - पूर्वं प्रणव मुच्चरेत्<br>त्रयोदशाक्षरी विद्या - महामनु रिति स्मृता ॥  | १० |
| अष्टसंख्या इमे मन्त्राः स्तोत्रमध्ये प्रकीर्तिताः<br>शंभुना चोपदिष्टाश्च - पार्वत्यै हितकाम्यया ॥  | ११ |
| सर्वेषा मेव मंत्राणां ऋषि रीश्वर उच्यते<br>हनुमा न्देवता प्रोक्ता - छंदो गायत्रि रुच्यते ॥   | १२ |
| न्यासं कृत्वा प्रयत्नेन मूलमन्त्र विधानतः<br>मन्त्रस्य देवताध्यानं - प्रत्येकं तु पृथक्पृथक्<br>सर्वेषा मेव मन्त्राणा मेकः परिष्कार इष्यते ॥ | १३ |

## ईश्वर ।-

|  |    |
|--|----|
| शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि - स्तोत्रं सर्वं शुभावहम्<br>सर्वकामप्रदं नृणां - हनुमत्स्तोत्र मुत्तमम् ॥ | १४ |
| तप्त हाटक सकाशं नानापुष्प विभूषितम्<br>उद्य द्वालार्क वदनं - त्रिनेत्रं कुंडलोज्ज्वलम् ॥           | १५ |
| मौंजी कौपीन संयुक्तं हेम यज्ञोपवीतिनम्<br>पिंगलाक्षं महाकायं टंक शैलेन्द्र धारिणम् ॥               | १६ |
| शिखा निक्षिप्त वालाग्र - मेघशैलाग्र संस्थितम्<br>मूर्तित्रयात्मकं वीरं - महाशौर्यं महाहनुम् ॥      | १७ |
| हनुमंतं वायुमुतं - नमामि ब्रह्मचारिणम्<br>त्रिवर्णाक्षर भवस्थं - जपाकुसुम सन्निभम्                 | १८ |
| नाना भूषण संयुक्तं - आजनेयं नमाम्यहम् ॥<br>पञ्चाक्षरस्थितं देव - नीलनीरद सन्निभम्                  | १९ |
| पूजितं सर्वदेवैस्तु - राक्षसारिं नमाम्यहम् ॥   | २० |

अचलद्युति संकाशं - सर्वालंकार भूषितम्  
 षडक्षर स्थितं देवं - नमामि ब्रह्मचारिणम् ॥ १  
 सप्तवर्णमयं देवं - हरिद्राभं सुरार्चितम्  
 सुंदरास्याब्ज सहितं - त्रिनेत्रं तं नमाम्यहम् ॥ २  
 अष्टाक्षराधिपं देवं - क्षीरवर्णं महाहनुम्  
 नमामि जगतां वंशं - लंकाप्राकार दाहकम् ॥ ३  
 आतपीपुष्प सकाश दशवर्णात्मिकं विभुम्  
 जटाधर चतुर्बाहुं - नमामि कपिनायकम् ॥ ४  
 द्वादशाक्षर मंत्रस्य - नायक कुतधारिणम्  
 अकुश च दधानं तं - कपिवर्यं नमाम्यहम् ॥ ५  
 त्रयोदशाक्षर युतं - सीतादुःख निवारणम्  
 हेमवर्णं लसत्कायं - भजे सुग्रीव मंत्रिणम् ॥ ६  
 मालामंत्रात्मकं देवं - चित्रवर्णं चतुर्भुजम्  
 पाशांकुशाऽभयकरं - धृत टकं नमाम्यहम् ॥ ७  
 सुरासुरगणैः स्वर्वैः संस्तुतं घ्नणमाम्यहम् ॥ ८  
 एवं ध्यायन्नरो नित्यं - सर्वपापैः प्रमुच्यते  
 प्रयाणे चिंतितेऽस्तिद्धिः - शीघ्रमेव न संशयः ॥ ९  
 अष्टम्यां तु चतुर्दश्यां अर्कवारे विशेषतः  
 संध्या पूजां प्रकुर्वीत - द्वादश्यां तु विशेषतः ॥ १०  
 अर्कमूलेन कुर्वीत हनुमत्प्रतिमां सुधीः  
 पूजयेत्तत्र विद्वांसो - रक्तवस्त्रेण वेष्टयेत् ॥ ११  
 ब्राह्मणा भोजयेत्पश्चात् - तत्प्रीत्यै सर्वपर्वसु  
 यः करोति दृढं भक्त्या - पूजां हनुमतो नरः ॥ १२  
 न शस्त्रभय माप्नोति - भयं वा प्यंतरिक्षजम् ॥ १३

अक्षादि राक्षसहरं दशकंठदर्प

निर्मूलनम् रघुवरांग्रिसरोज भक्त'

सीताविषय घनदुःख महान्धकार

निर्वापणे शिशिर भानु महं नमामि ॥

३४

मां पश्य पश्य दयया निजदृष्टिपातैः

मो रक्ष रक्ष परितो रिपु दुःखपुंजात्

वश्यं कुरु त्रिजगतां मनुजेश्वराणाम्

मे देहि देहि महतीं वसुधां श्रियञ्च ॥

३५

आपद्भ्यो रक्ष सर्वत्र - आजनेय नमोस्तुते

बंधनं छेद याशु त्वं - कपिवर्यं नमोस्तुते ॥

३६

उच्चाटय रिपून्सर्वान् - मोहनं भूभुजं कुरु

विद्वेषिणो मारय त्वं - त्रिमूर्त्यात्मक सर्वदा ॥

३७

देहि मे संपदं नित्यं - त्रिलोचन नमोऽस्तुते

दुष्टरोगान् जहि जहि - रामदूत नमोऽस्तुते ॥

३८

संजीव पवंतोद्धार - मम दुःख निवारय

ज्वरा नुपद्रवा त्सर्वान् - नाशय त्वं सुरांतक ॥

३९

एवं स्तुत्वा हनूमंतं - नरः श्रद्धा समन्वितः

पुत्रपौत्रादि सहितः - सर्वसौख्य मवाप्नुयात् ॥

४०

हाहाकार मुखांत निर्यं दनलज्जाला समूहो ज्ज्वलम्

विद्युत्खड्ग सुजात धूम्रवपुष स्वच्छादृहासं विभुम्

सचूर्णीकृत धूम्रलोचन मुखा द्यक्षीण रक्षोबलम्

तं वंद्यात्सुर चारणासुर वरै वंद्यं समीरात्मजम् ॥

४१

रघुपति पदभक्तं किञ्चि दुत्तुंग भांगम्

मुकुलित करपद्मं मोदमानांतरंगं

पुलकित विपुलांगं पुण्यलीलानुषंगम्

वनचर कुलनाथं वायुपुत्रं नमामि ॥

४२

- यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं - तत्र तत्र कृतमस्तकांजलिम्  
बाष्पदारि परिपूर्णलोचनं - मारुतिं नमत राक्षसांतकम् ॥४३  
दिव्यौषधि प्रदानेन - कपिकोटिं ररक्ष यः  
हनूमंतं जपयतं - नमस्तेऽस्तु महात्मने ॥ ४४
- बुद्धिबलं यशो धैर्यं - निर्भयत्व मरोगता  
अजाड्यं वाक्पटुत्वंच - हनुमत्स्मरणा द्भवेत् ॥ ४५
- वज्रांगं पिगकेशाढ्यं - स्वणंकुंडल मंडितम्  
प्रयुध्यमानं सग्रामे - पारावार पराक्रमम् ॥ ४६
- यंत्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि - धारणाड्य समानतः  
भूर्जे ताम्ने तथा पट्टे - भित्तौ वस्त्रे शिलातले  
पद्मपत्रेऽथवा लेख्यं - रोचनाभाग केसरैः ॥ ४७
- वृत्तत्रयं पुरा लेख्यं - वलयेन सुपुच्छवत्  
साध्यनाम लिखे न्मध्ये - बहि रष्टदलं लिखेत् ॥ ४८
- पञ्चाक्षरै स्साध्यनाम - वेष्टये त्रिविडं दृढम्  
दले ष्वष्टसु संलेख्यं - हुंकारं षण्मुखं तथा ॥ ४९
- बहि स्संवेष्टये तत्र - वलयेन दृढं तथा  
तद्बहि श्चतुरश्रं स्या - त्रकोणाग्रैश्च सुविश्मितैः ॥ ५०
- तल्लेखासु त्रिशूलानि - लेखयेत् शोभनानिच  
मूलमन्त्रेण तत्सर्वं - वेष्टये न्मण्डलं क्रमैः ॥ ५१
- पुनर्बहि स्तदेवापि - त्रिरेखाभिश्च वेष्टयेत्  
रेखांतेच त्रिवलयं - कारये देककोणकम् ॥ ५२
- तन्मध्ये ष्वंकुशं लेख्यं - ह्रसौं बीज समालिखेत्  
वज्राष्टकेन संयोज्यं - मूलमन्त्रं तथाष्टथा ॥ ५३
- मर्कटेशं च तद्यंत्रे प्राणाह्वानं च कारयेत्  
षट्छतै स्त्रिंशतै र्वीपि - तद्यंत्र मभिमंत्रयेत् ॥ ५४

- मर्कटेश्वर संयोगप्राग्ध बुध्याच्च कारयेत् ॥ ५५
- निष्कलमष ब्रह्मचर्य - व्रतधारी जितेन्द्रियः  
व्यक्ताननो महाभागो - हनुमन्तं च पूजयेत् ॥ ५६
- कदली मातुलुंगादि - फलैः खाद्यैर्मनोहरैः  
पुष्पैर्नानाविधैश्चैव ह्युपचारैस्समाहितः ॥ ५७
- ततो यन्त्रं सुधार्यं स्यात् - सर्वबाधा विनाशकृत्  
सर्वरक्षाकरं नृणां - बालानां योषिता मपि  
पशूनां च हयानां च - मृगाणां सर्वजीविनाम् ॥ ५८
- ज्वरादिकं स्फोटकादि - चोर रोग भयापहम् ॥ ५९
- राजद्वारे वने घोरे - संग्रामे रिपुसंकटे  
शस्त्रपाते महाभीतौ - दिव्याग्नि जल संप्लवे  
जनवश्ये राजवश्ये - रिपुवश्ये द्विष द्वधे ॥ ६०
- दधता मनिशं यन्त्रं - प्राणस्थापन पूर्वकम्  
सर्वकायं सुसिद्धिस्स्या - स्नात्रकार्या विचारणा ॥ ६१

इति श्री पराशर संहितायां श्री पराशर मंत्रेण संवादे  
स्तोत्र प्रकार कथनं नाम द्विसप्ततितमः पटलः